



# क्रांतिकारी बारहठ केसरीसिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्व

[प्रथम खण्ड]

संपादक

डा० देवीलाल पालीवाल  
डा० ब्रजमोहन जावलिया  
फतहसिंह 'मानव'



राजस्थान साहित्य अकादमी  
उदयपुर

- प्रथम संस्करण 1984 ई
- मूल्य पचास रुपये मात्र
- प्रकाशक राजस्थान साहित्य अकादमी,  
हिरनमगरी, सेक्टर 4  
उदयपुर-313 001 (राज )
- मुद्रक पालीवाल प्रिंटर्स  
उदयपुर-313 001 (राज )
- 

Krantikari Barhat Kaisrisingh Vyaktitva Avam Krativya Vol 1  
Rs 50/ Only

Edited by  
Dr D L Palwal, Dr B M Jawalia Fatch Singh 'Manav

**क्रांतिकारी बारहठ केसरीसिंह**  
**व्यक्तित्व एवं कृतित्व**

[ प्रथम खंड ]



# प्रकाशकीय

भारत के क्रांतिकारी जनतंत्रीय आन्दोलन के इतिहास में स्वर्गीय ठाकुर बेसरीसिंह बारहठ का उल्लेखनीय स्थान है। ठाकुर बेसरीसिंह बारहठ की देशभक्ति अनुकरणीय व अनुपम थी। उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य देश की स्वाधीनता के लिए काय करना था। वे धर्म प्रचार, समाज-सुधार, शिक्षा-प्रसार और जातीय संगठन के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना व देश भक्ति की भावनाओं के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयत्नरत थे। उन्होंने अगल साम्राज्यवाद का जीवन भर प्रखर विरोध किया और अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया।

बारहठजी बहुमुखी प्रतिभा मम्पन थे। वे उत्कृष्ट कोटि के बुद्धिजीवी, विचारक, लेखक और कवि थे। साथ ही अद्भुत वक्ता, प्रचारक और संगठक थे। वे बहुभाषाविद् और अनेक विषयों के ज्ञाता व प्रकाण्ड पंडित थे। संस्कृत प्राकृत, अपभ्रंश, डिगल, पिंगल, ब्रज, बंगला, मराठी गुजराती, हिंदी आदि भाषाओं के विद्वान तथा भूगोल, ज्योतिष, संगीत, धर्म, दर्शन, इतिहास के ज्ञाता थे। श्री बारहठजी की शैली मार्मिक, प्रभावोत्पादक, सरल व प्राजल थी और लेखों में भावगर्भीय विचारों की परिपक्वता मिलती है। ठाकुर साहब के प्रत्येक शब्द में विदेशी सत्ता के प्रति क्रांति की हुंकार है। सरल, सुबाध व सशक्त वीररस की अधिकांश काव्य रचनाएँ स्वधर्म व राष्ट्रीय भावना की परिचायक हैं।

अकादमी ने ठाकुर बेसरीसिंह बारहठ के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रकाशन का महत्वपूर्ण निरणय लिया और यथानिणय इसका प्रथम खंड प्रस्तुत है। प्रथम प्रकाशन में न चाहते हुए भी परिस्थितिवश विलम्ब हुआ, इसका खेद है। इस प्रथम के संकलन-सम्पादन हेतु सम्पादक त्रय-डा. देवीलाल पालीवाल, डा. ब्रजमोहन जावलिया एवं श्री फतहसिंह "मानव" को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित है।

आशा है सुधिन इस प्रकाशन का स्वागत करेंगे।

उदयपुर

12 नवम्बर, 1984

लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

सचिव

राजस्थान साहित्य अकादमी

उदयपुर



## क्रम

निवेदन	5	आत्मस्मृति	92
भूमिका	9	इनको कौन राव सकता है ?	93
□ हिन्दी काव्य		जयपुर प्रजामंडल के दमन पर	94
ईश-भक्ति-पद	55	महाराजा मान उतने दोषी	
कविस्त	59	नहीं हैं क्योकि-	96
शक्ति-वन्दना	61	शिकार म रजपूती	97
घनाक्षरी	62	राजपूत जाति पर मरसिया	98
नीति के दोह	64	चारण वही है	99
प्रेम की अतरगता	69	भारते-दु बाबू हरिश्चन्द्र	100
आत्मकथा	70	प माधवप्रसाद मिश्र भिवानी	
आत्मवेदन	71	के प्रति	101
सूखे वन की प्रायना	73	प गौरीशंकर ओझा क प्रति	101
हरिगीतिका	73	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के प्रति	102
ब्रिटिश गवर्नमंट की		तालाब की पाल	103
कृत्नीति के प्रति	74	लारी	103
बुसुमाजलि	76	इटली एबोसीनिया युद्ध	104
राष्ट्रधर्म	83	निदय जमनी	105
भारत दुदशा	83	श्रद्धा सुमन	106
दोहा	84	प्राणों की गूज	108
हजारीबाग जैल म वग-		श्री भोपालदान जी श्राद्ध	
साहित्य की याचना	85	क प्रति	110
उदबोधन-नारी समाज का	86	अमर शहाद श्री गणेशशंकर	
लाला लाजपतराय	86	विद्यार्थी	111
राज-धर्म	88	राव गापालसिंह खरवा के प्रति	112
राजा-भत्सना	88	महाराव उम्मेदसिंहजी कोटा	
राजा का कतव्य	89	के प्रति	113
कोटा महाराव उम्मेदसिंहजी		□ राजस्यान्तो काव्य	
के प्रति	90	गीत ब्रजनाथ रा	117
क्षत्रि धर्म	92	भगवती श्री करणीजी रा	118



उदवाघन	120	मि धार बन के नाम पत्र	176
सौराष्ट्री गृह (सिधु गगम)	122	बु वर धाकारसिंह के नाम पत्र	178
मेवाड के महाराजकुमार भोपालसिंह		मर धाकारसिंह दीवान, बोट्टा	
एक महा पत्रसिंह के प्रति	125	के नाम गोपनीय पत्र	180
हाय मेवाड	128	श्री ज्ञानिग्राम ध्याम के	
चाबुक स्पश	130	नाम पत्र	184
इतिहास रसिक राजपूतो		महागज साहब श्री गुरासिंह	
के प्रति	135	जाधपुर के नाम पत्र	187
राजा-प्रजा-सवात	136	श्री बी जे पटल के नाम पत्र	191
रत्नपूतारणी	143	महाराजा मर गगामिहजी	
नारी-गीरव	146	बाबानर के नाम	193
राष्ट्र-धर्म	148	पुत्र गणजीतसिंह के नाम	195
राजस्थान के विभिन्न प्रदेश		जामाता पतसिंह के नाम	199
की विशेषताए	148	मीतामऊ महाराजकुमार	
ऊ गो ही चित्तौड	150	रघवीरसिंहजी के नाम	203
क्षान-धर्म	152	बाबू भनुप्रहनारामसिंह	
राजपूतो की वर्तमान दशा	155	के नाम	206
हस्तिए की अनावश्यकता	156	बाबू कृष्णसिंह के नाम	207
स्वधर्म	158	श्री शिवसिंह चौधरी के नाम	208
विविध परमात्मा के प्रति	160	श्री नारायण चौधरी, सवाग्राम	
राष्ट्रवर राव गोपालसिंहजी		आश्रम के नाम	214
खरबा के प्रति	161	श्री अजु नलाल सठी के पत्र	
गाधीजी के प्रति	161	ठाकुर केसरीसिंह के नाम	221
मु छत्रु डा की एकादशी	162	गाधीजी का पत्र	224
प्रासंगिक	164	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का पत्र	225
		हजारीबाग सेट्टल जेल के	
□ पत्र व्यवहार		श्री पू वाडर का पत्र	226
सौ चन्द्रमणि के नाम पत्र	167	ए माधनलाल चतुर्वेदी का पत्र	227
जामाता ईश्वरदास आशिया		आ रमणीक ए महता का पत्र	228
के नाम	168	महाराजकुमार रघवीरसिंह	
पुत्र गणजीतसिंह के नाम	170	का पत्र	229
जामाता के नाम	172	□ जीवनी	
जामाता के नाम	174	कविराजा श्यामलदासजी	234

# निवेदन

उनीसवीं शती का उत्तरार्द्ध, वस्तुतः राजनीतिक चेतना के विस्तार का समय रहा है। समय के साथ साथ अंग्रेजों के पाव इस देश में बढ़ता व माघ जमते गये लेकिन साथ ही उतनी ही सकल्प शक्ति के साथ राष्ट्रीयता की भावना भी जड़ पकड़ती गई। राजस्थान की दली रियासता में इस नई चेतना के अन्वयुदय में धार्मिक पुनर्जागरण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वामी दयानंद मरस्वती, विवेकानंद, साधु निश्लदास मन्यासी आत्माराम, स्वामी गोविंद गिरि प्रभृति सतों ने धार्मिक एवं सामाजिक सुधार की दिशा में बड़ा योग दिया। सन् १८६२ ई० से १८८२ ई० तक स्वामी दयानंद ने अजमेर, भरतपुर, बनेडा, चित्तौडगढ़ घोलपुर, करौली जयपुर, जोधपुर, मसूदा रायपुर और उदयपुर की यात्रा कर अपने उपदेशों से धार्मिक सतीरणा से मुक्त होने का माग दिखाया। 'सत्याथ प्रकाश' का द्वितीय खंड ता उहोंने उदयपुर में ही लिख कर समाप्त किया था। उहान ही सवप्रथम 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया जो बाद में राष्ट्रीय आंदोलन की आधारशिता बना। विवेकानंद ने राजस्थान की तरण पीढी को बड़ी गहराई तक प्रभावित किया। स्वामी गोविंद गिरि ने मिर्गोही, डूंगरपुर और वासवाडा के आन्दिासी दत्रा में, साधु निश्लदास और आत्माराम ने हाडोती क्षेत्र में जो धम-सुधार का आन्दोलन चलाया उसका भी व्यापक प्रभाव पडा। राजस्थान की अतश्चेतना को प्रबुद्ध करन में इन साधु-सता और समाज-सुधारकों का बड़ा योगदान रहा और मरवती युग में, राजनीतिक जागरण की वेता में, इनके प्रेरित उपदेशों ने बड़ी सहायता की।

राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने, अधिकारी की लडाईं का समथन करन तथा स्वतन्त्रता की भावना को बलवती प्रेरणा देने में राजस्थान के कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राजस्थान की काय परम्परा को समझने के लिए जन आंदोलन की पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक है क्योंकि स्वतन्त्रता की पृष्ठभूमि में ही यहा काय सृजन व विकास सम्भव हा रहा है। इन कवियों के काव्य में चाहे ऊंची कलात्मकता के दशन न होते हा पर यह सत्य है कि उहान सामंती शापण से पीडित जनता को जगामा और एक नई दृष्टि दी। इसी जन आंदोलन न जागृति का नया विहान दिया। इन जन कवियों ने जन माधारण के मन में अपुव साहस तथा आत्मबल का मचार किया। विजयसिंह पथिक, केसरीसिंह बारहठ जयनारायण व्यास, हरिभाऊ उपाध्याय मारिाकवलाल वर्मा गणशीलाल उस्ताद, गोकुलभाई भट्ट, हीरालाल शास्त्री, काला बादल मुमनग लोषी प्रभृति अनेक कवि-कायकर्ताओं ने जनता का नतत्व दन के माय साथ जन

को उत्तेजित कर जूझते रहने की बलवती प्रेरणा दी और सशक्त जनवाय का सृजन किया। इन कविया की वाणी न तत्कालीन परिवेश में ज्योतिष्मन्म का काम किया और राजस्थान की कोटि-कोटि जन की पीड़ा एवं आक्रोश को मुखरित कर, जुल्मी क सिंहासन का जवदस्त चुनौती दी।

बेसरीसिंह बारहठ शाहपुरा के निवासी थे। उदयपुर के महाराणा सज्जन-सिंह न इनकी कविता पर मुग्ध हाकर जागीर में कई ग्राम दिए थे। बाद में कोटा चले आए। बेसरीसिंह की शिक्षा मस्ठून तथा हिन्दी में हुई। इसका अतिरिक्त इन्हें काव्य साहित्य ज्योतिष, गाय, वेदांत आदि का भी ज्ञान था। आपन अपन पिता तथा महामहोपाध्याय श्यामलदास से शिक्षा प्राप्त की।

बेसरीसिंह का आतिकारिया से निकट का संबंध रहा है। हार्डिज बम कांड से सप्रधित जोरावरसिंह बारहठ इनके अनुज थे और शचीन्द्र भायाल के साथी तथा मर्यु दंड भोगने वाले प्रतापसिंह इनके पुत्र थे। इन्हें अनेक बार बंदी बनाया गया और यातनाय दी गई। वे जीवन क प्रारम्भ में विप्लववादियों क प्रबल समर्थक समथ भागदशक और नेता थे। उनकी योजना थी कि तत्कालीन राजपूताना के राजघरानों को स्वतंत्रता के प्रति प्रेरित कर अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का वातावरण बनाया जाय। उन्हें काव्य-गृहण का अन्वेषण बहुत कम मिला लेकिन दश-गौरव आत्माभिमान और परंपराओं के प्रति सम्मान के भाव, उनका अनेक छंदों में व्यक्त हुए हैं। उन्होंने विविध विषयों पर लेखनी चलाई, लकिन मूल स्वर राष्ट्रीयता का ही रहा। उनके 'चेतावनी के चूड़ियां तो एतिहासिक संपाति अर्जित कर चुके हैं।

राजस्थान साहित्य अकादमी ने आतिकारी स्व० बेसरीसिंह बारहठ के सम्पूर्ण साहित्य के प्रकाशन का निर्णय वर्षों पूर्व किया था। विद्वान सपादकों ने इनकी सामग्री का सक्लन एवं सपादन में पर्याप्त श्रम किया है। जब मैंने अकादमी के अध्यक्ष पद का शायिक सम्हाला तब मुझे बताया गया कि आतिकारी बारहठ बेसरीसिंह 'व्यक्तित्व' और 'वृत्तित्व' शीर्षक ग्रंथ अभी तक प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं। सपादित सम्पूर्ण ग्रंथ को यदि एक साथ प्रकाशित किया जाता तो उन पर कम से कम एक लाख रूपया व्यय होता जो अकादमी की आर्थिक क्षमता के बाहर की बात थी। ऐसी स्थिति में अकादमी की सचालिका सभा ने निर्णय दिया कि सपादित ग्रंथ का अधिष्ठित व्यक्ति से समीक्षा करवा ली जाय और यदि उचित समझा जाय तो अनावश्यक अलग हटा दिया जाय। डॉ० परमजराज ने समीक्षा क शायित्व की लिया और अंत में यह निर्णय किया गया कि पूरे ग्रंथ का एक साथ छापना संभव नहीं है अतः इस दा घटा में प्रकाशित

रिया जाय । प्रथम खंड में केसरीसिंह बारहठ वृत्त बाध्य, उनके द्वारा लिखे गये महत्वपूर्ण पत्र, उनके लिए गये महत्वपूर्ण पत्र, तथा उनके द्वारा लिखित कविराजा श्यामनदास की जीवनी का सम्मिलित किया गया है, शेष सामग्री द्वितीय खंड में प्रकाशित की जायगी । राजस्थान सरकार ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए विशेष अनुदान किया, जिसके लिए अन्वयदात्री राज्य सरकार का प्रति कृतज्ञ है ।

प्रथम खंड भी बहुत क्लिष्ट से प्रकाशित हो रहा है इसका हम श्रेय है । कुछ परिस्थितियाँ ही ऐसी बनती रही कि न चाहते हुए भी क्लिष्ट हुआ गया । इसका दूसरा खंड कब तक प्रकाशित होगा यह निश्चित रूप से कहने की स्थिति में इस समय अन्वयदात्री नहीं है लेकिन उस प्रकाशित करने का संकल्प है । यह संकल्प शीघ्र ही पूरा हो, इसके लिए हम प्रयत्नशील हैं ।

दीपावली, ८४

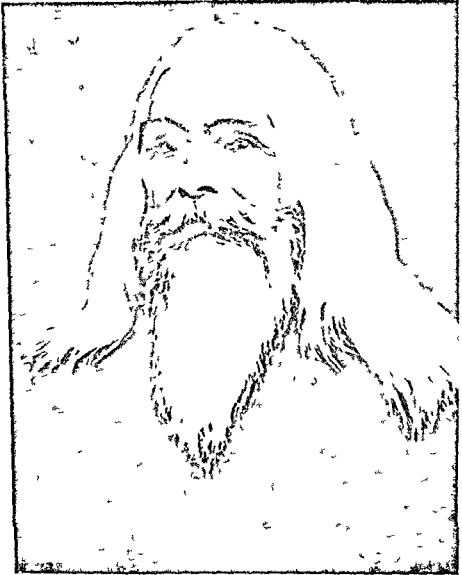
प्रकाश आतुर

अध्यक्ष

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर







क्रांतिकारी केसरीसिंह वारहठ



## भूमिका

ठाकुर केपरीसिंह बारहठ राजस्थान के एक सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी, देशभक्त समाज-सुधारक, विचारक और लेखक हो गये हैं। भारतीय स्वातन्त्र्य-सपन में उन्होंने और उनके परिजनो ने त्याग, तपस्या और बलिदान का जो मनुष्य उदाहरण प्रस्तुत किया है, उसके कारण वे और उनका परिवार भारतीय इतिहास में चिरस्मरणीय हैं। लगभग साठे तीन सौ वर्ष पूर्व इसी भूमि पर महाराणा प्रताप, उनके परिवार और सगी साधियो ने स्वतंत्रता और स्वाभिमान की रक्षा के लिए स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपना सुख, वैभव, अमन और चैन सभी अर्पित कर दिये थे। ठाकुर केसरीसिंह बारहठ भी उसी भाग के राही निकले। देश की अंग्रेजी दासता की बेड़ियो से मुक्त कराने की दृष्टि से चल रहे क्रांतिकारी आंदोलन में केसरीसिंह न केवल शरीक हुए, अपितु उनके भाता जोरावरसिंह पुत्र प्रतापसिंह, जामाता ईश्वरदान आशिया तथा अन्य परिजनो ने उसमें सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रतापसिंह शहीद हो गया, जोरावरसिंह आजीवन फरारी अवस्था में जीवन और मौत के साथ अखि मिचौनी खेलता हुआ दर-दर भटकता रहा, उनकी पैतृक जागीर एवं सम्पूर्ण सम्पत्ति जब्त करली गई और उनकी पत्नी तथा परिवार को असहाय छोड़ दिया गया किंतु उन्होंने सब कुछ सह्य और उफ तक नहीं की। सभी प्रकार के प्रलोभनो को ठुकरात हुए अदम्य ठाकुर केसरीसिंह और उनके परिजन अपने भाग पर चलते रहे और कभी विचलित नहीं हुए।

केसरीसिंह का जन्म सम्बत् 1929 मार्गशीर्ष कृष्णा 6, तदनुसार 21 नवम्बर, 1872 ई. को राजपूताना की मेवाड़ राजधान्तगन शाहपुरा रिमासत की अपनी पैतृक जागीर के भाव देवपुरा में हुआ। वे चारण जाति के इतिहास प्रसिद्ध सोदा बारहठ वंश में उत्पन्न हुए थे। मेवाड़ के अतगत शाहपुरा राज्य में ठाकुर केसरीसिंह के पूर्व पुत्रयो की जागीर स्थित थी। इस परिवार को



शाहपुरा राज्य के प्रथम श्रेणी के उमराव सरदारों व समान इज्जन मिली हुई थी। केसरीसिंह बारहट के पिता कृष्णसिंह ने अपनी कुशलता, बुद्धि-वैभव तथा क्षमता के कारण राजपूताना की समस्त रियासतों में सम्मान प्राप्त किया तथा तत्कालीन राजपूताना एवं मध्यभारत में प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ माने गये।

ठाकुर कृष्णसिंह के तीन पुत्र हुए— केसरीसिंह, विशारसिंह और जोरावर सिंह। ठाकुर कृष्णसिंह स्वयं विचारों से स्वाभिमानी और देशभक्त थे। व आर्य समाज के प्रवक्तृ स्वामी दयानंद सरस्वती के पट्ट शिष्यो में थे। वे न केवल विदेशी दासता के विरोधी थे अपितु राजा-महाराजाओं के चरित्र, व्यवहार एवं विचारों में जो हीनता उत्पन्न हुई थी उससे वे बहुत प्रसन्न थे।<sup>1</sup> यह स्वाभाविक था कि उनके इन विचारों का प्रभाव उनकी सतान पर पड़ता।

केसरीसिंह के जन्म के एक मास बाद ही उनकी जन्मदात्री का देहांत हो गया और व मा के स्नेह और लालन-पालन से वंचित हो गये। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम काल तक भारत के अधिकांश देशी राज्यों में शिक्षा की और बहुत कम ध्यान दिया जाता था। अधिकांश नरेश स्वयं अशिक्षित होते थे और सामान्य जनको शिक्षित करने के राजा के बतव्य का उन्हें भान नहीं था। समकालीन नरेशों में मेवाड़ के महाराणा सज्जनसिंह (1874-1884 ई.) उन प्रगतिशील राजाओं में से थे जिन्होंने अपने राज्य में यादा बहुत शिक्षा-प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया। महाराणा सज्जनसिंह की इस उदार नीति के फलस्वरूप उनके आमात्य तथा विश्वासपात्र सलाहकार और

(1) ठाकुर कृष्णसिंह साहित्य एवं इतिहास के ममन और विद्वान् लेखक थे। उनका द्वारा लिखित राजपूताने के तत्कालीन इतिहास से सम्बंधित लगभग 1000 पृष्ठों का एक बृहद् ग्रंथ 'बारहट कृष्णसिंह का जीवन चरित्र और राजपूताना का अपूर्व इतिहास' अभी तक अप्रकाशित है। इस ग्रंथ में तत्कालीन राजनीति स्थितियों का मुला और वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इन्होंने महाकवि मूयमल मिश्रण की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक काव्य रचना "वश भास्कर" की हिन्दी में "उदधि-मयिनी" टीका भी की थी। उन्होंने एक बहद् 'डिगल शब्द-कोश' की रचना भी की।

“वीर विनोद” इतिहास ग्रन्थ के सुप्रसिद्ध लेखक कविराज श्यामलदास<sup>1</sup> के प्रयत्नों से विस 1937 (1880 ई) में उदयपुर में चारण जाति के बच्चों की पढाई के लिये चारण पाठशाला और चारण छात्रावास की स्थापना की गई।<sup>2</sup> ठाकुर कृष्णसिंह स्वयं भी महाराणा सज्जनसिंह के विश्वासपात्र तथा कविराज श्यामलदास के सहयोगी रहे। चारण पाठशाला की स्थापना होते ही बालक केशरीसिंह आठ वर्ष की आयु में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अपने पिता के पास उदयपुर आ गया, जहाँ पंडित गोपीनाथ शास्त्री के सान्निध्य में उसका विद्याध्ययन प्रारम्भ हुआ। बाद में उनके दो अन्य भ्राता किशोरसिंह और जोरावरसिंह भी चारण पाठशाला में अध्ययनाथ उदयपुर आ गये।

केशरीसिंह विस 1946 के अंत तक चारण पाठशाला में पढ़े। विस 1947 में केशरीसिंह का विवाह कोटा राज्या तगत कोटडी ठिकाने में कविराज देवीदानजी की बहिन सुश्री माणिक कुंवर से हो गया और उसके तत्काल बाद विस 1948 (1891 ई) में महाराणा फतहसिंह की सेवा में राज्य-काय करने लगे। विवाह के लगभग तीन वर्ष उपरान्त विस 1950 (25 मई 1893 ई) में उदयपुर में कविराज श्यामलदास की हवेली में, जहाँ ठाकुर कृष्णसिंह रहते थे माणिक्य कुंवर की कोख से देश का नाम उज्ज्वल करने वाले वीर पुत्र प्रताप का जन्म हुआ।

केशरीसिंह अपने पिता और कविराज श्यामलदास के मार्ग-दर्शन में मेवाड़ राज्य की सेवा में काम करने लगे। कविराज श्यामलदास ने महाराणा सज्जनसिंह के देहावसान के बाद धीरे धीरे शासन काय से हाथ खींच लिया था इसलिये महाराणा फतहसिंह ठाकुर कृष्णसिंह और उनके पुत्र केशरीसिंह को अपना विश्वासपात्र रखकर इनके द्वारा सभी गोपनीय एवं महत्वपूर्ण काय करवाते थे। किंतु आंतरिक षडयंत्र और अंग्रेज सरकार के साथ उठने वाले विवादों से निपटने के लिये महाराणा को प्रधान मंत्री पद पर नियुक्त करने के लिये

[1] ठाकुर कृष्णसिंह कविराज श्यामलदास के भानजे थे और उनके परम विश्वासपात्रों में थे।

[2] इसी भाँति राजपूत जमींदारों के बच्चों की शिक्षा के लिये उदयपुर में नोबल्स स्कूल खोला गया जिसकी बाद में बदाकर कॉलेज का रूप दिया गया जो और जो महाराणा भूपाल नोबल्स कॉलेज के नाम से कहलाया।

अंग्रेजी भाषा में विद्वान किसी चतुर और राजनीति-पटु तथा कूटनीति प्रवीण व्यक्ति की आवश्यकता हुई। केसरीसिंह को यह कार्य सम्पादित करने का दायित्व दिया गया। पिता और पुत्र के स्वाभिमानों एवं दशमवर्तपूर्ण विचारों के मुताबिक उनका ध्यान माहवी[कच्छ] के राजनीति-दक्ष एवं देशभक्त श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा बार-एट-ला की ओर गया जो महाराणा फतहसिंह के राज्यकाल के प्रारम्भ में बविराजा श्यामलदास की सलाह पर पहिले ही मेवाड़ की शासन परिषद महदुराज सभा के सदस्य नियुक्त होकर कार्य कर चुके थे। ठाकुर कृष्णसिंह की भाँति श्यामजी कृष्ण वर्मा भी महर्षि दयानन्द के पटु शिष्य थे। वे तब तक रतलाम राज्य के दीवान भी रह चुके थे। इस समय तब श्यामजी कृष्ण वर्मा ब्रिटिश शासता विरोधी स्वातंत्र्य भावनाओं से प्रेरित हो चुके थे। संभवतः उन्होंने स्वतंत्रता सघष के लिये इतिहास-प्रसिद्ध मेवाड़ राज्य को अपना आगामी कार्य-क्षेत्र बनाने की बात साची ही। इसलिये जब केसरीसिंह उनका बुलाने अजमेर गये तो वे सितम्बर 1893 ई. में उदयपुर आ गये किन्तु शीघ्र ही उनका मन उबट गया। पिछड़े एन सामन्ती बर्षना से जबड़े मेवाड़ राज्य में रहकर अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध कुछ कर पाना उन्होंने असम्भव पाया और वह शाहपुरा रियासत और अंग्रेज सरकार से संबंधित तथा कतिपय आन्तरिक विवादा को महाराणा के पक्ष में निपटा कर वापस लौट गये।<sup>1</sup>

श्यामजी कृष्ण वर्मा की मेवाड़ में प्रधानमंत्री के तौर पर नियुक्ति से महाराणा और अंग्रेजों के सम्बन्धों पर विपरीत प्रभाव पड़ा। श्यामजी के उग्र विचारों के सम्बन्ध में अंग्रेज सरकार को जानकारी थी। महाराणा फतहसिंह स्वयं स्वाभिमानों वंश-गौरव के रक्षण, स्वतंत्रता-प्रिय एवं मेवाड़ राज्य के आन्तरिक मामलों में अंग्रेज सरकार के हस्तक्षेप के विरोधी थे। जिससे अंग्रेज सरकार के अधिकारी प्रारम्भ से ही उनसे दुर्बन्ध थे और उनको राज्यगद्दी से हटाने के लिये षडयंत्र कर रहे थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे व्यक्ति को उदयपुर बुलाना उनकी सरकार विरोधी षडयंत्र लगा। स्वाभाविक रूप से ठाकुर कृष्ण सिंह का भी महाराणा का विषवासपात्र बनकर मेवाड़ में काम करना अंग्रेज

[1] 1897 ई. में श्यामजी कृष्ण वर्मा भारत छोड़कर यूरोप चले गये और लन्दन तथा पेरिस में रहकर उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिये प्रातिकारियों को संगठित करने तथा सशस्त्र सघष की तैयारी के लिये कार्य किया।

सरकार को झलरने लगा और अंग्रेज सरकार महाराणा पर अधिकाधिक दबाव डालने लगी जिससे ठाकुर कृष्णसिंह का महाराणा की सेवा में कार्य करना कठिन होता गया। उधर महाराणा फतहसिंह स्वाभिमानी और स्वतन्त्रता-प्रिय होते हुए भी सामाजिक, राजनैतिक विचारों की दृष्टि से महाराणा सज्जनसिंह के विपरीत पुरातनवादी सवीण एवं सुधार-विरोधी शासक थे। इसलिये श्यामलदाम जैसा विश्वसनीय एवं योग्य व्यक्ति भी कुण्ठाग्रस्त होकर निष्क्रिय हो गया था। कृष्णसिंह भी प्रायः महाराणा के कठोर एवं हठी प्रकृति के सम्मुख स्वयं को असहाय पाते थे। ब्रिटिश सरकार श्यामजी कृष्ण वर्मा के समान ही कृष्णसिंहजी को भी महाराणा के सलाहकार के रूप में नहीं देखना चाहती थी। अतः पोलिटिकल एजेंट कनल माइल्स के निर्देश पर उन्हें उदयपुर महाराणा की सेवा से 1893 ई. में निकाल दिया गया। कुछ समय बाद कुंवर बंसरीसिंह भी कोटा चले गये।

उदयपुर महाराणा की सेवा में रहते हुए युवक केसरीसिंह की बुद्धि, ज्ञान और कायक्षमता का पर्याप्त विकास हो चुका था। जब कोटा राज्य के शासक महाराव उम्मेदसिंह ने उनके गुणों की प्रशंसा सुनी तो महाराव भी केसरीसिंह को 1900 ई. में कोटा बुला लिया और 60 रुपये मासिक पर नियुक्ति देकर उनको सम्माननीय दरबारी बनाया। केसरीसिंह ने उसके बाद कोटा को अपना स्थायी निवास बना लिया। 1902 ई. में उनको ब्रिटिश भारत में विभिन्न जातियों, पेशों आदि के सम्बन्ध में सूचनाएँ एकत्रित करने का विशेष कार्य देकर सुपरिटेण्डेंट एथनोग्राफी के पद पर नियुक्त किया गया जो कार्य वे 1907 ई. तक करते रहे।

कोटा आगमन के पश्चात् केसरीसिंह के विचार और कायक्षेत्र एक निश्चित स्वरूप एवं दिशा ग्रहण करने लगे। उस समय उनकी आयु 28 वर्ष हो चुकी थी। अपने पिता के स्वाभिमानी एवं स्वतन्त्र विचारों से प्रभावित केसरीसिंह उदयपुर में राजनैतिक, प्रशासनिक कार्य करते हुए विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों एवं विचार धाराओं के सम्पर्क में आये। जिन्हामु प्रकृति के केसरीसिंह ब्रिटिश दासता के नीचे कराहते हुए भारतीय समाज की पतिततावस्था स्पष्टतः देखने लगे। भारत के प्राचीन राष्ट्रीय गौरव पर गव्व करने वाले केसरीसिंह अंग्रेज शासन के जुए के नीचे छटपटाने लगे। राजपूतों, चारणों तथा भारत की अन्य सहाय-जातियों की शोषण एवं बलिदान की परम्पराओं पर गव्व करने वाले केसरीसिंह उनमें जाग्रति, एकता और सघन का शखनाद फूँकने में लिये तिस-

मिलाने लगे । उन्होंने अंग्रेज सरकार की शक्ति की सीमा एक कमजोरिया तथा उसकी कूटनीति के तौर-तरीकों को भलीभाँति समझ लिया था । उनको विश्वास हा गया था कि यदि राजपूतान की सैनिक राजपूत, चारण आदि जातियाँ एक बार अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाए तो राजपूतान में ब्रिटिश शासन का अन्त हो जाएगा और यदि एक बार राजपूताने स उसके पैर उखड़े तो अन्ततः भारत से ब्रिटिश शासन का अन्त हो जाएगा ।

1900 ई. से 1914 ई. के बीच का समय वंसरीसिंह बारहट का जीवन का निर्णायक काल था । वे प्रारम्भ में धर्म सुधार, जाति सुधार और शिक्षा-सुधार की ओर प्रवृत्त हुए । इस महाभियान में उन्हें चारों ओर बालू के टीले ही टीले मिले, हरियाली कहीं नहीं । जब वे घोर निराशा एवं विद्रोहजनक प्रतिक्रिया के बीच घपड़े खाने लगे तो उनका सम्पर्क अजु नलाल सेठी और राव गणपतिसिंह खरवा से हुआ । उनके द्वारा रासबिहारा वास और शचीन्द्रनाथ सायल के गुप्त प्रातिकारी दल के साथ सम्बन्ध स्थापित हुआ और वंसरीसिंह सशस्त्र प्रातिकारी विद्रोह के लिये राजपूताना में शस्त्रास्त्र एकत्रित करने साधन जुटाने, लडाकू सैनिक जातियाँ एवं ब्रिटिश फौजों में ब्रिटिश विरागी विद्रोह के विचारों के प्रसार में लग गये ।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है वंसरीसिंह के प्रारम्भिक जीवन पर अपने पिता कृष्णसिंह<sup>1</sup> तथा उनके मामा कविराजा श्यामतदास के विचारों और जीवन व्यवहार का भारी प्रभाव पड़ा था । अठारह उन्नीसवपी आयु से ही यह जातीय और सामाजिक सुधारों में उत्साहपूर्वक भाग लेने लग गये । वे इतिहास के प्रखर विद्वार्थी थे और भारतीय इतिहास में क्षत्रिय जाति की भूमिका के सम्बन्ध में उनकी अगाध आस्था और विश्वास था । उनको विश्वास था कि यदि क्षत्रिय जाति के लोग सामाजिक पतनावस्था के गढ़ में निकाट लिये जायें और उन्हें अपने जातीय गौरव और राष्ट्रीय दायित्व के प्रति जाग्रत कर दिया जाये तो देश का इतिहास बदल सकता है । इसलिये उन्होंने सामाजिक कुरीतियाँ, कुप्रथाएँ एवं रूढ़ियाँ के विरुद्ध जाग्रति एवं सगठन का कार्य प्रारम्भ किया ।

अब तब वंसरीसिंह को सस्कृत के उद्भट विद्वान और शास्त्रा के नाता के रूप में सबत्र मायता मिल चुकी थी । राजनीति, क्षात्रधर्म, समाज सुधार शिक्षा प्रसार आदि विषयों के सम्बन्ध में उनक लेख पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होने

1] 1907 ई. में ठाणुर कृष्णसिंह का जोधपुर में दहात हुआ ।

संगे थे। उनकी काव्य-प्रतिभा भी प्रस्फुटित हो चुकी थी। राजस्थानी तथा ब्रज भाषा में वे सुन्दर काव्य रचना करने लगे। उनकी कविताओं के भी अधिकांश विषय जाति, समाज और राष्ट्र का उद्धार होते थे। इस भाँति बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में केसरीसिंह राजपूताने में एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में उभर चुके थे और राजपूताने के अखिलाक्ष राजा महाराजा, जागीरदार, क्षत्रिय एवं जन-सामान्य उनको सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

सन् 1903 ई में एक ऐसा घबसरा उपस्थित हुआ जब केसरीसिंह ने अंग्रेज सरकार की गुनाहों के विरुद्ध अपने विचार प्रकट किये। अंग्रेज सरकार अपना प्रभुत्व और आधिपत्य दर्शाने के लिये समय समय पर दरबार लगाया करती थी, जिसमें देश भर के राजाओं महाराजाओं, नवाबों आदि को शामिल होकर अपनी स्वामिभक्ति अनिवाय रूप से प्रकट करनी पड़ती थी। प्रत्येक राजा का उनमें शामिल होने के लिये बाध्य किया जाता था। 1903 ई में भारत के वायसराय लार्ड कर्जन ने सम्राट एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहण के उपलक्ष्य में दिल्ली दरबार आयोजित किया तो राजपूताना के राजाओं को भी आमंत्रित किया गया। स्वाभिमानों और देशभक्त लोग इस दासता प्रदर्शन में शरीक हाने के विरुद्ध थे, किन्तु वे इतने अशक्त और असहाय थे कि नाम-मात्र का विरोध भी नहीं कर सकत थे। किन्तु मेवाड़ में हलचल हुई। महाराणा फतहसिंह ने मेवाड़ की स्वतंत्र परम्पराओं तथा 1818 ई की मेवाड़ एवं ईस्ट इण्डिया कम्पनी के मध्य हुई संधि के आधार पर दिल्ली दरबार में शरीक हाने से इंकार कर दिया। इस समय जबकि देश में विशेष रूप से बंगाल में ब्रिटिश सरकार को हटाने एवं स्वदेशी शासन कायम करने की भावनाएँ प्रबल हो रही थी, महाराणा के दिल्ली दरबार में शामिल नहीं होने से ब्रिटिश सरकार की प्रतिष्ठा का भारी धक्का लगाता और कानूनी एवं नैतिक दृष्टि से ब्रिटिश शासन की स्थिति कमजोर होती तथा ब्रिटिश विरोधी शक्तियों को प्रबल प्रोत्साहन मिलता। इस पर ब्रिटिश सरकार ने महाराणा पर दूर प्रकार का दबाव डाला और गद्दी से हटा देने तक की धमकी दी। कुछ क्षणों पर जब महाराणा दिल्ली दरबार में शामिल हाने के लिये दिल्ली रवाना हुए तो केसरीसिंह ने “चेतावणी या चू गट्पा” शीर्षक से मासिक भाषा में तेरह सौठे तिखबर महाराणा को भेजे, जिनके द्वारा उन्होंने महाराणा को अपने कुल गौरव तथा स्वाभिमान एवं स्वतंत्रता की रक्षा के लिये महाराणा प्रताप द्वारा सर्वस्व त्याग एवं बलिदान की परम्परा का भान कराया। महाराणा फतहसिंह दिल्ली जाकर बीमार हो गये और दरबार में शरीक नहीं हुए। ब्रिटिश सरकार की यह भारी धमकी थी किन्तु वह खून का घूट पीकर रह गई। केसरीसिंह द्वारा महाराणा को भेजे गये कुछ सौठे यहाँ उद्धृत किये जा रहे हैं —

पग पग भम्ब्या पहाड, धरा छाँड राख्यो धरम  
 (ईसू) महाराणा'र मवाड, हिरद बसिया हि द रं ॥  
 घण पसिया धमसाण (तोड़) राण सदा रहिया निडर,  
 पेलता फरमाण, हलचल किम पत्रमम हूर्व ॥  
 सिर भुकिया सहसाह, सिहामण जिण सामने ।  
 रलणौ पगतराह, फावँ किम तोने पता ॥  
 देखेला हिदवाण, निज सूरज तिस नेह सू ।  
 पण 'तारा' परमाण, निरख निसासा हावसी ॥  
 मान मोड शीशाद, राजनीति बल राखणो ।  
 (ई) गवमेंट री गोद, फल मोठा दीठा पता ॥<sup>(१)</sup>

1911 के दिल्ली दरबार में भी महाराणा पतहसिंह शाही जुलूम और दरबार में शरीक नहीं हुए थे । निम्न कत्त केस के दौरान हुई अभियुक्तों की गवाही से पता चलता है कि उस समय भी केसरीसिंह बारहठ तथा खरवा ठाकुर राव गणपालसिंह ने यह प्रयत्न किया था कि महाराणा दरबार में शामिल न हों । अभियुक्त मोमदत्त उर्फ त्रिवेणीनाथ सहरी ने अपने बयान में कहा है कि मवाड के सरदारों की ओर से महाराणा के नाम का एक गुमनाम पत्र तैयार किया गया जिसकी शुद्ध प्रतिलिपि मेरे द्वारा कराई गई । पत्र में लिखा गया कि महाराणा सूर्यवंशी हैं उन्होंने कभी मुगल के आगे सिर नहीं झुकाया । महाराणा को फिरंगी के स मुख झुकने के बनिस्पत आत्महत्या कर लेना उचित होगा । ठाकुर गणपालसिंह के कहने पर सहरी ने यह पत्र अजमेर ढाक से रवाना किया था ।

केसरीसिंह ने क्षत्रियों में जाग्रति का शब्द पूकने की दृष्टि से समाज-सुधार और शिक्षा प्रचार के काय को माध्यम बनाया । क्षत्रिय समाज में व्याप्त तमाम प्रकार की सामाजिक बुराइयों एवं कुप्रथाओं—जैसे बहु विवाह टीका प्रथा, बाल विवाह दास प्रथा, शादी और गमी पर अन्याय आदि के विरुद्ध उन्होंने प्रचार और संगठन संबंधी काय किया । इस काय के लिये “बाल्टर कृत राजपूत

[1] चैतावणी रा चू गट्या लिखने से पूर्व केसरीसिंह ने कोटा महाराज के माध्यम से लाइ कजन को “दुमुमाजलि” शीर्षक पद्यबद्ध पुस्तिका प्रकाशनाथ मॅट की थी जो प्रत्यक्षतया ब्रिटिश सरकार की प्रशंसा थी किंतु गूढार्थ में उसकी निन्दा थी । लाइ कजन ने जब यह पुस्तिका किसी सभ्य विद्वान को बतलाई तो उसने वास्तविकता प्रकट कर दी ।

हितकारिणी" सभा को उहोंने अपना मंच बनाया। यह सभा बविराजा ब्रह्ममलदास के प्रयत्नो से राजपूताना में तत्कालीन एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल कनल वाल्टर की अध्यक्षता में सन 1880 में स्थापित हुई थी जिसकी शाखायें राजपूताना के लगभग सभी राज्यों में थी। इस सभा के सालाना जल्स होते थे प्रस्ताव आदि पास होने थे, किन्तु उससे आगे कुछ नहीं जाना था। बेंसरीसिंह ने वाल्टर वृत्त राजपूत हितकारिणी सभा की कोटा शाखा को सक्रिय किया और उसके द्वारा उसके के द्रीय समठन को प्रभावकारी बनाने की निरन्तर चेष्टा की।

सन् 1905 में बेंसरीसिंह बारहठ ने राजपूत हितकारिणी सभा की कोटा शाखा के सम्मेलन में जाति-उत्थान पर एक मार्मिक भाषण दिया।<sup>1</sup> उहोंने शत्रियों की पनीत एक दयनीय दशा पर चोट करते हुए स्मरण कराया— 'ईश्वर के घर से कभी किसी व्यक्ति या जाति को राज्य करने का परवाना नहीं मिलता। सब शक्ति का खेल है। आधिपत्य शक्ति में है। सत्कार शक्ति का उपासक है। शक्ति अपने सच्चे भक्त ही की मुज्रायो पर रहती है। वह उसी की बन जाती है और साथ में सत्कार को भी उसी का बनाती है। आपके पूज्य भी शक्ति के अभेद भक्त थे पूण शक्ति सम्पन्न थे, शक्ति उही की ही चुकी थी किन्तु प्रमाद से शक्ति चली भी जाती है। शक्ति का वह चिर स्थान आज उजाड़ है।

इसी सम्मेलन में उहोंने "राजपूत हितकारिणी सभा" को अंग्रेजों के प्रभाव से मुक्त करने लिये यह प्रस्ताव रखा कि उसके स्थायी अध्यक्ष अंग्रेज ए. जी. जी. नहीं रहे और उसके स्थान पर राजपूत नरेश हो जो प्रतिवर्ष बदलते रहें। उहोंने सभा की कायदाही की हिंदी में चलाने तथा विद्या प्रचार का वाय मुख्य रूप से हाथ में लेने पर जोर दिया। इसी दृष्टि से बेंसरी सिंह ने 1905 से 1913 के दौरान राजपूताने के ए. जी. जी. तथा राजपूताने की जोधपुर, धौकानेर आदि रियासतों में उच्च पदों पर आसौन सक्रिय जाति के अधिकारियों, जागीरदारों आदि को जातीय सुधार हेतु तथा टीका प्रथा जैसी विनाशक रूढ़ियों की समाप्ति के लिये मिलकर प्रयास करने पर जोर दिया। उहोंने 'टीका-प्रथा' की उत्पत्ति के कारणों एवं उसके दुष्प्रभावों पर हिंदी एवं अंग्रेजी में एक विस्तृत लेख तैयार कर ए. जी. जी. को भेजा तथा हित-

[ 1 ] यह भाषण आगरा से प्रकाशित "राजपूत" पाक्षिक के 15 दिसम्बर 1905 के अंक में प्रकाशित हुआ था।



कारिणी मभा के माध्यम से इस कुप्रथा को रानने के लिये कायवाही करने पर बार-बार जोर दिया ।<sup>1</sup>

सन् 1903 के जिल्ली दरवार में भाग नहीं लेना का जा साहस महाराणा फतहसिंह ने दिखाया था, उससे राजपूताना के उन नरेशों जागीरदारों अधिकांशों में साहस पैदा हो गया था जो अंग्रेज अधिकांशों के बराबर और हस्तक्षेप में पीड़ित थे । इसमें वेसरीसिंह वारहट जैसे देशभक्त एव मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए चेला करने वाले नातिकारी का हीमना बड़ा । उनका विश्वास था कि जब तक समस्त क्षत्रिय जाति की अधिकांश के मन्थकार से मुक्त नहीं किया जाता उसमें अच्छे सस्कार सद्बिचार एव स्वाभिमान के भाव पैदा नहीं हो सकते । उस समय नरेशों वड़े जागीरदारों, उपराजों की सताना को अजमर स्थित मेयो कॉलेज जमी मस्जिदों में अंग्रेजों में जिस प्रकार की शिक्षा दी जाती थी उससे उन बच्चा में दासता और हीनता के मस्कार हा पैदा होत थे जा जाति और देश के लिये धातक थे । वेसरीसिंह का विचार था कि बच्चा एव नवयुवकों का ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिये, जिससे उन्हें अपनी जाति, अपने देश और अपनी मन्कृति के इतिहास का वास्तविक ज्ञान

[1] काटा महाराज की सलाह आन के बाद वेसरीसिंह ने कुछ समय तक धर्मसुधार के कार्यों में भी रुचि ली । वे भारत धर्म महामंडल के सक्रिय कार्यकर्ता रहे । भारत धर्म महामंडल, काशी के स्वामी जानानन्द की उ होने शुरू स्वरूप स्वीकार किया । स्वामी जानानन्द स्वयं प्रचलित नातिकारी थे और अंग्रेजों के विरुद्ध भगवत कायवाही के पक्षधर थे । उनका राजपूताना और मध्यभारत के राजा-महाराजों और सामंतों पर भी बड़ा प्रभाव था । स्वामी जानानन्द के साथ वेसरीसिंह के निकट संबंधों के कारण राजपूताना के नरेश एव सामंतों पर प्रभाव बढ़ान में वेसरीसिंह को बड़ी मदद मिली । वेसरीसिंह की काव्य प्रतिभा को मायता देन हुए मद्रासमंडल के अध्यापक महाराजा दरमगा द्वारा उनका 'कविरत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया था । 1902 ई में स्वामीजी ने उनका मंडल का प्रतिनिधि बनाकर मद्रासमंडल के मंडल का दूर करने के लिये चलकर भेजा था । उहाँ महाराजा दरमगा का ममभा बुभाकर महामंडल के प्रधान पद पर बन रहने के लिये पुन तयार किया । इसी यात्रा के दौरान बंगाल भगवानदास [ भारतरत्न ] बाबू श्यामसुंदरदास तथा भीमती एनीविसिट एव श्री अरवि दे जैसे देशभक्तों से उनकी भेंट हुई ।

हो जिसमें उनमें आत्माभिमान और देशभक्ति के संस्कार पग हा और जिन्होंने उनमें आत्मविश्वास और आत्मबल जाग्रत हो। ऐसी शिक्षा प्राप्त करने वाला नवयुवक ही देश को स्वतंत्र करने की तथा उनकी तरफकी की बात माच सकता है।

इस विचार में कैमरोसिंह ने 1904 से 1913 ई के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार-प्रसार की कई योजनाएँ बनाई और प्रयास किये। जापान जैसे छोट्ट एशियाई देश द्वारा ज्ञान-विज्ञान में की गई उन्नति से बड़े प्रभावित थे, जिन्होंने कारण जापान ने कम जैसे बड़े देश को पराजित कर दिया था। जापान की विजय ने भारतीय नातिकारियों एवं राष्ट्रवादियों के हौसले बढ़ा दिये थे। उन्ही दिनों 1903-4 में बंगाल में नेशनल कालेज की स्थापना की गई थी जिसके पहल प्रिंसिपल श्री अरविन्द बन। 1904 में कैमरोसिंह ने राजपूताना में क्षत्रिय कालेज की स्थापना की योजना तयार की। उसी वर्ष जनवरी माह में अजमेर में आयोजित क्षत्रिय महामभा के अधिवेशन में क्षत्रिय कालेज की स्थापना का प्रस्ताव पाम हुआ तथा उसके लिये एक कमेटी भी बनाई गई। ठाकुर ओकारसिंह पलायथा उसके मंत्री बनाय गये।<sup>1</sup> कैमरोसिंह ने इस योजना की क्रियान्विति के लिये बहुत प्रयास किये किन्तु दबाव, भय और प्रमाद के कारण राजपूताने के नरेशों एवं सामन्तों से उनका सहयोग नहीं मिला।

ठाकुर कैमरोसिंहजी एक महती प्रतिभा के धनी तो थे ही साथ ही किसी विषय के मूल तक पहुँचने की उनकी जिज्ञासा बड़ी प्रबल थी और उसके अनुरूप ही उनकी क्रियाशक्ति भी बहुत सुव्यवस्थित और सुनिश्चित थी। युवावस्था में उन्हें इस बात की जिज्ञासा हुई कि शब्दा व उच्चारण पर उनका स्वरूप कसा बनता है, उसके वार्डनेश से नायुमण्डल में कम बनत है और अतत उनका प्रभाव किम प्रकार पडता है। इस अनुसंधान द्वारा व वणमाला का गमली प्राकृत रूप स्थित करना चाहत थे जिन्होंने संसार के लिये एक नवीन लिपि का आविष्कार हा सके।

एक वैज्ञानिक की भाँति उन्होंने इस विषय में अनुसंधान काय किया परन्तु देश की माँग के अनुसार उनका काय अलग ही दिशा में माड के चुका था। राष्ट्रीय शिक्षा, समाज सुधार और स्वाधीनता संग्राम के नातिकारी आन्दोलन

[ 1 ] ओकारसिंह पलायथा बाद में कोटा राज्य के दीवान हुए और ब्रिटिश सरकार से उनकी के सी एम भाई का लिताव मिला।

के प्रवाह म वे ऐस व्ह कि उहें समवन उत अनुसधान काय का बीच ही में त्यागना पडा । उनकी अधिकाश सामग्री उही के साधिया द्वारा नष्ट बरदी गई । यची खुची का सरकार ने जघ्न कर लिया । बुद्धेरा ही कागज उपनम्प हा सके हैं जा उनक बमानिक मस्तिष्क की सागी स्वरूप प्रस्तुत किय जा रह है ।

अनुमानत 1908 ई म वेसरीसिंह ने "राजपूताना एण्ड सैन्ट्रल इन्डिया एज्युकेशनल एमोसियशन फार टक्नीकन एज्युकेशन" की रूपरेखा तयार की जिसके द्वारा इस प्रदेश स तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने हतु विद्यार्थियों को जापान भेजने की व्यवस्था की जा मके । इम योजना के पीछे उनका उद्देश्य यह था कि एसोसियेशन के सचें स भारतीय विद्यार्थी उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिये इंग्लैण्ड के बजाय स्वतंत्र और उन्नतिशील देश जापान भेजे जाय और वे वहा स लौटकर देश की वनानिक तकनीकी उन्नति तथा भारत को उचागो एव स्वतंत्र राष्ट्र बनाने म सहायक हा । वस्तुतः उन दिना अधिकाधिक भारतीय नवयुवका को विदेश म शिक्षा हतु भेजने की योजना चल रही थी जिसस कि विदेश म जाकर व शिक्षा प्राप्ति के साथ साथ मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए प्रातिवारी विचार म भी दीक्षित किये जा सकें । टाकिया म एक 'इंडियन जापानीज एमोसियशन' भी था और वक्तव्य स्थित 'एमोसियेशन फार दी एडवामेन्ट ऑफ म.ई.टि.ए. एज्युकेशन इन इंडिया' इसक लिये काय कर रहा था जिसका सेक्रेटरी जोगेंद्रचंद्र घोष था ।

सन् 1913 ई म केसरीसिंह न क्षात्र शिक्षा-परिषद् की योजना बनाई ।<sup>2</sup> वेसरीसिंह ने क्षत्रिय जाति के नाम एक "अपील" जागी की जिसम क्षत्रिय जाति के पुनरुद्धार के लिये आह्वान करत हुए क्षत्रिय बालकों के लिय ऐसी शिक्षा पद्धति प्रारम्भ करने के लिये कहा गया जिममे कि सबमाधारण राजपूतों को सुशिक्षित सुशील, सदाचारी एव सच्चे क्षत्रिय बनाया जा सके । इम याजना मे प्राथमिक शिक्षा की प्रधानता देत हुए उसको इतनी सुलभ, मस्ती और विस्तृत बनाने का प्रयास किया गया कि जिसका लाभ गरीब से गरीब राजपूत उठा सक । इसके लिये स्थानीय और प्रांतीय छात्रालय स्थापित करने

[ 1 ] क्षात्र शिक्षा परिषद् की स्थापना के उद्देश्या पर प्रवाश डालत हुए वेसरीसिंह न कहा था- 'अविद्या के जग स वीर जाति की फौलादी नाब म अन्व द्धिद पड गये हैं और अर्थरूपी जल भीतर घुस गया है । विद्या के अभाव मे अज्ञान-स्वरूप की भावना विस्मृत हो जाने पर किसी भी जाति अथवा समाज का पतन अवश्यभावी है ।'

का प्रस्ताव किया गया। क्षत्रिय जाति के नाम यह "अपील" वस्तुतः समस्त मारनवासियों के लिये थी। ब्रिटिश सरकार ने इसमें राजद्रोह देखा। उसके अनुसार इसका उद्देश्य आतिवाद की शिक्षा देना था। केसरीसिंह ने यह अपील जोधपुर की राजकीय प्रेस में छपवाई थी। ब्रिटिश सरकार का इसका पता लगने पर जोधपुर महाराजा तथा उनके प्रधानमंत्री से जनरल सर महाराजा प्रतापसिंह सकट में पड़ गये। उन्होंने धबराकर केसरीसिंह के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार को सहयोग दिया।

इस योजना को सफल करने के लिये केसरीसिंह ने राजपूताना के समस्त राजपूत नरेशों, श्रीमंतों, जागीरदारों आदि से पत्र व्यवहार शुरू किया। एक प्रकार से इस याचना को क्रियावित करने में ही अपना जीवन समर्पित करने का निश्चय कर उन्होंने कोटा महाराज को अपनी सेवा से मुक्त करने का पत्र भी लिख दिया। उनकी योजना थी स्थान स्थान पर जाकर धन एकत्रित किया जाय और उसके द्वारा इस योजना को सफल बनाया जाय।

किंतु इसके पूर्व कि केसरीसिंह बारहठ अपनी इस नवीन योजना की क्रियावित के अभियान में पूरी तरह कूद पड़ते, कि ब्रिटिश सरकार द्वारा 31 मार्च 1914 को ब्रिटिश सरकार का तर्ता उलटने के राजनतिक षडयंत्र के मुकामे में शाहपुर में गिरफ्तार कर लिये गये।

अग्नेजी दासता से भानुभूमि की मुक्ति के लिये अदम्य इच्छा रखने वाले साहसी एवं दूरदृष्टा केसरीसिंह ने जब राष्ट्रीय आजादी की प्राप्ति हेतु क्षत्रिय जाति के लोगों को लड़ाई के मैदान में उतारने के लिये उनमें क्षात्र-धर्म जातीय सुधार, राष्ट्रीय-शिक्षा एवं देशभक्ति के विचारों के प्रसार का कार्य प्रारम्भ किया तो कुछ समय उपरान्त ही उन्हें यह समझ में आ गया कि उनमें दासता, परावलम्बता एवं हीनता की जड़ें इतनी गहरी जमी हुई हैं कि उनमें व्याप्त वुराईया और पतित मनोवृत्तियों को मिटाना और उनमें स्वाभिमान एवं राष्ट्रामिमान की भावनाएँ पैदा करना अत्यंत कठिन और दुष्कर कार्य था। यद्यपि वे सुधार एवं जाग्रति का कार्य करते रहे किंतु उह यह विश्वास हो गया था कि सत्ता के परिवर्तन के बिना जातीय एवं राष्ट्रीय उत्थान का कार्य संभव नहीं होगा। अतः केसरीसिंह जैसा दृढप्रतिभ, मेधावी एवं साहसी ध्यक्ति अथ माग एवं साधन ढूढने लगा और वह सुधारवाद से क्रांतिकारी भाग की ओर मुड़ गया।

इस शताब्दी के प्रथम दशक में भारत के कई भागों में अग्नेजी की भारत से ढूढाने के लिये देशभक्त नवयुवक सशस्त्र आतिकारी योजनाओं पर अमल

करन लगे थे। संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप, जापान और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में रहने वाले भारतीय भी अपने देश का गुलामी से मुक्त करन के लिये सशस्त्र-क्रांति की तयारी कर रहे थे। विदेशों में काम करने वाले भारतीय क्रांतिकारियों और भारत में सशस्त्र क्रांति की चेष्टा में भाग लेने वाले क्रांतिकारियों को बीच सम्पर्क स्थापित कर भारत में अंग्रेजों को निकालने की संयुक्त योजना तयार की गई तथा विदेशों में धन एवं हथियार एकत्रित किये जाने लगे। उस समय उत्तरी भारत में लाला हरदयाल,<sup>1</sup> रासबिहारी बोस, शंका-द्वनाथ सायान आदि के नेतृत्व में "अभिनव भारत" नामक क्रांतिकारी संगठन का काम का प्रसार हो रहा था। इसी क्रांति पूर्वी भारत में ज्योती-द्वनाथ मुखर्जी (जतीन बाघा) के नेतृत्व में सशस्त्र क्रांति के प्रयास चल रहे थे। राजपूताना में क्रांतिकारी कार्य की दृष्टि से उन्होंने लडाखू राजपूताना, जागौरदारा एवं नरेशों तथा उनके फौजों को चुना था, जिनका स्वाभिमान और स्वतन्त्रता के लिये जूझने का लम्बा इतिहास रहा था और जिनमें अभी भी स्वाभिमान की रक्षा की भावनाएँ विद्यमान थीं, जो 1903 और 1911 के दिल्ली दरबारों में महाराणा फतेहसिंह द्वारा की गई ब्रिटिश साम्राज्य की श्रवणा और श्रवणलना की कथवाही से स्पष्ट प्रकट हो गई थी और जिसको दब स्वर में अंग्रेज नरेशों ने सराहा था। शुद्ध ब्रिटिश सरकार महाराणा फतेहसिंह का कुछ नहीं बिगाड़ सकी थी। प्रथम दशक में कई क्रांतिकारी घर्मोपदेशक अथवा शिक्षक बनकर राजपूताना में काम करने लगे। जिनमें ताहौर निवासी भाई बालमुकुन्द, मिर्जापुर निवासी प. विष्णुदत्त त्रिवेदी और कानपुर निवासी सोमदत्त उर्फ लहरी आदि मुख्य थे। भाई बालमुकुन्द जोधपुर व राजकुमारा व ट्यूटर थे।

इसी काल बैसरीसिंह के साथ उनका सम्पर्क हुआ और स्वतन्त्र एवं उच्च विचारों वाला बैसरीसिंह तत्काल भारत की आजादी के लिये प्रयत्नशील इस अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी योजना में शरीक हो गया। बैसरीसिंह का इस कार्य

[1] लाला हरदयाल ने बाद में अमेरिका जाकर गदर पार्टी के संगठन का कार्य किया। यूरोप में श्यामजी कृष्ण वर्मा, मेडम कामा आदि ने क्रांतिकारियों को संगठित करने का कार्य किया। विदेशों में स्थित भारतीय फौजों में बगावत कराने तथा हथियार लेकर हजारों की संख्या में भारतीय क्रांतिकारियों के गुप्त रूप से भारत पहुँचाने की योजनाएँ बनाई गईं।

में शरीर होना राजपूताना की दृष्टि से महत्वपूर्ण बात थी, क्योंकि न केवल ठाकुर हृदयमिह बारहठ के पुत्र होने के नाते अपितु अपने विद्वता और काय-कुशलता, प्रयत्तिशील विचारों तथा समाज-सुधार और शिक्षा-प्रसार के कार्यों के कारण वे राजपूताना में प्रसिद्ध एवं प्रभावशाली व्यक्ति बन चुके थे। वोट नरेश तो उनके प्रति श्रद्धा रखते ही थे, राजपूताने के कई नरेश और रामधत उनकी बात मुनस और मानते थे।

केसरीमिह के साथ खरवा के ठाकुर राव गोपालसिह और जयपुर के अर्जुनलाल सेठी राजपूताना में "भूमिन्व भारत" मगठन के प्रमुख सूत्रधार बने, जिसमें बाद में केसरीसिह के अनुज जोरावरसिह, पुत्र प्रतापसिह और जामाता ईश्वरदान भी शामिल हुए। क्रान्तिकारी काय में भावक स्तर पर राजपूताने व नरेशा जागीरदारों, राजपूत नवयुवक आदि का शामिल करने की दृष्टि से 1910 ई में केसरीमिह ने राजपूताने में 'वीर भारत ममा' [भूमिन्व भारत की शाला] नामक मगठन की स्थापना की। केसरीमिह के प्रयास में राजपूताने व कई नरेश, सामाज और प्रभावशाली व्यक्ति इस ममा के सदस्य बने।

राजपूताना में गुप्त भ्रातृकारी मगठन ने निम्न काय निश्चित किये— श्रिया एवं श्रय लडाऊ जातिया में राष्ट्रीय विचारों का प्रसार, शिक्षा काय के माध्यम से नवयुवकों भ्रातृकारी काय में शामिल करना, क्रान्ति के लिख धन और शस्त्रास्त्र एकत्रित करना, राजपूताना की रियासत की पीशा में अभावत के विचार प्रसारित करना।

केसरीमिह ने "वीर भारत ममा" के गुप्त भ्रातृकारी काय को बड़ी सावधानी एवं चतुराई के साथ शान्ति मग के प्रचार, जातीय सुधार एवं शिक्षा-प्रचार के काय के साथ समुक्त किया। ठाकुर केसरीसिह, राव गोपालसिह खरवा और अर्जुनलाल सेठी न शिक्षा काय के माध्यम से श्रदेश के लिये मर मिटने वाले भ्रातृकारी नवयुवक तयार करने पर विशेष ध्यान लिया। उन दिनों श्रय समाज द्वारा संचालित स्कूल और कॉलेज ऐसी सस्थाएं थीं जहां शिक्षारिया में देश प्रेम की भावनाएं पैदा की जाती थीं। अतमर म्पित डी ए वी स्कूल ऐसी ही सस्था थी। भ्रातृकारी नवयुवक तयार करने की दृष्टि से ठाकुर गोपालसिह ने कुछ बालकों को डी ए वी हाईस्कूल में भर्ती करवाकर अपने व्यय में बोर्डिंग हाउस में रहने की व्यवस्था की, उनमें प्रमुख नारायणसिह,

[1] ठाकुर ईश्वरदान आशिया मेवाड़ राज्या के मोगटिया ग्राम के जागीरदार स्व ठाकुर जवानमिह के पुत्र हैं। उनका विवाह ठाकुर केसरीसिह की पुत्री चंद्रमणि के साथ हुआ। इस समय आपकी आयु 83 वर्ष है।

प्रेमसिंह और मगनसिंह थे। राजपूताने के अथ स्वाभिमानी परिवार व लाग अपन वच्चा का इस विद्यालय में विद्याध्ययन के लिये भेजत थे। केसरीसिंह के पुत्र प्रतापसिंह और जामात। इश्वरदान आशिया भी प्रारम्भ में डमी स्कूल में पड़े।

केसरीसिंह एक अनन्य देशभक्त थे। दूसरा का प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देने से पूत्र उहान दश के लिये सबस्व समर्पण का काय अपन घर से प्रारम्भ किया। उनके आदर्श चरित्र और दृढ़ विचारा के कारण उनका सम्पूर्ण परिवार देशभक्ति के रंग में रंग गया। उनकी प्रेरणा से उनका अनुज जारावरसिंह, पुत्र प्रतापसिंह और जामात। ईश्वरदान जीवन की आहुति मागत बाल शातिकारी काय में कूट पड़े। निस्सन्देह ऐसे उदाहरण बिरले ही मिलत हैं। इसी से प्रेरित होकर रामबिहारी बोस ने कहा था— एसे उदाहरण ता है कि पिता ने पुत्र का देश की बलिबंदी पर चढ़ने का भेज दिया पर तु मर मानने केसरीसिंह का यह पहिला उदाहरण है जिसने अपने पुत्र के साथ जामात। को भी धामे कर दिया है।

यह शातव्य है कि राजपूताना में गुप्त शातिकारी काय का प्रचारित एवं प्रसारित करने में मिजापुर निबामी ब्राह्मण प विष्णुदत्त त्रिवेदी [विश्वनदत्त] ने बड़ा जबरदस्त काय किया था। वह उग्र एवं क्रोधी प्रकृति का व्यक्ति था और अंग्रेजों के प्रति उसके रोम रोम में घृणा और प्रतिशोध की आग जलती थी। उसका सम्बन्ध उगाल के शातिकारी मगठन 'अनुशीलन समिति' से रहा था। मारवाड के गवा में धूम धूम कर बहा के क्षत्रिय बाणको का यथापचीत सस्वार कराने की आड में वह विप्लव की भावनाएं भरता था। वह केसरीसिंह का विश्वासपात्र साथी बन गया।<sup>1</sup> केसरीसिंह के द्वारा अनुनलाल सठी और राव गोपालसिंह के पान उसका आना जाना शुरू हुआ। जब अनुनलाल सठी ने अपनी वधमान जैन पाठशाला प्रारम्भ की तो विष्णुदत्त ने वहां अध्यापन का काय किया। बिहार के द्वारा जिन में स्थित निमज गांव के मठ पर धन प्राप्ति हेतु छापा मारने का काय का नेतृत्व विष्णुदत्त ने ही किया था, जिसमें वही का महत्त मारा गया था। धन प्राप्ति हेतु ही कोरा में जोधपुर के

[1] विश्वनदत्त भारत धम महामंडल का भी सक्रिय कामकर्ता था। कई शातिकारी महामंडल के धार्मिक काय के माध्यम से अपनी गतिविधियाँ चला रहे थे। 1910 ई. में राजपूताना में सनातन धम का प्रसार काय के नाम पर विश्वनदत्त को केसरीसिंह के साथ कोटा भेजा गया था।

रामस्नेही महत के मारे जान की यात्रना मे मी उसका प्रमुख हाथ था । जब 1912 ई म केमरीसिंह के पुत्री चन्द्रमणि का विवाह ईश्वरदान आशिया के साथ बोट मे किया गया, उस समय विष्णुन्त ने देवभक्ति पर बडा ओजस्वी भाषण दिया था ।

योजनानुसार अर्जुनलाल सेठी न जयपुर मे वर्धमान जैन विद्यालय प्रारम्भ किया जिसम प विष्णुदत्त जम प्रातिवारो विचारा के अध्यापक नियुक्त किये गये । यह मस्या प्रातिवारियो के सम्पक का केन्द्र बन गई और यहाँ नव युवका का प्रान्तिवारी विचारा म दीक्षित प्रशिक्षित करन का काम किया जाने लगा । केसरीसिंह ने अपने पुत्र प्रतापसिंह और जामाता ईश्वरदान को आगे की पढाई के लिये यहा भेज दिया । दक्षिण भारत से शोनापुर आदि के जन् विद्यार्थी भातीचन्द, माणिकचन्द देवचन्द आदि यहा पढते थे । एक पजाबी युवक जयचन्द और उदयपुर के कृष्णलाल वर्मा भी वहा विद्याध्ययन करने थे । अहिंसा और धम के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित मस्था म देश की आजादी के लिये सशस्त्र कायवाहिमा करने का प्रशिक्षण दिया जाता था । यहा विद्यार्थी "काल" और "केसरी" जम उपवातो विचारा के मराठी पन मगवाकर पढते थे ।

अपन यहाँ प्रशिक्षण के बाद सेठीजी विद्याधिया का चुन-चुन कर गुप्त स्थानो पर प्रातिवारी कार्यो हतु अथवा उनका प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु भेजा करते थे । प्रतापसिंह, छोटेलाल तथा ईश्वरदान को दिल्ली के अमर शहीद राम बिहारी बोस के अनन्य महयोगी अमीरचन्द के पास भेजा गया, जहा वे राम-बिहारी वास और शची व्रनाथ मायान के सम्पक म आये । वहा उग्ह रुस का "निहितिस्ट" साहित्य तथा 'निवर्टी' 'इंडिप डेम' आदि प्रातिवारी पम्पलट पढने को दिये गय । इसके बाद अपन चाचा जोरावरसिंह की तरह प्रतापसिंह भी गुप्त सशस्त्र प्राति के काय म आगे बढता ही गया ।

इधर केमरीसिंह राजपूत बालका की शिक्षा के लिये नन-तन आश्राम स्थापित करके छात्रो एव उनके अभिभावका म विदगी मत्ता के विरुद्ध प्राति वारी विचारो का प्रसार करने म लग हुए थे । भाग और जोधपुर म उग्हान बीडिंग हाउस स्थापित किये जहा बालका एव नवयुवको को राष्ट्रीय एव प्राति-वारी विचार लिये जाने लग । इन छात्रावासो का संचालन प्रातिवारी विचारो

[ 1 ] अर्जुनलाल सेठी देहली और राजपूताने के प्रातिवारियो के बीच कडी का काम करते थे ।



वाल व्यक्तियां को ही दिया गया। जोधपुर बॉर्डिंग हाउस का मुपरिंटेंडेंट सोमदत्त सहरी और कोटा बॉर्डिंग हाउस का मुपरिंटेंडेंट नारायणसिंह रहे। इस कार्य में नरेशा सामन्ता, रईसा आदि का सहयोग प्राप्त करने के लिए उन्होंने "क्षेत्र शिक्षा परिषद्" की योजना बनाकर क्षत्रियों के नाम दण्ड भक्ति के विचारों में पूर्ण कर एवं सामिक अपीन प्रकाशित की।<sup>1</sup> उन्होंने इस अपीन को अयजी सरकार की देशी फौजों की राजपूत रेजिमेंटों में गोपनीय ढंग से प्रचारित करवाया और उनमें सरकार के विरुद्ध विद्रोह की भावना भरने का प्रयास प्रारम्भ किया।

23 दिसम्बर 1912 को दिल्ली में शाही जुलूम में हाथी की सवारी पर जाते हुए बायसराम पांडे हाडिज पर प्रातिकारियों द्वारा बम फेंका गया, जिसमें वह बाल बाल बच गया। यह माना जाता है कि केमरीसिंह के कनिष्ठ भाता जारावरसिंह ने एक अय प्रातिकारी बमन विश्राम को साथ लेकर बम फेंका था। पूरी ध्यानबीन व बावजूद पुलिस को कोई सूत्र नहीं मिला इस घटना में अग्रेसर शासनाधिकारियों में खनबली मच गई और भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलने लगी। यद्यपि बायसराम बच गया किंतु इस सफल बायबाही में प्रातिकारियों का हीसल बढ गया।

अनुमानत दोस्रो काल में 1909-10 में ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुस्तान के लिए सरकार का कानून (गम ला ऑफ इण्डिया) लागू किया। यह कानून परोक्ष रूप में भारतवासीयों से शस्त्र आदि रखने की बची खुची आजाधी छीन लेने का पड्यत्र था। केमरीसिंह ने खुले रूप से इसका विरोध किया और राजपूताने के सभी राजाओं का इस कानून को अस्वीकार करने के लिए आग्रह किया। उन्होंने अपने पत्र में लिखा कि इसके द्वारा शस्त्र-स्वतंत्रता पर तारसेम का अक्रुश रखकर परोक्ष रीति 'आम्स एक्ट' लागू किया जा रहा है जिसे

[1] अपीन में क्षत्रियों को अपनी दलनीय स्थिति से अवगत कराते हुए उन्होंने लिखा था

घर जिए धाणक घूजती प्राणक रही निशक ।  
 वही जान दाणक हुई अई विधाना अब ॥  
 एर । तरुवर तीहिकी, महिमा बढी न नूर ।  
 मव सो पावे नही, पत्र ले जात लपूर ॥  
 नामद ऐसा हो न तू यह योग्य है तुम्हका नहीं ।  
 शाभा बढाती क्षत्रि कुल की, है नपुमकता कही ॥

परिणाम राजपूत राज्यों के लिये आत्मघाती हमे और अब तक नाममात्र के लिये बची बचाई कुलदेवी स्वतंत्रता का सदा के लिये तिलाजलि दे दी जायगी ।

सन् 1913 के लगभग यूरोप में विश्वयुद्ध के बादल मडराने लग जिनमें विश्व की बड़ी शक्तियों को उलभन की समावना थी । जर्मनी से ब्रिटिश सरकार का युद्ध अवश्यमावी लगता था । ऐसी स्थिति का लाभ उठाने की दृष्टि से क्रांतिकारियों ने धन और हथियार एकत्रित करने तथा विद्रोह की तयारियां अधिक तेज करदी । विभिन्न स्थानों पर देशी फौजों की बगावत के लिये पक्के प्रयास शुरू किये गये । राजपूताना में इस कार्य को सम्पन्न करने का दायित्व ठाकुर कंसरीसिंह राव गोपावसिंह खरवा, अजुनलाल सेठी, कुंवर प्रतापसिंह आदि को दिया गया । क्रांति की तारीख 21 फरवरी 1914 ई निश्चित की गई । स्वतंत्रता का घोषणा पत्र तयार किया गया और विद्रोह के स्थान और संगठन निश्चित किये गये और राजपूताना में विभिन्न छावणियों में गुप्त रूप से विद्रोह के संगठन का कार्य शुरू किया गया । इसमें प्रधानतः प्रतापसिंह, जोरावरसिंह, सोमदत्त लहरी आदि ने यह कार्य किया । अंग्रेज सरकार को अपने विरुद्ध राजपूताना में गुप्त राजनतिक कार्यालयों का आभास मिल चुका था और कंसरीसिंह के विचारों, प्रचार-प्रसार और संगठन कार्यों को देखकर उन पर पूरा सन्देह हो गया था किन्तु राजपूताना में उनके प्रभाव और नरशा एवं सामंती के साथ उनके प्रिय सम्बंध के कारण बिना प्रमाणों के गिरफ्तार करना कठिन था । स्वयं कोटा नरेश तथा राजपूताना के अन्य प्रमुख नरेश एवं अन्य सामंत उनको गिरफ्तार नहीं करवाना चाहते थे किन्तु अंग्रेज सरकार उनकी गतिविधियों से भयभीत थी और उन पर कार्रवाई करने की ताकत में थी ।

भरसक प्रयत्नों के बावजूद क्रांतिकारियों को धन की कमी महसूस हो रही थी ऐसी स्थिति में राजपूताना के क्रांतिकारियों ने दो छवणियों की योजना बनाई । इस योजना को तयार करने में विष्णुदत्त का प्रमुख हाथ था । मित्रता यह माना गया कि राष्ट्रीय हित में डकैती से धन प्राप्त करना अनुचित नहीं है । क्रांतिकारियों ने पता लगाया कि जोधपुर रामद्वार के महंत प्यारेलाल और आरा जिले में निमैज मंदिर के महंत भगवानदाम न विपुल सम्पत्ति एकत्रित कर रखी है । धन प्राप्ति के इन प्रयासों में दोनों महंतों का जान से हाथ धोना पडा और क्रांतिकारियों का उद्देश्य भी पूरा नहीं हुआ । जून 1912 में जोधपुर रामद्वारे के महंत प्यारेलाल का कोटा लाकर उसमें तिजोरी की खानियां प्राप्त करने की कोशिश की गई । इस कोशिश में महंत की

हो गई और उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। 20 मार्च 1913 को नीमज (भारा) के मंदिर पर छापा मारा गया जिसमें महंत और उसका तीर्थर मारा गया किंतु प्रांतिकारी मंदिर की तिजोरी नहीं ताड़ सके और उनको बिना धन प्राप्ति के ही लौटना पड़ा इस कायवाही में विष्णुदत्त और जारावरसिंह के अलावा सेठजी की प्रांतिकारी पाठशाला के विद्यार्थी मोतीचंद जयचंद और माणवचंद आदि शामिल थे।

फरवरी 1914 में जब दिल्ली में सुप्रसिद्ध प्रांतिकारी श्रीमदचंद के मकान की तलाशी ली गई तो पुलिस को उन लोगों की सूची हाथ लगी, जिनको 'लिबरल' दम्पलट भेजी गई थी। उसमें अजु नलाल सेठी का नाम भी था। उनका इंदौर में गिरफ्तार किया गया। उस समय के इंदौर में पाठशाला चलाते थे। उनको पकड़कर दिल्ली लाया गया किंतु पुलिस को कोई सूत्र हाथ नहीं लगा। किंतु उसी समय सेठजी की दो पाठशाला के एक अध्यापक शिवनारायण को बम्बई में पकड़ा गया। यह व्यक्ति पहले जोधपुर में राजपूत चारण बाहिंग हाउस में व्यवस्थापक रह चुका था। उसने भारा (निभेन) हत्याकांड की सारी जागवाही पुलिस का दे दी। चूंकि सेठजी के विद्यालय छात्र मोतीचंद, माणवचंद और जयचंद इस कांड में सम्मिलित थे इसलिये तलाशी ली गई। उस तलाशी में सांकेतिक भाषा में लिखा हुआ एक पत्र तथा बीर भारत सभा के सदस्य की सूची तथा अन्य पत्रादी मिले। जोधपुर में रामकरण को गिरफ्तार किया गया। इससे भारा केम की तहकीकात के दौरान लगभग एक दर्जन पुरानी घटना जोधपुर के महंत प्यारराम के रहस्यमय ढंग से लापता हो जाने के मामले को पुनः उठाया गया।

सन्धे असें से अग्रेज सरकार केसरीसिंह की ब्रिटिश विरोधी गतिविधियां के कारण श्रद्ध थी किंतु किसी ठोस प्रमाण के अभाव में वह उनका नहीं पकड़ पा रही थी। महंत प्यारराम की हत्या का केम बनाकर केसरीसिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। उनके साथ ही राजपूताने में कायरेत सभी प्रांतिकारी अजु नलाल सेठी विष्णुदत्त, सामदत्त, राव गापालसिंह आदि लोग अलग अलग स्थानों पर गिरफ्तार कर लिए गये। बाद में प्रतापसिंह और ईश्वरदान भी पकड़ लिए गए किंतु जारावरसिंह गिरफ्तार नहीं हुए। कायवाहियों में शामिल अन्य लोग माणवचंद मोतीचंद रामकरण, हीरालाल जागरी लक्ष्मीलाल आदि भी गिरफ्तार हो गए। भारा केम में शिवनारायण तथा कोटा केम में रामकरण और लक्ष्मीलाल मुखबिर हो गए किंतु रामकरण ने बाद में स्पेशल जज की अदालत में अपने बयान बदल दिये।

इस बीच अंग्रेज सरकार द्वारा 21 फरवरी के सैनिक विद्रोह एवं सशस्त्र शक्ति की तमाम तैयारियाँ विफल कर दी गईं और देश भर में शक्तिकारियों की धरपकड़ की गई। 31 मार्च को बिना कोई अभियोग लगाय कैप्टरीसिंह भाहपुरा में इंदौर पुलिस के अधिकारियों द्वारा पकड़ लिये गये। बाद में वे 3 जून को इंदौर से कोटा लाय गये और कोटा की स्पेशल अदालत में उन पर महत्त प्यारराम हत्याकांड, राजद्रोह एवं राजनतिक पडयंत्र का मुकदमा चलाया गया। यह मुकदमा 23 जून को ब्रिटिश सरकार के सेंट्रल ब्यूरो आफ इंटेलिजेंस, दिल्ली के चीफ मर चार्ल्स क्वीवलेड की देख रेख में मि ग्रामस्ट्राग आई पी इंचार्ज प्रोसीक्यूशन, के रूप में मुकदमें में तहकीकत और सहायता के लिये नियुक्त किया गया था। कैप्टरीसिंह के अनुज विशोर्साह अपन भाई के पक्ष में मुकदमा की परवी के लिय लखनऊ के सुप्रसिद्ध राष्ट्रभक्त बरिस्टर नवाब हामिद अली खान को लेकर आये। इस पर मर चार्ल्स क्वीव लड की मनाह पर 22 जुलाई 1914 को देहली के एडवोकेट रायसाहब मूलचंद को काटा दरबार की आर से प्रोसीक्यूशन कौमल नियुक्त किया गया। रायसाहब मूलचंद नाहौर-देहली कान्सपिरेसी केस में भी सरकारी वकील थे। ठाकुर कैप्टरीसिंह के खिलाफ इस मुकदम के कारण सारे राजपूताने में तहलका मच गया। अधिकांश नरेशों और सरदारों की उनके प्रति सहानुभूति थी। स्वयं काटा महाराज, कोटा दीवान और अन्य अधिकारीगण भी उनके प्रति सहानुभूति रखते थे यह बात अंग्रेज सरकार से छिपी नहीं थी। कोटा कैस राजनतिक दृष्टि से उस काल का अत्यंत महत्वपूर्ण मामला बन गया। प्राय भारत के ममस्त प्रांता के बड़े बड़े अंग्रेज पुलिस अधिकारी कोटा पहुंच गये, कई राज्यों के अंग्रेज पोलिटिकल एजेंट भी कोटा आये। उन दिना कोटा एक प्रकार से गौरागो की छावनी बन गया। 'पायोनियर' और टाइम्स आफ इण्डिया" जैसे पत्र ठाकुर कैप्टरीसिंह के विरुद्ध निरन्तर विषम वमन करते रहे थे। किंतु ब्रिटिश सरकार का दबाव बराबर बना रहा। दिनांक 6 अक्टूबर 1914 को ट्रायल जज मुशी श्रीराम चौबे द्वारा कैप्टरीसिंह को बीम वप की आजीवन कारावास की मजा सुनाई गई।<sup>1</sup> सोमदत्त लहरी एवं रामकरण को भी

[ 1 ] केन्द्रीय खुफिया विभाग के अधिकारी ग्रामस्ट्राग ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि राजपूतान में राजद्रोह फलने में दो व्यक्तियों-कैप्टरीसिंह और अनुज नलाल सेठी का प्रमुख हाथ है। ये शक्तिगण प्रवृत्तिया की आड में नवयुवका में शक्तिवादी विचार भरते हैं। इन्होंने राजपूताने से राजनतिक अपराध कम करने के लिय देहली में अमीरचन्द के पास विचारोमुख नवयुवक भेजे हैं। वस्तुत राजपूताने के शक्तिकारियों में सबसे प्रमुख कैप्टरीसिंह ही हैं। उस की यह याचना थी कि देश में जहाँ कहीं राजपूत रेजिमेंट तनात हैं, वहाँ जाकर उनमें राजद्रोह के विचार फैलाये जायें।

अजीवन बारावाम तथा हीरालाल को तीन वष बंद की मजा दी गई । इसमें कोई सदेह नहीं है कि अंग्रेज सरकार केसरीमिह का राजद्रोह और हिंसा द्वारा सरकार का तत्त्वा उन्मूलन के मामले में फमाकर मृत्यु दण्ड देना को प्रातुर थी किंतु इसमें उसका सफनना नहीं मिली । बरिस्टर नवाब हामिद अली खान<sup>1</sup> ने मुकदम में फमरीमिह की परकी करत हुए उनके व्यक्तित्व और उत्कट देशभक्ति से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने भरी अदालत में दिनांक 2 मितम्बर 1914 को मुल्जिम केसरीमिह की प्रशंसा में एक नए म पढी जिसका पन्थिया इस प्रकार है—

यह इरशाद अदालत है—उठो तुम बहस का "हामिद  
निगाह मुल्जिमा की भी मगर कुछ तुमसे बहती है ।  
अदम स यह गुजारिश है हुजूर अब गार से दम भग,  
इधर देखे कि लपज खून होकर दिल स बहती है ।  
लहू का एक दरिया जो न देखा जाएगा हर्गिज,  
बहगा इस जमी पर खूनियाँ जिस जा प रहती है ।  
इसी इजलास में यान बहगे किस्सा मुल्जिम का,  
को मुल्जिम शायर-यन्ता सवायें जिनका बहती है ।  
को मुल्जिम उम्र जिसकी दश की खिदमत में गुजरी है,  
को मुल्जिम पानी हाकर हडिया अब जिनका बहती है ।  
वही मुल्जिम बरानेर बंद जिसको हिरामत है  
बदन में हडियाँ जितनी हैं सब तकनीफें सहती हैं ।  
को मुल्जिम केसरी जा जानी दिल से दश का हामी,  
को जमी खूनियाँ बखराव का दम भगती रहती है ।  
दहन शाहरन मुनी = आपके इत्साप की हमन  
अदालत गुस्तरी की नहिंया हर सिम्त बहती है ।  
महाराजा के माय में यही नामक रह हामिद  
रियामन की भनाई हा दुआयें हक स बहती है ।

[ 1 ] हामिद अली खान एक अत्यंत प्रभावशाली व्यक्ति तथा उत्तम जूक विद्वान बरिस्टर थे । सदन में संपन्न छ यष के निवासवान में उनकी एगट व बच स बंद राजनीतिज्ञा, मंत्रियों और अधिकाग्निया प्राप्ति में मनी एक परि षय रहा । व यही बंद राजकीय समाराहा में सामप्रिय किय जान थ । 21 मई 1883 ई का भारत के सायमराय लाइ नाथबुक्क न प्रिंस आफ यम [ जा बच में एगट व सप्तम व नाम स प्रिंसि मन्नाट बने ] में उनकी मट बगई थी ।

ठा केसरीसिंह को न केवल बीस वर्ष बठोर बंद की सजा दी गई, अपितु उनकी हजारा रुपया का वार्षिक की देवपुरा की सम्पूर्ण पैतृक जागीर और शाहपुरा स्थित उनकी विशाल हवेली और सारी सम्पत्ति भी अंग्रेज सरकार के दबाव के कारण शाहपुरा राजाधिराज द्वारा जब्त करली गई, जिनमें उनका विशाल पुस्तकालय 'दृष्टगुवागी विनाम' भी शामिल था। इससे उनकी पत्नी और बच्चे माघनहीन बनाकर सड़क पर उतार दिए गए। ऐसे विकट समय में कोटडी [कोटा] ठिकाने के साहसी देशभक्त कविराज दुर्गादान<sup>2</sup> ने अपनी बुझा वीर महिला माणिक्यकुंवर और बच्चा को अपने यहाँ बुला लिया। कुंवर प्रतापसिंह फिर फरार हो गए और दानिकारियों द्वारा पुनः की जा रही सभ्यता की नयागी में भाग लेने लगे।

ब्रिटिश सरकार सारी कोशिशों के बावजूद प्रांतिकारियों के समस्त केंद्र ध्वस्त नहीं कर सकी थी और उनकी वायव्याहिया बंद नहीं हुई थी। ऐसी स्थिति में केसरीसिंह जम प्रभावशाली एवं जनप्रिय व्यक्ति को कोटा जेल में रखना खतरा मंथानी नहीं था। उधर ब्रिटिश साम्राज्य के विश्व-युद्ध के तलदल में फसने के कारण भारत में उसकी स्थिति संकटपूर्ण हो रही थी। इसीलिए उमन केसरीसिंह का कोटा जेल से हटाकर बिहार की हजारीबाग जेल में भिजवा दिया।

केसरीसिंह की पत्नी और बच्चे बेघर हो गए थे। उनका बड़ा लड़का प्रतापसिंह जान हथेली पर लिये बतन की आजादों के लिये दौड़ घूम कर रहा था और वे स्वयं हजारीबाग जेल में एक साधारण बंदी की भाँति खकी पीसने लगे, गंदी जगह, गंदे वस्त्र और गंदे खाना, मपराधियों से भरा चारो और का वातावरण और बीस वर्ष बठोर यातना की सजा। किन्तु देशभक्त एवं बलिदानो केसरीसिंह लक्ष्मण भी विचलित नहीं हुए। शाहपुरा में गिरफ्तार

[1] कविराज दुर्गादान ठाकुर केसरीसिंह के प्रयालक पुत्र और ईश्वरदान आशिया के बहनोई थे। उन्होंने सदैव केसरीसिंह की राजनतिक वायव्याहियों तथा समाज-सुधार के कार्यों में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से साथ दिया। प्रायः सठौंजी और केसरीसिंहजी अपनी गुप्त मंत्रणाएँ इनके यहाँ किया करते थे। बीजाया विमान आदालत के सूत्रधार प्रांतिकारी विजयसिंह अधिक (भूपसिंह) ने अपना अधिनाश गुप्तवास कोटडी में ही किया था। महादेव नेसाई, माणिक्यलाल वर्मा तथा अन्य कई देशभक्त वायवर्ता इनके यहाँ कार्यार्थ आते और महामान हाँते थे।

होते ही बेसरीसिंह न प्रतिभा की थी कि भ्रम ग्रहण करूँगा ना सिर्फ अपनी पत्नी मणि [माणिक्यकुंवर] के हाथ का बना हुआ ही<sup>1</sup>। जजारीबाग जेल में जहाँ उन्हें बान बाठरी [सोलिदरी गेल] में रखा गया था, उन्होंने भ्रम लने से इन्कार कर दिया और फिर और दूध की माँग की किन्तु उनकी माँग नहीं मानी गई। अठारह दिन तक वे निराहार रह। नाक सतनी द्वारा चावल का भाँड़ भ्रमवा जा भी वस्तु उनको दी जाती थी उसका वे उल्टी करके वापस बाहर निष्कास देते थे। 29 वें दिन अधिकारी उनका दूध दान पर राजी हुए, किन्तु बहुत कम और सात दिन बाद उन्हें फिर धनशन करना पड़ा। वस्तुतः उनका लगभग 18 महीने तक यह सधप करना पड़ा। अन्त में दमभल की तपस्या और साधनों के आग सरकार का भुक्त्ना पड़ा। बगरीसिंह 1 पाच वर्ष के अल्प जल जीवन के दौरान सिर्फ दूध का ही भ्रमना आहार रखा और भ्रमना दृढ़ सक्त्प लिभाया।

उनका जल जीवन एक तपस्वी का जीवन रहा। शांत, नियमित और समयित जीवन किसी प्रकार की निराशा, कुंठा, तनाव भ्रमवा प्रसक्तोप नहीं, अपने उद्देश्य और प्रयोजन में अद्वैत विषयम और आस्था तथा अपनी तपस्या और साधना की अनिवाद्य सफलता के प्रति पूर्ण आशावादिता। उनके आत्मबल समयित जीवन और सद्व्यवहार न वेदिया, जेल कमचारियों और अधिकारियों सभी को समान रूप से प्रभावित किया। जेल में वेदिया का व प्रायः अधर ज्ञान कराते और उनको सदजीवन का पाठ पढाते थे। बाद में जब उनसे चक्की पिसवाना बन्द करके जिल्द बन्दी का वाय लिया जान लगा तो उन्हें विभिन्न भाषाभाषा एव विषयों के ग्रंथों के पढ़न का भ्रवसर भी मिला। बन्दी जीवन में उन्होंने बगला का बहुत अध्ययन किया और दशन, राजनीति एव साहित्य की अनेक पुस्तकें पढ़ीं। जेल में ही उनका कल्पित बगानी क्रांति कारियों से मिलाप हुआ और अदेमातरम् के अभिवादन से उनका परिचय बढ़ा। उस समय ठाकुर बेसरीसिंह ने बगाली भाषा में निम्न कविता लिखकर उनको भेजी, जिससे वे बड़े आनन्दित हुए—

मरिमरि की सुन्दर बग बाणीरधर,  
प्रतिरत्न दीप्तितर, हरे छ आधर ।  
जाचित छि किच्छू खन, मुग्ध करिवार मन ।

[1] ठाकुर बेसरीसिंह को यह भी भ्रम था कि अंग्रेज अधिकारी उनके आत्मबल को कमजोर करने के लिये भोजन में विषाक्त पदार्थ मिलाकर खिलवा सकते थे।

काटिते कठिन दिन, अथ-वारागार ॥  
जानी ना वत की वेशे, जननी पुस्तकपाणि ।  
आशिया छ कारादेशे, भक्तवत्सल वाली,  
दिदुक्षा मायेर मुग्न, सूची रूपे मम,  
भाइयेर तरे भाई, लहिब "प्रफुल्ल" श्रम ॥

अपने पिता को मजा होन के कुछ समय बाद प्रतापसिंह फरारी जीवन मे जोधपुर के निकट प्राणानाडा स्टेशन मास्टर द्वारा धाखे से गिरफ्तार करवा दिये गये थे । उनका बरली जेल मे रखकर आतिकारियों का भेद जानने के लिये कई प्रकार की यातनाएँ दी जा रही थी किन्तु कोई भी यातना और कोई भी प्रलोभन बाईम बध के उस वीर नवयुवक का मुह नही खुलवा सके ।

भारत सरकार को यह बात था कि कु वर प्रतापसिंह बारहठ समस्त आतिकारी दल के सर्वोच्च नेता महाविप्लवी रासबिहारी बोस व सबसे अधिक विश्वस्त सहायक थे । वे उस सम्पूर्ण याजना को जानते थे जो रासबिहारी बोस ने पशावर से लेकर कलकत्ते तक समूचे उत्तर म विप्लव खडा करन के लिए बनाई थी और पेशावर से लेकर कलकत्ते तक की सभी छावनियो म सेनाओं को बिद्रोह करने के लिए तयार कर लिया था । अंग्रेज की सत्ता नष्ट हो जाने पर कौन किस प्रदेश का सभालेगा यह भी उस योजना मे निश्चित था ।

अन्तु, उन्होंने कु वर प्रतापसिंह को आतिकारी दल की उस योजना को बता देन के लिए सभी प्रकार के लालच दिए, पर वे टम से मस नही हुए । भारत सरकार उनसे जानकारी प्राप्त करने को कितना महत्व देती थी यह तो इसी से सिद्ध होता है कि तत्कालीन डायरेक्टर आर्क डटेलीजेंस, सर आर्चीबान्ड क्लीवलैंड, देहली से बनारस जेल मे कु वर प्रतापसिंह से बात करन क लिय आया था । अन्त मे उनकी कामल भावनाओं को जाग्रत करने के लिये उनसे जब कहा गया कि तुम्हारी माता तुम्हारे लिए निरन्तर अश्रुपात करती रहती है, कु वर प्रतापसिंह ने भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के डायरेक्टर को जो उत्तर दिया था वह आतिकारी आंदोलन के इतिहास म अद्वितीय है । उन्होंने कहा था—

“मेरी मा को रोने दो जिससे सकडो माताआ को न रोना पडे । यदि मैंने दल का भेद खोल दिया तो यह मेरी वास्तविक मृत्यु होगी और मेरी माता का अमिट कलक होगा ।”



ब्रिटिश अधिकारियों को विश्वास था कि जेल में अपने पिता की भीषण कष्टदायक दशा को दरावर प्रतापसिंह अपना धर्म और विश्वास का बटैगा। कुअर प्रतापसिंह को एक दिन अपने पिता श्री केसरीसिंह से मिलान हेतु हजारीबाग जेल लाया गया। केसरीसिंह इस बात का समझ गया। वे बोले, "प्रताप जानता है कि वह केसरीसिंह की सतान है। वह प्राणा के मोह अथवा अर्थ किसी प्रतापन से विश्वासघात नहीं कर सकता है।<sup>1</sup> प्रताप कुछ नहीं बताने साधे रहे और एक दिन (1981 ई.) उस अदम्य मीन साधना में ही नशस यातनाओं का शिकार होकर वह नवयुवक मानृभूमि की आजादी के लिये कुआन हो गया और भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में महाड के महाराणा प्रतापसिंह से लगभग साठे तीन सौ वर्ष बाद इसी भूमि के एक और प्रतापसिंह-कुअर प्रतापसिंह बारहठ-का नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो गया। केसरीसिंह को अपने पुत्र की इस कुबानी का पता जेल से छूटने के बाद ही चला।

उही दिना आजीवन कारावास हो जाने के पश्चात् कोटा सेट्रल जेल से सन् 1915 में ठाकुर केसरीसिंह ने अपनी पुत्री चन्द्रमणि (जातिकारी ईश्वरदान की धर्मपत्नी) को जो पत्र लिखा वह उनका महान् देशभक्ति और उत्कट आत्मबलिदान की भावना का परिचायक है। उन्होंने लिखा था- 'भारत में जन्म लेने के साथ ही जो कर्तव्य प्रत्येक मानव जीवन के साथ अविच्छिन्न प्राप्त होता है, जो ऋण देश की प्रत्येक सतान पर, चाहें पुरुष हों चाहें स्त्री, सब पर रहता है उसी कर्तव्य को पूरा करने, उसी ऋण से मुक्त होने में ही हमारा कल्याण है।

तुम अवश्य यह जानकर सन्तुष्ट होओगी कि भारत के एक महत्वपूर्ण प्रदेश में जागृति होने का शुभारम्भ अपने परिवार की महान् आहुति में ही हुआ है। इस राजसूय यज्ञ में हम लोगों की बलि भगलरूप हुई है।'

हजारीबाग सेट्रल जेल में केसरीसिंह की समयित, सात्त्विक एवं तपस्वी जीवनशैली तथा तजस्वी व्यक्तित्व एवं उदात्त विचारा सवृष्ट का अग्रज जल सुपरिटेन्डेण्ट कनल मीन एवं उसकी पत्नी बहुत प्रभावित हुए और उनके बीच मेल मिलाप बढ़ा। ठाकुर केसरीसिंह के साहित्य, दर्शन और इतिहास आदि के विपुल ज्ञान से लाभ प्राप्त कर कनल मीन और उनकी पत्नी उनके साथ विभिन्न विषयों पर चर्चा किया करते थे। धीमती मीन ने उनसे सस्त्रुत भाषा का अध्ययन भी किया। इस ब्रिटिश दम्पति ने केसरीसिंह से मुकदमे

[1] पत्रसिंह "मानव" के सम्मरण।

के सम्बन्ध में जानकारी भी हासिल की और अपने मामले में वायसराय को प्रपील बना की मलाह दी। बेसरीसिंह को प्रप्रेज सरकार से विगी प्रकार की भागा नहीं थी। फिर भी उदारमना जेल सुपरिन्टेन्डेंट के अधिप जाह दन पर बेसरी सिंह न वायसराय के नाम प्रपील लिख भेजी, जिगको जेल सुपरिन्टेन्डेंट ने अपनी मिफागि के माध वायसराय का भिजवाया। उम समय तब प्रथम महायुद्ध समाप्त हो चुका था। मित्र राष्ट्रों की विजय और वार्साई संधि के बाद ब्रिटिश सरकार भारत में कुछ नम रंग प्रपना रही थी। राजपूतान में शान्तिकारी प्रवृत्तियां समाप्त हो गई थी। परत बेसरीसिंह को लगभग पांच वर्ष कारावास मुगलन के पश्चात् 19 जुलाई 1919 ई को रिहा कर दिया गया। हजारीबाग जेल में मुक्त होकर जब वह बोटा भाग तो यह बात पत्नी की कोटा रियासत द्वारा उन्हें दुबारा गिरफ्तार कर जेल भेजने का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रकार के समाचार पत्रों में प्रकाशित भी हुए। इस पर प मदनमोहन मालवीय ने काटा के दीवान, दीवानबहादुर रघुनाथदास जीवे को पत्र लिख कर सायधान किया कि यदि ठाकुर साहब को दुबारा जेल भेजने का कोई उपक्रम किया गया तो वे स्वयं कोटा भावर सत्याग्रह करेंगे किन्तु रियासत द्वारा इस प्रकार की कोई वायवाही नहीं की गई।<sup>1</sup>

जेल से रिहा होकर ठाकुर बेसरीसिंह अपनी समुराल कोटडी बविराजा दुगाप्तानजी के यहां पहुंचे जहां उनकी पत्नी और बच्चे रहते थे। वे उस समय बहुत वृणवाय हो चुके थे।

1919 ई के मध्य तक भारत को स्वतंत्र करल की देश के भीतर एक विदेशा में की जा रही शान्तिकारी वायवाहिया प्रगफल हो चुकी थी। राजपूतान

[1] जब ठाकुर बेसरीसिंह हजारीबाग जेल में लौटने पर कोटा जवशन पर उतरे तो उनके स्वागताथ उपस्थित हुए मुहूदजनो में से किसी के द्वारा यह पूछा गया कि उन्होंने प्रताप की मृत्यु का समाचार जब सुना तो ठाकुर साहब ने धयपूर्वक सक्षित उत्तर दिया—“भापके ही मुख में” और दूसरी बात करने लग। पुत्र की मृत्यु पर पिता की मानसिक अवस्था क्या हो सकती है यह बतान की आवश्यकता नहीं। पर इस महापुरुष ने श्रवण ही धय और साहस के साथ इस दारण वृत्त को सुना और पी लिया क्योंकि स्वातंत्र्यसंग्राम रूपी यम में ठाकुर साहब के सिद्धांतानुसार प्रताप को एक ममिधा के रूप में अपनी आहुति देनी थी और उसका दे भी दी।

वा प्रांतिकारी मगठन बिगर गुना था। महारमा गाधी व राष्ट्रीय आंदोलन म पदापण व साथ ही कई प्रांतिकारी उनकी ओर मुड़ गय थे। वगरीसिंह के जेल से बाहर आने से पहल ही जेल से रिहा होकर अजुनलाल सठी तथा राजपूताना के अथ कई वामकर्ता वधा जावर महारमा गाधी के आश्रम मे वाम करन लग थे। उम समय अवश्य ही एक अथ प्रांतिकारी भूषसिंह, जा भरवा ठापुर गोपालसिंह व साथ थे। ठापुर साहन की गिरफ्तारी व समय फरार हो गय। वे बिजयसिंह पथिक का नाम धारण कर बिजोलिया (मवाड) बिमान आन्दोलन का मगठन एव संचालन करत हुए दण म एक नवीन प्रकार के जन आन्दोलन का सूत्रपात कर रहे थे।<sup>1</sup> राव गोपालसिंह न अजमेर जेल से रिहा होने के बाद राजनसिंह वाम से पूरी तरह सत्यास से लिया था। इधर राजस्थान निवासी सठ जमनालाल बजाज इस प्रदण म प्रांतिकारी राजनीति व स्थान पर गाधीवादी राजनीति व प्रचार प्रसार के लिये चेष्टा कर रहे थे। अधिकांशत उही व आमरण पर राजस्थान के कई राजनसिंह वामकर्ता वधा पहुच गय थे।

सभी प्रकार व सूत्रो एव सम्पर्को के टूट जाने तथा साधियों के बिखराव के कारण वगरीसिंह अकेले पड गय। जेल जाने व साथ ही उनका शिक्षा और समाज मुधार का समस्त वाम भी बिखर गया। प्रदेश के नरेशो एव श्रीमन्तो सामन्तो के साथ उनका अलगाव हो गया यद्यपि कई देशभवन नरेशो एव जागीरदारा की आंतरिक सहानुभूति उनके साथ बना रही, जिनमे कोटा महाराव भी प्रमुख थे। एक ओर सोवियत रूस की समाजवादी प्राति के परिणामो से दण की राजनीति प्रभावित हो रही थी। स्वयं राजपूताना म बिजोलिया बिमान आन्दोलन जसा जन आंदोलन रूसी प्राति की कई बातो से प्रभावित था। दूमरी ओर गाधीजी व विचार और आदेश भी जोर मार रहे थे। मौलिक राजनसिंह परिवर्तन आ गया था। एमी स्थिति म वगरीसिंह भी गाधीजी ओर काग्रेस आंदोलन की ओर प्रवृत्त हुए।

जेल से रिहा होने के कुछ माह बाद ही ठापुर वगरीसिंह ने राजपूताने के ए.जी.जी. को जनत थीय भावनाया से पूरा बडा विचारात्मेक पत्र लिखा। उहाने लिखा कि राजपूताने की रियासतो का सध बनाकर ब्रिटिश पार्लियामेन्ट की

[ 1 ] ईश्वरदान आशिया भी रिहा होकर उस समय बिजोलिया पहुच गय थे और अपन पिता के मित्र के पुत्र और ठिकान के तत्कालीन मैनजर दू गरीसिंह भाटी क यहा रहेकर बिजयसिंह पथिक की सहायता करते थे।

पद्धति पर राजपूताने में जो सदनों वाले सघीय शासन की स्थापना की जानी चाहिये। राजाभ्रा को अपनी शासन पद्धति में परिवर्तन करना चाहिये। यदि ऐसा नहीं किया गया तो "भ्राग जाकर नरेशों के लिये पश्चातापमयी स्मृति रह जायगी। प्रजा भ्राज केवल पैसा ढालने की प्यारी मशीन है और शासन उन पैसा को उठा लेने का यंत्र। यदि प्रजा को अधिकार देने में देरी की गई तो उसके भयकर परिणाम होंगे। अग्नि का चादर से ढकना भ्रम है, खेल है या छल है।"

इन्हीं दिनों अजु नलाल सेठी का पत्र मिला जिसमें उनको सपरिवार वर्धा भ्राने का निमंत्रण था। जैसा कि ऊपर कहा गया है देशभक्त सेठ जमनलाल बजाज न जा मूलतः राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश के चाण्णो की जागीर के गांव काशी का वास के निवासी थे कुछ अर्ध पूर्व ज्ञातिकारी अजु नलाल को वर्धा बुलाया था। सेठीजी की प्रेरणा से सेठजी न केसरीसिंह को भी सपरिवार वर्धा बुला लिया। उनकी पुत्री चन्द्रमणि और मामाता ईश्वरदास भी उनके साथ रहे। उस समय वर्धा में राजस्थान के कई अग्र्य देशभक्त कायकर्ता सवथी रामनारायण चौधरी, सागरमल गोपा, मुकुंदराम जाट, कल्याणलाल कल्याणी आदि भी वहां मौजूद थे। बिजयसिंह पथिक भी बाद में वहां पहुंच गये। वहां से 'राजस्थान केसरी' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन काय प्रारम्भ हुआ, जिसमें देशी राज्यों और प्रधानतः राजस्थान से सम्बंधित समाचार, विचार आदि छपते थे। प्रारम्भ में सेठीजी और केसरीसिंहजी इस पत्रिका में लिखते रहे। बिजयसिंह पथिक इस पत्र के सम्पादक और ईश्वरदास आशिया और रामनारायण चौधरी कुछ समय तक इस पत्र के सहसम्पादक रहे।

जब ठाकुर केसरीसिंह वर्धा पहुंचे तो इस खबर से वर्धा में बड़ी हलचल मची। ठाकुर परिवार के इस ज्ञातिकारी के सम्बन्ध में वहां पत्रिका में भी कई प्रकार की कहानियां चलती थीं। वर्धा पहुंचने पर उनका एक प्रकाशक राजाभ्रा का सा स्वागत किया गया।<sup>1</sup> वर्धा रहते हुए ठाकुर केसरीसिंह ने 1920 के सितम्बर माह में कलकत्ता कांग्रेस के विषय में प्रकाशक, एव मध्य भारत के अर से देशी राज्य प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। कलकत्ता में लौटने के बाद वे पाइलस की सीमा में एक प्रकाशक के रूप में अपनी समय वर्धा से उठे दिन 16 नवम्बर 1920 को प्रकाशक के रूप में

[1] उन दिनों वर्धा से प्रकाशित "राजस्थान केसरी" के सम्बन्ध में अजु नलाल केसरीसिंह के ज्ञातिकारी अजु नलाल सेठी ने लिखा, "राजस्थान केसरी" की गई। उनको राजपूताने के अजु नलाल सेठी ने बुलाया, जहाँ।

श्री बी जे पटेल का पत्र लिखा। कांग्रेस अधिवेशन में राज्या के प्रति निधित्व का सम्बन्ध में मुभाव के लिये एक उपमिति गठित की गई थी। केसरीसिंह ने अपने पत्र में राजपूताना, मध्य भारत एवं अजमेर को शामिल करते हुए इस प्रदेश का राजस्थान नाम देना तथा दहनी का पञ्जाब में शामिल करने का मुभाव दिया। उन्होंने यह भी मुभाव दिया कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में राजपूताना एवं मध्यभारत का प्रत्येक देश राज्य की ओर से कम से कम एक-एक प्रतिनिधि लिया जाय। दिसम्बर, 1920 के ऐतिहासिक नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में रियामती प्रजा का अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में प्रतिनिधित्व देना की दृष्टि में कांग्रेस का विधान में मोनिक सम्पादन किया गया तथा सम्पूर्ण हिन्दुस्थान की आजादी हासिल करना कांग्रेस का ध्येय घोषित किया गया।

1920 में महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असहयोग एवं अखिल भारतीय आन्दोलन छेड़ दिया। इस आन्दोलन का ठाकुर केसरीसिंह ने पूरा पक्ष लिया। उस समय उन्होंने राजा प्रजा के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा— 'भारत के स्वतंत्र होने पर दशों राज्यों की प्रजा की वही स्थिति होगी जो अद्य प्रांतों की होगी। देशी नरशा के भाग्य का फसला निज का आचरण के आधार पर है। यदि वे स्वायत्त्याग करके, प्रजा का प्रेम और विश्वास प्राप्त कर लेंगे तो प्रजा उनको कभी नहीं छोड़ेगी और यदि वे स्वायत्तता विदेशी नौकरशाही का अनुसरण कर प्रजा को दबाव में ला सकेंगे तो जो दशा नौकरशाही की होगी वही उनके लिये अनिवाय है। भारतीय जनशक्ति के अतिरिक्त भारत में अद्य कोई समय नहीं।'

वर्धा आश्रम में कुछ माह रहने के बाद 1922 में केसरीसिंह सपरिवार कोटा लौट आये। सम्पूर्ण सम्पत्ति जप्त हो जाने के कारण ठाकुर साहब के पास न तो रहने के लिये मकान था और न आजीविका का कोई साधन। कोटा महाराज का इनके प्रति मैत्रीभाव पूर्वक रहा। ठाकुर साहब का निवास-स्थान कोटा का ताराब के विस्तार हेतु अधिग्रहित कर लिया गया था। महाराज ने कुछ वर्षों बाद इसके एवज में नया भवन का निर्माण कर दिया जिसका नामकरण उनकी धर्मपत्नी के नाम पर माणिक्य भवन किया गया। वह उनकी धर्मपत्नी के स्वगवास के चार वर्ष बाद 1931 ई में बनकर तैयार हुआ। फिर भी आजीविका का कोई निश्चित साधन नहीं होने से उनका आगामी जीवन निरंतर अधिक संकट में प्रस्त रह्य। उनके साथ सहानुभूति रखने वाले कतिपय नरशों में सीतामऊ के महाराजा रामसिंह प्रमुख थे।

1921 के नवम्बर माह में “राजपूताना मध्य भारत सभा” की ओर से श्री चादवरण शारदा न ठाकुर वंसरीसिंह को अजमेर आन के लिये आमन्त्रित किया। पत्र में शारदा ने लिखा कि “आप पूज्य हैं, वामवीर हैं और प्रतिष्ठा के पात्र हैं। मैं आपको अपना पूज्य नेता मानता हूँ। आप जब भी चाहें अजमेर आँवें आपने लिये निवास का प्रबंध कर देंगे।”

वेंसरीसिंह अब अविनत अस्वस्थ रहने लगे। नवीन राजनतिक वातावरण उनकी प्रकृति और वायपद्धति के अनुकूल नहीं था। नवीन राजनीति में व्याप्त वैयक्तिक प्रतिस्पर्धा, वैमनस्य और गुटबन्दी से वे क्षिन्न रहे। धीरे धीरे वे सक्रिय राजनतिक वाय से अलग हाते गये, यद्यपि कांग्रेसों एवं राजपूतों में समाज सुधार का कार्य यथा शक्ति करते रहे। फिर भी कुछ वर्षों तक राजपूताने में प्रमुख राजनतिक एवं मावजनिक कार्यकर्ताओं से उनका सम्पर्क बना रहा। 1923-24 में राजपूताना में वायवर्त कांग्रेसजना में पारस्परिक वमनस्य और द्वेषभाव बहुत बढ़ गये प्रधानतः मठ जमनालाल बजाज, अजुन लाल सेठी, बिजयसिंह पथिक आदि के बीच वायपद्धति की बातों को लेकर भारी मतभेद पदा हो गये और कलह का वातावरण बन गया, जिससे स्वयं गांधीजी का हस्तक्षेप करना पडा। उस समय राजपूताना में कई कांग्रेसजनों द्वारा जमनालाल बजाज के प्रति विरोधी भावनायें प्रदर्शित करने के लिये अजुनलाल सेठी को दोषी ठहराया गया। इसके सम्बन्ध में वेंसरीसिंहजी और सेठीजी तथा गांधीजी और वेंसरीसिंहजी के बीच पत्र व्यवहार हुआ। इस विषय में कानपुर अधिवेशन के सम्बन्ध में वेंसरीसिंहजी के पत्र के उत्तर में गांधीजी ने अपने 6-3-1925 के पत्र में लिखा — “ऐसी इच्छा थी कि “यंग इंडिया” में कुछ न कुछ लिखूँ। अब सीधता हूँ लिखने से कोई लाभ नहीं है। किसी ने ऐसा माना ही नहीं था कि सब प्रतिनिधि सेठीजी के वश में हैं और दोषित हैं।” इसी समय सेठीजी ने ठाकुर साहब को लिखे गये एक पत्र में जो विचार व्यक्त किये वे अत्यंत मार्मिक एवं भावात्तेजक होते हुए उनकी बेजोड भन्नी और अटूट पारस्परिक विश्वास के भी प्रतीक हैं। सेठीजी ने इस विषय में अपना दिनांक 25-5-1924 का पत्र वेंसरीसिंहजी को “हृदय मंदिर के पूज्यदेव” सम्बोधित करते हुए लिखा था। दिनांक 28-5-1924 के पत्र में सेठीजी ने लिखा—“आप दास सेठी को जा भी आना देगे वह मनमा, वाचा, वमणा शिरोधाय हीगी। यदि आप मुझे दोषी ठहरायेंगे तो देहात प्रायश्चित्त तक भी सह्य मजूर करूँगा।”

1 यह पत्र राजस्थान मध्य भारत तथा अजमेर मेरवाडा (प्रांतीय) कांग्रेस कार्यालय से भेजा गया था। पत्र के ऊपर एक और “वदे मातरम्” तथा दूसरी ओर “अरला हा अकबर” छपे हुए थे। ये पत्र अद्य में प्रकाशित किये जा रहे हैं।

ठाकुर केसरीसिंह ने यद्यपि सन्निव राजनतिक बाय छोड दिया था और वे शिक्षा प्रसार तथा समाज-सुधार का बाय किया करते थे किन्तु वैचारिक धरातल पर वे सदैव उग्र ब्रिटिश बिराधी तथा भारत की स्वतन्त्रता और जनतन्त्रीय व्यवस्था के हिमायती रहे। जो कोई भी उनके सम्पर्क में आता, वह उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। यही कारण था कि ब्रिटिश सरकार हमेशा उनसे आशंकित रहती थी। 1929 ई. में जब बायसराय का जाधपुर आगमन का बायक्रम बना उस समय ठाकुर केसरीसिंह जाधपुर में थे। एक दिन (28 जुलाई) रात्रि को जोधपुर के पुलिस इस्पेक्टर ने आकर उनसे कहा कि बायसराय मारवाड की यात्रा के लिये आ रहे हैं और राज्य कीसिल व वाइस प्रेसिडेंट बनल विडम नहीं चाहते कि इस अवसर पर आप जाधपुर में रहें। जोधपुर महाराजा भी यही चाहते हैं कि वे जोधपुर से बाहर चले जायें। इस पर केसरीसिंह कोटा चल आये। किन्तु 29 जुलाई के 'तहण राजस्थान' में जब यह समाचार प्रकाशित हुए कि बायसराय की जोधपुर यात्रा के बायक्रम के कारण केसरीसिंहजी की भूतकाल की राजनतिक बायवाहिया की वजह से अवा-च्छनीय व्यक्ति मानकर राज्य शासन द्वारा उनका जाधपुर से निष्कासित कर दिया गया है तो केसरीसिंह ने इस आदेश का तीव्र विरोध करते हुए जोधपुर स्टेट कीसिल के वाइस प्रेसिडेंट को पत्र लिखा और उसकी यथानिवता को चुनौती दी।

सन् 1927 में ठाकुर साहब की जीवन सगिनी माणिक्य कुंवर का निधन हो गया। अमर शहीद प्रताप की कुंवानी के बाद उनको यह दूसरा असह्य आघात लगा। मातृभूमि के लिये प्राणोत्सग करने वाले वीर प्रताप की जननी इस वीरगना ने अपने पति और पुत्र की ही भाति त्याग और आत्मोत्सग से पूरा जीवन बिताया और सदैव साहस, धय और निमयता के साथ ठाकुर साहब का साथ दिया। एसी दिव्यात्मा का वियोग उनके लिये निश्चय ही असह्य सिद्ध हुआ। उनका मन उचट गया। और जीवन के प्रति विमुस होने लगे। इस विछेह का उनके मन एव मस्तिष्क पर दुष्प्रभाव उनके जीवन के शेष चौदह वर्षों तक बराबर बना रहा। वे जीवन से अधिकाधिक हटन लगे और उनका अचेतन बढता गया। उन्होंने दो बार एकांतवास किया। पहिले सन् 1934 में रामगढ के पहाडा में रहे और बाद में उन्होंने 1937 में कोटा के समीप चबल नदी के किनार स्थित मौज बाबा की गुफा में लगभग 6 माह तक एकांतवास किया।

वस्तुतः ठाकुर केशरीसिंह 1934 में जीवन से सत्यास ही लेना चाहते थे किंतु घर की स्थिति और पुत्र तथा अग्र्य मंगे सबधियों के आग्रह पर उन्होंने एवान्तवास ही किया। किंतु विधि की विद्वयना कुछ और ही थी। उनकी शेष जीवता में शांति मिलने वाली नहीं थी। 1938 में उनके अनुज बिशोर मिहल बने। इसी समय उनके पुत्र रणजीत सिंह को टी बी हो गई, जिससे वे अत्यन्त दुखी हो गये। इधर 1937 में प्राचीने जन प्रतिनिधि सरवारों बनने के बाद भी फरारी जीवन बिता रहे अपने अनुज प्रातिवारी जोरावरसिंह के विरुद्ध द्वारा वेस उठाने के लिये वे बिहार के प्रधानमंत्री कृष्णसिंह और गृहमंत्री अनुग्रह नारामणसिंह से पत्र व्यवहार कर रहे थे। 1939 में जोगवरसिंह के विरुद्ध उक्त वेस उठा लिया गया किन्तु विधि की विद्वयना। कि मुक्ति लान के आदेश समाचार पत्रों में प्रकाशित होने के दिन ही पच्छीस वर्षों से फरारी जीवन बिता रहे उस वीर पुरुष का थोटा में अचानक ही निधन हो गया। ठाकुर साहब के दुख का पारावार नहीं रहा।

1933 ई में इंदौर में महात्मा गांधी की अध्यक्षता में आयोजित हिंदी साहित्य सम्मेलन में ठाकुर केशरीसिंह सम्मिलित हुए थे। मंच पर महाराज होल्कर भी उपस्थित थे। जब उन्होंने केशरीसिंहजी को देखा तो स सम्मान बुलाकर उनसे बातचीत की। इंदौर के दीवान सर सिरहमान बाफना और करोड़पति सेठ सर हुबमचंद्र तथा सम्मेलन में भाग लेने वाले अग्र्य कई गणमाय व्यक्ति उनसे आदर पूर्वक मिले।<sup>1</sup>

1940 ई में ठाकुर केशरीसिंह 69 वर्ष के हो गये थे। उनकी इच्छा हुई कि वे अपने जीवन के अन्तिम दिन गांधीजी के आश्रम में बितावें। जब 1940 ई के अंत में महात्मा गांधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ करने की

1 सुप्रसिद्ध इतिहासकार स्व डा मथुरालाल शर्मा ने अपने स्मरणों में लिखा है—“मैंने इंदौर में देखा कि पुरुषोत्तम दास टंडन ने मिलते ही उनका आलिगन किया। प गैदालाल दीक्षित और अजीतसिंहजी वहाँ उनसे रात्रि में मिला करते थे। दोनों ही बड़े सत्रिय प्रातिवारी थे। अजीतसिंहजी को बाद में फोसी हुई और गैदालालजी अज्ञात स्थान पर मरे। वे सर ओकारसिंह पलायया (ठा केशरीसिंह के मित्र) के पुत्रों के ट्यूटर थे। इनके स्थान पर ही मेरी नियुक्ति हुई थी।” —श्री सवाईसिंह धमोरा द्वारा सम्पादित— “पुण्य स्मरण राजस्थान केशरी ठाकुर केशरीसिंह बारहूठ।”



घोषणा की तो कसरीसिंह न सयाग्रह आ दालन म भाग लन और सेवाग्राम आश्रम म बापू के सान्निध्य मे निवास करन की इच्छा प्रकट करत हुए दिनांक 7 दिसम्बर 1940 को रामनारायण चौधरी का क्या पत्र लिखा— "मरी इन सत्तर वष का बूढी हडिडया म स्वदश के निय शांत प्राहुति देन का अभी बल है प्रजल इच्छा भी है।" जब चौधरीजी ने यह बात गांधीजी को बताई ता उहोने कहा "कसरीसिंहजी आवेंगे ता मुझे खुशी होगी। उनके उत्कृष्ट जेल जीवन का जिज्ञ मुभमे सर तेजबहादुर मपू न जिया था। मगर यहा के दैनिक जीवन का पालन तो सभी के लिय आवश्यक है।" चौधरीजी ने जब इसके सबध म ठाकुर साहब को लिखा तो उहान आश्रम के नियमा का पालन करना स्वीकार करते हुए उत्तर भेजा।

केसरीसिंह 1914 के सनिक बिद्रोह के मगठक और प्रातिकारी रह थे और सेवाग्राम आश्रम म अहिंसा का पालन अनिवाय था। उत्तर देत हुए ठाकुर साहब ने अपने 22 दिसम्बर के पत्र मे लिखा था "मे अहिंसा को मानव धम का सर्वोपरि अंग समभता हू मयाकि हिंसा पाशविक वृत्ति है। आततायी पर अबला की रक्षा मे कदाचित हाथ उठाने का प्रयोग अपरिहाय हो ता भी हिंमक का हाथ तोड कर तुरंत उसकी सुश्रुवा म उतना ही प्रेमपूर्वक लग सकना हू जितना कि अपने प्रिय ब धु के लिय। कह नही सकता कि यह अहिंसा थी बापू की अहिंसा की सीमा म आवेगी या नही।" उहोने यह भी लिखा कि "हजारी बाग जेल म अग्रेज डाक्टर ने उन पर मनमाना जुल्म किया तब भी उनके मनमे अग्रेज जाति क प्रति द्वेष भाव उत्पन नही हुआ। अब ता क उस प्रातिवाद को अध्यवहाय मानत हैं आर अहिंसा के निमल और खुले माग का थोष्ठ मानते है।" किंतु विधि की कृत्त और ही इच्छा थी। इसम पूव कि सेवाग्राम आश्रम के निये रवाना होते के अस्वस्थ हो गय और 14 अगस्त 1941 को इस महान् आत्मा का जीवन्तलीला समाप्त हा गई।

केसरीसिंहजी का कद ठिगना था। उनका व्यक्तित्व भव्य, सरल और प्रभावी था। सफे लुगी की धाती, कुर्ता और साफा, पगडी उनका पहनावा था। व हाथ म छड़ी रखते थे। पम्बी लम्बी और ऊंची चढी हुई सफे और उम्बमुखी उनकी मूछ थी। व सदब इसी सादा और साधारण पाशाक म रहते थे और हर जगह राजदरबार जलसा समाग्री समाग्री आदि मे उगी पाशाक मे जात थे। उनकी बानो स निभयता, गरिमा विवेक, शालीनता और देग प्रेम टपकत थे और भारत के विभिन्न प्रांता के, दशभक्तो, प्रातिकारिया तथा मनीषिया म उनका बडा सम्मान था।

ठाकुर साहब की बड़ी विशेषता थी उनमें स्वाभिमान की भावना । यद्यपि उनका उत्तरार्ध जीवन अर्थाभाव व गरीबी में बीता लेकिन उनके मिजाज में दीनता के भाव कभी नहीं आये । उनका कहना था कि "यद्यपि मरा वतमान पूरा अघकारमय है परन्तु इस और किसी का आँस उठाकर देखने की आवश्यकता नहीं ।" कोटा महाराज के आदर पात्र होने पर भी घटा-बटा अभावास्था होने पर भी उनके किसी कथन अथवा व्यवहार से किसी को इस अभाव की प्रतीति नहीं होती थी । वे तो मानते थे कि "सुख और दुःख के लड्डू हर मनुष्य के जीवन की धाली में परासे हुए हैं, जिन्हें खाना ही पड़ता है ।" कई अवसरों पर वे कहते थे "इस शरीर ने सोने की बडियाँ भी पहनी और लोहे की भी—पर केसरीसिंह वही था ।"

इस सदी के प्रथम दशक में स्वदेशी परिधान पहनकर केसरीसिंह जी कोटा के राजकीय क्लब में जाते और "बन्दे मातरम्" अभिवादन करते थे । इनका स्वदेश के रंग में श्रोतप्रोत देखकर एक अंग्रेज भड़क उठा और बोला "ठाकुर साहब ! तुम हमेशा बन्दे मातरम् कहता है लेकिन पिटा को क्या भूल गया ?" उन्होंने उत्तर दिया कि मरे लिये मातृभूमि ही सब कुछ है । और उसे अपने शब्द वापिस लेने को कहा । बहस में अंग्रेज ने जब अनुचित शब्दों का प्रयोग किया तो तनातनी बढ गई और अंत में उक्त अंग्रेज को माफी मागनी पड़ी ।

उनकी दूसरी विशेषता थी उनका उच्च चरित्र, नतिकता और कतव्य-परायणता । उनका चरित्र निष्कलक रहा । भयकर से भयकर कठिनाइयों और अभावों में भी किसी भी प्रकार का प्रलोभन उनको आकर्षित नहीं कर सका । वे ऐशो आराम की जिंदगी से सदा नफरत करते रहे । नरेशा और जागीरदारों की विलासिता, आडम्बर, खुशामद, फिजूल-खर्ची और भ्रष्ट जीवन तथा अंग्रेजों के प्रति दास-भावना को देखकर वे दुखी रहे और वे सदा ताड़ना देते रहे ।<sup>2</sup>

1 उनकी काव्य रचनाएँ कतव्यच्युत स्वार्थी और अनुत्तरदायी नरेशों, सामंता आदि को दी गई ताड़ना, उलाहना, भत्सना आदि से भरी हुई हैं । राजाओं के जीवन पर व्यंग करते हुए उन्होंने लिखा —

जीवण अहलो जाय, सहन, शिबार सलाम में ।

मांटी मौज उडाय, परजा बिलत पट ने ॥

सत्कालीन जयपुर महाराजा को, जो अंग्रेजों की भक्ति में अत्यधिक उत्साह दिखा रहे थे सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा—

सिमिट ढाल की घोट में, अग्रनों करत बचाव ।

नीति, चतुरता कुछ वही, बच्छप सहज स्वभाव ॥

इसी माति जब मेवाड़ के महाराज कुमार भूपाल सिंह अपने पिता महाराज फतहसिंह के विरुद्ध अंग्रेजों के वशीभूत होकर काय करन लगे तो केसरीसिंह ने महाराज कुमार को उलाहना एवं चेतावनी देते हुए काव्यमय पत्र प्रेषित किया ।

वे स्पष्ट यचना थे तथा उनकी कथनी और कर्मी म कर्मी अतएव नहीं रहा। जो वे कहते थे और जा करते थे उसको स्वीकार करने थे। उच्च चरित्र, मयवाग्नि और कतव्यपरायणता के कारण ही उनका समस्त परिवार उनकी पत्नी, पुत्र और भाई सभी माहस और निष्ठा के साथ उनके माग पर चले। मानस जीवन म ऐसे उदाहरण विरले ही मिलते हैं। मणि जसी पत्नी, प्रताप जैसे पुत्र और जागरण जस भाना प्राप्त करने का मदमाथ जैसे महापुरुष को ही मिल सकता है। उनके दृढ़ और आदश चरित्र के कारण ही नरेणा, श्रीमंतो, तामीरगारा और यहा तक कि अंग्रेज अधिकारियों म भी एक व्यक्ति थे जो उनके विचारों के विरोधी होते हुए भी उनके प्रति प्रगाथ श्रद्धा रखते थे और उनसे मित्रता की इच्छा रखते थे। राजद्रोह और वदन के प्रभियोग वाल कोटा मुन्दम के दौरान अन्य कई शुभचिन्तकों ने उनको प्रातिकारी सिद्धान्तों को अस्वीकार करने सजा के सबूत से निवाचन के लिये प्रेरित किया कि तु उहोने स्वीकार नहीं किया। उस समय म कोटा महाराज का उनके द्वारा लिखी गई य पत्रियाँ आदश के लिये मर मिटने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये स्मरणीय रहगी "मैंने अपने आप गंगा का प्रादु भाव किया और स्वयं उसकी पवित्र धारा में बह चला। जो बह चला, वह स्व नहीं समता और न रुकने के लिये ही बहा।"

ठाकुर केमरीसिंह के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी उनकी अनुपम देशभक्ति। वस्तुतः वे राजपूत एवं क्षत्रिय जाति की उस अद्वितीय परम्परा के प्रतिनिधि थे जो स्वतंत्रता के लिये मर मिटने की शिक्षा देती है। जबस उहान होश समाला के देश को विदगी दासता से मुक्त कराने की आकांक्षा रखते लग। जिस राजपूत जाति की वीरता, शौर्य और साहस की गाथाओं से भारत का इतिहास भरा पड़ा है, उसी जाति के लोग पर अंग्रेज जाति के लोग का हुकम चलाते हुए, उनका दबाव हुए और उनका अपमान करते हुए देखकर व छटपटाते थे एवं तिलमिलाते थे। इस वीर जाति की पतनावस्था से वे अत्यंत पीड़ित रहते थे और किसी भी भाँति उसको पुनर्जागृत कर और उसको दासता की भावना से मुक्त कर उसमें शक्ति का शख पुनर्जागृत चाहते थे ताकि वह एकबार फिर देश की स्वतंत्रता के लिये रणक्षेत्र में कूद पड़े। उनकी रग-रग में देशभक्ति की भावना भरी हुई थी और उहाने अपने जीवन का एक मात्र प्रयोजन देश की स्वतंत्रता के लिये काय करता बनाया।<sup>2</sup> यही कारण है कि उनके सभी प्रकार के कार्यों

2 ठा केमरीसिंह के देशभक्ति और स्वतंत्रता के विचार सीमित एवं सकीण न होकर सम्पूर्ण मानवजाति को दासता शोषण और अपमान से मुक्ति दिलाने की व्यापक भावनाओं से प्रेरित होते थे। यही कारण है कि उहोने दक्षिण अफ्रीका एवं ईथियोपिया आदि के सम्बंध म वहाँ के निवासियों पर विदेशी यूरोपियनों द्वारा किया जा रहे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाते हुए कवितायें लिखीं।

धर्म — प्रचार, समाज — सुधार, शिक्षा— प्रसार और जातीय संगठन आदि के माध्यम से वे एक ही उद्देश्य की प्राप्ति का लक्ष्य रखते थे — राष्ट्रभिमान और दशभक्ति की भावनाओं का प्रसार। वे कहा करते थे, “धन, जन, शक्ति, बुद्धि, विद्या आदि सबस्व ही स्वजाति और स्वदेश के लिये होना चाहिये। जिसमें स्वजातीय सत्याभिमान नहीं, स्वदेश-भक्ति नहीं, वह मानवीय बीट सहस्रों धिक्कार का पात्र है।” यह ज्ञात-य है कि ठाकुर साहब के राजनीतिक जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव इटली के राष्ट्रोद्धारक मजिनी के चरित्र का पडा, तत्कालीन प्रान्तिकारिया पर मजिनी की जीवनी का व्यापक प्रभाव पडा था। इस जीवनी पर ब्रिटिश शासन ने प्रतिबन्ध लगा रखा था। ठाकुर साहब ने वीर सावरकर द्वारा भराठी में अनूदिन मजिनी की जीवनी का अनुवाद हिंदी में किया, जिस छोटा केस से संबंधित तलाशी के समय शाहपुरा के समीप ही वही जगलो में भूमिमात करना पडा।

ठाकुर केसरीसिंह की एक अन्य विशेषता थी— खुला मस्तिष्क और स्वतंत्र विचार। सादा और साधारण जीवन जीते हुए उन्होंने सदैव निरन्तर बदलती हुई परिस्थितियों को देखा, परम्परा और हमेशा आगे देखा। राजपूताने के सामंती बंधनों से जकड़े तत्कालीन समाज से बाहर निकलने वाले शायद केसरीसिंह अकेले ही व्यक्ति होंगे जिन्होंने न केवल पर्दा पर्या, टीका प्रथा, बहु विवाह, दास-प्रथा वाल विवाह मृत्यु भाज, आदि कई प्रकार की सामाजिक कुरीतियाँ एवं रूढ़ियों को मिटाने के लिये जबरदस्त काय किया अपितु ब्रिटिश दासता के साथ साथ मामती एवं राजतन्त्रीय कुशासन की समाप्ति एवं लोकतन्त्रीय शासन की स्थापना का पक्ष लिया। वे कहा करते थे कि अब समय बदल गया है। पहिले यथा राजा तथा प्रजा का सिद्धांत चलता था, अब यथा प्रजा तथा राजा का जमाना है।<sup>1</sup> विचारों का विकास उनमें क्रमिक रूप से होता रहा। उन्होंने जीवन पथ पर अपने विभाग के कपाट खुले रखे और नये नये विचारों की स्वच्छ वायु उसमें प्रवेश करती रही। यही कारण है कि प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद देश में फलने वाले जनतन्त्रीय एवं समानतावादी विचारों का प्रभाव उन

1 समय पलटता जेज नह जठे प्रजा भुभलाय,  
घर घूगण की बस चले, पल मे महल ढहाय ॥  
रूस चीन जर्मन तुर्क आदि हुते पतसाह ।  
वे सिंघासण कित गया, सो चीज नरनाह ॥  
आछा कामा ऊधमो, घणिया निज घन रास ।  
तह तो नडा आवणा, महल मजुरा बास ॥

पर भी पडा और उनका विश्वास हो गया कि राजातिव सत्ता जनता के हाथो म दिव बिना किसी भी प्रकार की प्रगति अथवा सुधार सम्भव नहीं है। सतिव जाति के लोगो को जाग्रत एवं समगठित कर उनक बल पर देश का स्वतंत्र बनन का विचार अत्यवहाम्य मानकर उ 11 जनशक्ति और जन समगठन के विचारो को अपनाया। महात्मा गांधी की कई वाता स मतभेद रगत हुए भी गांधोजी न देश मे जन चेतना पदा करके जनशक्ति का जो शल पूना उसस व प्रत्यधिक प्रभावित हुए। उनकी अतिम इच्छा रही कि वे गांधोजी क व्यक्तितगत मत्याग्रह आंदोलन मे शामिल ह। आत्मासर्ग और प्राणापण की बहु ऐतिहासिक श्रीय भावना उमम अतिम समय तक जीवित रही, जो उनको वृद्धावस्था मे अस्वम्यता के कारण घर पर मर जाने क वनिस्पत रणक्षत्र म अर्थात् गुलामी के विरुद्ध चल रहे जनसमय म प्राणासर्ग करने के लिये प्रेरित करती रही। राजपूत जाति की श्रीय भावना इतिहास प्रसिद्ध है, जिसके अनुसार रणक्षत्र मे लडते हुए मृत्यु को प्राप्त हाना जीवन की सबसे बड़ी सिद्धि मानी जाती थी।<sup>1</sup> हिंसा, अहिंसा के बारे म उनके विचार स्प ट थे। वे अहिंसा को श्रेष्ठ मानत थे किंतु वे हिंसा का मुकामला करने मे आवश्यक हिंसा के प्रयाग के विरुद्ध नहीं थे। किसी भी प्रकार की कायर भावना के वे घोर विरोधी रहे तथा जन जन म वीर भावना के प्रसार पर जोर देने रहे। वे अन्तिम समय तक कहते रहे— जिस जाति या देश म वीरपूना न हो बहु मृतप्राय है।<sup>1</sup> जीवन के अतिम दिनों मे ठाकुर केसरीसिंह ने जो पत्र लिखे है, उनसे उनके उदार साम्प्रदायिक सद्भाव एवं समन्वय, समानता और एकता को राष्ट्रीय भावनाओं से अतिप्रोत विचार प्रकट होते हैं। दिसम्बर 1940 म श्री शिवसिंह चौपल को भेजे एक पत्र म उन्होंने लिखा—“ब्राह्मण और क्षत्रियो का यह स्वाथजय धीस का जमाना चला गया। अब तो वास्तव मे ससार के आधारस्तम्भ सच्चे अ नदाता वृद्धिकार है, उनका जमाना आ रहा है। बरा विभाग तो आप नष्ट हो ही चुका।<sup>1</sup> एक अन्य पत्र म उन्होंने लिखा— सद्बिचार वही है जिसम आग्रह न हो और रुडि के अघेर से ऊपर उठकर खुली आल का प्रयोग करने की शक्ति रखता हो। आईजी का हि द् होते हुए भी इस्लाम पीर की शिष्या होना स्वाभाविक है। इस्लाम म कौन से महात्मा नहीं होते और खासकर उस समय जबकि दोना धर्मों मे समन्वय और शाति सिचन की लहर चल रही थी अगानी रुडि को ही धम मान बैठता है।<sup>1</sup> वे समाज मे नारी के साथ हो रहे भेभाव, अत्याय और अत्याचार को

1 द्वाविमो पुरुषो राजन, सूयमण्डल भेदिनी।

परिवाड योग युक्ती धौ, रणेश्वास्मि मुखे हत ॥

समाज में व्याप्त बुराईयों और पतित प्रवृत्तियों का कारण मानते थे। उन्होंने सामंती समाज की नारी की दास एव गौली -प्रथा का सर्व्व विरोध किया। वे समाज को पूरुण सुसंस्कृत, सम्पन्न एव उन्नतिशील बनाने के लिये सभी दबावों एव हीन स्थितियों में मुक्त तथा पुरुष के बराबर अधिकार एव उत्तमदायित्व से पूरुण नारी-जीवन आवश्यक मानते थे।

ठाकुर वंसरीसिंह बाराहठ का व्यक्तित्व अनेक विशिष्ट गुणों से समलङ्कृत था। वे बहु भाषाविद् और अनेक विषयों के प्रकांड पंडित थे। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, डिंगल, पिंगल, ब्रज बंगला, मराठी और गुजराती जसी भारतीय भाषाओं के विद्वान् थे और अग्रजी का उन्होंने सम्यक् ज्ञान प्राप्त किया था। संस्कृत, डिंगल, पिंगल, ब्रज, बंगला में तो वे उत्कृष्ट कवि भी थे। विशुद्ध बंग भाषा में रचित उनके काव्य को देखकर बंगवासी साहित्यकार उनकी प्रतिभा पर अत्यधिक मुग्ध थे। हजारी बाग जेल से अपने बंगला प्राति-कारों माथी को पुस्तक-प्रेषण के निवदन के बहाने प्रेषित साकेतिक संदेश उनके बंगला भाषा पर पूरुण अधिकार का परिचायक है।

अपने गुरु गोपीनाथ के सात्त्विक और मामा कविराजा श्यामलदास दधिवाडिया तथा पिता कृष्णसिंहजी के संरक्षण में रहते हुए उन्होंने भूगोल, खगोल, ज्योतिष, संगीत, काव्य, व्याकरण, धर्म और दर्शन आदि अनेक विषयों और इतिहास का अखंड ज्ञान प्राप्त किया था। वे काव्य-शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् थे। मम्मट, दण्डी, जगन्नाथ, रस गंगाधर, विश्वनाथ आदि का उनकी इतना गहन ज्ञान था मानो आखा दली घटनाओं का ही वे वर्णन कर रहे हों। दर्शन में उनकी विशेष अभिरुचि थी। सायण और योग के वे विशेषज्ञ माने जाते थे। बौद्ध-दर्शन और इतिहास का भी उन्हें पूरुण ज्ञान था। अश्वघोष<sup>2</sup> कृत 'बुद्ध-चरित' का अत्युत्तम हिन्दी अनुवाद (1935 ई.) संस्कृत भाषा में

- 1 महाकवि अश्वघोष संस्कृत के मूढ य महाकवि हैं। वे संस्कृत के प्राचीनतम महाकवियों में गिन जाते हैं। अश्वघोष का समय ईसा की पहली या दूसरी शताब्दी माना जाता है। ये मूलतः अयोध्या के निवासी थे। कहते हैं कि इनकी कविता तथा व्यवहान इतने मधुर और आकर्षक हात थे कि हिनहिनाता घोड़ा भी चुप होकर उन्हें सुनने लगता था। "अश्वघोष" नाम का भी यही कारण बतलाया जाता है। कालिदास के अनेकपक्ष अश्वघोष के पद्यों के बिल्कुल निकट ज्ञान पड़ते हैं।

उनके प्रखर पांडित्य का परिचायक है। इटली के उद्धारक महान आन्तिकारी मजिनी के जीवन चरित का भी उन्होंने मराठी से हिन्दी में अनुवाद किया था।

प्राचीन लिपियों का भी उन्होंने सम्यक् ज्ञान अर्जित किया था। रामगढ़ पहाड़ पर अपने तपस्या की अवधि में वहाँ स्थित मन्दिर से 8वीं शती के शिला लेख की अनुकृति और मन्दिर के शिल्पादि से सम्बन्धित तैयार किया गया वृत्त जो उन्होंने सुप्रसिद्ध इतिहासकार स्व. डा. मधुरालाल शर्मा को दिया था, प्राचीन लिपि के ज्ञान में उनकी क्षमता का साथ-साथ पुरातत्व में उनकी गहरी पक को सूचित करता है।

उनके पत्र-व्यवहार से सर्वाधिक पत्रिका (रजिस्टर) में महाराजा रामेश्वरसिंहजी गिद्धौड़, राय बरदाकांत नाहिडी बीवान फरीदकोट और अपने अनुज श्री किशोरसिंह बाहस्पत्य जाधपुर को लिखे गये उद्धारणों में प्रयुक्त साकेतिक लिपि से हम जानकारी मिलती है कि उसमें अपने आन्तिकारी साथियों के साथ उनके पत्रों का आदान-प्रदान होता था जो उनके संदेशों की गामनीयता के लिए आवश्यक था।

वे अपनी ही शली के मार्मिक सुलेखक थे और प्रभावोपादेय वाक्पटुता के धनी थे, पर साथ ही वे "पुराणामित्येव न साधु सर्वम्" के पक्षधर भी थे। उनके गद्य की भाषा अत्यंत सरल और प्राजल है। उसे किसी शली के आचार की आवश्यकता नहीं थी। वह उनके निरासे ही व्यक्तित्व की निराली अभिव्यक्ति है। उनके लक्षों में भाव गाम्भीर्य और विचार परिपक्वता के स्पष्ट दर्शन होते हैं। सरल, सारयुक्त वाक्य-रचना, शब्द-संक्षेप, विचार-समय सहज सौंदर्य-मण्डित वाणी और सूक्ति-सुधा द्वारा सिंचित मुद्राबरेदार भाषा-यह सभी गुण न जान किसी अनिवचनीय कला से उनके पत्रों में छलकत हुए अनुभव किये जा सकते हैं।

ठाकुर साहब के वाक्य का प्रत्येक शब्द में विदेशी मत्ता के प्रति विप्लव की आन्ति की ध्वनि प्रतिध्वनित हो रही है। सरल, सुबोध पर सशक्त बीर रस से परिपूर्ण प्रभावशाली शब्दों से सुगठित बारहठजी की कविता न अनक चमत्कारों का जन्म दिया है। आगलसरता द्वारा दिल्ली में आयोजित दरबार में उपस्थित होकर अपने पुरुषार्थों द्वारा ली गई आण और अर्जित गौरव तथा रहे-सहे धारत्व पर लगत फलक से महाराणा फतहसिंह की वचन बाल नावक के तीर के समान ममभेनी गभीर धाव करन वाले बारहठजी के सोरठा 'चेतावणी रा चू गटया' न तो राजपूतान की तटवालीन घटनाओं और राजनतिक स्थितियों पर भारी प्रभाव डाला था।

बारहठजी क्षत्रिया की शक्तिशून्य भुजाओं में, उनके हृदयों में पुन शक्ति-पीठ की स्थापना करना चाहते थे । उनकी अधिकांश वाक्य-रचनायें स्वधर्म, क्षत्रिय वीरों की दुदशा, चाबुक-स्पर्श क्षात्रधर्म आदि यही संदेश देती हैं । उदवाहन, राजा-प्रजा संवाद, रजपूताणी नारी-गीत, मय-गान, भारत-दुदशा राजाओं का कृतव्य, नीति बोधक दाह आदि कई वाक्य रचनायें न केवल अंग्रेज कूटनीति एवं दुःशासन के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान करती हैं अपितु नवीन राजनैतिक एवं सामाजिक मूल्यों तथा जनतंत्रीय विचारों का संदेश देती हैं । महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, भारते दुः हरिश्चन्द्र, राव गोपालसिंह खरवा, चन्द्रधर शर्मा गुलरी, अमर शहीद गणेशशंकर विद्यार्थी आदि राष्ट्रकर्मियों के संघर्ष में लिखी गई उनकी कवितायें उनकी व्यापक देश-भक्ति और राष्ट्र-भावना की परिचायक हैं । अपनी त्यागमूर्ति पत्नी मणि से संबंधित उनकी रचनायें अत्यंत मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी हैं । दक्षिणी अफ्रीका, ईथोपिया के मुक्ति-संघर्षों पर लिखी गई कवितायें उनकी अंतराष्ट्रीय मानवता तथा मानव मात्र को शोषण और दासता में मुक्ति दिलाने की उनकी भावनाएं प्रकट करती हैं ।

अपनी आत्मजा के अपराह पर पणहारी राग में निबद्ध "राजा-प्रजा संवाद" राजनीति के गूढ़ सिद्धांतों का निरूपण करने वाली रचना है । इसमें राजाओं में निहित ईश्वर-प्रदत्त शक्ति (Divine right of kings) सिद्धांत से लेकर साम्यवाद तक के नवीन सिद्धांतों की विवेचना, नागरिक अधिकारों की मांग का समर्थन तथा मूढ़ राजाओं के दम्भ की भत्सना अत्यंत ही मार्मिक शब्दों में खुलकर की गई है । जाग्रत जनता का मस्तक सदा अंग्रेज शक्ति से ऊपर उठा हुआ प्रतीत होता है—और हीनकमा परमुरापन्नी राजाओं का तक हृदय और बुद्धि को प्रभावित नहीं करता । इस स्पष्टांकित के साथ कवि स्पष्टतः भविष्यवाणी करता दिखाइ देता है कि राज्य की प्रभुमत्ता प्रजा में ही निहित है, प्रजा का उत्पीड़न करके राजाओं का अस्तित्व कदापि स्थायी नहीं रह सकता ।

ब्रजभाषा में विरचित काव्य 'कुसुमाञ्जलि' उनकी प्रखर प्रतिभा, चतुर-वाक्चातुरीघुरीणता और भाषा पर आश्चर्यजनक अधिकार का सूचक है । काव्य में निहित शब्द विद्यायें द्वयाथक शक्ति से सम्पन्न हैं । प्रत्यक्ष में वह ब्रिटिश सत्ता का अस्तित्व-वाक्य प्रतीत होता है पर प्रच्छन्न रूप में तत्कालीन ब्रिटिश



सरकार के दुष्टृत्या के प्रति राय और घृणा का ही स्पष्ट दशाक है । व्रज भाषा म ही रचित उनके वृष्ण-भक्ति सवधो पद लातिरव एय माधुय मे सराशोर है ।

लम्बी कविताओं को छोडकर ठाकुर साहब की अधिवाश रचनाए लघुनाम और मुक्तक ही हैं । उनका प्रत्येक कविता म, चाह वह भक्ति विषयक ही क्यों न हो, हम परतत्र भारत की विदेशी दासता से मुक्त कराने और फिर स पूरा शक्ति-सम्पन्न राष्ट्र के रूप मे उसकी स्थापना की भावना म परिपूरण पात है । कवि की इस लातसा के दशन हम उनके पत्रो के वामशीप भाग पर मुद्रित मानोपाम मे भी दिखाई देते हैं जिसम धनधाय की समृद्धि का सूचक हरितवर्णा शस्वश्यामला भारतभूमि का मानचित्र, राष्ट्र क मस्तक को सदा उन्नत बनाये रखने और शक्ति समवित बनाये रखने के प्रतीक रूप म शक्ति-सूचक त्रिशूल, तथा स्वतंत्रता की रक्षा और क्षमता के प्रतीक रूप दोनो पाशर्वो से मानचित्र को घावत किय दा खड्ग और मानचित्र के नीचे देश की आधार-मिला कमयोग अधान गीता के मूल मंत्र कम और धम के सूचक सूक्त "यतो धमस्ततो जय" का अकन किया गया है । अद्वेप स्व वारहूट जी की समग्र विचारधारा का सार यह मोनोयाम है ।

भारत के क्रान्तिकारी जनतंत्रीय आ दोलन क इतिहास म स्व ठाकुर केसरीसिंह वारहूट का नाम सदैव अकित रहेगा । ठाकुर साहब बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी थे । वे उत्कृष्ट कोटि के हुद्धिजीवी, विचारक, लेखक और कवि थे तो साथ ही वे क्रान्तिकारी विचारो के अद्भुत वक्ता, प्रचारक और सगठक थे । सामन्ती समाज यवस्था के जीवन-मूल्यो म पलकर भी स्वदेश तथा पीडित और शोषित मानव को भलाई और प्रगति क लिये सामती जीवन-मूल्यो के विरुद्ध सघप करने तथा जनतंत्रीय मूल्यो को प्रस्थापित करने के लिये अपना जीवन होम दन का ठाकुर केसरीसिंह वारहूट का अनूठा उदाहरण है । निस्सदह ही सामाजिक क्रुरीतियो और बुराईयो के विरुद्ध जूझने वाले समाज सुधारक, देश की स्वतंत्रता के सघप म अपना सवस्व होम करने वाले महान् क्रान्तिकारी तथा समाज म भेदभावविहीन समवयवादी जनतंत्रीय विचारो के प्रसारक के रूप मे वे सदैव चिरस्मरणीय रहेगे । विगत चालीस वर्षो के दौरान, प्रमुखत दश को स्वतंत्रता मिलने और महात्मा गांधी के दिवगत हा जाने के बाद देश का राजनैतिक आकाश स्वदेश के लिये तपस्या, त्याग और बलिदान के स्थान पर स्वाधपरता, अनतिकता और भ्रष्टाचार तथा उदारता, सादगी, सरलता और विनम्रता के स्थान पर आडम्बर, घृणार, एशाभाराम, सकीणता और

भेदभाव की प्रवृत्तियों के बाले बादलों में धाड़न हो गया है। व सभी व्यक्तित्व और मूल्य पृष्ठभूमि में खले गये हैं जो राष्ट्रीय एकता, स्वतन्त्रता और समता तथा देश के जनतन्त्रीय और मावजनिक् विकास की दृष्टि से आदश प्रेरणा के साथ रह है। किन्तु इसमें कोई सदेह नहीं है कि देश के राजनीतिक आकाश से इन बाले बादलों के छटत ही दश के केसरीसिंह बारहठ जैसे व्यक्तित्व और उनके आदश पुन समाज और राष्ट्र के लिए प्रेरणा के प्रकाश-स्तम्भ बन कर अपनी रोशनी फैलायेंगे।

डॉ देवीलाल पालीवाल  
 डॉ ब्रजमोहन जावलिया  
 फतहसिंह 'मानव'





क्रांतिकारी केसरीसिंह वारहठ और उनका परिवार



१. काव्य-सृजन

• हिन्दी

• राजस्थानी



# हिन्दी काव्य

## ईश-भक्ति-पद

( १ )

भाव अनंत, अनंत प्रकाशक, छवि तोरी गिरिधारी ।  
यह घनश्याम मुग्धि अति सौहे, द्युति अम्बर अनुकारी ।  
मोतिन माल अनेक तरल युत, चरणन लागि विस्तारी ॥१॥  
कंधा चिबुक खचित शुभ हीरक, रवि विराट निज धारी ।  
भ्रमत असत्य सूर महासूर जु, रवि-मडल चहु भारी ॥२॥  
कमल वश गहि जग जनि मूलक, अनहद शब्द उचारी ।  
रक्षण हेत धरया गिरि छत्रसु त्रिविध ताप दुख टारी ॥३॥  
बेणी भयद मुजग काल सी, जात वस्तु सहारी ।  
तव स्वरूप की पार न पावै, देव ऋषि बलिहारी ॥४॥

( २ )

हरि तुम जिय की जानन हार ।  
त्रिविध ताप प्रज्वलित जगत मे तोउ न मिटत अंधियार ।  
श्याम मुग्धि यह एकहि समरथ, करन अटल उजियार ॥१॥  
बिन आधार बह्यो चली आऊ, प्रकृति तरगनि धार ।  
अव तो चरन शरन गहि तेरी चाह बुबो चाहे तार ॥२॥  
अजहूँ ना सुधि तुमने लीही, का मैं करयो बिगार ?  
मैं अति दीन, दीनबधु तुम, क्या न करो उद्धार ? ॥३॥  
कहत बने दुख वाही के डिग, जो अनजान विचार ।  
तुम तो हो घट-घट क साजो, (ता) बाह बनू लखार ? ॥४॥



(३)

भक्ति के भूखे है नदलाल ।  
 अति ही मधुर सुगन्धा के तदुल, अरु केले की छाल ।  
 रुचि रुचि शाक विदुर घर खाव, तजि दुर्मोघन थाल ॥१॥  
 चेतन धन द्रुपदा के टरत, नय चीर रूप तत्काल ।  
 त्रिभुवन पति सारथि बनि बठे, हो अजुन की ढाल ॥२॥  
 जिनके चरन दरस हित तनपत, शिव ब्रह्मा मुग्धान ।  
 उनको हँसि हँसि नाच नचावत, द ताली ब्रजबाल ॥३॥  
 चान ध्यान जप जाग न जानू, मद बुद्धि मंद भाल ।  
 दीनवधु हँसि हृदय लगालो, काटि कम अजाल ॥४॥

(४)

मन तू किहिँ ब लोभ मुलाना ।  
 यह ससार धमार समुद्र है, तिहिँ तल जाय पुवाना ।  
 काम-प्राध मद-मोह लाभ फँसि, क्या नाहक पछिनाना ॥१॥  
 मात-पिता दारा-सुत मडल, बार अनक बनाना ।  
 जाका तू अपनो करि मानत छिन म हात बिराना ॥२॥  
 पचभूत तें निरमित काया, तिहिँ म तू अपनाना ।  
 फँसि धज्ञान जान नही तत्वन, सुय भ्रम बीच मुलाना ॥३॥  
 श्री गुरु चरन-शरन गहै क्यों ना, मिटहँहि आना-जाना ।  
 पतित उधारन ब भव-तारन, हँ समय विधि नाना ॥४॥

(५)

मन भूल क्या ना बीत गई सो बात ।  
 जे बछु नाच नचेन जग म वह अंधियारी रात ।  
 अब ता समय भया जागन का प्यार । भया प्रभात ॥१॥  
 रावत हगत सन के उनको, परे मातर तान ।  
 यह ता हुतो स्वप्न दू छिन वा, काट मोच करान ॥२॥  
 भव दू तदा बिच तू धर्या, मानत फिर निज गान ।  
 गजर प्रणय-ध्वनि हान मधुर स्वर, माट माटि जगान ॥३॥  
 मारि रट्या मुग जिन तें मट नू, य प्राग सति नाथ ।  
 \* रपान गति नारि शिठाइ, म\* म\* मुग्धान ॥४॥

( ६ )

दुनिया यह विधि त हम ढीठी ।  
 भूठी वही, हजारन हाँ की, बबहूँ साँच नई फीठी ॥१॥  
 बबहूँ भये मटान के बासी भूमि चरन नहिँ भीठी ।  
 पट घसत बहूँ कामन पहुँच, बनि के गुपन बसीठी ॥२॥  
 बबहूँ तन म भसम रमाई, बहूँ मभलाई पीठी ।  
 हरल चढे बहूँ हाथिन होदे, बबहूँ चरण घसीठी ॥३॥  
 मोठ दुमाले मोत गंवायो, बबहूँ लगाय अँगोठी ।  
 बबहूँ बई दिन लघन की ह बहूँ भाजन विधि मीठी ॥४॥

( ७ )

लखन बिन राम अनेलो आज ।  
 जाके संग सूये तृण पल्लव, बनि जात मुख साज ।  
 बाके बिन बाटा-सी लागत, मुरपुर की भी राज ॥१॥  
 एक शक्ति दा हृदय बिंधाये, सधयो शशु की बाज ।  
 हा ! प्रिय बधु ! मुख-दुख संगी, रह्यो न राखन साज ॥२॥  
 छूटी अबध गये पितु-दशन, दिय सिय बिरहा-दाज ।  
 सब आघात सह धरि धीरज, पै गिरी असह यह गाज ॥३॥

( ८ )

देखेरी मैंने निवल के बल राम ।  
 धन जन से जो कबहुँ बनत नहिँ, सारत के सब काम ॥१॥  
 वे इक सत्य प्रेम क भूझे, जानत हिय की तमाम ।  
 एकहिँ बेर टेर सुनि दीनन, तजि दीरत निज धाम ॥२॥  
 वे निज प्रिय की कबहुँ न भूलत, क्या न होउ विधिवाम ।  
 नहचो राख भरोसो साँवा, साचो दीनबधु को नाम ॥३॥

( ६ )

भज मन राधा-कृष्ण पीछे पछिनाश्रमे<sup>१</sup> ।  
 युगत छवि की सरन यह तैं आवागमन मिटाआगे ।  
 वे भवनागर तारन हारे नाम तेत तरिजाश्रमे ॥१॥  
 बालपनो खेलन म घीत्यो घन जोवन मद छाआगे ।  
 फेर बुढापी जब सिर चढिहै धरि मृग-वृष्णा घाश्रमे ॥२॥  
 ममता जाल फँसावन हारी वाको सग तमाहोग ।  
 यह काया कछु काम न ऐह आसिर ऊठि निघावागे ॥३॥  
 आनंद पूर अम पद पढा, चरनन ध्यान लगावोगे ।  
 जाम कृतारय यह बहै जहै, उनके जो गुन गावोगे ॥४॥  
 बाट विकट निकट नही घर है, बिच ही म लुटि जाआगे ।  
 दीन हीन को एक आसरो मारग म न घुमाश्रमे ॥५॥

१ सूरदास कृत पद की यह स्थाई ठाकुर साह्य की मातु श्री (विमाता) का बहुत प्रिय थी पर पूरा पद उह स्मरण नहीं था। अतः मा व कहने पर उहीने सरल भाषा में यह पद बनाकर दिया ।

## कवित्त

(१)

गौरव कितेक गहै धाय धन सम्पत्ति को,  
 गुनत कितेक निज विद्या-बल भारी को ॥  
 कत वहै बलिष्ट इष्ट देह ही सैं नेह बाधे,  
 सतत अराध कत सतति सुखारी को ।  
 योवन के छाके बाके निपट अदा के छल,  
 कते बनि अछरा सी चाहत सुनारी को ॥  
 मैं तो हूँ निकाम नाम मात्र नर देह धारी,  
 आसरो गह्यो है एक श्याम गिरिघारी को ॥१॥  
 ( 28 1899 )

(२)

पारे सम प्रीत हार त्वारे दिलदार यारे ।  
 बाकी अदावारे मोर-पख शिर धारे हैं ।  
 भाल पै विद्यारे तारे डारे गलमाल जाल,  
 लली वृषभानु की के आखिन के तारे हैं ॥  
 भार से सवारे केस भोतिन की पारे माग ।  
 हाथ लिये गेंद खेलें अजब खिलारे हैं ।  
 नद के दुलारे सारे अज के रुखारे आज,  
 धारे रग वारे भेरे आगिन पधारे हैं ॥२॥

(३)

अनद उमग गिरिजः के हिय मे न माई,  
 प्रेम सरसाई किधो नवोनिधि पाई है ।  
 सुख लहराई ही दिखाई देत नदपुरी,  
 आशा भई पूरन जनाई चित चाई है ।  
 कवर क'हाई आज प्रकटे जु नदधर,  
 नदपुरी साँची इद्रपुरी ज्यों लखाई है ।  
 छटा अधिकारी वसु पाई ज्यो लुटाई जान,  
 धाई धाई माई आज बटत बघाई है ॥३॥

(४)

लोक-पथ-दर्शक सुभव्य था चरित तेरा,  
 यद्यपि ब-हेया ! तने लिये रूप नाना हैं ।  
 राज-सत्ता लोभवश रचती कुचक्र जब,  
 "याय सत्य श्राति का न रहता ठिकाना है ।  
 अपने विगाने का भी भेदभाव हेय मान,  
 नवीन निर्माण नाश ही मे पहिचाना है ।  
 एहो ! श्राति-धारा के घुरोण ! धम हतु धारा,  
 वही श्राति प्यारा हमे सारथी का बाना है ॥४॥

(५)

मोहन चराना मनमोहक बजाना बशी  
 गिरि को उठाना अस्त भ्रज का बचाना है ।  
 रास का रचाना ग्वाल ललना रिभाना कभी,  
 कस को पछाड कर स्वर्ग पहुचाना है ।  
 नाना रूप अदमुत तुम्हारे रहे दीनानाथ,  
 चीर बदा द्रौपदी की लाज रखवाना है ।  
 मोहन ! हम तो तरा सेवाभाव-मयी भव्य,  
 वही पूण प्यारा दिव्य सारथी का बाना है ॥५॥

1 उपयुक्त शीनो कवित्त भ्रजमेर से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र "सात्रधम" क सम्पादक श्री नारायणसिंहजी भाटी के अनुराध पर "कृष्ण जयन्ति" के अवसर पर ठाकुर साहब ने बनाकर भेजे थे। (दिनांक 26-7-1938)

## शक्ति-वदना

जय जय भवानी ! अम्बिके ॥ करनी ॥।। तुम्हारी शरण हम ।  
 बहुत सोय गाढ-निद्रा (अव) चाहत जागरण हम ।  
 स्वात्म्य की तू महासागर, तेरे हि हो निभरण हम ॥ जय ॥  
 क्षात्रबल का उद्धरण मा । तेने किया, अनुसरण हम ।  
 परमाथ मे उल्लिखन अपना, कर सिखादे मरण हम ॥ जय ॥  
 सतान सच्चे अभय हो, तरे हि तारण-तरण हम ॥  
 सामर्थ्य तो मा । कर सकें, यह सिद्ध चारण वरण हम ॥ जय ॥  
 वाहन तुम्हारा "केहरी" बर मागता अशरण शरण ।  
 ओ असुरमर्दिनि ! चडिके ॥ भूलें न तरे चरण हम ॥ जय ॥

(15-3-1937)

## घनाक्षरी

### महाभारत का प्राकृतिक नोति — पाठ

घम<sup>1</sup> छलि-छद्म त छिपाय छली छीनें छानि,  
 टोन<sup>2</sup> भरि भीष्म<sup>3</sup> नेदें स्वारथ की मिद्धि हत ।  
 वनें घतराष्ट्र<sup>4</sup> अध<sup>5</sup>, दुर्योधन<sup>6</sup> शक्ति गहि,  
 वरुण<sup>7</sup> के सहारे दु शामन<sup>8</sup> निभाये लत ।  
 शाल्य<sup>9</sup> हो हिय म उठें तबे पचशक्ति<sup>10</sup> मिलि  
 अल्पहू<sup>11</sup> मधिष्ठर<sup>12</sup> है भीम<sup>13</sup> चलतें उपत ।  
 अजुन<sup>14</sup> नकुन<sup>15</sup> सहदेव<sup>16</sup> भाव<sup>17</sup> माहन<sup>18</sup> ल,  
 पावें जय भारत<sup>19</sup> या प्राकृत का पाठ देत ॥

( वसत पचमी, वि स १९८८ )

- 1 घम—युधिष्ठिर
- 2 टोणाचाय—अपना पाप
- 3 भीष्म—भयवर व्यक्तियों को
- 4 घतराष्ट्र—राष्ट्र को दवा बठन वाला
- 5 अध—मदाध
- 6 दुर्योधन—दुर्योध
- 7 वरुण—वाना, दूती, रिपाठी
- 8 दु शामन—छुटित शामन
- 9 शाल्य—हृद्य का नाटा
- 10 पाठव—जन-शक्ति
- 11 कम होत हुए भी
- 12 युधिष्ठिर—युद्ध म डट रहना
- 13 भीम—भयवर
- 14 अजुन—मद हूई यन्त्रु का फिर न प्राप्त करन वाना
- 15 नकुन—कुनीनता की ऐचातानी से रहित
- 16 मन्त्र—एकना मत्प्राग
- 17 प्रोग—मिद्धा न
- 18 श्रीकृष्ण—प्राश्रव माहनशम गाधी
- 19 जय भारत—महाभारत ग्रथ

उक्त छंद द्वयमय है—

प्रथम अथ—

छली वीरवो ने छन्दछन्दम से घमराज युधिष्ठिर को ठग कर गुप्त पडयत्र द्वारा उनका राज्य भी छीन लिया। द्रोणाचार्य और भीष्म जैम गुरजन भी अपने स्वाय-साधन म लग हैं। घृतराष्ट्र अये वन रह और दुयोधन न समस्त शक्ति (अधिकार) अपने हाथ म ले लिये। वण और दु शासन जस सहयोगिया व बल पर उसने उसका मचालन किया। गत्य जैसे व्यक्ति भी मध्य म उठ लडे हए। ऐसी स्थिति मे सख्या मे स्वल्प हात हुए भी युधिष्ठिर, बलवान भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव—इन पांचा महारथियो ने सगठिन होकर भगवान कृष्ण के निर्देशन म महाभारत के युद्ध मे विजय प्राप्त की। महाभारत वे अध्ययन स यह स्पष्ट है।

द्वितीय अथ—

छल-छन्दम से प्रपच द्वारा ठगो न हमारे राज्य और हमार घम का हुरण कर लिया। स्वाथ पूर्ति म रत भयकर व्यक्ति अपना पाप भरकर हम लागो मे फूट डाल रहे है। राष्ट्र को दवाने बाल मदाघ बने बठे हैं। दुर्जेय शक्ति को सहज ही मे प्राप्त करके गुप्तचरा व सहार वे किसी तरह अपन घृणित प्रशासन को निभा रहे हैं। हमारी पाँचजय (जन प्रतिनिधियों की शक्ति) शक्ति जब सगठित हो उठी है तो उनके हृदय म काटे चुभन लग हैं। स्वतंत्रता सग्राम मे स्थिर रहने वाते व्यक्ति सख्या मे स्वल्प होत हुए भी वे अतुल बल व धनी हैं। उनमे गत वस्तु को पुन प्राप्त करन की भावना और क्षमता है। वे कुलीन अकुलीन की भावना से मुक्त तथा पारस्परिक सहयोग से युक्त है। महात्मा (मोहनदास-कमचंद) गांधी की मंत्रणा और निर्देशन मे भारत विजय-श्री प्राप्त करे-यही महाभारत का स्वाभाविक पाठ है।



## नीति के दोहे

जड शरीर क स्वाथ म, जग बन रहा विभोर,  
उलट पुलटत देर नहि, आज और कल और ॥ 1 ॥

तुच्छ दह मुख क्षणिक मे, उलभ रहा ससार  
पलट रहा पल पलहि म, आज ड्रेप कल प्यार ॥ 2 ॥

गुन गाता शकता नही, सभा प्रेम का साज  
मिलती गदी गालियाँ, उस ही मुख से आज ॥ 3 ॥

जाति रक्त अरु धम का, नहि कुछ भी सबध ।  
प्रेम नाम से काम वश बही उलभते अघ ॥ 4 ॥

प्रेम दुहरा पालियतु महामहिम बडभाग ।  
सवमगला मग शिव, करत विश्व अनुराग ॥ 5 ॥

सत्य प्रेम दुलभ जगत, सब सनेह का खेल ।  
सस<sup>२</sup> सिवाय फिर क्या बचे, बढत तिला स तेल ॥ 6 ॥

सरु मुरभाय पत्र तें, प्रगट करत निज प्यास ।  
द न दहि जल अघ तऊ, छाया को दूढ आश ॥ 7 ॥

सज्जन रचहु नह अघ, जीवन सुरा निबहन्त ।  
ज्या लघु छज्ज छाटि म, भव्य सु भीन रहन्त ॥ 8 ॥

1 चिक्नाई, चिक्नी चुपड़ी

2 सति, दुपटता

गुण-पराग मुख श्रुतुभवत, बिय पद-धज निवास ।  
यातें प्रभु यह मन भ्रमर दुस्सह लखान प्रवास ॥ 9 ॥

सेवा साधन चित्त चहत, जदपि दास गुन हीन ।  
ज्यु भ्रनरु<sup>1</sup> को दिनमणी, कहा सारथी कौन ॥ 10 ॥

चुबक मणि तोरे चरन, मो मन लोह समान ।  
रात दिवस ऐंचत रहहि, जदपि होहि बिलगान ॥ 11 ॥

यातें अपनो धर्म लखि, जिहा सफल मनात ।  
सै तब गुण की अधिकता, कहत कहत रहिजात ॥ 12 ॥

धम कर्म की छोट घरि, निज हित जगत बनात ।  
केवल इक पालन करत, दिन स्वारथ भ्रजनाथ ॥ 13 ॥

पूज्य की गति जिमही लखे, हिय को कठ न आय ।  
जब ही हिय हिमतें जु र, तब सबही समभाय ॥ 14 ॥

दिल दिमाग स्मृति शू य बह, निज जीवन भी मूक ।  
फिर भी मूरख शख सम, बाजत हैं पर फूक ॥ 15 ॥

पूण-ब्रह्म के बिन नहीं, कोऊ जग निर्दोष ।  
अन्धन परगुण गान कर, पावत मन सतीष ॥ 16 ॥

1 सूय के रथ का सारथि, अरुण

मुदर तन को छोड़कर, धावहि दूढन जात ।  
वे मक्खी से नीचे नर, निदक चुगत कहात ॥ 17 ॥

गुण देखै भी चुप रहे, दभी अर अप्रतीम ।  
वह अपराधी ईश को उथा मिनी तिहि जीम ॥ 18 ॥

सत्रे ही या ससार की, सेवा करत अमोन ।  
निज समान नहि दूसरो, यही हृदय दूढ कोल ॥ 19 ॥

अनेक सरवर नर सबकी तृपा बुझाय ।  
मध दूद की आश पै चातक प्यासो जाय ॥ 20 ॥

कहा कही कहत न बन, कही भठ सब होय ।  
मूक रहन यातें भलो, हिय की हिय म जाय ॥ 21 ॥

मानव मुय गाली बढत, निज सतता दिखलात ।  
गदी नाली गटर की, फिर भी भली मनान ॥ 22 ॥

स्वामि जाति हिा बनि चढ यहि सबक की घम ।  
अपना कहि स्वामी गह, समभत विगल मम ॥ 23 ॥

सातिव और मुपात्र म दिया दान जग माहि ।  
बन्नीय शास्त्रन कहया, वही अमर रहि जाहि ॥ 24 ॥

हिंदी वाक्य

सुख में सुय को ढालियो, है साधारण खेल ।  
प निरल ही करि सकें, यो अनाय की बेल ॥25॥

शुद्ध नीति निरमल चरित, क्षमा सत्य धिर तन ।  
अमद अलोभ उदारता (यह) वशीकरण को मत्र ॥26॥

बड मुतहि दे देत, जननी अखिया जल भरत ।  
पुनि उठाय उर खेत, है बलिहारी प्रेम की ॥27॥

धन सूटो हठो बणी, छुगी घर सुय सप ।  
बन टूटो तन बढ-बय, वयो न हुए मन कप ॥28॥

टके बिना अटके रहें टफे टक के जार ।  
बनिय पति बनिये रहें यह न मान डोर ॥29॥

टके टके नहि काहुने, रहे न बनिये कोठ ।  
इक प्राच्यात्मिक भाव घा, अटल इष्ट मम होउ ॥30॥

कवि कोविद बमठ चतुर, दिन काटे दुल सग ।  
गहनी लक्ष्मी नह गिण, अणघड मूढ अपग ॥31॥

धाम घरा घन धर गया लिया न कोइ तार ।  
मूजी दुखिया मर गया, रह्या अमर दातार ॥32॥

किणरा ही दिन एकसा, रह या न रहसी फेर ।  
सहज वणै अहसान फिर, वणी समय री बेर ॥३३॥

प्रभु लवणोद उजातिहो, समय लोभ बिन पाय ।  
पुनि हरि हाथ निवाहना, भावी प्रवल कहाय ॥३४॥

गिनत उपाधि उपाधि मम, माधत ब्रत हित ईश ।  
बाके मन घन कछु नही, शाहन की बक्षीस ॥३५॥

रे मन मूरख चेत अब, देख चुका ससार ।  
अपना पराया कुछ नही, चलना है उस पार ॥३६॥

भक्त प्रतीक बनावते इष्ट गुणों अनुरूप ।  
चूक देखि अध्यास म प्रतिमा डारत कूप ॥३७॥

मत्र शक्ति बिन वरन नहीं, नहि भ्रौपघ बिन मूत्र ।  
रवा अयोध कोऊ नही, यो जग दुलभ उमूल ॥३८॥

उदय उदय वाको भलो, जो जग-मित्र<sup>१</sup> कहाय ।  
आश<sup>२</sup> दिग्मा नक्षत्र<sup>३</sup> बहु, उद भन्त च्छ जाय ॥३९॥

उदय होत नक्षत्र बहु, जिनमें लाभ न प्राण ।  
उदय भलो वा मित्र को, जिहि जय होत प्रकाश ॥40॥

अनी सुभ्रज के काठ की, तिरी यमुन उर छेम ।  
नया जोरन वही तऊ, करत कहैया प्रेम ॥41॥

वामधेनु गैया हूती, पीपत मैया नेम ।  
द्रुष मुख सतिमात तऊ, करत कहैया प्रेम ॥42॥

अने तितैया सिह दवि, महल मढैया घोर ।  
अहत रूप वहि प्रीति बस, यहो कहैया दोर ॥43॥



### प्रेम की अंतरंगता

दो भावों के बीच, नाक भवद्व खड़ा है ।  
मिल न सके दुहु नन यही हठ धारि भड़ा है ॥  
दानो ही की एक मति, अंतरंग मे एक है ।  
यही अनिश्चय प्रेम न, अटल सुसत्य विवेक है ॥

## आत्म कथा

पतित पावन दीनबधो । शरण इव तरी गही ॥

माभ्राज्य शक्ती शत्रु वही सवश्व था सो बड गया,  
प्रिय बीर पुत्र प्रताप सा वेदी बली पर बड गया ।  
भ्रात जारावर हुआ प्यारा निछावर पथ वहीं  
पतित पावन दीनबधो । शरण इव तरी गही ॥१॥

विश्वासघाती हुए साथी (जो) मुख सुनात मरण म,  
समय पडने पर हहा । तजि गये शत्रु शरण म ।  
काल कोठरि कठिन कारागार की साक्षी रही  
पतित पावन दीनबधो । शरण इव तरी गही ॥२॥

स्वार्थी सहोदर ने भरी कारी कलेज चुटकिया,  
भयभीत बाधव मित्रगण ने भी चुराई अलिया ।  
देशभक्ती पर विषम उपहास की ताने सही  
पतित पावन दीनबधो । शरण इव तरी गही ॥३॥

घाव दुख के सह लिये कुछ धीर हू अभिमान था,  
किंतु सच आधार मे प्राणेश्वरी का प्राण था ।  
उस 'मणी' बिन हा गयी अंधारमय सारी मही,  
पतित पावन दीनबधो । शरण इव तरी गही ॥४॥

अजहा न मेरी जननि का दासत्व बधन कट चुका,<sup>१</sup>  
मातृक दन मागना आहूतिया का नहीं रका ।  
बोटिया तन की उडें अभिलाप अब भी है यही,  
पतित पावन दीनबधो । शरण इव तरी गही ॥५॥

- १ ठाकुर साहब से प्राय मित्रगण आग्रह किया करते थे कि वे अपनी आत्म कथा लिखें । इस पर उनका यही उत्तर हाता था कि आत्म कथा लिखने का अधिकार केवल उमी को है जिसने समाज को कोई नवीन देन दी हो और क्याकि उन्होंने एसी कोई नई देन नहीं दी है इसलिये वे आत्म कथा लिखने क अधिकारी नहीं हैं । परंतु बापू म जीवन सगिनी माणिक कु मर (मणि) क स्वगवास क पश्चान उन्होंने अपनी जीवन गाथा सूत्र-रूप से इन पक्तियों म पद्य-बद्ध की है ।

## आत्म वेदन

विपदा घन सिर पर घुटे, उठे सकल आघार ।  
प्राण धाम सब ही लुटे, विद्युटे प्रिय परिवार ॥१॥

राम-चरित सिखवत यही है समर्थ विधि हात ।  
दिन देख्यो देखी निशा, पुनरपि भयो प्रभात ॥२॥

घप चतुदशे विपति के, ढाहत विकट बलाय ।  
कहा कथा भो दीनकी, राम ही दिये रलाय ॥३॥

राम सिया के साथ भ पुनि मनाथ गृह कीन ।  
इ त ! विपति क भन्त में, भेरी 'मणि' रही न ॥४॥

कहत विज्ञ इतिहास को, पुनरावत्त प्रयोग ।  
नृप उमेद कवि केहरि, कृष्ण सुदामा योग ॥५॥

मन उमगि सब ही मिले, राव रक, रजपूत ।  
यह कोलाहल कान परि, भर्यो खतन हिय भूत ॥६॥

क्षात्र-धम त्रियमाण लखि, चारण चित्त कब चैन ।  
शिक्षा पय स्वात्म्य गहि, लग्या सुविद्या दन ॥७॥



कायर धुगली करन भ, होत ददा हिन साधि ।  
 धानिम-शिष्य को दर्द, राज-विरोध उपाधि ॥८॥

प्रग भग के रग ते, तजी बग हिय हार ।  
 सदाहि दाम्नी दूध पी, चौकि परि सरकार ॥९॥

गहूयो मोहि गिनि अग्रणी, रहयो न घोरज रच ।  
 नीति कूटिल पथ ही जेच्यो, विरच्यो विकट प्रपच ॥१०॥

पडि मागे वे भंड ज्यो, जो देत कर पीठ ।  
 एक धम के प्रेम बल, दिक्स निभाय नीठ ॥११॥

स्वारथ रत स्वामिहु सहज, यह सुयोग निन पाय ।  
 द्वादस पीडित को कठिन सेवा दिय बिसराय ॥१२॥

सबहि हरयो विष ते भर्यो, कर्यो कर आदेश ।  
 रहनन पद्दो छिनहि यहै, जो प्रिय सज्जा सेष ॥१३॥

ल अवीध असहाय शिशु, कडि अबला तजि भौन ।  
 सकल नगर भासू ललत, कियो पितृ गृह गौन ॥१४॥

## सूखे वन की प्रार्थना

सूखे वन की सुनले प्रार्थना, अरे ! ओ मुसाफिर भोले ! !

यद्यपि वह लावण्य रहा नहीं,  
तदपि छाँह सुख लेना ।  
इस सेवा का घयवाद तो,  
देना या मत दना ।

किंतु कृपाकर सावधान हो, पियो तमाखू होले ! ! सूखे

में इन ग्रीधम की लूओ से,  
पहिले हि मूख चुका हूँ ।  
हा ! प्रचंड किरणों के मारे,  
अंतर फूक चुका हूँ ।

यह चिनगारी तेरे चिलम की, वन न जाय कहि शोले ! ! सूखे

## हरिगीतिका

हा ! ये किसी दिन सुघर सुन्दर, फूल सौरभ मधु भरे ।  
मीठे फलों से लद रहे, भुक भूमत थ पतहरे ।  
लावण्य मय प्यारी लता, गल बाँह द लिपटी रही ।  
स्वर्गीय सुख की छाह पे, हँसते पथिक खिषत सही ।  
बटहरे के काम का अब, वह पुरानी बात है ।  
हा ! ठूठ केवल रह गया, ऊपर कुठाराघात है ॥

- 
- १ एक बार कोई ग्रामीण अतिथि ठाकुर साहब के निवास स्थान माणिक भवन आये और उस छोटे से सुरम्य उद्यान की बमारियो मे "चिलम" का जलता हुमा "गुल" डाल दिया। ठाकुर साहब ने जब यह देखा तो प्राण दूर फँकदी और ये पक्तियाँ पेड की ओर स उन अतिथि महोदय को उपालभ के रूप मे सम्बोधित की ।

## ब्रिटिश गवर्नमेन्ट की कूटनीति के प्रति

कवित्त

श्वेत टक्काल<sup>१</sup> "गौरमिट" है अदृश्य बला,  
 असली स्वरूप या (को) सबजन जानेना ।  
 जाहि घर घुस ताहि करत शमसान रूप,  
 बुद्धि का बिगारि नगे नाच मे लजानेना ।  
 सब उपचार हार छूटे प्राण सोखे लेत,  
 तत्र-पटु गाधी बिन आय है ठिकानना ।  
 धसहयोग मत्र फू कि बीसी<sup>२</sup> हू की तीसी माहि,  
 शीसी म उतारे बिन भूत यह मानना ॥१॥

क्यो कर रहे अपन अग अपना कर लेना ।  
 दवा कठ पर हाथ, सत्व कुछ लोटा देना ।  
 विनिमय<sup>३</sup> का हि महत्व घातु कुछ भी हो क्यो ना ।  
 तावा कासी निकल रजत चाहे हो साना ।  
 अपने साचे ढालकर, मन अनुरूप बनाइय ।  
 इव ठक्काली भाव म, फिर सब नाच नचाइये ॥२॥

या टि प्रस्तुत रचना ब्रिटिश गवर्नमेन्ट की भारत विषयक कूटनीति को समोषित कर १९२७ ई म लिखी गई थी जिसे महात्मा गांधी की नीति ही बस म कर सकती थी । प्रस्तुत रचना मे ब्रिटिश गवर्नमेन्ट को दीमक की उपमा दी गई है ।

- १ सफेद रंग वाली दीमक, उसी के रंग समान ब्रिटिश जाति भी सफेद रंग वाली (White race) है ।
- २ बीसवीं शदी का तीसरा दशक ।
- ३ परिवर्तन ।

राजमद मात राते चहरे लजाते नाहि,  
 सबें खासि खाते जहा तहा कुछ पाते है ।  
 पर घर घुसि जाते अपनी मनाते आन,  
 विवश बनाते दास दीन बिललाते है ।  
 सतत सताने 'दाय सत्व' को बताते धता,  
 करि करि ताते धाब नान छिटकाते हैं ।  
 आते है जु वही दिन आत हैं ठहर जाओ,  
 दभी जब दात तले तिनखे दवाते हैं ॥३॥

इस पद की रचना ठाकुर साहब ने गिरधर कवि के नीतिपरक वृ डलिया  
 जाकि धन धरती लई, वाहि न लीजे सग,  
 जो सग लेते ही बने, तो करि राखु अपग ॥

के साम्य पर अंग्रेज शासन की भारत में अपनाई गई 'मच्छ मलागत रीति' को  
 आधार बना कर की है ।

## कुसुमांजलि

[सदभं टिप्पणी]

प्रथम जनवरी, सन् १९०३ को लाड कजन कोटा ग्राम, तब दिल्ली दरबार के उपलक्ष्य में यह कविता बनाई और इसे कोटा राज्य ने अपनी ओर से लाड कजन के हाथों में रखी कि यह हमारे राज्य-कवि का काव्य है। समपण भी कजन के नाम पर ही की गई थी। परन्तु राज्य की ओर से तीन बार याद दाशत (रिमाइन्डर) भेजने पर भी लाड कजन चुप हो गये। अतः उम समय छपने में रह गई। मालूम पड़े से हुआ कि लाड ने इसे पंजाब के किसी संस्कृत अग्रज के पास भेजी और उसने लिखा कि इसमें प्रारम्भ से अतः तक दो अर्थ होते हैं एक अच्छा और दूसरा खोटा। द्वयायक शब्दों के अर्थ केवल कुछ ही पद्यों के उपलब्ध हो सके और वे ही यहाँ दिये गये हैं। इसका अंग्रेजी भाषा में रेवर्ड ट्यूड होप (Rev Tued Hope M A, ओक्सफोर्ड) ने किया था।

जातव्य है कि सन् १९०३ के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में श्री बेसरीसिंह ने एक ओर महाराणा फतहसिंह को स्वदेशाभिमान और वश-गौरव का स्मरण कराते हुए 'चेतावणी रा भू गटया' द्वारा उद्बोधित किया, दूसरी ओर वायसराय लाड कजन को यह लघु काव्य 'कुसुमांजलि' समपण की। यद्यपि प्रकट में यह प्रशस्ति सूचक है परन्तु द्वयायक होने के कारण वास्तव में निदात्मक है। सहज ही कल्पना की जा सकती है कि जिस समय ब्रिटिश साम्राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था और भारत में स्वातंत्र्य चेतना की प्रथम किरणें भी पूरी तरह नहीं फूटी थी उस समय किसी व्यक्ति द्वारा ब्रिटिश सम्राट के प्रतिनिधि के समुल्लेख ऐसा दुस्साहस करना केवल उसकी मद्दम्य देशभक्ति और प्रखर काव्य शक्ति का परिचायक है।

इन सदभ में दोहा सख्या 22 (प्रथम अर्थ स्पष्ट है) का दूसरा अर्थ प्रसंग-वश कभी ठाकुर केसरीसिंहजी मुनाया करते थे वह इस प्रकार है- 'प्रस्तावित बंगाल के विभाजन (पार्टीशन ऑफ बंगाल) से क्रोध में आरक्त होकर भारत में यद्यपि दस क्षण (राज्यारोहण) को स्वीकार कर लिया है परन्तु भगवान से प्रार्थना है कि ऐसा छोटा (अशुभ) दिन भविष्य में और देखने को न मिले, अर्थात् फिर कभी भारत में ब्रिटिश सम्राट का राज्यारोहण न हो यानि देश स्वतंत्र हो जाय।

दाहा

पालन हार प्रकाश वा, जानत अतिल जिहान ।  
या हित नूपति भान को, देत मान सनमान ॥१॥

छद वेतान

भो भाग<sup>१</sup> सूरज अस्त भारत साथ भारत जग ।  
छा गई तामसि<sup>२</sup> आपदा जीमूत<sup>३</sup> जूधन सग ।  
घुटि रहया घर घर घेर तव अघेर<sup>४</sup> चहु घा छाया ।  
वह दीह निज<sup>५</sup> पर ज्ञान मानव भाव हि<sup>६</sup> तु<sup>७</sup> मुलाय ॥२॥

सहि लाह<sup>८</sup> यवन जु शाह तव दमकी<sup>९</sup> धनजय<sup>९</sup> राचि ।  
अति अघ विवहल हि द तिहि प्रनु अश-प्रभकर साचि ॥  
सनमानि लिय गुन जानि हुननुक<sup>१०</sup> पूरि पूरन नेह<sup>११</sup> ।  
भवकाश सुदशा<sup>१२</sup> सग ।दय परकाश<sup>१३</sup> चहि बिच गेह ॥३॥

१ भाग्य रूपी सूर्य या उत्तम रजगुण का हिस्सा २ अघेरा या तमागुण  
३ आपत्ति रूपी बादलो के भुण्डो के साथ (जीमूत उस बादल का नाम है जो  
वायु ही से बिखरे) और आगे इन आपत्तिया को बिखेरने में कम्पनी  
रूपी वायु कहा गया है ४ अघेरा या दुरावस्था ५ अपन पराये  
का नान ६ से ।

७ लाभ ८ चमकाई ९ अग्नि की प्रभा वा धन जीवने की इच्छा  
१० प्रथम अघ अग्नि, द्वि अघ जो दिया जावे उसे खाने वाला •  
११ रनेड, द्वि अघ तेल १२ उत्तम हालत, द्वि अघ दीपक की वस्ती  
१३ प्रकाश वा पराये को चमकाना ।

प पाय वह मद सग<sup>१</sup> अति लिय लाय र्पाहि भाल ।  
 किय कानपय<sup>२</sup> निन नाम सारथ बाढि हति<sup>३</sup> करात ॥  
 अनमाप दुस्नह तापते<sup>४</sup> निरदाय प्रज मतापि ।  
 अति घोर नाशक शाह शब्दाहि लोक हिय दिय छापि ॥५७

प अन शाहह नहि सके अपनीहु सत्ता टारि ।  
 अ धार भस्मक वह बुझी मह राज्य अगन जाति ।  
 हा । हात जोतो सुखिना चिर दुखी प्रज चक्षधार<sup>५</sup> ।  
 निम बीर बाहुज बश की भीनी जु कर तरवार ॥५८॥

तांगा भरदुन ओ पिडारन आत्रता सु मकारि ।  
 सुहिरप्यरत<sup>७</sup> विचारि गुन पुनि टारि नव चिनगारि ॥  
 रिय भूम धूम मचाय तिहि अवेर<sup>८</sup> घोरहि छाया ।  
 दुष अवधि पहुव्या हि द इम दम प्रात घुट घुटाय ॥५९॥

तेहे भई वरणा दृष्टि करुणा सिधु की जु महान ।  
 वा पाय पूरन पतन पायो हिन् पुनस्त्वान ॥  
 अति प्रबल पच्छिम<sup>९</sup> ते प्रमजत<sup>१०</sup> कम्पनी<sup>११</sup> पन्<sup>१२</sup> गरि ।  
 मह साहि दिय दुखदाई बन्ल<sup>१३</sup> धूम आदि बिलरि ॥६०॥

- १ मद्य वा घमड २ कृष्णवर्त्म अग्नि का नाम है, वाला माग वाला वा  
 दयित माग वाला वा मृत्यु वा माग वाला ३ अस्त्रशस्त्र ज्वाला  
 ४ ज्वाला, द्वि अथ शस्त्र  
 ५ अपन आधार ही को भस्म करने वाली (अग्नि)  
 ६ आग्नी से प्रवाहित अश्रुधारा  
 ७ अग्नि द्वि अथ जिसके परिणाम में साना हा अर्थात् जिससे स्वर्ण (धन)  
 कमाया जाव ८ घुघ्रा, द्वि अथ उपद्रव  
 ९ पश्चिम का वायु ही बाजल बिखेर रहा है, द्वि यूरोप १० अघट वायु द्वि  
 अथ ताउन पोहन वाली ११ ईस्ट इण्डिया कम्पनी, द्वि अथ कम्पान वाली  
 १२ कान्त घोर अथमाप १३ बाजल, द्वि अथ साटे दल, नुटेनी पीजे ।

तेहें मके कोड न टहरि परि बिच चड तिहि भवभोर ।  
 बि तु शीपक स्वय अस्थिर वा सकी नहि डोर ॥  
 पुनि मात-मविता<sup>१</sup> शक्ति श्री बिकगोरिया महाराणि ।  
 रहत हू पच्छिम क्षितिज लिम अपनाय हि दुस्तानि ॥८॥

सखि अतरिच्छ<sup>२</sup> हि स्वच्छ करि पुनि वात<sup>३</sup> शीत न मद ।  
 निज विजय केतन<sup>४</sup> के तरें गहि लीन्ह सहजहि हि द ।  
 चक्रि चकित भारत भूमि को किय भेजि प्रतिनिधि<sup>५</sup> चद ।  
 चहुँ काद शाति विनोद लिय प्रज चित्त पूरि मनद ॥९॥

जे दिये सुख जगमात वह कह सके नहि कवि जीह<sup>६</sup> ।  
 हे ध य अति सुहि जननि पाले सततिहि तिहि लीह ।  
 भुवि पच<sup>७</sup> खडरू सप्त सागर<sup>८</sup> पैजु हाल अनूप ।  
 एडवड सप्तम तपें प्रभकर द्वादशात्मक रूप<sup>९</sup> ॥१०॥

- 
- १ सूय शक्ति अर्थात् जिस शक्ति से सूय की सूयता है ।  
 २ आकाश, द्वि अथ भीतरो इच्छाए ३ वायु द्वि अथ कथने  
 ४ ऋडा ( सिंह राशिगत सूर्ये वा सिंह वृष्टानिया )  
 ५ च द्रमा रूपी प्रतिनिधि ( वायसराय गवधर जनरल हि द ) पर प्रकाश  
 प्रकाशित च द्र भी सूय का प्रतिनिधि है और वह भी पश्चिम से आता है  
 और अवधि माग कर पश्चिम म ही जाता है, कला रूप से आता है और  
 पूर्ण हाकर जाता है, आदि ।  
 ६ जिहा ७ यूरोप, एशिया, अफ्रिका, अमेरिका व आस्ट्रेलिया  
 ८ एटलान्टिक, पेरिसिफिक, उत्तरीय, दक्षिणी, भूमध्य, बहि महासागर, अरब समुद्र  
 ९ एक सूय बारह स्थान यानि राशि पर अलग अलग तरह तपने से वह बारह  
 माना जाता है वमे ही उपरोक्त बारह स्थाना पर हमार प्रतापी सम्राट  
 एडवड का आधिपत्य है ।



जहना-विनाशक हनु जीयन दूर दगव राठ ।  
 उव जाति जागव व प्रकाशक भीति जाहनाह ॥  
 सिरताज राजा राम भी सिरताज धरि इहि भार ।  
 दोषायु नीहअ रगे तिहि श्री कृष्णपत्र मुरार ॥११॥

भी घाज भारत मुकुट दिल्ली पाट उस्ताव पाय ।  
 चिरकाल बिरमृत माग यह महमान सीह बघाम ॥  
 ध्वज घाश डकत राज दूष्यन शृ ग<sup>१</sup> नभ रहि भूमि ।  
 उत्तधि चर<sup>२</sup> मयाद चहृघा छई छपन भूमि ॥१२॥

जहि लियो पाठधराज<sup>३</sup> का शुभ धम प्राप्तन मान ।  
 जहें देशवत्सल वीर प्राप्तन रहयो पति चहुवान ॥  
 जहें शाह जयनन विद्ययो नरत वदाय<sup>४</sup> क्रूर रू रुड ।  
 तहें प्राज आजत ब्रिटिश हि सिंहासन सुतीति निगूढ ॥१३॥

तहें जुनी कौतुक<sup>५</sup> हनु वासनला जु लवखन भीर ।  
 दल मिले सहैमन विविध बल वि यास कौशल वीर ॥  
 मन जान कथन दैन हूपन रुचि प्रदशन ठाम ।  
 सोभाय्य देहलि देहलो भइ नहलीला घाम ॥१४॥

१ राजाघो के डेरा के शिराज २ जहाँ तक दखि जाय वहाँ तक

३ महाराजाधिराज युधिष्ठिर ४ भति उदार

५ आकषण ।

इव भाग षष्ठम रहित मडल प्राटृती अनुवार ।  
गिरदाय विजयी वैजयती रच्यो तेंहें दरगार ॥  
प्रतिभूमि पडन वे जु मडन मानयल तिहि धारि ।  
समकक्ष हि दू यवन अविनप जुर् जेंहें शतचारि ॥15॥

ज घरत बभय घी, घरा वमना सुशासन जग्य ।  
ते सवल द्वादश सहस्र आसन गह तेंहें महमय ।  
दुहें आर भूपति पति विच साम्राज्य पट्ट विधाय ।  
लिय लाह वैठन शाह प्रतिनिधि राह षायसराय ॥16॥

हिय हिंद होरत हार वे अनुहार हारत नैन ।  
बिनमत वैधा बाल ध्वज धर गम आशय एन ॥  
मुवि काम घेनू वी जु मथनि किधों जुत नवनीत ।  
मनु शीश भारत दृश्य अतर लसत पम पुनीत ॥17॥

किधों शुभ ऋतु शरद रावा अरथ दश्य अनूप ।  
रवस्वस्थ राजत लाड वजन पूरा हिमवर रूप ॥  
नक्षत्र राजक अवलि दुहुघां नमि चली जिहि अग्र ।  
चख हृदय सीतल त्योहि मोहित करन हार समग्र ॥18॥

आट्हादि उमडन हेतु प्रजनन चित्त सिंधु अघाहि ।  
आगमन त हें गियो भारत व दनीय जु जाहि ॥  
प्रजराज जनपद भक्ति श्रौपधि करत रस सचार ।  
बिच शाति भासत भव्य शाति सु बलानिधि तमटार ॥19॥

इम घरे धनुषम उटा धाग्न मभा मण्डप राज ।  
 विय इन्द्रप्रस्थ जु नाम सारथ पूर भारत आज ॥  
 तिहिं विपुल वैभवं सबल धरनिन सके समसन साथ ।  
 हे भय जीवन सफल तिन जिन कीह नन सनाथ ॥20॥

सुप्त-राशि कुसुम विद्याधि ननु जगमित्र प्रतिनिधि रूप ।  
 तम-चरन कजन चन्द्र कजन स जु भजु धनुष ॥  
 शतभायु नीरुज रहहु श्री एडवड वह ग्रह-ईश ।  
 हिय हरभि भक्ति धनय धरि यह देत कवि आशीष ॥21॥

### दोहा

भक्त हिन्द अनुरक्त बनि, लिय वधाय दण एहु ।  
 पे पुनि मागत इष्टते, तधु यह दिन जिन दहु ॥22॥

प्रथम जनवरी ख्रीस्ट सम, नयन विदु ग्रह चन्द्र ।  
 राज मुकुट एडवड हिन, विय कजन मह हिन्द ॥23॥

### पदपदो

निज पद के आधार गिनत समाट नपन कहे ।  
 नपहु चहत साम्राज्य हतु अपन विवसन महे ॥  
 पुष्कर प्रभु उम्मद मिश एडवड निहारत ।  
 कोटा सागर सहित हप मय ऊर्म उद्धारत ॥  
 मैं हू इस मिहामन उपरि, सहज राजकवि धम धरि ।  
 'केसरीसिंह' कुसुमा जली, यह चडात मधु-भाव भरि ॥24॥

हिंदी काव्य

## राष्ट्र धर्म

मा स्वतंत्रते ।

प्रधान मानवीय सत्त्व है स्वतंत्रता महा ।  
वरुण धम कम मम मन ही मही रहा ।  
मृतान प्राण प्राण वारि के तुम्हेंहि सोजते,  
मि विश्व वारुणीय प्रन्त मां । स्वतंत्रत !!

## भारत-दुर्दशा

घा घमवीर ! गभीर भाणय,  
घोर घरि मुनिय यहै ।  
गति नम धारत मम भारत,  
घम भारत या यहै ॥  
स्मरि भूत पूरन भध्यता को,  
घाय गारव ना यहै ।  
हा! हाल लनि मम बाल इहि,  
किहि नीर ननन ना यहै ॥1॥  
स्वामित्व मम गहि भाज्य मानस,  
राज्य पूव प्रकृष्ट भो ।  
हा ! कथा सुन जन वह यथा,  
सवस्व मरो नष्ट भो ॥  
काठ रह इव रस गहि वस  
वस माहि प्राकृत राहव ।  
चाह हाहि दारिद गात  
वारिदनाथ चेष्टक चाह के ॥2॥  
चिरकाल निद्रित चेष्टे दहै,  
ननु हेत जागन को सदा ।  
से पतन सूचक होत सौख्य,  
विमान उद्यलन उमदा ॥  
तहि अटल-गति घसवति तें,  
जु समय कोऊ ना खस ।

द्वै सुहृदय मो सुप धाम,  
काम रुम्रथ ता बिच जा फौने ॥3॥

सुख सध सधि प्रवध वधन,  
रूप सो लगने लग ।

स्वातनय गध मदाघ व्हे  
आनद छदहि तें ठग ॥

इम सधि सध्या हई पच्छिम  
मित्रता कँह अस्त भा  
सहसासि बढि तम तोम दशन  
भावहीन समस्त मो ॥4॥

सिर घर पूरन कामना  
उपहार अग्रह भेटिकें ।

मम बुद्धि मनी भे- किम,  
लिय पच्छ लोभ लपटिकें ॥

तिये छीनि राज्यन अग पापक,  
कोप अद्धा हू हहा ! ।

ता सग हित सम्पक लखि  
बल तक पद्धति फिरि रहा ॥5॥

### दोहा

भारत के सिर अगम धे वह यौवन सुखदाय ।  
रामराज्य बुद्धिया गया बढी सफती आय ॥

उक्त दाह के दो अर्थ होते हैं

[1] जब तक भारत रूपी शरीर के सिर पर काले काल बाल धे तब तक वह सुखदायी यौवन का समय था लेकिन अब वह राम राज्य पूढा हो गया है- उसके सिर पर अब सफदी प्राप्त हो गई है ।

[2] जब तक भारतवर्ष पर श्रीराम, ब्रह्मण शीर उनके वंशजी का शासन था तब तक ता उमका वह यौवन काल था लेकिन अब उन आय वंशजा का राज्य ऐसा निबल हो गया है कि श्वेत-जाति [ White Race ] क अश्रेजा न अपना रंग जमा तिया है ।

## हजारी बाग जेल में बग साहित्य की याचना

मरि मरि की सुन्दर, बग बाणीरघर,  
 प्रतिरत्न दीप्तितर, हरे छे आंधार ।  
 जाचितेछि किञ्चुल मन, मुग्ध बरिबार मन,  
 बाटिते कठिन दिन, अघ-कारागार ॥1॥  
 जानी ना कत की वेशे, जननी पुस्तकपाणि,  
 आशिया छे कारादेशे, भक्तवत्सल बाणी ।  
 दिदृक्षा मायेर मुख, सूची ग्ये मम,  
 भाइयेर तरे भाई, लहिबे "प्रफुल्ल" अम ॥2॥

### भावाव

"अहा! कैसा सुन्दर है बग भापा का रत्नागार जिसका प्रत्येक चमत्कृत रत्न भ्रजानाशकार को हरने वाला है। इस अघकारागार के कष्ट-प्रद दिनों को काटन हेतु मैं ऐसे ही उज्ज्वल पुस्तक रत्नों की कामना कर रहा हूँ। मैं नहीं जानता मा सरस्वती किन विभिन्न परिधानों में इस कारागार में उपस्थित है। उस मा के पावन स्वरूप का देखन की मेरी तीव्र इच्छा है। हे भाई प्रफुल्ल चंद्र! अपने दूसरे साथियों के लिये यह कष्ट अवश्य स्वीकार करोगे।"

आजीवन कारावास हो जाने के कुछ समय पश्चात् ही सन् 1915 में ठाकुर साहब को ब्रिटिश सरकार ने कोटा सेंट्रल जेल से हजारीबाग सेंट्रल जेल भेज दिया था क्योंकि सरकार को अदेश था कि कोटा जेल से उनका सम्पर्क प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं आतिकारियों से बना हुआ है। उस समय हजारीबाग जेल में बगल के अधिकांश आतिकारी बंदी थे। हजारीबाग जेल में ठाकुर साहब को काल कोठरी 'सालिट्री-सल' में रखा गया था एवं चक्की पीसन का काय दिया गया था। परंतु बंद ठिगना होने के कारण वे चक्की नहीं पीस सकते थे इसलिये कुछ समय बाद पुस्तक की जिल्दे बांधने का काय दिया गया। जब तक चक्की पीसने का काय किया तब तक अथ साधारण अशिक्षित कर्तियों को दाल व अनाज से अक्षर-ज्ञान एवं भारनवप का मानचित्र बनाकर भागौलिक ज्ञान कराते रहे।

सन् 1919 में प्रस्तुत कविता बगला में लिखकर एक आतिकारी साथी श्री प्रफुल्लचंद्र चाकी को बगला भापा की पुस्तकें भेजने हेतु सम्भो की थी।

## उद्बोधन—नारी समाज का कवित्त

मानव समाज की बिगारी दशा स्वारथ नें  
 कहत अनारी नारी अबला कहावेगी ॥  
 नर नाम धारी सत्ता मागत भिखारी बनि,  
 लाज हू न धारी बात जगत हसावेगी ॥  
 भूमि महतारी अत्याचारी पद रौंदी जात,  
 अब तो हमारी नारी कदम बढ़ावेगी ॥  
 टरकें जहाँ पं नर फरक हमारी बांह  
 भरक उछाह रन करक दिखावेगी ॥ १

## लाला लाजपतराय

### कवित्त

देश के दुलारे लाल, मारे जात डडो मौत,  
 देखन तुम्हारे हार कायर सिटाओगे ॥  
 ललकि भिडत के नगारे चोट देकें अब,  
 मोट ले अहिंसा की क्या किस्सा ही मिटाओगे ?  
 सहज उपाय हाथ वही ना निभाय सक,  
 सादी विसराय परदेशी को भिराघाने ॥  
 लाज धोरि रता म फजेता जतनी का करि,  
 कहा ! प्यारे नताआ को कहा ला पिटाओगे ? २

1 उपयुक्त कवित्त ठाकुर साहब न अपनी पौत्री यु थो राजलक्ष्मी को महारानी गल्स हाई स्कूल, काटा, म डिक्ट म बोलन हतु उस समय लिख कर दिया था, जब वह दूसरी कक्षा म अध्ययन कर रही थी। नारी समाज के प्रति ठाकुर साहब का हृदय म निवसित मान सम्मान और नारी की क्षमता पर अटूट विश्वास के उद्बोधनात्मक भाव इस कविता म स्पष्ट दिखाई देते हैं।

2 साइमन कमीशन 1932 मे लाहौर गया जहा उसका "बायकाट" करत हुए सत्याग्रहिया पर ब्रिटिश सरकार के अधिकारिया ने बबर लाठीचाज किया एव एक सार्जेंट के साथी प्रहार से देशरत्न लाला लाजपतराय बुरी तरह घायल हो गये और अंतत उसी से उनका प्राणगत हुआ। उस ददनाय समाचार को सुनकर ठाकुर साहब न मह कवित्त लिखा।

## सैन्य—गान

दीन च घु मुख के आभार,  
जयतु प्रभु वह जगदाधार ॥

- भारत भूमि प्राण से प्यारी गौरव मय यह मात हमारी,  
सकल विश्व मे जाइ न इसकी यह जीवन इन पर चनिहार ॥1॥ जयतु ..
- परहित प्राण विद्यावर करना, मृत्यु अहिंसा प्रेम न डरना,  
मानव पशु म भेद यही है, मय घम का इतना सार ॥2॥ जयतु ..
- जो जनमा वो अवश्य मरगा धीर अमर निज प्राण करेगा,  
घम समर हँसत बलि हाते, रहता जुला स्वर्ग का द्वार ॥3॥ जयतु ..
- घन जीवन मद लाभ भुजाना आखिर बान गम न जाना,  
स्वारथ रन कायर का जीवन अटिया पर मरना धिक्कार ॥4॥ जयतु ..
- न्याय शांति सुख का जा पाती, वह नर तन म राक्षस जाती  
जनता के उस अघम अशु स लडना है हमको लनकार ॥5॥ जयतु ..
- नही किसी से हमका द्वेष निनु हरैये जन के बलेश,  
इस ही प्रण स शस्त्र उठाया शांति दूत हम सनाकार ॥6॥ जयतु
- राजा प्रजा शांति सुख लेवें, अभय प्रेम से नौका खर्वे,  
लेते हैं हम सनिव हसकर, सब ही का अपने भुजभार ॥7॥ जयतु ...

सदन दिप्पणो—

“कोटा की फौज सदा गाती हुई निकलती है “राधेश्याम कहो, सौता राम कहो,” न देखने पर, सुनने वाले को यही प्रतीत होता है कि किसी महत की जमात निकल रही है। अग्रिय सा लगा, सैनिक के अनु रूप यदि ऐसा गान हो तो क्या ठीक न होगा” (ठा केशरीसिंह)



## राज—धर्म

कवित्त

राजन धमर प्रजा ही शुभ सतति है,  
 सैन धन बल नाहि मुख्य बल धी को है ।  
 है न राजपद की सहायक बठोर सत्ता,  
 न्याय प्रजा प्रेम देश हित ही तरीको है ।  
 सनिज सजानो तुच्छ भासैं मर-रत्न धागें,  
 लोभन में लोभ नृप की रति को नीको है ।  
 क्रम परमारथ में स्वारथ समाय देनो,  
 यहै पद धम बिन राज्य पद फीको है ।३

## राजा—भर्त्सना

कवित्त

बही सही राजा धान धारा न रुकत जाकी,  
 न्याय धी प्रताप बल प्रजा मुल सावती ।  
 धाणी का विलास त्याही रमा का रमण रम्य,  
 प्रतिधर मानवता सतजुग जोबनी ।  
 ऐसे तो भनक राजा तेली धा तमाली राजा,  
 धो । धो । मेरे राजा ।। बोलि मैया मुल पोवती ।  
 "तिस्ट" ही ने राजा केत बजरी धमरिया हू,  
 रामम मरें तें "राजा-राजा" कहि रोवति ।

## राजा का कर्तव्य

### छंद

आपकी प्यारी प्रजा की आश आशिर्वाद है,  
इसकी सफलता में सदा सुख शांति यश आह्लाद है ॥  
आय म अमृत भरा हो मधुर रस रसना मेरी ।  
विलसता हा मोठ ऊपर हित सहित स्मित हर घरी ॥ 1 ॥

चाटुकारिन की चतुरता जान में चुभती रहे,  
हाथ में हो दान-धारा पाय मधु लेखिनि नहे ।  
क्षणबल भुजदंड में हो कायफल में धीरता,  
मन और तन की स्फूर्ति ऊपर छा रहे गम्भीरता ॥ 2 ॥

नम्रता व्यवहार में सत्काय में रुचि नित नयी,  
मानस सरोवर की लहर हो क्षमा प्रीति दयामयी ।  
बुद्धि में हो धर्म शुभ-सकल्प में दृढता बनी,  
वनव्य साहस पूरा हो, ही दश-हित में जीवनी ॥ 3 ॥

धर्म-कुल धर देश का अभिमान ही अहंकार में,  
हिचकिचाहट ही नहीं निज दोष के स्वीकार में,  
उच्च संवाभाव ही राजस्व के समान में,  
मनुजता की सिद्धि निमल ही चरित्र-विधान में ॥ 4 ॥

सप्त प्रवृत्ति<sup>1</sup> पर निरंतर रहे पूरा सतकता,  
विश्वाम ही सहकारियों में योजना में दक्षता ।  
विविधता में गुणचयन निपक्ष निरणयवृत्ति में,  
सदा निर्भयता रहे बुध तत्व-सिद्ध-प्रवृत्ति में ॥ 5 ॥

रचना-काल 31 8 1932

1 सास्य में वज्रित प्रसिद्ध महत्त्व आदि सात प्रवृत्तियों ।

## कोटा महाराव उम्मेदसिंह जी के प्रति

### छंद

अज्ञात कुछ शुभ काम के बल गद्दिया को घूरना,  
भोगरत जीवन बिताना चाय पख बल मूदना ।  
इतना हि यदि नप नाम का हो अय देश अभाग है,  
यह अय मस्कृति नाम पर लज्जा प्रदायक दाग है ॥ 1 ॥

नित प्रजा-पालक रहे सच्चे पिता भारत भूपती,  
श्रीदाय तज प्रभाव पु गव वीर क्षत्रिय नरपती ।  
जिनकी कथा सुनि अय कहि सत्तार सीस नवात है,  
वे आज भी हैं अमर घर पर सब उ ही की बात है ॥ 2 ॥

बल बाधि धम जन का किमी विधि विजय पाना सहज है,  
धिक खेल पशुमल खेल को जगल बनाना महज है ।  
साखा प्रजा के हृदय को ह्रीं । प्रेम के दढ पाश मे,  
है बाधि लेना कठिन अति व्रत सत्य के विश्वास मे ॥ 3 ॥

पूव सचित पुण्य तप मे राज्य-पद की प्राप्ति है,  
पुण्य आत्मा सभी नृप हा बस यही अर्वाप्ति है ।  
केते विषय सुग लीन हो सब पुण्य-पू जी भाड दें,  
केते चतुर सत सरल जीवन पुण्य पू जी बाड द ॥ 4 ॥

क्षत्रियो का काल बह वीरत्व मे सब सिद्धि थी,  
प्राण पर खेले ज्युंही बस हाथ मे जग अर्द्धि थी ।  
रि तु यह अति विकट कोमल लेखिनी का काल है  
गत राज्य को लौटा लिया अद्भुत मही इकवाल है ॥ 5 ॥

अति हप मे उफने नही विचलित न बच्चाघत मे,  
पर दुख-दुखी परसुल-सुखी, नृप अय ही इस बात मे,  
अभिमान का तो नाम नहि पूरण दमा के सिधु हैं  
क्रोध का लवलेस नहि त्या बहम का नहि बिन्दु है ॥ 6 ॥

## मनहर

रोतल की एक प्याली केते मदमत्त बनै,  
 घन मद नाशक गिनावैं झाठ दीनी मे<sup>1</sup> ।  
 चढकर राजमद विकृत बनावैं सब  
 शासन की दृढ़ता बनावैं भूत भीती मे ।  
 हंसमुख तेरो यह सदय सरल भाव,  
 जग को लुभाय बाँध्यो राजकुन प्रीती मे ।  
 एक दृ न मद छात्रयो सबतैं मधुर भाव्यो  
 माहन को मत्र त सिखायो राजनीती मे ॥

## दोहा

जड घन रो की जावणो, जतन करता जाय ।  
 परजा घन सत पागमो, बिलसै तू बडदाय ॥ 1 ॥

विकल प्रान के बे रसिक, रीभत विकट तपाय ।  
 प्रजा बाधि तप ब्याधि मे, आखिर भये सहाय ॥ 2 ॥

नहि लायर पडित गद्दी, नहि डी लिट की बात ।  
 आय- नृपति के आचरण शासन सफल बनात ॥ 3 ॥

1 अर्घ, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मकड़ी, मूसा, तोता, राजद्रोह से  
 बलेश, प्राणों का मोह ।

क्षात्र-धर्म

क्षत्रिय वही है

कवित्त

सदा ही सताये जात दीन बलवान हाथ,  
 अबला म बात यटु गाली मिट जाने की ।  
 परमान कम ही मे धम मम पीछे का,  
 जानते न साहस के पुज सिटजान की ।  
 भारत का हाथ नाद सुन सभत न वीर,  
 गाजि सठे दशा देखि दीन पिट जान की ।  
 क्षत्रिय वही है जिस स्वाभिमान रवत्व पर,  
 बिना दुविधा के चाह मर मिट जान की ।

रचना काल—17 1 1939

आत्मस्मृति

मनहर

वीर रस टाके, याय नीति की छरजा क दद,  
 बाहर विरवा के बाक बिना दुविधा के थे ।  
 रणक प्रशा के, सिरमौर थ इला के सदा  
 दुश्मन दगा के, प्यासे सुयश सुधा के थे ।  
 अरि स रटाके लेन बाहिना घटा के बीच,  
 धुनती सटाके सिंह अद्भुत छटा के थे ।  
 नील निपटा के ता निहारा राजपूत वीरो,  
 स्मृति का सम्हारा हम वीर वपुधा क थे ।

रचना काल—10 6 1940

# इनको कौन रोक सकता है ?

## दोहा

राकत बयो ना नृपन का, शुभचितव कहलात ।  
जे पूछत या कथिन को, मुनहु मम की बात ॥

## धनाक्षरी

“राजनीति” श्रोत लिखि कहि बें बदल जाव  
लोभ को “प्रबध” कही दीनजन चूसे जात ।  
वृषण द्विपावे धन-मोह को “मितव्यय” मे  
निदयता “याय” नाम क्रूरता ‘प्रभाव’ पात ।  
‘दश काल ज्ञान’ भानि हनि कुल घम चलें  
डूवि छोटे व्यसन मुनावे “दिल बहलात” ।  
बहत विरुद्ध पौत महिप मदाध भौन  
रोक बान ऐचि रह यो विवि विपरीत हाथ ।

## जयपुर प्रजामंडल के दमन पर

( जयपुर राज्य ने वहाँ के प्रजामंडल को ध्वंश करार देकर दमन करने पर कमर कसी तब जयपुर दरबार सवाई मानसिंह जी को लिखा 30 1 39 )

राजन् !

दुख है कि वतमान नरेश विपरीत शिक्षा के साधे में डल कर वा व्यक्तिगत सुख के प्रलोभन में वास्तविक राजधर्म को भूल गये और चारण भी कुल धर्म को भूलकर चापलूम मात्र रह गये । शुभचिन्तक चारण का धर्म ही यही है कि सत्य को निमग्न होकर राजाओं के सामने रखे और स्वधर्म पालन करते हुए राजमद का कोप सिर पर आवे तो शांति से सिर झुका कर स्वीकार करे क्योंकि "स्वधर्मो निधनम् धर्मो पर धर्मो भयाह" । तदनुसार वतमान जयपुर की नीति से दुःखित हाकर यदि यह शुभचिन्तक श्रीमानों की सेवामें दो शब्द विनम्रता से नजर करे तो आशा है श्रीमानों की उदार भावना क्षमा करेगी । होगा वही जा श्री जगदम्बा को मजूर है फिर भी "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्" इस शरीर का परिचय कुंभर दलेलसिंह जी पत्तामया<sup>1</sup> से पा सकते हैं ।

### दोहा

डडा बल वशुभुड पर, पगहु हीत समथ ।

वीर प्रेम बल बलिन पें, समभत शासन धय ॥ 1 ॥

दीन प्रजा अरु नारि पर, क्षत्रि न शस्त्र उठाय ।

पर हित म निज हानि को सहत वीर हरपाय ॥ 2 ॥

मान ! मान अभिमान तज, सुत सम जान प्रजान ।

धमन उजारहि दमन मह धत आपकी हान ॥ 3 ॥

1. महाराजा सवाई मानसिंहजी के प्राइवट सेक्रेट्री सर भाजारसिंह जी पत्तामया के पुत्र ।

मनहर

जनता के बल ही से जमन कपाते जग,  
 माने जात "पर"<sup>1</sup> वहा पुथझे जहर के ।  
 पर मुख ताकि रहे नृपति हमारे हाथ, ।  
 लेते हैं उबासी नर रत्न निज घर के ।  
 अपनी प्रजा का हिय हरपि सतोप लेहु,  
 सुनिये विनय नाथ डूडाहर घर के ।  
 प्रेम से विजय पाना यही वीर बाना मान ।  
 योग्य है न आजमाना हाथ हितकर के ॥ 4 ॥

खी चुके पराय हाथ निज अधिकार भार  
 प्रजा के सहारे शेष फिर भी बचायागे ।  
 पाती पूबजो का जाती रहेगी सगाती सग,  
 जो न प्रजा प्रीति नीति पटुता दिखाओगे ।  
 भक्ति जनता की अजा बाकी उसे रोदि रादि  
 घर ही म आग फू कि जगत हसायागे ।  
 पायागे ना शांति सुख व्यथ अभिमान ठान,  
 तत बिन मान । हत अत पछतायागे ॥ 5 ॥

घाय वह पिता जिस पुत्र का सहारा मिल  
 भक्त प्रजामडल की प्रीति नृप सुख है ।  
 सत्ता निज सोप दते हसत पराये हाथ,  
 प्रजा को पराई मान डरते हो, दुख है ।  
 आग के खिलाडियो ने घर हैं समुद्र पार,  
 एहो गृह-स्वामी ! ज्वाला आपही ने रुख है ।  
 एते में न सावधान तो तो मान । मान लीजे,  
 राजपद ही से अब विधिना विमुख है ।



( जयपुर प्रादोलन के सम्बन्ध में ता 30 4 39 )  
महाराजा मान उतने दोषी नहीं हैं क्योंकि—

### दोहा

प्रजा न पूरा मानती, दब मान पर दोष ।  
मन्त्री ताप धोम यनि, वादत अपनी हीस ॥ 1 ॥  
सिकुडि डाल को भोट में, अपने वरत बचाव ।  
भीति घतुरता बुद्ध कहा, कच्छप<sup>1</sup> सहज स्वभाव ॥ 2 ॥  
मान व्यय बदनाम भा, बीचम<sup>2</sup> यग<sup>3</sup> प्रमग ।  
जस पाय तुरग सग, होत सुरा बुरग ॥ 3 ॥ ❀  
प्रकृति<sup>4</sup> तीसरी यनि नहीं, बीचम बिच म घात ।  
साव मानवति नीति का, महज प्रीति मनवान ॥ 4 ॥ □

### दोहा

बखत तणो बीयो बखत, जयसी रो जुग नाहि ।  
मान मान ! भूरो मती, निभणो बीसी माहि ॥  
राज्य के लोभ में अपने पिता ( महाराजा अजीतसिंह ) को मारने वाले  
रामतसिंह का और पुत्र को मारने वाले सवाई जयसिंह का समय भ्रम बीत चुका  
है । हे मानसिंह ! यह मन भूलिय ! आपका तो इस बीसवी शदी में रहना है ।  
निज सुत ने पिटता निरख, डाकण भी उहकाय ।  
मान ! मून त विम सहो, पिटठू प्रज पिटवाय ॥  
अपन पुत्र को मार खात दखकर दुष्टा स्त्री भी भय खाती है । फिर हे  
मानसिंह ! आप इन पिटठुओ ( अग्रोजो ) द्वारा अपनी प्यारी प्रजा को पिटते  
हुए देखकर भी कैसे मौन लेकर सहन कर रहे हो ?

- 1 कछुआ, कछुए की उपमा महाराजा मानसिंह को दी गयी है ।
  - 2 सर बीचम, तत्कालीन जयपुर राज्य के प्राइम मिनिस्टर ।
  - 3 मि यग इत्सपक्कर जनरल आफ पुत्तिसा नातव्य है कि इन दोनों अग्रज अधिनारिया न प्रजा बिगोध के दमन में प्रधात भाग लिया था ।
  - 4 नपु सवत्व ।
- ❀ महाराजा मानसिंह (सर) बीचम और मि यग के कारण व्यय ही बदनाम हुए जैम कि समय-दोष से उत्तम जानि (उलटे लक्षणों वाला) का घोड़ा सराब लक्षणों वाले घोड़े के पास रहने से स्वयं भी सराब हो जाता है ।
- यदि प्रजा और राजा के बीच (नपु सक्कर सूचक) बीचम न आते तो प्रजा सहज ही अपन स्वामी का मन मना कर समयानुकूल बना लेती ।

## शिकार में रजपूती

### दोहा

नीति कहत भति सब बुरी, अत नाश की धार ।  
 क्षत्रिन म लाग्यो व्यसन, हा । भतिरूप शिकार ॥ 1 ॥  
 प्रजा बीच बठन-बधन, गौरव हानि दिसाय ।  
 मुनि समान विमि रहि सकें यो मगया ललचाय ॥ 2 ॥  
 रह निट्ठले रात दिन, घर चिता बधु नाहि ।  
 कठिन जि हैं दिन काटना, वे बन भटकन जाहि ॥ 3 ॥  
 राज काज पर हाथ म, अपनी बछु चल न ।  
 घुसैं कहा लो गह मे, कछु शिकार म चन ॥ 4 ॥  
 ज्ञान बिना सनमान भी, दुख दायक हूँ जात ।  
 भूमि पतिन पैं याहितैं, बछुक दया की बात ॥ 5 ॥  
 अनजाने भी उदर म, विप कु ठित विम श्हेहि ।  
 हितचितक का धम यह सावधान कर देहि ॥ 6 ॥

### मनहर

प्रेम युत प्राथना है राजपूत बाघवो से,  
 उनही की सतति हो पाल्यो देश जिन हैं ।  
 आज रक्षा धम तजि स्वार्थ म डूब रहे  
 ब्राहि ब्राहि मच्यो चहु नाश छिन छिन है ।  
 भूलि वीरता के नाम मृगया म फूलि रहे,  
 हिसा को व्यसन गिने रात है न दिन है ।  
 कायरता धारि क्षात्रधम से विमुख हुए,  
 मारना कठिन नहि मरना कठिन है ।  
 हिसक की वृत्ति यह पतन मनुष्यता को,  
 पोषत हो जिसे हा 'शिकार' कहि चहते ।  
 कमी धी न पहले भी पुत्रो ने पिता की बधे,  
 आपही के घर इतिहास सास कहत ।  
 फुरसत मे आता शयतान दात सत्य हुई,  
 ठीक हू करैं भी क्या ? निटठले बैठि रहते ।  
 किंतु नरमेघ तक हिसा के धबेले सब  
 अत मे न व कही बचाये गये बहते ॥

नांपत हा हाथ ठुकराय रह स्वाभिमान,  
 स्वारथ के कीट बनि दासता में जकरे ।  
 हाथ जोड उपर अनाथ से दिखात मुख,  
 इतें बात बात पर प्रजा बीच डकरे ।  
 राई देशहित म बने हो बयो कजोडे रूप,  
 टिकिहूँ न व्यथ ये गरूर भरे नकरे ।  
 चाहे मृगया के नाम वीरता बघारो बया न,  
 मारो बया न सुमर थुगाल बाघ वकरे ।  
 रचना काल—25 1 1939

## राजपूत जाति पर मरसिया

### दोहा

जसो शव प्रथम उठावत, होत हृत्य पर घात ।  
 वही दशा चारण हिमे, हा ! रजपूती जात ॥ 1 ॥

### कवित्त

तेज भरी घालें वे पलक—पटो मे छिपी,  
 निबल उबारने का पथ दिसलाती थी ।  
 नाक का न नाम, स्वाथ कीट भरी शूय धर्म,  
 बाणी हुई बाद बैरी दिल दहलाती थी ।  
 बण शक्ति कुठिन जो आतुर थी यश हतु,  
 देश की पुकार पर तत्पर मनाती थी ।  
 हाय ! वह राजपूती प्रतिम विदा से जाती,  
 छाती हहराती एक जिंदा वीर जाती थी ॥ 2 ॥

### दोहा

(मरू भाषा)

जमिया निरभे दल सजन, यमिया खल धरराय ।  
 जिण बल ऊजल हिंद हा ! वा रजपूती जाय ॥ 3 ॥

'देवगढ के बाईजी श्रीमती लक्ष्मीकुमारी जी, जो देलवाडे के भार्गव  
 श्रीर रावतसर ( बीकानेर ) मे विवाहित हैं, व गुणग्राहकता से मेरी कविता का  
 प्राय मग्रह करती हैं । इस समय उहान था नन्वी ( पुत्र-वधु ) को लिखा  
 कि कोटा दरबार मे स्वगवास पर मरसिय जरूर कह हागे वो लिख कर भेजे ।  
 इस पर मैंने व लिख भेजे, इसके साथ ही "राजपूत जाति पर भी मरसिया कह कर  
 15 जनवरी 194 को लिखा ।' (ठाकुर बैसरीसिंहजी की स्वय की टिप्पणी)

# चारण वही है

## कवित्त

चारण वही है जो स्वतंत्रता उपासक हो,  
 बाणी का वरद पुत्र जाने सत्य तत्व को ।  
 अभय झडोल अवलम्ब निज शक्ति पर,  
 दानिन को देत पाठ व्यापक ममत्व को ।  
 साहस की ज्वाला फूँकि मुग्धे जगाय देत,  
 नाशवान देह दूँ लरीदें अमरत्व को ।  
 वीर रस निभर बहाय विषयाय स्वयं  
 न्हाय के दियाम देत मरन महत्व को ॥

सत्य अभय स्वातंत्र्य-उपासक,  
 सिखा मरण जीवन का मम ।  
 क्षात्रधर्म उद्बोधक 'चारण'  
 रहा सदा साधक युग-धर्म ॥

अंतिम चार पंक्तियाँ "चारण" त्रमासिक की आदश वाक्य थी ।

विविध

## भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र

मनहर

मङ्गुर मुनागरी का वाप्या रस सीचि सीचि,  
 ग्रीष्म मे आलबाल बाधि मुकुमार पें ।  
 बहो ललझाना जगजानी तय दिव्यवानी,  
 रानी बनि चढी राष्ट्र भाषा अधिनार पें ।  
 रसा<sup>१</sup> सरसावें बरसावें बयो न पावस य,  
 भूमि भूमि घावें भव धन धनसार<sup>२</sup> पें ।  
 जी लो हिन्द हिन्दी एहो भारत के इ नीवर<sup>३</sup>  
 लागि है न बिन्दी<sup>४</sup> तोला तरे उपकार पें ॥

- 
- १ पृथ्वी
  - २ पानी
  - ३ नीलकमल
  - ४ शून्य

## पं. माधवप्रसाद मिश्र, ❀ भिवानी (हिसार) के प्रति

जिनका चाहत बहुत जन, तिनका थिर नहि प्रीत ।  
 नन मिल पिधले रहै, वे गनिका अनुरीत ॥  
 मन मायो माधव<sup>१</sup> सदा, है श्रीफल<sup>२</sup> थल नेह<sup>३</sup> ।  
 पै लखि अंतर कठिन यह, होत बदर<sup>४</sup> भ्रम छेह ॥

—

- 1 माया के पति विष्णु भगवान
- 2 नारियल
- 3 चिकनाहट
- 4 बेर

❀ हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध समालोचक एवं लेखक मिश्र बहु

## पं. गौरीशंकर ओझा के प्रति

पं. गौरीशंकर जी ओझा उदयपुर को पत्र का उत्तर न देने पर  
 लिखा (सन् 1902)

### दोहा

जो जाको निशि दिन रट, वह वा मय रह जाहि ।  
 तुम रटते जु पहान<sup>१</sup> को यहै मोहि भ्रम आहि ॥

1 पहान=पत्थर पर उरकीए शिलालेख

## चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के प्रति

### धनाक्षरी

आजलो सह-योगु नील लोटित व्हे काज देग,  
 अन्न ता तिलोचन उघारी हूर देव शाप ।  
 खाली ही कपाली रही रहीना कपद पास,  
 वामदेव व्हे के अघकारी रचे अघ छाप ।  
 पति व्हे अपरणा के क्यो पराना के साथी भये  
 गगाधर सिंग पे प्रतिज्ञा करी क्या न भाप ।  
 व्हे तो शिव सांचे टिन् शव उठ हो अन्न,  
 भाव सुधर हो चन्द्रधर जू हरे हो ताप ॥

### दोहा

देश प्रेम भजि खेतरी <sup>१</sup> अलखि <sup>२</sup> जगावन आस ।  
 अजमेर <sup>३</sup> तुम भल बसें तजि विल स कलास <sup>४</sup> ।  
 आय प्रसंग म

### दोहा

नाम हु ते माधव नही में काम हु तें सिद्ध ।  
 वा थल वन्दे मातरम कसे भई प्रमिद्ध ॥

रचनाकाल-3 मई, 1906

- 1 पक्षे=विमान (स्वदेश रूपी)
- 2 प्रारंभ=(स्वदेश का)
- 3 अजमेर पक्षे=आयमरु
- 4 कई स्पष्ट

1-हिन्दी साहित्य के अमर कहानीकार और "उसने कहा था" कहानी के लेखक पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी टाकुर साहब के परम मित्र थे। यह काव्य मय सम्बोधन उनके एक वर्ष के मंगल सन्वाह के उपलक्ष्य में किया गया था। -स

## तालाब की पाल

### दोहा

विषसत छद्म प्रवध तें, गिरा विविध बनि ताल,  
बधन हू सोहत सुखद, ज्या तलाब की पाल ॥ 1 ॥

जैसे काव्य का सौंदर्य छद्मबद्ध होने से घोर वाणी का माधुर्य नाना प्रकार की ताल एवं लय से बधने पर निखरता है वैसे ही पानी भी जब तालाब की पाल से बध जाता है तो बड़ा सुखदायी लगता है ।

बहत रहत निमल सलिल, सब ठा करत निहाल ।  
यह मलीन जीवन भयो, बाँधि तालाब की पाल ॥ 2 ॥

बहता हुआ पानी स्वच्छ रहना है और जहा जाता है वही निहाल करता है परंतु वही पानी तालाब की पाल से बध जाने पर मलिन हो जाता है

## लोरी

घाई घाई घाई प्यारे को निदिया घाई ।  
शक्ति शक्ति सब सुख दाता, है निद्रा जग माई ।  
घाही की शुभ आगम सूचक, हाई<sup>1</sup> देत बघाई ॥  
भीठी नजर निहारत छिन पुनि, मधुर होठ मुलकाई ।  
हाँ हू बरत धरत कर धन पर, देह पलक धलसाई ॥  
प्रेम मयी निमय गोदी में, ननो बीच घुलाई ।  
निरखत मात परम मुदर मुख, भीनो पट छोडाई ॥  
दालत अमल धार मधुर स्वर, बपकी ताल सुहाई ।  
होन मगन मन डोलत जानी हत सहित हुलराई ॥  
जीवन धन सोजा पुनि उठियो बुद्धि बल मुख पाई ।  
सोजा मेरी प्रेम पुतली, कृष्ण यशोदा छवि घाई ॥



## इटली-एबीसीनिया युद्ध<sup>1</sup>

### दोहा

गूज उठी गिर कदरा घम भ्रामा रिपु घाड ।  
भ्राज वणी ईथापिया, वा जूनी मेवाड ॥

### मनहर

महाशक्तिशाली शाही दिल्ली दलपेसि रह्यो,  
नेली रह्यो टक्कर प्रताप उपनाता है ।  
मुटठी भर गिरिमाना, चाहत स्वतन्त्रता को,  
भ्रातताथी दम्भ भरि दामता सिखाता है ।  
धुगू से घनेक दशद्रोही मिम शशु सग,  
ताहू जग रग दिनदूना ही बढ़ाता है ।  
ईश श्रीर गुज के भरोसे मेदपाट<sup>2</sup> खेले,  
वही दृश्य भ्राज एबीसीनिया दिखाता है ॥1॥  
देश की स्वतन्त्रता अखड रखने के हेतु,  
भौतिक सुखो को महाराना टुकराता है ।  
बाकी गिरिमाला की बिकट घनो घाटियो म,  
घरि भ्राततायिन के छक्के छुड़वाता है ।  
दूत यमराज के से भीम ओ सुभटबोर,  
बद बसिबेदी पर सरबस चढाता है ।  
घय मेदपाट ने लिखाय इतिहास पाठ  
वे ही ठाठ भ्राज एबीसीनिया दिखाता है ॥2॥

1 इटली के तानाशाह मुसोलिनी ने सन् 1936 मे उत्तरी अफ्रीका के देश ईथोपिया (एबीसीनिया) पर आक्रमण कर इस अपने साम्राज्य में मिला लिया । इटली की विशाल सैनिक शक्ति श्रीर प्रचुर साधनो के सम्मुख इथोपिया जस साधन हीन देश का कोई मुकाबला न था । ठाकुर साहब न इस युद्ध की तुलना मध्य युगीन दिल्ली साम्राज्य क बादशाह द्वारा मेवाड जमे छाटे पावतीय राज्य पर किय जान वाल आक्रमणो से की है ।

## निर्दय जर्मनी

## कवित्त

मानवता कापि रहि घसें सम्यता के नाम,  
 दासता से दुखी मन जन अबनी के हैं ।  
 नाजी व्यथ नाज करें करके अकाज भाज,  
 फैसे हुए कए हलाहल की खनी<sup>1</sup> के हैं ।  
 बाल, वृद्ध दीन अबलापै कर कला भक्ति,  
 दूत यमराज सप तेलिया<sup>2</sup> बनी के हैं ।  
 सहिहें न भूमि भार व्हे हैं अत रवार छार,  
 कहि हैं न कोई<sup>3</sup> जम नीके<sup>4</sup> जमनी के है ।

---

1 खान । 2 विष वधा की झाडी । 3 कीटाण । 4 भल ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जर्मनी के तानाशाह हर हिटलर ने जब सारे युरोप, मध्य एशिया और उत्तरी अफ्रीका के देशों का पददलित कर वहाँ के नागरिकों पर मनमाने अत्याचार डाने शुरू किये तो उसकी भत्सना करते हुए टाकुर साहब ने यह कवित्त 12 1941 को लिखा था ।

मरसिया

## श्रद्धा-सुमन

( श्रीमती माणिक कु मर क प्रति )

श्लोक

## प्राणेश्वरी मणि के स्वरूप में

अद्यापि त्वा कनक-चम्पक-दाम गौरी,  
 फुल्लारविन्दनयना प्रतिपादरक्ताम् ।  
 देवी प्रसन्नवदना रसो दिव्य धारा,  
 प्राणेश्वरी मम मणि परिचारायामि ॥

स्वर्णिम-चम्पक माला के समान गौर वर्ण वाली लिले कमल के समान नग वाली, पति के चरणों में अनुरक्त सदा प्रसन्न रहने वाली, व्यवहार में दिव्य एव मधुर रस प्रवाहित करने वाली मेरी प्राणाधार मणि ! मैं आज भी तुम्हें स्मरण करता हूँ ।

## प्रताप जननी के स्वरूप में

अद्यापि पावन चरित्र मणस्विनी त्वा  
 शक्तिस्वरूप तपसाहसतेजपु जाम ।  
 धीरामुत्थानगुण गौरवमडितागी,  
 वीरा प्रतापजननी सतत स्मरामि ॥

पवित्र चरित्र वाली, यश धारण करने वाली शक्ति स्वरूपा, तप, साहस और तेज की निधि, खेप्ट गुणों के गौरव से मुग्धोभित प्रताप की उस वीर जननी को मैं आज भी निरन्तर स्मरण करता हूँ ।

[रचनाकाल—सन् 1927]

ये श्लोक डा साहब ने अपनी प्राणेश्वरी माणिक कु मर के स्वावास के पत्रवात् उनके चित्र के नीचे मुद्रर अक्षरों में लिखकर स्वनिवास माणिक भवन के मणि मंदिर में रक्ष थे । प्रतिदिन प्रात साय ठाकुर सा और उनका परिवार इन चित्र का श्रद्धाजलि अर्पित करते थे। अपने हाथों चमेली की कलियों को माला गूध कर ठाकुर साहब उनके चित्र को समर्पित करते थे।

## निवापॉजलि

( जीवन सगिनी श्रीमती माणिक कुंभर के वियोग में )

तेरे सिधाते हाय 'मणि' ।  
 अरमान मन का बह गया ।  
 हा' भाँख के जल सग ही,  
 सर्वस्व मेरा बह गया ।  
 कोई किसी का है नही,  
 सब स्वाथ ही का खेल हैं ।  
 सुत हो सुता हो बधु हो,  
 अब नहि तिलो मे तेल है ॥

अतृप्त नयन सुरमने

गु धे विचित्र मुक्ता हार । \* \* \* \* \*  
 दिये वितेर रम्य पुष्प,  
 वाणि ने अनेक बार ।  
 उपेक्षणीय मान के,  
 उह गई बताय मौन ।  
 मणी ! मणी ! ! मणी ! ! ! रद्द  
 दिखाय हाथ पथ बीन ?

अपनी आत्मकथा को सूत्ररूप में शब्द बद्ध करते हुए ठाकुर साहब ने जीव सगिनी श्रीमती माणिक कुंभर के सबध में कहा है -

' किं तु सच आधार मे, प्राणेश्वरी का प्राण था । '

निस्संदेह ही वे ठाकुर साहब की साधना की भूमिका और सकल्यो व आधार सिना थी । इस सारी विपत्ती-परम्परा में उनके धय का महदड वध भग्न नही हुआ । उसका स्वगवास सन् 1927, मायाड शुक्ला 4 को हुआ उसी असाह्य वियोग में यह मरसिये लिखे गये ।

## मनहर

प्रेम पथ पाग व भ्रमागे प्रान दागे गये,  
 सत्य अनुरागे निज प्रन को निभाना है ।  
 भाकी दुनिया की देय धाकी अक्षियाँ की होंस,  
 मोह-पट ढाकी वह ज्योति प्रकटानी है ।  
 धाना है न धूमि फिर स्वारथ की भूमि लूमि,  
 चूमि पद भव्य दिव्य अक मे विलाना है ।  
 लार्ने नही नीके दिन कीके जिदगी के अरव,  
 जानें दुख जो के उनही के पास जानो है ॥

मौदय यौवन लोभ से जो भ्रमर हो गुजारत ।  
 प्रेम को बटनाम करके स्वाय घोता मारत ॥  
 आमरण एक अखड रम मे प्रेम की धारा बहें ।  
 मन प्रान जीवन एक हो दो देह में निलगे रहें ॥

है प्रेम और विकार छतका रग रूप मिला जुना ।  
 नि स्वाय की आर्हात ही से भेद सध जाता खुला ॥

## प्राणा की गुंज

### हरिगोतिका

प्रेम की बाजी लगाना सहन है समार म ।  
 विश्वास देकर मुडि चलें केतेहि तज मंभधार मे ॥  
 भय लोभ और लिहाज से जो प्रेम प्रेम पुकारते ।  
 समय पडन पर हहा ॥१॥ बेमौत वे ही मारते ॥१॥  
 प्रान से प्यारी प्रतिशा जो निभाते हैं सही ।  
 अहा ॥१॥ बिरले वीर प्रेमी धय हैं जग मे बहो ॥  
 मरी प्रिया के प्रेम का अजहो मिला नहि पार है ।  
 उस सती "मणि" गुणवती पर प्रान ये बलिहार हैं ॥२॥

बिकट यह सत्य प्रेम की घाटी ।  
 स्वारथ लागि करें सब प्रीती, यह जगत परिपाटी ॥  
 बिरले वीर पार मे गहुचत करि तन मन की भाटी ।  
 प्रान निष्ठाकर किये बिना नहि टूटत तम की टाटी ॥  
 प्रेम रूप परमात्म पूजे, विलसत भाग्य सलाटी ।  
 "मणि" के मोल बिकयो यह जीवन, इसी नहकी हाटी ॥

## दोहा

मणि कहि के पाखाण को, मूरख गल लटकाहि, ।

मेरी वह साची 'मणी' हृदय मंहि बिलसाहि ॥1॥

जहर गुलामी का भरा प्याला चाटि पियाहि ।

अब प्रण है भरिहो न फिर, ये लो उलट दियाह ॥2॥

थूल उपासक आक्खियाँ, क्यों नाहक तरसात ।

वह मूरत मन मे बसी, लखो न अति नियरात ॥3॥

नहि जीवन नहि मरण मे कहा दोष 'मणि' तोहि ।

हा विधिना ! कसी करी, कियो त्रिशकु मोहि ॥4॥

खीच गिरायो सिधु मे, दूर हटायो घाट ।

लगे सिखावन हाय वे, अब सतोप को पाठ ॥5॥

विहँसत आग लगायके, गिनत न अपनी दोष ।

तलफत प्रानन को निरखि कहत धरो सतोप ॥6॥

कसि विसास की पास में बेधन लागे तीर ।

कथा कहत सतोप की, ह हा ! प्रेम बेपीर ॥7॥

निज प्रिय सुच्छ वियोग पे, आप धरत नहि धीर ।

कहि सँतोप महिमा हमे, गिनि तुछ प्रेम फकीर ॥8॥

रे जिय रचहु सुख न लिय, कियउ नाहि सतोप ।

भ्रम बश फँस चल प्रेम मे, देत काहि पर दोष ॥9॥

बार बार भूल न बने, रहे प्रकृति इक टेक ।

समभत ब्रूभत अरुचि हो अंतर जहाँ न एक ॥10॥

जग की सधही बस्तु है, निस उद्योग आधीन ।

भाग्य भरोसे ही मिल, प्रेम हृदय सुख, तीन ॥11॥

आपहु आप उमग करि, बहुत प्रेम के श्रोत ।

एचातानी दुखद रहे, सरसहु नीरम होत ॥12॥

अति विसास की पास वैधि, परपो प्रेम की आइ ।

अपने ही हाथा खनी, मने अपनी गाइ ॥13॥

बहा बहँ बिसयो कहँ, बहुत बने नहि पेच ।

प्रेम कगाइ हाय मे, दिय विसास ने बेच ॥14॥

बिन गाहक ताहक बिचयो, यह दाहक निज भूल ।  
 अपनी ठोकर आप गिरि, रुदन मही दुस भूल ॥15॥  
 स्वारथ मय सत्तार यह, स्वागहि सभन मनक ।  
 वह जीवन दुलभ जगत, हात हृदय मिसि एक ॥16॥  
 जा मणि मो चेजा करत, वा मणि क बिन नाग ।  
 छिन हू जीवन ना रन ग्रहो प्रीत बडभाग ॥17॥  
 एक प्राण तो देह थ, इतनी दुई सहीन ।  
 वह मणि" मेर हृदय म, भई एक व्हे लीन ॥18॥  
 बणजारे टांडो कियो, गयो जु आखिर लाद ।  
 बूल्ह राख गोबर रह या, भजहू दिलावत याद ॥19॥

## श्री भोपालदान जी झाड़ा\* के प्रति

भागतो भारी हूव, परहित साधन पथ ।  
 सो व्रत भाप पालियो, झाड़े जीवन अत ॥

राजाश्री श्री भूमिपतियों के लिये भी देश सेवा एक परोपकार का  
 रास्ता दुःख होता है परन्तु भोपालदान झाड़ा ने जीवन के अन्तिम क्षण तक  
 उस महान व्रत का निर्वाह किया ।

---

❀ श्री भोपालदान जी झाड़ा पञ्चटिया (जिला पाली) एक प्रख्यन  
 श्रान्तिकारी थे एवं ठाकुर साहब, कुंवर प्रताप तथा श्री जोरावरसिंह जी की  
 श्रान्तिकारी गतिविधिया के अनन्य सहयोगी थे । वे बनारस पडयत्र केस 1915  
 म एक पत्थर (absconding) अभियुक्त थे श्रीर इती अवधि मे उनका निधन  
 हो गया । उनके स्वगवास पर ठाकुर साहब ने उत्त मरसिया कहा ।

# अमर शहीद श्रीगणेशशंकर जी विद्यार्थी\*

## कवित्त

दीनन को बधु हो पुजारी हो स्वतन्त्रता को,  
 साहस को सिन्धु अनुसारी सत्य-कथ को ।  
 निबल को बल हिय शून भरिपथिन को,  
 साँवो श्री गणेश हो सुभागलिक भय को ।  
 सेवक भयक मातृभूमि को सपूत पूत,  
 घटभ उपासी हो 'प्रताप' की बोर पथ को ।  
 मेधा को सुमल्ल स्वामि लेखिनी को वीर,  
 घोर घुर घोरी हो घुरीण हिन्द-रथ को ।

---

\* अमर शहीद गणेशशंकरजी विद्यार्थी ठाकुर साहब के अनन्य मित्रों में से थे । वे जब सन 1931 में कानपुर में शहीद हुए तो उनके प्रति यह भरसिवा लिखकर उनके पुत्र को भेजा था । इस एक ही मासिक कवित्त में भानो विद्यार्थीजी का सारा कृत्विक् सूत्र रूप से समाहित है ।

विद्यार्थी जी द्वारा सम्पादित राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र "प्रताप" जिसका स्वतन्त्रता-संग्राम में बड़ा भागदान रहा था ।



# राव गोपालसिंह खरवा के प्रति

## मनहर

परम उदार त्यागमूर्ति पुज साहम को,  
 प्राति को पुजारी दुख देश को सहयो नहीं ।  
 भारती स्वतंत्र बलिबंदी पै बिहँसि बढ्यो,  
 दासता बिलासिता की धार में बहयो नहीं ।  
 धीरज धुरीण सहि सकट भटल रहयो,  
 ईशभक्ति भि त भय आश्रय गहयो नहीं ।  
 राष्ट्रवर राव श्री गोपाल के सिषाते स्वग,  
 आज राजपूता का नमूना भी रहयो तही ॥

# महाराव उम्मेदसिंह जी कोटा के प्रति

## दोहा

गुन-गाहक उम्मेद ने, किये प्रयान सुरथान ।  
छटपटाय हा । रह गये, कडे न य धिक प्राण ॥

## सवैया

भूप उम्मेद रहे हँसते अपराधहु पै कटु वन कह्यो ना ।  
भात्र उदार रखी समता, निज अन्य के धम म भेद गह्यो ना ॥  
धीन दवाल विशाल हिये, खुद कष्ट सह्यो पर दुख सह्यो ना ।  
माज परो बिभिना के अकाज पै, आज गरीब निवाज रह्यो ना ॥

## कवित्त

हा । हा । करि एक कोटि कठ की कराल ध्वनि  
उठी सब राजधान हाडा को निधन है ।  
अदन की पूक मूक नभ को बिलोड रही,  
अपकार भासे हा । ससार उन बिन है ।  
बहत बन न या कलेजे की असह्य घात,  
छीजें असहाय हाय । हियो छिन छिन है ।  
ओसे निरघार के आघार व सिघार गय,  
जग मे उमेद बिन जीवन कठिन है ।

दमा का भयाह सिंधु प्रेम का प्रवाह यह,  
 सच्चा नरनाह प्रजा सुख में भुला गया ।  
 रच हू न कुटिल प्रपञ्च 'याय-मच' पर,  
 राजा प्रजा बीच गाठ भक्ति की घुला गया ।  
 जनता के जीवन में जीवन मिलाय सदा,  
 ग्रह्म के समान व्यापि द्रवैत<sup>१</sup> को भुला गया ।  
 उजड़े बसाने वाला सूने सरसाने वाला,  
 नेह से हंसान वाला जग को हला गया ॥ ४ ॥

---

महाराव उम्मेदसिंहजी ( कोटा ) अपनी पीढी के लोकप्रिय एव सुयोग्य नरशा में से थे । ठा० केसरीसिंह जी का उनके प्रति अनि उच्च आदर भाव आजीवन बना रहा । महाराव माहब की बीमारी में स्वगवास के दो दिन पूर्व ही वे उनसे अतिम बार मिलते गये थे । हृदय-स्थल से निकली हुई इस अद्भुत कवि को सुनकर सभी के शोकाधु बहने लगे थे ।

## राजस्थानी काव्य

- 1 ईश-भक्ति
2. उद्बोधन
- 3 राष्ट्र-धर्म
4. क्षत्रि-धर्म
5. स्वधर्म
6. विविध



ईशाभक्ति

## गीत ब्रजनाथ रो

निपट नेह अनद्येह पर हिये नंदनद रो  
भूरि भानद रो कोप भरबा ।  
फुरे नह फैल चित्त प्रविद्या फद रो,  
बठिन पप वृद रो नाश करवा ॥ 1 ॥

रात दन सहो बयो ताप प्रय ताप रो,  
पाप रो बोझ किम बंधो पावा ।  
पंखा चहोजो दुख सर आपरो,  
नाम हरि जापरो करो नावा ॥ 2 ॥

चार मुय रटतो विधाता ताचियो,  
बरण वृष्टि पाचियो प्रणव बाजा ।  
चराचर विचार्या हेक रस राचियो,  
जाचियो जोग थी सिद्धराजा ॥ 3 ॥

तिके धर नहचवो नाथ अवतार रो,  
जनम रा भार रो बीज भुलसे ।  
सधो उर धार सहसार ससार रो,  
हमर की बार रो लाह हुलसे ॥ 4 ॥

तजे क्षण भग इण मोहमद गातरो,  
सगती साथरो गहे सारो ।  
हेत कर चहोजो ज्ञानधन हाथ रो,  
ध्यान ब्रजनाथ रो मनां धारो ॥ 5 ॥

भावार्थ

परमानंद की प्राप्ति के लिये नन्द नन्दन भगवान् श्रीकृष्ण के अपरिमित प्रेम का अपन हृदय में धारण करो जिससे चित्त में कभी अज्ञान का स्फुरण नहीं होगा और सदा के लिये दुर्दांत पापों का नाश हो जायगा ॥ 1 ॥ व्यथ ही रात दिन इन त्रितापो (आध्यात्मिक, आधि भौतिक, आधि दैविक) को सहन कर रह हो और पापों की जजोर पावों के बाध रखी है । यदि इस दुख रूपी ससार सागर को सहज ही पार करना चाहते हो तो भगवान् के नाम की मोक्षा बनाओ ॥ 2 ॥ जिसके विरुद्ध को ब्रह्मा ऋक, यजु, शाम अथर्वादि

चारों वेदों में वर्णन करते हैं, जो प्रणवरूप होकर वर्णाक्षरों में प्रकट हुआ है, जो ससार के सभी चेतन अचेतन पदार्थों में एक रूप होकर समाया हुआ है, उस परब्रह्म को समाधि योग द्वारा केवल सिद्ध योगेश्वरों ने जाना है ॥ 3 ॥ निश्चय ही वह अवतारों के स्वामी श्रीकृष्ण ही हैं। यदि इस बार मनुष्य जन्म का सच्चा आनंद लेना चाहते हों और आवागमन के बीज को (पानाग्नि द्वारा) समाप्त करना चाहते हों तो उस परमब्रह्म श्रीकृष्ण को अपने हृदय में धारण करो ॥ 4 ॥ इस क्षण मगुर शरीर का मोह और अभिमान त्याग कर अंतर्धामी श्रीकृष्ण की शरण जाओ। यदि प्रेमपूर्वक ज्ञानधन की प्राप्ति चाहें तो भगवान् श्री वृजनाथ का ध्यान मन में धारण करो ॥ 5 ॥

## भगवती श्री करणी जी रा सोरठा

निरो नाम निरधार, तारे अवतारों तणों ।  
तू प्रतच्छ दानार, करनी । 'केहर' उपरा ॥ 1 ॥

तेरे नाम का स्मरण मात्र ही निराश्रितों का आघार और अवतारों की भी तारन वाला है। हे भगवती करनी ! तू 'केसरीसिंह' पर प्रत्यक्ष कृपा करने वाली है।

बहियो विपता डेर, पानां ध्रम कुल पालतां ।  
अही ! जगत अघर मरम न बूभे भावडी ॥ 2 ॥

हे माता ! चारण कुल के कर्तव्यों का पालन करने हुए मुझ पर नाना विध विपतियाँ घा पडी हैं। इस ससार में कितना अघर व्याप्त है कि कोई भी मेरे हृदय की पीडा का समझ ही नहीं रहा है।

धन तम्पत घर घाम, लालष वश नप लूटियो ।  
तू मां ! अंतरनाम, कठिन दशा निज की रडू ॥ 3 ॥

लोन के बशीभूत हो राजा (शाहपुरा नरेण नाहरसिंह) ने मेरी धन-सम्पत्ति, जागीर और महा तन कि आवाज तक छीन लिया है। हे मां ! घाप तो अंतर्धामिनी हैं फिर अपने सकट की स्थिति का वर्णन आपके सम्मुख क्या करूँ ?

फण फण हुषो कुटुम्ब, गम घाम सब ही गया ।  
 आप उबारो धम्ब ! बाई ! पाछी बेल कर ॥4॥

मेरा पूरा परिवार छिन भिन्न हो गया है मेरा घर बार, जागीर सभी  
 छीन लिये गये हैं । हे माता ! आप इस परिस्थिति से निकाल कर मेरी  
 रक्षा करो ।

हू पड़ियो हक मार, सक्त सट भेगो सगत ।  
 जामण जगदातार, विपत निबाहण वार तू ॥5॥

मुझमे सारे हक छीन लिए जाने के फल-स्वरूप, मैं सबटापन धवस्था  
 मे हू । हे मा ! मेरे सारे कष्टो को दूर करो । आप ही जगज्जननी जगदाधार हो  
 धीर विपत्तियो से रक्षा करने वाली हो ।

---

ठा० श्री केशरीसिंहजी से उनकी पुत्र-वधू द्वारा जगदम्बा श्री करनीजी की  
 प्रायना के पाठ करने हेतु कुछ रच कर देने का अनुरोध करने पर ये सौरठे लिखे ।



## उद्बोधन

### चेतावणी रा चूगट्पा

सन् 1903 की पहली फरवरी ब्रिटेन और भारत के वतमान भाग्य की भिन्न भिन्न पोशाकें पहिनकर आनेवाली थी। लॉर्ड कजन का औरगजेवी निमाग महीनों पहिले से इसी बात में गुंथा था कि भारत में अभूतपूर्व, प्रभावशाली, महान् से महान् शानदार "दिल्ली दरबार" किया जाय कि जिसे देख मुनकर ब्रिटेन के गौरव की जाज्वल्यमान प्रभा से ससार की आँखें खुं धिया जायें और जिस चक्रवर्ती सिंहासन पर बठने का सौभाग्य आज तक किसी बडे से बडे अंग्रेज शाहशाह के भाग्य में नही आया उस पर खुद बठकर अपनी अमर कहानी छाड जाय।

इस दरबार की सफलता में तिलभर कसर न रहे, इसी सर्वांगपूरणता की कल्पना में रात दिन इतिहासों के शाही दरबारों के विविध दण्डनमय पने धिसे जा रहे थे, फरमानों के कागजी घाडे दौड़ाये जा रहे थे। प्रत्येक बडे देशी राज्य में स्वयं पहुंचकर बिना ल्पीहार के ही जुलूस की सवारी निकलवाकर लाड तिलाडी के दो ले सो में अंकित की जा रही थी, प्रत्येक नरेश कठपुतली की तरह नचाया जा रहा था। उस समय कजन का चिंतवन था दिल्ली दरबार, स्पन्न था—दिल्ली दरबार दिमाग था—दिल्ली-दरबार।

समय से बहुत पहिले ही सफल "दरबार" हो चुका था,—कागजी ससार म। परंतु वहां केवल एक ही ऐसी जगह थी जहां कलम अटक जाती थी, नक्शा टेडा हो जाता था। केवल उसी स्थल पर उमंग की तरंगों को उठे पहुंचने से कजनी कल्पना का कोना व्यग्र हा उठता था, और वह व्यग्रता थी हिंदूपति महाराणा—उदयपुर की श्वीकृति की आशका। वहीं वह वीर सागा व प्रताप का अनन्य रक्त अकड बैठे तो सब काता पीजा कपास हो जाय। "लेकिन" पुस जाने से राजमूम यन अधूरा रह जाय। समय अकबर के हृदय में बसी हुई निष्फलता की हूक फिर लोट आय और कजनी दरबार तो किरकिरा हा हो जाय। अतः साम, दाम, दण्ड से विविध प्रोत्साहन, हितोपदेश, धमकी और मन्त्री की दुहाई देकर भी उसे बने बस वीर प्रकृति महाराणा फतहसिंह को जुलूस की शानदार सवारी में अग्न हाथी के पीछे चला लेना, दरबार की सीढ़ी पर चढा देना, पधारे हुए हाथों पर से नजराना उठाकर बादशाह की सेवा में दीनता के दो शब्द भेजने की प्रापना मुना लेना— बस, इतना तो होना ही चाहिये।

इस सिद्धि के लिये साह वजन अपनी सारी शक्ति उदयपुर के ऊपर लगा रहा था। सचमुच ही महाराणा का स्वाभिमानी हृदय धकड़ रहा था "नहीं" वह चुभा था। राजनैतिक तर्कों के दावघातो से मौखिक और कागजी मत्स्युद्ध हो रहा था। महाराणा के लिये रहा सहा भी खो देन का प्रसंग था। मनमन मेवाड के इतिहास पर बाला छोटा हो क्या समूची दवात ही उलट देनी होगी। मेवाड का प्रत्येक रत्नगिदु जहाँ वही भी था, महाराणा की दृढता पर भरोसा रखकर गौरव से फूल रहा था। भारत के नदात्री सात सी नरेशा ने हँसते, नाचते वृन्ते अपने सोन-चाँदी के टण्ड कमण्डल और ऊँचे डेरे दिल्ली में जा डाले थे। वे किस अदम्य मे कदम उठायेँ और कसे लटक कर सलाम करेंगे, इसकी परीक्षा पूरी करके सजयज कर दिल्ली के लिये स्पेशल ट्रेन की राह ताकर रहे थे। परन्तु मेवाड में था केवल सनाटा, वहाँ कुछ हलचल नहीं।

परन्तु जहाँ पठान और मुगल साम्राज्यों की लाथा तीर-बछों की अनिया निष्फल हुई, वहाँ कूटनीतिपटु वजन के काले मुँह की घूत लेखनी की दुजिम्हा नोक काम कर गई। कड़ाई के सामने यथवत् बन जाना महाराणा के रक्तविदु में समाया था। अतः बदर घुड़वियों के आगे वे डटे रहे। किन्तु ज्योहि कल्पना से भी अधिक वजनी नम्रता न उनके चरण चूम, ज्योहि वे डील हो गये। दिल्ली के लिये "हा" कह दिया। चारों ओर बिजली सी दौड़ गई। केवल मेवाडी हृदय ही नहीं, प्रत्युत् भारत का यावमात्र हिन्दू हृदय दहल उठा, विश्वास की कमर टूट गई। परन्तु कोई क्या कर सकता था? निरकुश नरे द्रा को रोकने का साधन कहा?

ज्योहि खबर मिली कि महाराणा आखिर दिल्ली जायेंगे ही, क्षात्रन्वात-व्य के पुजारी एक चारण हृदय पर असह्य चोट पहुँचना स्वाभाविक था। फलाफल की कल्पना, हानि एवं विडम्बना की विभीषिना को धक्का मारकर स्वजातीय कतम्भ-भाव जाग्रत हो उठा। आंतरिक ज्वाला की प्रेरणा हुई, -चाहें रकें, या न रकें महाराणा को क्षात्रस्वरूप का ज्ञान कराना ही चाहिये। इसी उद्देश्य को लेकर राजपूतों के लिये सुबोध और धीर रस में प्रभावशाली डिगल [ मरु ] भाषा में तैरह सोरठे उदयपुर लिख भेजे गये। सत्य की श्रोजस्वी भाषा का प्रभाव कहां नहीं होता? सो कोस से पत्र पहुँचने में देरी अवश्य हो गई। दिल्ली की स्पेशल में बट जाने पर और चित्तौड़ से कुछ आगे बढ़ जाने पर स्पेशल में ही वे सोरठे महाराणा फतहसिंह जी के हाथ में दिये गये और पढ़े गये। परम गभीर महाराणा के मुँह से सहसा निकल ही पडा कि "यदि ये सोरठे उदयपुर में मिल जाते तो हम वहाँ से खाना ही नहीं होते। खर, बीच से लौट आना ठीक नहीं। दिल्ली पहुँचने पर देखा जायगा।"

महाराणा ने क्या कर दिखाया वह विश्वविदित है । अभिमानी लार्ड कजन की जुलूसी सवारी और बड़ा दरवार महाराणा से खाली था । कजनी कुचक्रो पर पानी फिर गया । उस पहली फरवरी के मध्याह्न में शाहशाह का प्रतिनिधि कजन सिंहासन पर बैठकर भर दरवार में महागणा की खाती कुर्सी को ताक रहा था । ठीक उसी समय उदयपुर की स्पशल ट्रेन महाराणा को हृदय में रखकर विजयनाद करती हुई स्वतंत्रता की वेदी चित्तौड़ की ओर सल्लाटे से दौड़ रही थी । हिंदूपति का इस गौरव रथा में प्रेरित करने वाली वह कविता निम्नलिखित है -

## सौराष्ट्री दोहे [ सिधु राग में ]

पग - पग भम्पा पहाड धरा छाड राम्यो धम्म ।

(ईसू) महाराणा' र मेवाड, हिरद वसिया हि'द रे ॥ 1 ॥

जगला और पहाडा में दरबदर होकर पदल भटकत किये और राज्य का मोह छोड़कर धम की रक्षा की । इसलिये ही महाराणा" और 'मेवाड" में दोनों शब्द हिन्दुस्थान के हृदय में बस गये ।

धण धलिया धमसाण, [ताई] राण सदा रहिया निडर

(धब) पर्वता फुरमाण हलचल किम पतमल । हुव ॥ 2 ॥

अनेकानक धार युद्ध हुए तब भी महाराणा सदा निभय बने रहे कि तु धब सिफ शाही फरमाना को देखत ही हूँ पतहसिह । यह हलचल कबसे मच गई ?

गिरद गजा धममाण, नहचै धर माई नही ।

(ऊ) भाव किम महाराण, गज दो सै रा गिरद मे ॥ 3 ॥

निश्चय ही जिसके मरो मस्त हाथिया द्वारा युद्धस्थल में उठा हुआ गर्दा पृथ्वी में नहीं समाता था वह महाराणा (दिल्ली दरवार की जगह उसक लिये दिने धम) दासो गज के गिरदाघ [धेरे] में कबसे समा जायेगा ?

धोरा न धासान हाका हरबल हालणो ।

(पण) किम हास कुल राण, (जिए) हरवल साहू हनिया ॥ 4 ॥

दूसरे राजाओं के लिये धासान है कि व शाही सवारी में हवाने जान पर धाग धाग बढत चले किन्तु वह प्रतापी गुहिनबन उस तरह कते चलेगा जिसने बादशाहा का सपती हरोल में हवात लिये थे ?

नरियद सह नजराण, भुव बरसी सरसी जिवाँ ।

(पण) पसरलो विम पाण, पाण छता चारो फता ॥ 5 ॥

जिनके लिये सहज है वे सब राजा लोग तो भुव भुव बरके नजराने दिखा सकेंगे परंतु, महाराणा फतहसिंह ! तेरे साथ मे तलवार होत हुए नजराने के लिये हाथ बँसे फलेगा ?

सिर भुक्विया सह शाह सीहासण जिण सामने ।

(धब) रलणो पगत राह फाव किम तोने फता ॥ 6 ॥

त्रिस सिहासन के सामने बादशाहो के शिर भुके हैं उसके अधिकारी होने हुए हे फतहसिंह ! तुम्हे पक्ति म धासन प्राप्त करना कसे शोभा देगा ?

सकल चढावे सीस, दान-धरम जिण री दियो ।

सो खिताब बखसीस, लेवण विम ललचावसी ॥ 7 ॥

जिसके दिये हुए धमसयुक्त दान को ससार सिर पर चढाता है वह (हिंदूपति) खिताबों की बखशीश लेने के लिए कसे ललचावेगा ?

देखेला हिंदवाण, निज सूरज दिस नेह सू ।

पण 'तारा'<sup>1</sup> परमाण, निरख निसासा 'हानसी ॥ 8 ॥

समस्त हिंदू अपने सूर्य की ओर जब स्नेहसिक्त आँखों से देखेंगे और उस समय वह एक तारे के रूप में दृग्गोचर होगा तो वे अवश्य ही परिताप के निश्वास डालेंगे ।

देखे अजस दीह, मुलकेलो मनहीमना ।

दभी गढ दिल्लीह, सीस नमताँ सीसवद ॥ 9 ॥

हे शोशोदिया ! तेरे शिर को अपने सामने झुकता हुआ देखकर दिल्ली का यह दभी दुग इस धवसर की अपने लिये अभिमान का समझकर अहंकार से ही मन ही मन खूब मुस्करायेगा ।

1 "स्टार आफ इंडिया" का खिताब जो राजाओं को मिलता था ।

महाराणा ने क्या कर दिखाया वह विश्वविदित है । अभिमानी ताड़ कजन की जुलूसी सवारी और बड़ा दरवार महाराणा से खाली था । कजनी कुचक्रो पर पानी फिर गया । उस पहली परवरी के मध्याह्न में शाहशाह का प्रतिनिधि कजन सिंहासन पर बैठकर भरे दरवार में महाराणा की खाती कुर्सी को ताक रहा था । ठीक उसी समय उदयपुर की स्पेशल ट्रेन महाराणा का हृदय में रखकर विजयनाद करती हुई स्वतंत्रता की वेदी चित्तौड़ की ओर सन्नाट से दौड़ रही थी । हिंदूपति को इस गौरव रक्षा में प्रेरित करने वाली वह कविता निम्नसिद्धित है

## सौराष्ट्री दोहे [ सिधु राग में ]

पग - पग भम्पा पहाड, धरा छाड राख्यो धरम ।  
(ईसू) महाराणा' र मेवाड, हिन्दे बसिया हिन्द रे ॥ 1 ॥

जगलो और पहाडों में दरबदार होकर पदल भटकते फिरे और राज्य का मोह छोड़कर धर्म की रक्षा की । इसलिये ही महाराणा' और 'मेवाड' ये दोनों शब्द हिन्दुस्थान के हृदय में बस गये ।

धरा धनिया धमसाण, [तोई] राण सदा रहिया निडर  
(धर) पखौता फुरमाण हलचल किम पतमल । हुव ॥ 2 ॥

धनवानक धोर युद्ध हुए तब भी महाराणा सदा निमग्न बने रहे कि तु धर सिफ शाही परमानो को देखते ही हे पतहसिंह । यह हलचल कैसे मच गई ?

गिरद गजो धमसाण नहचें धर माई नहीं ।  
(ऊ) भाव किम महाराण, गज दो स रा गिरद मे ॥ 3 ॥

निश्चय ही जिसक मदा-मत्त हाथिया द्वारा युद्धस्थल में उड़ा हुआ गर्दा पृथ्वी में नहीं समाता था वह महाराणा (दिल्ली दरवार की जगह उसक लिये दिये गये) दोसो गज क गिरदाव [धेरे] में बस समा जायेगा ?

धोरा न घासान, हाका हरवल हातणा ।  
(पण) किम हाल कुल राण, (जिण) हरवल साही हनिया ॥ 4 ॥

दूमर राजाघों के लिये घासान है कि ये शाही सवारी में हकाने जाने पर प्राग प्रागे बढ़ते चलें किन्तु वह प्रतापी मुहिनवश उस तरह बग चलता जिसने बादशाहा का अपनी हरोत में हकान लिये थे ?

नरियद सह नजराण, भुव करसी सरसी जिर्का ।

(पण) पसरैलो किम पाण, पाण छना चारो फता ॥ 5 ॥

जिनके लिये सहज है वे सब राजा लोग तो भुक भुव करके नजराने दिवा सकेंगे परंतु, महाराणा फतहसिंह ! तरे साथ मे तलवार होते हुए नजराने के लिये हाथ कैसे फलेगा ?

सिर भुकिया सह शाह सीहसण जिण सामने ।

(भव) रलणो पगत राह फावें किम तोने फता ॥ 6 ॥

त्रिस सिहासन के सामने बादशाहो के शिर भुके हैं उसके अधिकारी होते हुए हे फनहसिंह ! तुम्हे पबित मे आसन प्राप्त करना कसे शोभा देगा ?

सकल चढावे सीस, दान-घरम जिण रो दियो ।

सो खिताब बखसीस, लेषण किम ललचावसी ॥ 7 ॥

जिसके दिये हुए धमसयुक्त दान को ससार सिर पर चढाता है वह (हिंदूपति) खिताबों की बखशीश लेने के लिए कैसे ललचावेगा ?

देखेला हिंदवाण, निज सूरज दिस नेह सू ।

पण 'तारा'<sup>1</sup> परमाण, निरख निसासा हाकसी ॥ 8 ॥

समस्त हिंदू अपने सूर्य की ओर जब स्नेहसिक्न आखो से देखेंगे और उस समय वह एक तारे के रूप मे दग्गोचर होगा तो वे अवश्य ही परिताप के निश्वास डालेंगे ।

देखे अजस दीह, मुलकेलो मनहीमना ।

दभी गढ दिल्लीह, सीस नमतां सीसवद ॥ 9 ॥

हे शोशोनिया ! तेरे शिर को अपने सामने भुकता हुआ देखकर दिल्ली का वह दभी दुग इस अवसर को अपने लिये अभिमान का समझकर अहंकार से ही मन ही मन खूब मुस्करायेगा ।

1 "स्टार आफ इंडिया" का खिताब जो राजाओं को मिलता था ।

अत बेर आखीह, पातल जे बातें पहल ।

(बे) राणा सह रासीह जिण री साखी सिर जटा<sup>1</sup> ॥ 10 ॥

महाराणा प्रताप ने अपने अंतिम समय में जो बातें पहिले कही थीं उनको अब तक सब महाराणाओं ने निभाया है और इसकी सामी तुम्हारे सिर की जटा दे रही है ।

'कठिण जमानो' कोल, बाँधे नर हीमत बिना ।

(यो) बीरौ हदो कोल, पातल सांग पेत्तिमो ॥ 11 ॥

मनुष्य अपने में हिम्मत न होने पर ही यह सिद्धांत बाधा करता है कि 'जमाना मुश्किल है' - इस वीर वाणी के रहस्य का महाराणा सांगा और प्रताप हृदयगम किय हुए थे ।

अब लग सारा आस, राण रीत कुल राखसी ।

रहो ह्वाय सुखरास, एकलिंग प्रभु आप र ॥ 12 ॥

अब तक भी सबको आशा है कि महाराणा अपनी कुल परंपरा की रक्षा करेंगे । सुखराशि भगवान् एकलिंग आपके सहायक बन रहें ।

मान मोद सोसा, राजनीत बल राखणो ।

(ई) गवरमिट री मोद फल मीठा दोठा फता ॥ 13 ॥

अपनी प्रतिष्ठा और प्रसन्नता को राजनीति के बल से कायम रखना चाहिये । हे जनहंसिह ! हम गवमेट की शरण में जाने से क्या कभी मधुर फल पायेंगे ?

1 महाराणा प्रताप की की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार महाराणा सिर के बाँध नहीं बटाते थे ।

# मेवाड़ के महाराज कुमार भूपालसिंह<sup>1</sup> एवं महाराणा फतहसिंह के प्रति बोहा (डिगल)

मठ सदा मेवाड़ री, राखी फनमन राण ।  
बलीब एणारा काल मे, है बबर हृदवाण ॥ 1 ॥

महाराणा फतहसिंह ने मेवाड़ की परम्परागत भानवान को सदा सुरक्षित रखा । अत इस गये-गुजरे जमाने म भी सारे भारत मे केवल वे ही एकमात्र स्वाभिमानी शेर हैं ।

स्वाभिमान सार्वे नहीं, इण बेला अगरेज ।  
फोडे पर घेर्यो फतो, तू हयियाय अतेज ॥ 2 ॥

इस समय ब्रिटिश सरकार किसी को भी स्वाभिमानपूर्वक नहीं रहने देती । उन्होंने आपका घर फोड लिया और आप जसे निबल राजकुमार को अपने पक्ष मे भिनाकर महाराणा को चारो ओर से घेर लिया है ।

यू भाखे दुनिया अखिल, राखे मन दुख रोस ।  
सुल साख किम सुभचहा, भाख घरम भरोस ॥ 3 ॥

इस कारण सभी लोगो के मन मे दुख और रोष है । जो आपके शुभ चिंतक हैं वे भला इसम कसे सुग मान सकते हैं ? अत स्वघम के विश्वास पर ही यह सब कुछ कह रहे हैं ।

माणहाण धे राण री, तह अधिकारा ताण ।  
तो बापो कुल-काण तज, की साध कल्याण ? ॥ 4 ॥

यदि अधिकारा की ऐंचातानी को लेकर स्वय महाराणा की ही मान हानि हाती है तो आप बापा वश की मर्यादा को तिलाजलि देकर कौनसे कल्याण की कामना कर रहे हैं ?

(सदम-टिप्पणी)

1 महाराणा फतहसिंह और महाराजकुमार भूपालसिंह पिता-पुत्र मे अधिकार प्राप्ति की ऐंचातानी खडी होकर जब परस्पर बैमनस्य बटने लगा तब महाराजकुमार को मिली गई रचना । (समय 1925 ई )



मोड़ें मुख माठा मना, जे चौठे निज बाप ।  
घरे सपूता घरम लख, चरणा महँ सिर बाप ॥ 5 ॥

यदि कारणवश मन मे न चाहते हुए भी पिता पुत्र से कभी विमुख हो जाय ता सपूत वही है जो पिता के चरणा में झुक जाय ।

प्रेम न जोखँ बाप रो, लाहू हिसाबा लाग ।  
घन घन बा पूता घरा, पग पग बण प्रयाग ॥ 6 ॥

जो पितृ-प्रेम के सम्मुख अपने स्वाय को तुच्छ समझते हैं, ऐसे सपूत भय है । वे जहा जाते हैं- उनके चरण जहा जहा पडते हैं-तीधरात्र प्रयाग बन जाता है ।

चू डे हसतो छाडियो, मुख सपत सब साज ।  
पितृ-भगती रो पारखु, जग मपूत सिरताज ॥ 7 ॥

राव चू डा ने तो हँसते हँसते राज्य सिंहासन और सारी सुख सम्पत्ति को ही तिलाजलि दे दी । वह सचची पितृ-भक्ति की महत्ता को समझने वाला या इसीलिम आज भी ससार के सपूता मे शिरोमणि माना जाता है ।

सगत रूठे सेबियो सत छोडे पतसाह ।  
पातल पख पाछा वने, रायो कुल-धम राह ॥ 8 ॥

महाराणा प्रतापसिंह से रूष्ट होकर छोटे भाई शक्तिसिंह ने स्वधम त्याग कर बादशाह अकबर की सेवा स्वीकार की । लेकिन वह पुन (हल्दीघाटी के युद्ध मे) प्रतापसिंह के पक्ष मे आकर मिल गया और इस प्रकार अपने कुल धम को बचा लिया ।

कँवर पत साढयो बलश, कर जोडे व्है कद ।  
पितृ-भगती सिर ऊपरा, भाले कुलधम भेद ॥ 9 ॥

कुंवर धमरसिंह ने धम की मर्यादा पालन करत हुए पिता की आज्ञा स्वीकार कर को स्वीकार कर मानो पितृ-भक्ति रूपी मंदिर को यथा भा वत्तन चढ़ा दिया ।

उणहिज कुल म आपरो घिर भरणायो थाल ।  
विष्ट बडा रा बापजी, भालीजे भोपाल ॥ 10 ॥

हे भोपाल सिंह ! उसी महान् वन मे आपने जन्मोत्सव पर (सुशिया में) थाल बजाय गये थे । अत आपका अपने पूर्वजा के वंश की श्राद दयना चाहिए ।

सीख रखता त्याग री भीख नरक पथ भाल ।

लीख लाज बडका लयण, भल सीख भोपाल ॥ 11 ॥

त्याग की महत्ता बनाये रखने में आपको अपने पूज्यों से शिक्षा लेनी चाहिए । वे किसी प्रकार की याचना को नरक तुल्य समझने दें । फिर आप इस प्रकार भयंजों से अधिकार प्राप्ति हेतु याचना क्यों कर रहे हों ?

हित चिन्तक बण, हुलस हँम, जोडयो कपटया जाल ।

तिण घेरा सू आछटे, भागीजे भोपाल ॥ 12 ॥

प्रपञ्चियों ने अपनी स्वायत्त सिद्धि हेतु भूठी हितैषिणा बताते हुए यह जाल बिछाया है । हे भोपालसिंह ! आप इनकी उपेक्षा कर इस घेरे से शीघ्र दूर हो जाइये ।

वृद्ध बेस माठी बखत, घाटी कठिण घणीह ।

लाठी चोरा लूटता, धोके दुखी भणीह ॥ 13 ॥

महाराणा फतहसिंह की वृद्धापस्था है और समय प्रतिकूल है जिससे उनके लिये यह घाटी पार करना निश्चिन्त बड़ा कठिन है । ऐसे समय में अपने हाथ से पुत्र रूपी लाठी को लूटे जाते देखकर महाराणा बहुत दुखी हैं ।

यो घर रहियो आपरो, आज लगा अकलक ।

है आशा तो हाथ हूँ, पडे न छीटा पक ॥ 14 ॥

आपका यह महान् ब्रह्म आज तक तो निष्कलक रहा है । आशा है अब आपके हाथों इस पर पितृ-द्रोह रूपी कलक के छीटे नहीं पड़ेंगे ।

मेवाडा मत मान जो, चुगला मुख चाडाह ।

पर वाडा लख पातला, हस सी रजवाडाह ॥ 15 ॥

हे मेवाड के (भावी) स्वामी ! आप इन चाटुकारों की चिक्की चुपड़ी बातों में मत आइये अथवा आपको इन छोटे करतूतों को देखकर अथ सभी रियासतों वालों तिरस्कार से हसेंगे ।

सह सत्ता सह साहवी, पितु चरण कर पेस ।

अदबा चावं आगिली, दूणो अजसे देस ॥ 16 ॥

यह सारी सत्ता और ठकुराई पिता के चरणों में समर्पित कर दीजिये जिससे यह चाटुकार तो आपचय से दातों तले अगुली दवावें और देशभर में दुगुना हथ होगा ।

बाद में जब उपरोक्त उपदेश का कुछ भी धमर न हुआ बल्कि महाराणा को उदयपुर से ही हटाने का उद्योग किया जाने लगा तब इस मूच्छ्रा पर निम्नलिखित कविता फिर राजकुमार को लिख भेजी—

## हाय मेवाड !

### दोहा

अभिनय श्रीरगजैव को, होत उदयपुर हाल ।  
 कहेँ मुजबल को सेत वह, कहेँ गुड़िया कगल ॥ 1 ॥

### मनहर

एहा एकलिंग ! अहा आपकी अगम लीला,  
 उदयाचल अग पै चढाय दें अगम को ।  
 आय धम मम बूझि जवनन तें भूझि-भूझि,  
 पीठिन ली सट्यो दुख हेंसि हेंसि जग को ।  
 कुल अकर्तक राख्यो वाह वाह विश्व भाख्यो,  
 चाख्यो फल हिंद पुण्य जीवन प्रसंग को ।  
 हाय वही आज उस पावन पुहुमि<sup>1</sup> ही मे,  
 सेन्यो जात खेल गिनि गुरु अवरग<sup>2</sup> को ॥ 2 ॥

### कवित्त

हिंद तीव्रकर ही के घर में अंधेर छापी,  
 दाग मो दिखायो बापा वश की अहता पै ।  
 नाचत अगम स्वाध न्याय नीति जोला चाटि  
 पाचन है पाप पुज थू कि धर्म मरता पै ।  
 बू डा को पवित्र पाट पदि अवरंग पाठ,  
 लाभ्यो आज आजमान वृद्ध बाप फतापै ।  
 साट मुख साज कुल आज भई ऐसी तैसी  
 गाज गिरो ऐसी मा अजाज राज सता पै ॥ 3 ॥

पूर्वलिखित नि दात्मन काव्य स सम्भव है पृत्र-मोहवश महाराणा का  
बुरा लगा हो अत उनको भी एव कवित्त लिख भेजा—

### कवित्त

वीर वसुधा के बीद बाहुज विरल रहे,  
 उनके उदार हाथ ताका अभिलाखो हो ।  
 कायर कुछत्री व्हे कुबेर तोहू कामके न,  
 चामके खिलोन और रज हू न भाखो हा ।  
 तजि कुल पथ बटै व्है सहे बैनवान,  
 यही धम मेरो अभिमान तें न भाखा हा ।  
 बिरुद निबाहन म आप हो अटल रान,  
 (तो) चारण पन की टक मैं हू कुछ राखा हों ॥४॥



## चावुक-स्पर्श<sup>1</sup>

(तत्कालीन राजाओं को लक्ष्य करके)

### सोरठा

अबघो अब ओछीह , सोचीज सह भूपत्या ।  
पढगी पख पोचीह , नीत सलोची नहँ रसो ॥ 1 ॥

ह भूपतियो ! सोचिये, समय कम रह गया है । आपका पक्ष निबल हो गया है क्योंकि आपन अपनी नीति को सही और 'यावसगत नहो रक्खा ।

साइयो वणका साज, रजवट बट सावे रधू ।  
रहसो नहँ ये राज, आज लगा जिराविघ रह्मा ॥ 2 ॥

आपने राजपूती शान को खोकर बनियापन का रूप मज लिया है , पर तु अब तक जिस प्रकार रह वसे अब ये राज्य नहीं रहेंगे ।

दुख सह भले देह प्रजा पूत सम पालता ।  
(अब) भूठ प्रपच सजेह , लूटीजें घर ही नवा ॥ 3 ॥

पहले सब तरह के दुख अपने शिर लकर प्रजा का पुत्रवत आप पावन करत थे और अब भूठ एक प्रपचो के द्वारा उसके घर लूटे जाते हैं ।

हो न पराया हेत राजा या घर रागरो ।  
खाण लगा क्यू भेत , बाड रूप बणिया रह या ॥ 4 ॥

आप गरा (अग्नेजो) के पक्ष म मन जाइये क्योंकि हे राजाओ ! यह घर आप ही का है । आप जिस खेत क बाड रूप (रमाक) बने रहे ये उसीका क्या साने लग ह ?

पग पग जरवा पीट , नीठ आज लग यो तिभी ।  
पण अब परजा क्षीठ , खुली मीठ शकर विना ॥ 5 ॥

पर पर पर जूते राकर भी अब तक ज्यो त्या कर प्रजा आपके साथ निभती रही । परन्तु अब उसका जानचक्षु शकर के तीसरे नेत्र क समान खुल गया है ।

1 यह उद्बोधनात्मक सोरठे द्वितीय अक्षरयोग सादोलन (1930-31) क समय राजाघा का स्वधम एवं युग के तत्वाजे का भान करात हुए लिखे गय थ ।

परजा जितै अजाण, महिप हालिया मनमते ।  
बरतै मित प्रमाण, पेंदरह बरसां पूतडी ॥6॥

प्रजा जब तक अबोध थी, आप लोग मनमाने चलते रहे । लेकिन रपाल रबिये होशियार होन पर तो पुन के साथ भी मित्र के समान व्यवहार करना उचित हाता है ।

निरभै हित निरभेन, जे नर चाहे राज रो ।  
बस चुगला इण बेल, जेल माह पटको जिका ॥7॥

जो लोग बिना किसी लाग लपेट के निभय होकर राज्य का हित-साधन चाहते हैं, उनको आप चुगलखोरो की बातों में आकर जेल में ठूस दते हों ।

नभ सोभा निरखाय, ऊचा नेणा आप रा ।  
(पण) अब जहाज अथडाय, आगे भालो अबपत्या । ॥8॥

आपकी ऊँची निगाहें, ऊपर आकाश की शोभा देख रही है, किंतु अघि पतिया । जरा आगे देखो, आपका जहाज अब टकराने वाला है ।

ऊपर रँ आधार, पग समेट भूले पडया ।  
की जाएँ करतार (बद) खसक पडै सतिया बडा ॥9॥

ऊपर के सहारे के बल पर अर्थात् ब्रिटिश सर्वोच्च-सत्ता के आधार पर आप पैर सिकोड कर भूले में पडे हुए हो, लेकिन जिस जग खाय हुए कडो के भरोसे पर आप हो, व ईश्वर जाने, न मालूम कब खिसक पडेंगे — कुछ पता है ?

जीवन अहलो जाय, सहल शिकार सलाम म ।  
माटी मौज उडाय, परजा बिलखै पेट मे ॥10॥

आपकी जिन्दगी दुआ-सलाम, सँर-सपाटे और शिकार में बरबाद हो रही है, जोरावर लोग मौज उडा रहे हैं, और उधर प्रजा उदर-पूति के लिये बिलख रही है ।

हुकमत गो पर हात, घर मे खूनी घाविया ।  
वास्तव भी या बात, जाए चुन्या जग मौहिनै ॥11॥

अब यह बात बच्चे तक भी जान चुके हैं कि आपकी हुकमत पराने (अग्नेजो) के हाथ म चनी गई है और आप अपने ही घर के वान म मत्ताहोन बनाकर बिठा दिसे गये हो ।

### दोहा

किया करै कठपूतली हाय्या बैठ हगाम ।  
अजब तमाशो आज रो, देखीजै बिन दाम ॥12॥

आजकल हाथियो पर सवार होकर जो आपके जुलूम निकलते हैं, वे लोगो की निगाह मे कठपुतली के खेल के समान हैं और बिना पैसो का तमाशा दिखामा जा रहा है ।

साद प्रजारो सीकियो, फिट कानूना फास ।  
ज्वालामुख ज्यू जाणजे सो धुंधवायो मौस ॥13॥

बाहियात कानूनो मे फास कर आपन प्रजा की आवाज की सी तो निगा है परन्तु ध्यान रखना, वह घुटा हुआ श्वास ज्वालामुखी साबित होगा ।

कै जगल रणवास कै, कै उडता आकाम ।  
जाय जमारो राज रो हालै प्रजा नितास ॥14॥

आपका जीवन जगल म (शिकार म) जनात मे (ऐसोआराम म) या आकाश विचरण म बीनता है और असहाय प्रजा यह देख दख कर निश्वास छोडती है ।

रूस, चीन, जर्मन, तुर्क; आदि हुता पतसाह ।  
व सिहासण कित गया, सोचीजे नरनाह ॥15॥

नरपतिया ! जरा मोचो, रूस, चीन, जर्मनी और टर्की आदि दगो म भी जो साहगाह थ उनके सिहासन आज कहा है ?

परजा ही पलटाविया, अण्चीत्या बिन फोज ।  
 काल्ह जिका घर गजता, आज मिल नहँ खोज ॥16॥

कल तक जो पृथ्वी को रौंद रहे थे उनके तरतों को प्रजा ने ही अकस्मात्  
 बिना सेना की सहायता के उलट दिया और आज उनका कही नाम निशान भी  
 नहीं है ।

समें पलटता जेज नहँ, जठे प्रजा जु भलाय ।  
 घर-धूजण बस की चलै, पल मे महल ढहाय ॥17॥

जहा प्रजा भु भला उठती है, राज्य-क्रांति हो जाती है तो समय को बदलते  
 देर नहीं लगती । भूकम्प होने पर क्या किसी का कुछ वश चल सकता है? क्षण-  
 भर में महल ढह पडने है ।

सुखी समृद्ध ब्रिटानिया, जॉरज-सुत ने जोय ।  
 ऊहिज मारण आदरी, सुख री नीदा सोय ॥18॥

अब तो आपको भी उचित है कि आप समृद्ध और सुखी ब्रिटन के जाज-  
 तनय को देखो और उसी भाग को ग्रहण करो और उसी के समान सुख की  
 नीद सोओ (राज्य प्रजा को सौंप कर) ।

आछा कामा ऊधमौ, धणिया निज धन रास ।  
 नहँ तो नेडा आवणा, महल मजूरुा वास ॥19॥

स्वामियो ! अपनी धन-राशि को उत्तम कामा में खुले दिल से खच करो  
 वरना इन महला में मजदूरों के निवास के दिन नजदीक आते प्रतीत हाते हैं ।

### सोरठा

पितु सभ ताजी प्रीत, वर राजी परजा करण ।  
 निम जाभी सुध नीत, है बाजी हाता हण ॥20॥

पिता के समान अभिनव प्रीति से प्रजा को खुश करने के लिय आप शुद्ध  
 उत्तम नीति का अवलम्बन करो तो अब भी बाजी आपके हाथ में है ।



नर सुन गफल नीद, जागू पडवो जागणो ।  
(पण) वला चँवरी बीद, जाग हुवै जभेडणो ॥21॥

जानना है कि गफलत की नीद के सुख में मनुष्य को जगाना बहुत बुरा मालूम होता है किंतु क्या सभी नहीं जानते कि सन के समय पर तो दूल्हे की भटके देकर भी जगाना पड़ता है !

### सोरठा

सन्नवट माहे खोट, दये दुव पावै दुमह ।  
(जद) चारण चुभती चोट, हिरदँ सबदा री हर्षी ॥22॥

चारण आपके हृदय पर तभी अपने शब्दों की चुभती हुई चोट पहुँचाता है जब उस आपके क्षान्धम में कमी नजर आती है और उससे उसकी घसल वेदना होती है ।

नृप ! नहँ व्हा नाराज, स्वीकारे सत सांपरत ।  
आखी ईहंग आज, हित री वाता हत थी ॥23॥

राजाआ ! नाराज मत हो जाना । प्रत्यक्ष सत्य को स्वीकार करके ही आपको लाभ की बातें आज प्रेम के बश ही मैं कह दी हैं ।



# इतिहास-रसिक राजपूतों के प्रति

## दोहा

जयचंद को इतिहास पढ़ि सिर धुनने हो आज ।  
अपनी करनी पे तुम्ह, धिक नहिं आबत लाज ॥

हे क्षेत्रियो ! जयचन्द के इतिहास को पढकर तुम पश्चाताप करत हो पर  
बिक्कार है अपनी देशद्रोही बतिया पर तुम्ह तनिक भी लज्जा नही आती ।

नाम लेत नप मान को, सिलवट परत निलार ।  
कुन घाती निज बम पे, क्या नहिं करत विचार ॥

राजा मानसिंह कछवाहा का नाम लेने मात्र से [उसके दशद्रोही बर्मों के  
बारण] तुम्हारे नलाट पर घगा के सिलवट पड जात हैं । पर तुम अपने स्वय  
के कुल का नष्ट करन वाले बर्मों पर थोडा सा भी विचार नही करते ।

सीम हिलावत वाह कहि, पढते चरित प्रताप ।  
पै बगलें तावत रहो मुफिया के डर आप ॥

महाराणा प्रताप के चरित को पढते समय तुम "वाह वाह" कह कर  
उनकी प्रशंसा में मिर हिलाते हा पर ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरा से भयग्रस्त  
होकर तुम इधर उधर बगलें भावन लगत हो ।

## राजा-प्रजा-सवाद<sup>१</sup>

राजा - भिडकी क्या नाहूँ भेजियो, बाग्य बधी जो ए लो,  
बलहीगी जो ए लो कीटिया र नामा काई पाग ? परजाजी ॥१॥

राजा मरे राज्य की मोमा म्पी बाह म बधी रहून बागी प्रापाहीन  
भेडो ! क्या ही क्या बहूँ रटो हो, क्या चींटियो के भी पर निबन  
प्राय है ?

प्रजा - 'याय मरुपा नित चालरुयो, मतवरमी जो ए ना,  
सवा-धर्मो जो ए लो भक्ति मू बैठाम्या हियटा माहि, बा-हाजी ॥२॥

हमार प्यारे राजा ! यदि आप सग 'याय पय पर चनोग, सेवा धर्मो  
बनवर सुशासन करोग तो निम्नतह हम आरक स्वामिनपन बन आपकी  
हृदय म बसाएंगे ।

प्रजा - मानव जनम थी पाविषो हव माहो ए ला,  
ईश्वर दीधाडा ए लो, लिखण बोलण अधिकार, राजाजी ॥ ॥३॥

ह राजा ! नियति-प्रदत्त, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का यह अधिकार  
तो हम मनुष्य जाति म जन्म क साथ ही मिला हुआ है ।

राजा - बोलण लिखण रो काम नहि, हव जूतिया ए लो, पशुरूपी जो ए लो,  
दिरथा ही करे छे बकवाद, परजाजी ॥ ॥४॥

ह पशुवत प्रजा ! लिखन-बोलन की आजादी की दुहाई दकर क्या  
क्या बकवास कर रही हो ! हा अलजन्ता तुम्ह जूत खाने का हव तो  
अवश्य मिला हुआ है ।

१: राजस्थानी लोक गीत 'पशिहारी' की लय में निबद्ध प्रस्तुत रचना  
'राजा प्रजा मवाद ठाकुर केसरसिंह जी न असहभाग आदोलन  
[सन् 1930-31] के समय की थी । इस रचना के पीछे उनकी कनिष्ठा  
पुत्री मुन्नी सौभाग्यमणिजी का आग्रह ही प्रमुख कारण था । यह अत्यंत  
उत्कृष्ट लोकविश्रुत शीर गाइयत रचना है । इसमें राजनीति क गूढ  
सिद्धांता का निरूपण सहज, सगुन, क्रांतिकारी भाषा म किया गया है ।

प्रजा — धन जावन दो दिन पाम्हूणा, धण लोभीजी ए, लो,  
मदमाताजी ए नो आविर भू डो हाल राजाजी ॥ ॥5॥

सत्ता के लोभी राजाजी । धन सत्ता की शक्तिया पर आपका प्रभुत्व  
तो फवत नो दिन का है । अमर्यादित सत्ता मद का प्रतिफल हमशा  
बुरा होता है ।

राजा — बडकारी बमाई माया मागम्या, धण भेनी जी ए लो,  
पख होगी जी ए नो म्हारा तो मुखडा रो नाही छेह, परजाजी ॥6॥

वशानुगत मिले इस राज्यधन क बल पर हम तो निरंतर शासन सुख  
भांगते रहगे । ए असहाय और नासमज प्रजा । हमार अनन्त सुखा  
की कोई सीमा नहा है ।

प्रजा — बीजा रा नाहक हन लूटणा, नहि मुखियारी जी ए लो  
धिक धाडवी ए लो, माया बादल री छाँह, राजाजी ॥ ॥7॥

हे राजा । दूसरा क हका को हडप कर उनका शोषण करने वाल  
कभी सुख नहीं पात । ऐसे प्रजा-पीडक लुटेरा को धिक्कार है । और  
फिर यह तुम्हारा शासन सुख ता बादला की छाया की तरह  
अस्थिर है ।

राजा — जनम नियो छै धगिया वश म, धम भीरू जी ए लो,  
श्यामधर्मी जी ए नो, ईश्वर दियो छे म्हान राज परजाजी ॥ ॥8॥

राजाआ के कुल म जन्म लेकर और ईश्वर प्रदत्त राज्य सत्ता से हम  
तुम्हारे ग्रासक है । हे प्रजा । धम से डरत हुए तुम्हे तो हमारा  
स्वामिभक्त रहना चाहिए ।

प्रजा — करा छो प्रभू रो भूठो नाम, स्वारथ आधा जी ए लो,  
बूडा बोना जी ए लो, कोरा भाटा जी ए ला  
मालीपना तो चढाया म्हारे हाथ, राजाजी ॥ ॥9॥

स्वायवग नाहक ही ईश्वर का भूठा नाम लेकर हम भ्रमित कर रह  
हो । हे राजा । तुम तो कीर मोरे पत्थर थे । यह राज्याधिकार का  
सि दूरी आलेप तो हमारे ही द्वारा चढाया हुआ है ।

राजा - घरा रा धणी छा जमी माहरी बुग पूछी जी ए ना,  
वेगारी जी ए लो, पचायत विण काम ? परजाजी ॥ ॥10॥

राज्य के मालिक हम और यह घरा हमारी, फिर तुम्हें इमती पचा  
यत किमने सभलार्द है, हे प्रजा ! तुम ता हमारी वगारी मात्र हो ।

प्रजा - पवन अगन उपजाविया, काई तुछ मानवी ए ना,  
दभी पाचा जी ए ना, अगम ममर घरती आभ, भोनाजी ॥11॥

क्या इन पाच तत्वों (वायु, अग्नि, आकाश, पृथ्वी और समुद्र) का  
मृजन आप जैसे किसी क्षुद्र मानव के हाथा हुआ है ? क्या इन सब  
पर आपका प्रभुत्व है ? हे नाममभ राजा ! आप दभी पुटिया पक्षी को  
तरह बडबोलपन से क्या काम ल रहे हा ?

प्रजा - सकल सरीखा हक एकमा, पिता पूजी ऊपर लो,  
साची समता ए लो साचो तो धणी छै सरजगहार, राजाजी ॥12॥

हे राजा ! जिस प्रकार पिता की सम्पत्ति में सभी पुत्रों का समान  
अधिकार होता है, ठीक उसी प्रकार प्रकृति के मृजनहार परमपिता का  
इस सम्पत्ति पृथ्वी जल, वायु आदि पर भी हमारा, आपका समान  
अधिकार है ।

राजा - कमाई ऊपर हक माहरो, बहकायोनी जी ए लो,  
बहकाई जा ए लो उडास्या खूब मन मौज परजाजी ॥ ॥13॥

किसी क बहकावे में आकर घरा बक बक कर रही हो । हे प्रजा !  
तुम्हारी कमाई तो राज्य की सम्पत्ति है और उस पर हमारा पूर्ण  
अधिकार है । उसे हम जिस तरह चाह उठा सकते हैं ।

प्रजा - किण तिन उठाई हलणी हाय मे, बलहीणा जी ए लो,  
घालस डूबा जी ए लो नेता म बहायो किण दिन स्वेद, विपयीजी ॥14॥

हे घालसी और पुरुषत्वहीन प्रयास राजा ! आपने कौन से तिन  
कंधे पर हल उठाकर खता में पसीना बहाया है ?

प्रजा - हाडा रो पसीनो मगत माहरी, धन म्हारो जी ए लो,  
पू जी म्हारीजी ए लो, ये कुण छो मुपन खाणार ? राजाजी ॥ 15 ॥

रक्त पसीना एक कर कडे परिश्रम से उपाजित यह पू जी हमारी है ।  
ह राजा ! इसे मुपत मे खान वाले प्राप कौन हात हैं ?

राजा - लडग उटापो बडवा हाथ म, बात भूली जी ए लो,  
मूरख मडनी ए लो, रगता सू छिडकी छै धरणी माय, परजाजी ॥16॥

ह अहसान परामोक्ष प्रजा ! हमारे पूवजो ने बहुत सारे मुड लडकर  
अपन रक्त से धरती माता का अभिपव किया है । अरे भूखों ! जरा  
इतिहास को तो देखो ।

प्रजा - स्वारथ रा आधा लडिया कूतरा, माहा माहे जी ए लो,  
पापो खूनी जी ए लो हिडकाया जी ए ला,  
रगता सू न निपजै भूम, राजाजा ॥ ॥17॥

हे राजा ! निजी स्वार्थों के वशीभूत हो पगलाए कुत्तो की भांति  
आपस म ही लडने वाला को तो मात्र पापो को सजा से अभिहित  
किया जाता है । हे राजा ! क्या रक्त से वही भूमि उत्पन्न  
हुई है ?

राजा - धनरा हखाला काला नाम छा, व्हीकण हियडा रो हो,  
मतर भूलाणी ए लो, कुण ता लगावे म्हारे हाथ ! परजाजी ॥18॥

हे कमजोर दिल वाली, डरपोक और कलब्य-भ्रष्ट, प्रजा ! हम अपने  
राज्य रूपी धन की रक्षा करने वाले काले नाम है । भला किसकी मजाल  
है जा इसम हाथ डाल ?

प्रजा - अधम भोगा मे खरची खूटिया, दिवालिया हो,  
आधा एधूलाए लो, परजारी कमाई एली खोय, नीयतहीणाजी ॥19॥

तुम भोग-विलास मे अपने पूर्वजो की थाती खोकर दीवालिये  
हो चुके हो । अब बिना हाथ पांव के अथे कीडे मात्र रह गये हो । हे  
राजा ! प्रजा के खून पसीन की कमाई को व्यथ ही गवा रहे हो ।

प्रजा - ठगा मू ठगाया रीता ठीवरा, बोरा बूडा जी ए लो,  
फागट फूफाडयाजो ए लो, मूपी अपत साप न ग्याय, विपघारीजी ॥ 20 ॥

वचवा (अग्नेजा) द्वारा ठगाय हुए, निरे मिट्टी के टूटे हुए पात्र ही,  
गाली फुफकार करने वाला है, हे राजा ! यदि आप राज्य  
रूपी धन के रक्षक सप हा तो भी सौरी हुई सम्पति को तो साप भी  
नहीं खाता ।

प्रजा - सपरोटया घाटया छै छाबड माहिन, बोरा बीडाजी ए लो,  
परडोटया जी ए ला, पाड्या छै दतड धैली वाट, राजाजी ॥ 21 ॥

राजाजी ! मन से ही साप बनत हो, जबकि सपेरा (ब्रिटिश सावभौम  
सत्ता) द्वारा आपके दातों में स्थित विप की धैली (राज्या के बोध एव  
सौय-शक्ति) निवाल लेने के बाद किसी टोकरी में कंद आपका इतिवत्  
तो कीडो की मानिद है ।

राजा - लूला गू गा महला पूतडा, राजस राखेला ए लो,  
मालक वणोला ए ला, म्हारा छै अटल अविनार, परजाजी । ॥ 22 ॥

हे प्रजा ! लाख हमारे पुत्र लगटे हा, गुग और पागल हा फिर भी  
तुम्हारे तो व स्वामी ही हागे क्योंकि राज्य करने का हमारा अग्नि  
बार सदा अटल है ।

प्रजा - मायडरा माटी घण घाडवी घमवाणा जी ए लो,  
घुरवाणा जी ए लो, बण्या ने बिलाया के ही बार, भूलाजा ॥ 23 ॥

तुम आततायी और प्रजा-प्रवीडक लुटेरे हो । हे ब्रिटिश सत्ता द्वारा  
घमनाय और दुतकारे हुए राजा ! तुम्हारे जैसे शासक तो कद बार बने और  
नष्ट हो गये ।

प्रजा - घरा रो घणी छै ईश्वर एक, धिक मानवी ए लो,  
धोखा दणा जी ए लो म्हे छा उणरा साचा पूत, राजाजी ॥ 24 ॥

हे राजा ! नाहक क्या कूठ बोल रहे हो? तुच्छ मानव की क्या भीरात  
इन घरती का मालिक ता केवल ईश्वर है और हम प्रजा उसकी  
सच्ची सत्तान हैं ।

राजा - घरा रा घणी जद म्ह नही बहक्याडी जी ए लो,  
पय भूलाणी ए लो, (तो) बणसी बाई कगला री फीज,  
परजाजी ॥ ॥25॥

ह प्रजा ! भवसद से हटकर बहकी बहकी बातें कर रही हो ? यदि इस राज्य के स्वामी हम नहीं तो क्या तुम सोचती हो कि ये भिखा-रियो का टोना (स्वतंत्रता आंदोलन में आंदोलनकारियों के लिए प्रयुक्त शब्द) सत्ता समालेगा ?

प्रजा - अकल हूवे तो थोडा सोच लो, जूना जुमारी ए लो,  
देवत आधा जी ए लो, नालो बगू हिरणी रो भूठो नीर,  
गाफलजी ॥ ॥26॥

जान बूझकर भी अनजान बनने वाले गाफिन राजा ! अपनी अकल से जरा सोचा। अपना सभी कुछ दांव पर लगाकर ब्रिटिश सत्ता के मायाजाल की मृगतृष्णा में फँसना क्या तुम्हारे लिए लाभदायक है ?

प्रजा - सम्हल चालो तो सुन पावम्यो भाई म्हाराजी ए लो,  
सतरा प्यारा जी ए लो, बहकयोडा रहस्यो न छिन एक,  
राजाजी ॥ ॥27॥

हमारे बड़े भाई तुल्य राजा ! पूरे विवेक से काम लो और सत्य की राह चलोगे तो सुखी रहोगे अ यथा इस तरह प्रजा के विरुद्ध बहकाये हुए (ब्रिटिश सत्ता द्वारा) रहन पर तो क्षण भर में ही तुम्हारा अस्तित्व मिट जायगा।

राजा - फीजा बहूवा तोपा माहरी, न्को आधली ए लो,  
मारी कटा जी ए लो उन म हाने सयन भूज, परजाजी ॥ ॥28॥

सग हमार द्वारा शक्तिबल से मारपीट कर रली गई है अ धी प्रजा ! य हमारी तोपा और बहूवा से लैस फीजें पलक भपकत ही तुम सभी को भून डालेगी।

प्रजा - म्हारा ही पाल्या म्हान डाहणा, दुखदेणा जी ए लो,  
घरफाडा जी ए लो कृतघण जी ए लो,  
काटो छा वैडण री डाल ? आतमघातीजी ॥ ॥29॥



अपनी प्रजा को ही मतान वाले है वृत्तधन राजा हम ही लोग द्वारा पोषित हाकर हम ही गाने पर तुले हो ? जिस डाल पर बड ही उसी को काटन का आत्मघाती प्रयास कर रहे हा ।

प्रजा - अवन-बिहूणा मारण भूलिया, अभिमानी जो ए लो,  
अकल उधारा ए लो, फूटा भोगना जी ए ना,  
जनता सू न जीते जमराज, राजाजी ॥

॥30॥

हे राजा ! क्या आपको बुद्धि रूट हो गयी है ? क्या आप अपना सही वतव्य भूल गय हो ? क्यों वयस ही अभिमान करत हो ? क्या पराई बुद्धि (अ प्रेजा द्वारा निर्धारित नीति) पर चलत हो ? तुम्हारा तो भाग्य ही फूट गया है । क्या इतना भी नहीं जानते कि जनता स तो यमराज भी नहीं जीत सकता ?



# रजपूतानी

( तव और अब )

दोहा

धव भागा धुधवारती, रजवट कुल हिय रक्खि ।

(अब) साड घुसाडे सोहडी, "अरे बाहरे" अक्खि ॥1॥

पहिले रजपूतानी अपन कुलाभिमान को धारण कर युद्ध से भाग ग्रान वाले पति को बुरी तरह फटकारा करती थी और अब वही वीरागना ऐसे अब-सरा पर अरे धा र" कह कर उसे अपनी वगल म घुसा लेती है ।

मगल मरण मनावती, रणचण्डी रच रास ।

(अब) जीव वच्या जलसा जुडै, रजपूता रणवास ॥2॥

रणचण्डी का रास रचकर जहा मरण महोत्सव मनाया जाता था वहा अब प्राण बच जाने पर राजपूता के रनिवासा ( अत पुरा ) म जलसे किय जाते हैं ।

राग सिधुवा रीभती, सुत धवडाता सोय ।

(अब) लैला मजनू नाटका, हरख जागरण होय ॥3॥

पुत्र को स्तनपान करात समय जा सिधु (युद्धकालीन) राग से आनन्ति हुआ करती थी वही अब लैला मजनू के नाटक देखने म जागरण कर प्रसन्न होती है ।

ले खागा ललकारती, धक फलसै धाडाँह ।

(अब) कम्पै पडदैं कामणी, लज भय लूंगाडाँह ॥4॥

वृषाण लेकर जो क्षत्राणी दरवाजे से आगे बढ डाकुआ को ललकारा करती थी वही अब पर्दे म बैठी हुई गुडो से लाज बचाने के डर से धर धर कापती है ।

चलती नहीं कुलचाल थी, जनती जोहर भाल ।

(श्रव) "हाय" करे बनती रहै, भोजन सरना भाल ॥5॥

जो कभी कुलमाग से विचरित नहीं होती थी और जोहर की ज्वाला म भर्मा-भूत ही जाया करती थी, वही अब घर म हानवाली रोटी सब क लिय 'हाय हाय' करती हुई हृदय म जला करती है ।

ऊठे नित दतो अरध, कर्धे न लज्जे कूर्य ।

(श्रव) नाम सुएता मरण रो, युधकारै भर थक ॥6॥

जो हमेशा उठकर भगवान् भास्वर की इस प्रायता के साथ अर्ध दतो थी कि हे सविता! मरी कुशिन की कभी भी लज्जित न होता पडे । वही अब सतान के लिये मौन का नाम सुनने मात्र से ही अपसकुन मानकर युधकारे टालती है ।

चढती काठां चूडनै, धय घर पर डलियाह ।

(श्रव) खरच वैधावण ताखडी लबी काचलियाह ॥7॥

पति के धरागायी होन पर जो सौभाग्यवती चिताराहण किया करती थी वही अब अपने वैधव्य के जीवन निर्वह के लिय अथ प्रवध को अतुर निन्दा देती है ।

धरता पग घर धूजती दाकलता दिगपाल ।

(श्रव) जणती रजपूतानिया, धरण थी भालबैबाल ॥8॥

पहिल रजपूतानिया अपने स्तना से ऐसे धाय के टुकडो की पदा करती थी कि जिनके ललकारन पर दिगपाल और पैर बढाने ही पृथ्वी प्रकपित हो उठती थी ।

(श्रव) पोल कढया पग लडखड, धर वारै धिधिमाय ।

पडई पूरी पदमण्या, जोघा किय बिध जाय ॥9॥

ह्योढी से निकलते ही जिनके पैर लडलडान लगत हैं और घर से बाहर होने पर जो धिधिया उठनी हैं, व पद म रहने वाली कोमलागिया योढामो का फंसे अम द ।

रुलगी रजपूताणियाँ, खूटी रतना खाए ।  
पूयलिया अब प्रेम री प्रसव रही पाखाए ॥10॥

अब वे रजपूतानिया रुल गई हैं, रतनों की ब खानें निक्षेप प्राय हो चली हैं । अब तो ये प्रेम पुस्तलिकाएँ, कवड-पत्थरा (निर्जीवा) का प्रसव कर रही हैं ।

है मिघणियाँ आज लग, निरबीजाँ घर नाहि ।  
बस उजालक बाहुडी, मिलै भू पडा माहि ॥11॥

इतने पर भी "निर्बीज भूमि बबहू न होय" इस उक्ति के अनुसार आज भी सिहनिया हैं । किंतु कुल को उज्ज्वल करनेवाली व क्षत्राणिया मिलेगी सिफ भौपडियो म ही ।

[ रचनाकाल 1939 ई ]



## नारी-गौरव

धो जाया हिवडो घडक, हुवै अभागा हेन ।  
य दुहें पाव उजालणी, दव सुभागा दन ॥ 1 ॥

पुत्री के जन्म पर दुखी हान वाले निम्सन्ह अभागे है क्याकि विवृणम और पतिपक्ष इन दोनो पक्षो की उज्जवल करने वाली पुत्री तो भगवान सीभाम्यसालिया को ही देता है ।

राह महल म जे रतन, अणमोल्या अकाम ।  
निपजे जगल खाण म, पारम कर पुत्राय ॥ 2 ॥

जो रानिया राजमहलो मे सबश्रष्ट मानी जाती है वे वास्तव म गरीब घरों म ही जन्म लेती हैं जैसे बन प्रदेश की खाना म मिलने वाले परथर की जोहरी द्वारा परीक्षा किये जान के बाद ही पागम की तरह पूजा होती है ।

वटा पग हेठा हुष्ठा, ढाब भिषारी ढाब ।  
वी उठी धुर धूकला, गजण खला गरन्ब ॥ 3 ॥ ॐ

पुत्रा न तो जब भिखमगो की वक्ति को धारण कर अपन गौरव को समाप्त कर लिया है तो एमी अवस्था म वन्दियां ही शत्रुमा के गव का लडन करते क लिए उठ खडी हुई हैं ।

ॐ इस दोह की रचना भामी की रानी लक्ष्मीबाई की प्रगप्ता म की गई थी - निम्नांकित प्राचीन ग्राह का लक्ष्य बनाकर -

वटा जायां कवण गुण, अथगुण कवण धियण ।  
जे ऊभा धर अण्णणी, गजीज अवरेण ॥

इसम भारत माता की स्वतन्त्रता क लिए सशस्त्र क्रांति क पथ का समयन किया गया है और वह भी भारतीय नारिया के द्वारा ।

पायो पाखाणी वहे पद ठाकर तें प्राण ।

प्राण प्रतिष्ठा करि सहस्र, पुजा दिये पापाण ॥ 4 ॥ ❀

गौतम की पत्नी अहल्या ने तो पापाण का रूप धारण कर भगवान राम के पद-स्पर्श से पुन प्राण प्राप्त किये थे, पर तु इंदौर की महारानी अहल्या ने असंख्य पापाणी (पापाण प्रतिमाया) म प्राण प्रतिष्ठा करके लोक में उनकी पूजा करवा दी है ।

---

❀ महारानी अहल्या बाई न अपने जीवन काल में अनेक ध्वस्त मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया था और अनेक मंदिरों में नवीन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवाई । इस दोहे में उसी की ओर संकेत है ।

## राष्ट्र धर्म

### भारत की राजसिक-देह

राण प्राण बल राठवट, हाडा हाडे तह ।

भय्य ऋय्य बछवाह इम, भा भारत रजदेह ॥ 1 ॥

भारतवप पी राजसिव दह म मेवाड के महाराणा प्राण रु म, राठीड शक्ति क रूप म, हाडा अस्थिया के रूप म और बछवाह मुंदर कतेर के रूप म विद्यमान हैं ।

यज्ञ पूत पावक प्रबन, पोपव तेज महान ।

साम दाम भिद् दण्डपुत, चतुर्बाहु चहुवान ॥ 2 ॥

चोहान क्षत्रिय यज्ञ से पवित्र हुई प्रबल अग्नि से, महद् तेज का पोपण करने वाले हैं । साम, दाम, दण्ड और भेद उनकी चार मुत्रायें हैं ।



## राजस्थान के विभिन्न प्रदेशों की विशेषताएं

मरुधरा ( मारवाड )

दोहा

खग-धारा घोडां भडा, सिमट भरपो सह पाण ।

इण थी मुरधर तरल जल, पाताला परमाण ॥

जहा पर सारा पानी धपवा बल सिमट कर तलवारी की धारों, अरना और बीर योद्धाओं से केन्द्रित हो गया है । फलस्वरूप मारवाड में पानी इतना गहरा चला गया है ।

सरबत भरिया फल सक्कै, बलवट टीलां मत्थ ।

जल ऊँडा नर नीपजै, मुरघर सह समरत्थ ॥

मरुस्थल मे रेतीले टीबो पर रस से भरे मीठे मतीरे मिलते हैं,

जहा पानी इतना गहरा है वहाँ के पुत्थ बडे सामथ्यवान हैं ।

### मेवाड

गिर ऊँचा ऊँचा गढा, ऊँचा जस अप्रमाण ।

माझी घर मेवाड रा, नर खटरा निरखाण ॥

जहा ऊँची ऊँची पवत श्रेणिया हैं, ऊँचे किले है और जिसका गौरव

ऊँचा है उस मेवाड म मनुष्य कद के छोटे हैं ।

### मालवा

धिरक रहे चख लख धिरा साखा शाम समद ।

नदिया नीर अथाह नित, पीहर लच्छि पसद ॥

जिसकी शोभा देखकर आखे चकित हो जाती है, जहाँ फसती का हरा समुद्र लहरा रहा है और हमेशा बहन वाली गहरी नदिया है- ऐसा मालव-प्रदेश मानो लक्ष्मी को पीहर के समान प्यारा है ।

### गिरि गरिमा

घन परवत रणथभणा, मणा न रतना धाम ।

सीहा सिद्धा सोहडा वीर विरवा विसराम ॥

मणियो एव रत्नो के अनन्त भण्डारा से सुशोभित हे पवतराज ! तुम धन्य हो ! तुम युद्ध के स्तम्भ स्वरूप हो ! सिंहा सिद्ध योगीश्वर और वीर योद्धाओ को आश्रय देन वाले हो !





## ऊ यो ही चीतोड<sup>१</sup>

### दोहा

अलादीन अकबर तणी, मिटणी सरब मरोड ।  
वीरयम कथना क्यै, ऊ यो ही चीतोड ॥ 1 ॥

यह वही चित्तोड दुग है जहा मुल्तान अल्लाउद्दीन गिलजी और शाहशाह अकबर की विजयलिप्ता का दण चकनाधूर हुआ था, जिसकी गौरव-गाथा कीर्तिस्तभ आज भी कह रहा है ।

माकी भड मेवाड रा, नडपडिया जी ताड ।  
अकबर औरग ओभक्या, ऊ यो ही चीतोड ॥ 2 ॥

यह वही चित्तोड दुग है जहा मेवाड के दुद्ध य योद्धा समरागण म बट बट कर मर गये और उनकें इस अपरिमय शीय को देखकर ही अकबर और औरगजेब जैसे बांशाह स्तम्भित रह गये थे ।

चूडा सगता मकबेला, चाहुवाण राठोड ।  
सूग रगता सीबिया, ऊ यो ही चीतोड ॥ 3 ॥

यह वही चित्तोड दुग है जिसकी मिटटी के कण कण का पुष्पावत शकतावत, भाला, चौहान और राठोड वंश के शूरवीर यादामा ने अपन लह से सीचा है ।

१ ठा बेसरीसिह को सन् 1941 म महाराणा भोपालसिहजी न चित्तोड किले पर जो जीर्णोद्धार का काम हुआ उसे देखने के लिए किले पर भेजा । देखकर शौटन पर उहान य दोहे सुनाये [दि 5 3 1941] । महाराणा साहब ने इच्छा व्यक्त की थी कि इन दोहा को सगमरमर पर खुलवाकर किले के भुगम दार पर लगा दिय जाय । परंतु करीब पांच माह बाद ही ठा बेसरीसिह का स्वर्गवास हो गया और यह काम अधूरा ही रह गया ।

राणा तुरकाणा तणी ठणी गजब जय होड ।  
भजिया दल दिल्ली भणी, ऊ या ही चीतोड ॥ 4 ॥

यह वही चित्तोड दुग है जहाँ कभी महाराणाओं और मुसलमान बादशाहों के मध्य विजयप्राप्ति की आश्चर्यजनक बाजी लगी थी पर तु अतंत तक सेनाओं को दिल्ली की ओर पलायन करना पडा ।

भेल भाट मेवाड री, मुगल गया मुल माड ।  
मेदपाट मुकटामणी, ऊ यो ही चीतोड ॥ 5 ॥

यह वही चित्तोड दुग है जहाँ मेवाड की सेनाओं के आगे मुगल फौजें परास्त होकर उल्टे पाव लौटी थी । इसी कारण भारत पाता के मुकुट में यह मणि रूपी मेवाड दैदीप्यमान है ।

सीधी सीधी सुरग री जिणरी नहँ कँह जोड ।  
गढाँ शिरोमण जग गिणुँ, ऊ यो ही चीतोड ॥ 6 ॥

यह वही चित्तोड दुग है जो स्वर्ग में जाने की सीधी सीधी है । (शास्त्रों की भाष्यतानुसार 'हृतोवा प्राप्यसि स्वर्गम्, युद्ध में वीरगति प्राप्त करने वाला स्वर्ग में जाता है ) और सारा ससार निस्मदेह इस अद्वितीय विजे को दुग-शिरोमणि मानता है ।

भोक दिया तन भाल म, सतिर्याँ री सिरमोड ।  
रंग पदमण घण राणिया, ऊ यो ही चीतोड ॥ 7 ॥

यह वही चित्तोड दुग है जहाँ अनेकानेक वीराणनाओं ने अपने शरीर जीह्व की घघकनी ज्वाला में भोक दिये थे । सतियों में शिरोमणि महारानी पद्मिनी और ऐसी ही अन्य सती रानिया घय हैं ।

वीरधम तीरथ हुओ, तुरवाँ रा चित ताड ।  
भँजसँ भारत भाज लग, ऊ यो ही चीतोड ॥ 8 ॥

यह वही चित्तोड दुग है, जहाँ मुगलमान आक्राताओं के मानमदन का प्रतीक कीर्तिस्तम्भ अवस्थित है और तीर्थ स्वरूप यह चित्तोड आज भी भारत का गौरव है ।

# क्षात्र-धर्म

दोहा

स्वारथ-पथ शीला तुहे, पर-कारज पर-बद्ध ।

सह ठा मिलता सोहडा, हम न हरया लद्ध ॥१॥

जिहे अपन स्वाथ साधन की किंचित भी चिन्ता न हावर सदा पराववा  
मे ही तत्पर रहत थे, ऐसे राजपूत पहले सब जगह मिलत थे । परंतु अब तो व  
सौजन से भी नही मिलते ।

वैण सुमीठा बोलणा, निररत मजीठा नैण ।

अवे न दीठा आहुडा, दत्त अचीठा दण ॥२॥

जो क्षत्रिय मधुर वचन बालते थे एव सज्जनो को देखकर जिनके नेत्रा म  
सना आनन्द की लाली रहती थी अब ऐसे निमल दानवीर क्षत्रिय कही भी  
दिलायी नहा देत ।

सिर धर देता साहडा, निजरा वचन निभाय ।

अब लिखिया खुद ऊथर्ष, हाथ बिघाता हाथ ॥३॥

राजपूत अपनी प्रतिष्ठा के पालन म अपना प्राण देने म भी सकोच नही  
करता था । परंतु हा भाग्य ! आज वही क्षत्रिय अपने हाथा से लिखे हुए वचनो  
का ही उल्लंघन कर रहा है ।

निजरा स्वारथ साधणा, धर धर घणा सपूत ।

कमर कसे उपकार मे, व मूघा रजपूत ॥४॥

अपने स्वाथ की पूति करने वाले कथित मपूत तो धर धर म अनको  
मिलेंगे, परंतु परोपकार मे दूढ़ मबल्प के साथ कमर कम कर प्रवृत्त होत बात  
राजपूत बिरले ही हैं ।

रसिया घण रणवासरा, फँसिया फँसन फद ।

रस मपत्रसिया राजवी, गसिया रहै गुलद ॥५॥

जो जनाने अर्थात् अस्त पुर म ही सदा आनन्द अनुभव करने वाले हैं  
और अत्यधिक पैगान मे रहने वाले हैं ऐसे ये गिरे हुए और मशविहीन राजपूत  
राजा विनासिता म सबया डूब गय हैं ।

सोरठा

ढच-पच हदो ढोल, नर कोई नित पीट दे ।

साहस शीस सतोल, साथ वारज सोहडा ॥6॥

ढीले ढाले अरक्षित ढोल को तो कोई नित्य ही जब चाहे तब डके की चोट लगा कर बजा सकता है पर तु साहस के साथ जहा वीरतापूषक अपने मस्तक की बलि देन का काम हो, केवल बहादुर राजपूत [सुभट] ही कार्य सिद्ध कर सकता है ।

१। सुभट, नगरी २

बोहा

भापा-भेपा भडिशा, रहे करंटो रूप ।

जणिया व जू भोरिया, (पण) भणिया भू डो भूप ॥7॥

जी

विदेशी भापा और रहन सहन के अपनाने से राजा बहुरूपियो और नित्य रग बदलने वाले गिरगिट के समान हो गय हैं । यद्यपि वे उन वीर क्षत्राणियो की कुक्षि से ही उत्पन्न हुए हैं परंतु कुक्षिभा के प्रभाव से अब अपना असली स्वरूप खो चुके हैं ।

पथ पाथर लिन पातला, रजवट हीणा रक ।

घणा लफगा घेरिया, कलहट देश कलक ॥8॥

जिनके दिन गिरे हुए हैं और जो राजत्व के चिह्नो से रहित हैं एव जिनको बहुत से नीच व कुटिल पुरुषो ने घेर रक्खा है ऐसे राजा [क्षत्रिय] निस्सदेह देश के लिए कलक है ।

मू ढा जाणक मोल्हिया, पडव किम परभाव ।

मुछमु ढा मुलकावता, निलजा बोली नाव ॥9॥

जिनके मुह पर किसी प्रफण की काति नहीं है [मोलिया शब्द राजस्थानी म सबसे निवृष्ट व पुरुषपाथहीन मनुष्य के लिए प्रयुक्त किया जाता है] उनका भला किसी पर क्या प्रभाव पडेगा ? ऐसे बिना मूछ के मनुष्य जब मिथ्याभिमान से मुन्वरात ह तब ऐसा लगता है मानो इहान अपने कुलगौरव की नाव का ही पानी म डुबो दो हो ।

रचता थाहव रूबडा, नचता ह्य नाकन ।

अब मोटर उहता परै, मोड मुडासा मन् ॥10॥

जिनके तेज व सुन्दर घोड़े युद्ध में जान व निए नाचते रहते थे किन्तु अब वे ही मूछ मुडवाए हुए निम्नेज राजा मोटरग में बैठकर व्यथ ही सर-मराटा में अगना समय गुमा रह हैं ।

लानत जयचंद लार, बाता में दै व हुडा ।

[पण] थाप तणो आचार, उण थी पण अघको रसे ॥11॥

आज कल के राजपूत राजनीति मवधो वातचीत में जयचंद के दंगरीह पर उस अनेक प्रकार से धिक्कारते ह पर तु दा के प्रति स्वयं का कतब उम जयचंद से भी अधिक हेय है ।

मन चीठा मीठा अयण, फीटा हँस विन दोत ।

ढीठा दुगुण हूकता, दोठा अब देसोत ॥12॥

जो मन से तो अत्यन्त लोभी ह परंतु वातचीत में बाह्य मधुरता प्रकट करने हैं, जिनका हास्य थोथा है और जो मर्यादा रहित हैं अब ऐसे ही ढीठ व दुगुण वाले राजपूत दखे जाते ह ।

खग धारा शाम्हे खडी, [साइ] उर न चढी आतक ।

जिवा बहादुर जातडी, पडी थरहरे पक ॥13॥

वभी युद्ध स्थल में अनक तलवारों का सामना करत हुए भी जिसके हृदय में विचित्र भाव उत्पन्न नहीं हुआ था दुख है कि आज वही वीर राजपूत जाति पराधीनता के दलदल में पडी हुई थर-थर काप रही है

## राजपूतों की वर्तमान दशा

[ चार श्रणियाँ ]

दोहा

जग रखवाला जे रह्या, त्रिदाला धर वीर ।  
ताला भँह जडिया तिके, नीदाला बस नीर ॥ 1 ॥

पृथ्वी के यशस्वी स्वामी जो कभी ससार के रक्षक थे व राजपूत आज निद्रा मग्न होने के कारण गुलामी की जजीरा से जकड़े हुए है ।

धक धरता धम धीजणा, मरता भर मा मोद ।  
भरता वे इण भूमरा, भै धरहता होद ॥ 2 ॥

जो राजपूत सदा ही युद्ध में आगे बढ़ना जानते थे और धम पक्ष पर रहकर अक्सर पड़ने पर हर्ष के साथ प्राण न्यौछावर करन को तत्पर रहते थे । परंतु हा ! इस पृथ्वी के वे स्वामी आज [विदशी सत्ता के सामन] भय से काप रह ह ।

राणी जाया नित रह्या, जग अगवाणी जोम ।  
गालाणा गह गाठडी, भोगाणी अब भोम ॥ 3 ॥

राणियों की कुलि से उत्पन्न जो क्षत्रिय ससार में वीरता के कारण सब से आगे थे, परंतु वे ही दासियों के भोग विलास रूपी बधन में आसक्त होकर अपन राजत्व को हमेशा के लिए भोग बँठ है और इसीलिये अब व इस पृथ्वी का राज्य करने के अधिकारी नहीं रहे ।

भूलाणी जगबो भवश खेटाणी धर खाट ।  
रजपूताणी पीड वश, पटक रही पटाट ॥ 4 ॥

वह क्षत्राणी अब ऐसे वीरो को जन्म दना ही भूल गयी जो कभी युद्ध में तलवार चलाकर राज्य कायम कर सकें । वह तो अब प्रसव पीडा के बाद [कायर] कीडों को जन्म दे रही है ।

## हस्तिप की अनावश्यकता

दोहा

कवित्त गुमाने करिययो, धरम सनातन धार ।  
रहिया नह व राजवी, बीत चुकी वा बार ॥१॥

गुमान सिंह जी ने चारणो और राजपूतो के सनातन कर्तव्य को नश्य कर चारणो की प्रशंसा में कवित्त कहा है कि-तु न तो अब वैसे क्षात्रिय राजा हो रहे और न वीरता का वह युग ही, जो अब बीत गया है ।

रहता क्षत्रिय रात दिन, मद बहता मातंग ।  
चहता हस्तिप चारणा, जद ठहठहता जग ॥२॥

जिस समय क्षत्रिय स्वाभिमान में उ मत्त हाथी की तरह मस्त रहते थे और जब कभी युद्ध-भूमि में उनके पाव अग्रसर होने से ठिठक जाते थे तब वे शब्द रूपी अकुश धारण करने वाले महावत चारणा की प्रतीक्षा करते थे ।

चटक मटक सह चातुरी, भापा भेपा भड ।  
बिन भावन अब बाहुडा बणिया जबुक वड ॥३॥

आजकल के राजपूता में केवल बाह्य आडम्बर और चटक मटक तथा हाथी चतुरता ही रह गयी है एव विदेशी भापा एव भेय अपनाता से वे बटु रूपिया प्रतीत होत हैं । (चारणो के) अकुश बिना अब ये राजपूत बिना पूष के सज्जाहीन अंगाल जैसे लगते हैं ।

बाठरवा (मवाड)के ठा अदास्पद गुमानसिंह जी ने चारणो की कर्तव्य परायणता की प्रशंसा में कवित्त कहा था कि "चारण कुल हस्तिप जो न हो तो गुमान बहे क्षत्रिकुल कु मि ताको रोकि राह लाता को", उसी के उपलक्ष्य में ठाकुर साह्य न ये दोहे 10 2 1936 को लिखे । ठा गुमानसिंह जी का कवित्त निम्नांकित है --

हाथी बिन चारण हलै, पय घीसता पगग ।  
तज तोमर दत ताववै, अलबल छैला अगग । 4॥

अब तो चारण बिना हाथी के पैदल ही चलता है और क्षत्रियों को स्वधम की शिक्षा देने का अक्रुश छोड़कर विलासी क्षत्रियों के मुह की ओर ताकता है ।

### बाठरडा गुमानसिंहजी कृत कवित्त

नीत भाग चालै ज्यो कु भास्थल हस्थल दे,  
बाप बाप बोल अही मन को बडातो को ?  
कुमति कुदान भरे लाज के जजीर हरे,  
छोर धान आश्रम पै जगम पै जातो का ?  
काव्य रम्य नादन दे घेर रन क्षत्रिन म,  
हेर हेर मम बोल तोमर लगातो को ?  
चारण कुल हस्तिप जो न होत तो 'गुमान' बहे,  
क्षत्रिकुल-कु भि ताको रोकि राह लातो को ?



## स्वधर्म

धन र बल घणियाप, मटलया नर भी साचर्ब ।  
पोरस तणे प्रताप, फाँठण बटप्यण कालिया ॥ 1 ॥

अथ सत्ता के बल पर तो निबन्धे मनुष्य भी स्वामित्व का अधिकार पा जाते हैं परन्तु हे कालिया ! अपन पौरुष व बल पर बहप्यन प्राप्त करना निश्चय ही कठिन काम है ।

जन्मभूम जे जोय, गोरा पगतल गजती ।  
खत्रवट सारी खोय, बूडा अजमै कालिया ॥ 2 ॥

जिहान बिना किसी प्रतिरोध के अपनी मातृभूमि को अग्नेजो व पावो तले रोदे जाते देख, अपना शासन लजाया है, हे कालिया ! व लोग अब व्यय ही घोषी शान बधारे रहे हैं ।

### [सदभ-टिप्पणी]

“ठि महुआ (मीतामऊ राज्य) के वयोवद्ध ठा सा थी खुम.एतिहजी ने “कालिया शतक” बनाकर सशोधन के लिये मेरे पास भेजा । उसमें एक दोहा था, ‘अग्नेजा मू आय भिडिया केसर भूचमू । खोपट माहू खाय कुरब बिगा डयो कालिया’ । इसका मैंने अपन ऊपर ही समझा । अतः उस एक मात्र पर लेखनी न लगाकर मैंने उस दोहे के सामने माजिन पर पाब सोरठे लिख भेज । गुणग्राही ठाकुर साहब ने चम्बा पत्र लिखकर खेद प्रकट किया, श्रमा मागी कि ‘मुझे यह लक्ष्य मे ही नहीं रहा कि यह दोहा दूसरी तरफ भी पड सकता है । मैंने यह जमान बादगाह कसर के लिये लिखा था, किंतु अब उस पर भी ताना बसू हूँ ? वह भी वीर था । हार जीत हरि के हाथ म है—अतः मैंने वह दोहा सार निकाल लिया है और य पाब सोरठ मुझे बहुत पसंद आय, अतः काफी म लिख लिया है ।’ इनमें से दो सोरठ “कालिया शतक” में ले लिए गये । वे पाब सारठे य हैं ।

[ठा कसरीनिह द्वारा दिनांक 7-2-1932 को अपनी डापरी म लिखी

पवरमॅट री गाय, बणिया ठाकर बाजवै ।  
 कुरब बतावै काय, करतव हीणा कालिया ॥3॥

ब्रिटिश सत्ता के आगे दीन बनवर, बनिये की तरह लेन देन म विश्वास रखने वाले भी ठाकुर कहलाते हैं । हे कालिया ! ऐसे ओछे कामे करन वाले व्यक्ति अब अपनी कौन सी इज्जत का प्रदयन कर रहे ह ?

खोपट माटे म्वाय, गोरा पग चूम गजब ।  
 निजला कुरबा ह्याय, वरम बिहूणा कालिया ॥4॥

अपने स्वामित्व के सम्मान को खोकर भी आश्चर्य है कि ये शासकगण गौरे अफ्रेजो के तलुवे चाट रह हैं । हे कालिया ! ये अभागे इसके बावजूद भी गर्व करते हुए तनिक लज्जित नहीं होते ।

फेहर री कुलकाण, भिडणो सो विम भूलवे ।  
 नाम धरम पहचाण, कोइत जाणे कालिया ॥5॥

वनराज नेर आर कसरीसिंह की कुल-मर्यादा का तो टक्कर लेना है [अफ्रेजा की हकूमत से लाहा लेना अभिप्राय] उस वृह विम प्रकार भूल सकता ह ? हे कालिया ! अपने नाम और जाति-धम के अनुकूल कतव्य निभाना तो बिरले ही जानते ह ।



## विविध परमात्मा के प्रति

### दोहा

पवन पान करि ग्रहि जिये, कवर भवि पारेव ।  
घम निवाहन हार हैं, वह समरथ इव दव ॥१॥

सप वायु का पान करके जीवित रहता है, उमी भाति पारावत [कवुर] भी ककड खाकर जीवित रहता है । प्राणीमात्र के घम का निर्वाह कराने में वह एक परमपिता परमात्मा ही समथ है ।

### सोरठा

नाडूहया रे नीर, हरडावै घण डेडका ।  
समोदा बिन नह सीर, मिलै मूभ मनाक नै ॥२॥

छाटे छोटे पोखरो के जल में पड़े हुए हजारों मेंढक सदा टगटराते रहते हैं । मरे जैसे [विद्या नवाय] मीनाक पवत के लिए यदि कोई आश्रय स्थल है तो मात्र एक परमपिता परमेश्वर रूपी महाममुद्र ही ।

### टिप्पणी

—ठाकुर साहब ने मन् 1914 में गिरहूतार नोट ही यह प्रतिपाद करली थी कि वे मुक्त होने तक अन्नजल ग्रहण नहीं करेंगे । इस पर वाली का चिंतित हो उठना स्वाभाविक था । स्वजनो को चितापुक्त रहने के लिए ही उ होने हजारीबाग जल से अपने पत्र में उक्त प्रथम दोहा लिखकर परिवार के सदस्य को भेजा था ।

द्वितीय सोरठे में उस पौराणिक कथा का आश्रय लिया गया है जिसमें इंद्र के द्वारा पवता के पल काटने हेतु प्रारम्भ किय गये अभिमान के समय उसे समुद्र में ही आश्रय स्थान मिला, आश्रय कही नहीं ।

## राष्ट्रवर राव गोपालसिंह जी खरवा के प्रति

रजवट भरिया नित रहे, कनधज भरियो काल ।  
बेलू भरिया विपत रो, गुण भरियो गोपाल ॥1॥

मदा राजपूनी मान बात से रहने वाले, दुश्मनो के लिए काल स्वरूप और विपत्ति में मनहायो के रक्षक - ऐसे अनेक गुणा से भरवृत हैं, यह राठौड़ गोपालसिंह ।

रह्यो लाल पांचल मे, महाराष्ट्र मे मान ।  
राजत राजस्थान मे, गौरवमय गोपाल ॥2॥

जैसे पंजाब मे लाला लाजपतसय सर्वोपरि क्रांतिकारी नता हैं और महाराष्ट्र मे लोकमान्य बाळगगाधर तिलक, बंने ही राजस्थान मे यह गौरव-वाली गोपालसिंह हैं ।

## गांधीजी के प्रति

दंगरथ सुत लाधियो समद, पाटे घणा पहाड ।  
गाधी कावा ताम पर, चाहे जय दल थाड ॥

दादारथि राम ने तो अनेको पहाड समुंद्र मे गिराकर उसे पार किया था । पर महात्मा गाधी तो केवल सूत के कच्चे धागे (स्वदेशी वस्त्र) से ही ब्रिटिश साम्राज्य पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं ।

## मुंछमुंछों की एकादशी

मूघा चुडला महल रो, मरदा मूधी मूछ ।  
सत पोरन री साख म, ए दोनू घण ऊच ॥1॥

महिलाओं के लिए चूडा और पुष्पा के लिए मूछे बहुत मूल्यवान हैं। नारी के मुहाग और पुरुष के वारख की साक्षी म य दोनो बहुत ही महत्वपूर्ण है।

मुछमु डा भू डा मिनख, नरपण रो कर नास ।  
अजब भदर अपशकुनिया, रमिया जाणक राम ॥2॥

मूछ मू डाने वाले मनुष्य बड़े मूख हैं क्यकि इस प्रकार के पुष्पत्व सूचक अपनी मूछा को सफाचट करवाकर "भदर" [मृत्यु पर बाज देने वाल] हुए-स अपशकुनी लागत है मानो वे किसी रासमण्डली के पात्र हो ।

माथे माग सँवारणा, मूँढे मूँछ मु डाय ।  
फिर मुठकता फग या, जनखा रूप जणाय ॥3॥

सर पर माग सवार हुए, मूँछे मुण्डवाकर य फँगनपरस्त निलजता स मुस्कराते हुए हिजड से प्रतीत हात है ।

वाई बयू न वणाविया, दिये विधाता दोस ।  
नित उठ मूछा घूरडवे सधे जग सतोस ॥4॥

विधाता की यह मूल है कि इह नारी यानि म ही जन्म क्या नहीं दिया क्यकि इह तो सबर उठन ही अपनी मूछो को साफ करने पर ही मनाव हाता है ।

रहै सफाचट रात दिन, बाई जिसई भेस ।  
बले बूढ बालक बणे लाज नहै लबलेस ॥5॥

एम पुरुष रात-दिन नारी जसा स्वरूप बनाकर सदा सफाचट रहने हैं । इह तनिक भी लज्जा नही घाती कि ये बूडे होन पर भी पुन पुवा दिखना चाहत है ।

मूछाला री महफलाई, मुछमुडा न मुहाय ।  
जालक मिली जमात मे, अबधूनाणी आय ॥6॥

मूछवालो की सभा मे मूछमुण्डे शोभा नहीं देते । वे ऐसे लगते हैं मानो साधुओं की जमात मे कोई अबधूनाणी घुस आई हा ।

पाण मूछ पर पटकता, ऊफणिया आपाण ।  
[अब] तमख बजावै तालिया, की मुछमूडा काण ॥7॥

पहले तो रोप प्रकट करते समय वे अपनी मूछो पर ताव देते थे लेकिन अब ता ऐसे अवसर पर ये मूछमुण्डे हिजडो की तरह फरत तालिया बजाते हैं ।

मुकना घण ससता मिले, जुड दताला जोड ।  
अधर घुट्या धिक् अजसै, हुवे न मूछा होड ॥8॥

जिस प्रकार दतविहीन [मुकना] हाथी और दात वाले हाथी के मूल्य म समानता नहीं होती, ठीक उसी प्रकार मूछमुडे भला मूछा वालो की क्या बराबरी कर सकते हैं ?

हरखे घुटिया होठरा, मिटा मूछ रा भार ।  
[तो] कुदरत हू ता क्यु नहीं, औरतिया अधिकार ॥9॥

घुटे हुए हीठी वाले अपनी मूछो का भार हल्का कर बहुत हर्षित होते हैं । तो फिर प्रकृति ने ही इहे नारी का स्वरूप क्यों नहीं दिया ?

आध नीचे उतरिया, मरद मूछ मुडवाय ।  
चढी आध कट चोटिया, धिया समोवड घाय ॥10॥

पुरुष तो मूछ कटवाकर अपनी श्रेणी से आधे नीचे आ गये हैं और उधर स्त्रिया अपनी चोटिया आधो कटवाकर मानो पुरुषो की बराबरी कर रही हो ।

नारी चाहे नरपणो, नर नारी उणिहार ।  
बणी दशा विपरोत अब, विकट काल बलिहार ॥11॥

समय की विचित्र बलिहारी है कि सब विपरीत हो रहा है क्माकि नारी तो पुरुषत्व चाहती है जबकि दूसरी ओर पुरुष नारी का रूप अपनाना चाहता है।

## प्रासगिक

### सोरठा

जतरा ईजतराह, भूषा वेगत रा मिते ।  
कारज पड घनराह, व्है स्वराज हनराहू ॥१॥

जो केवल धोयी इजत क भूम हैं उन पर मोडा सा घनरा मान हा व  
स्वराज्य क रासन का परिणाम कर दत हैं ।

मांघी मत मत राह, नसपत रा पय द नवा ।  
फंग भापतराह, उतरा ही गल घाटवे ॥२॥

नाना प्रकार क सिद्धाना का केवल डीग हावने वाते नय नय रास्ता पर  
चलने की सलाह, दते हैं, फलस्वरूप उतनी ही भाकन गल म घाती है ।

मनघपणा रो मात्र, गुण थो दुनिया नह गिणे ।  
ताखडिया द्रव तोल, क नप काना दुक्किया ॥३॥

दुनिया केवल गुणा म ही मनुष्यता की कोमत नही भावती । यहा सम्भान  
पान क दो ही रास्त ह या तो भति घनवान हाने से या राजा का सलाहकार  
बनने पर ।

## २. पत्र – व्यवहार

- जेल के पत्र
- अन्य पत्र





## सौ. चन्द्रमणि के नाम पत्र

श्रीमती सौभाग्यवती चिरजीवी वार्ड चद्रमणि,  
प्रसन रही ।

तुम्हारा पत्र मिला पढ़कर परम सतोष हुआ । मेरे सम्बन्ध में तुम लोग चिन्ताकाल न विताकर स्वकतव्य धर्म पर ही मनन करो । भारत में जन्म लेने के साथ ही जो कतव्य मानव जीवन के साथ अविच्छिन्न प्राप्त होते हैं जो ऋण प्रत्येक देश सतान पर, चाहे पुरुष हो चाहे स्त्री, सब पर रहता है उसी कतव्य को पूरा करने, उसी ऋण से मुक्त होने में हमारा कल्याण है । मेरे हिस्से को मेरे ही लिये छोड़ दो । यह भगवत-परीक्षा का काल तीव्र गति से जा रहा है उत्तीर्णता का आधार बस मेरे आंतरिक बल पर निर्भर है और उस अंतर में वह परीक्षक आदि गुरु स्वयम् विराजमान है । चाहे सच्चे जीवन के रहस्य को और नकद धर्म के मर्म को न जानने वाले हमारे कुटुम्ब पर आई हुई विपत्ति परम्परा को देखकर नाता प्रकार के फैसले देते हुए विना कीमत की टीका टिप्पणी में लोग लगे होंगे और वे वाक्य तुम्हारे कानों तक भी पहुँचते होंगे । पर तु तुम्हारे धर्म और विचारों पर मुझ सतोष है । तुम अवश्य यह जानकर सतुष्ट होगी कि भारत के एक महत्त्वपूर्ण प्रदेश में जाग्रति होने का प्रारम्भ अपने परिवार की महान आहूति से ही हुआ है । इस राजसूय यज्ञ में हम लोगों की बलि मंगलरूप हुई है । नाशवान शरीरों की तुच्छता और इस महाभारत अनुष्ठान की महत्ता मिलाकर देखने से ही यह सब प्रतीत होगा । बाहर के आत्मीय जन की पुण्यता सदा चाहता हूँ । यह समय बड़ी सावधानी का है विश्वास किसी पर न करें हमारा मिलन अवश्य होगा । तुम्हारा पत्र मुझे मिल जात है । स्वतन्त्र प्रबन्ध है । मेरे प्रिय ईश्वर<sup>2</sup> का जय हो ।

1 ठाकुर केशरीसिंह जी बारहठ ने सन 1914 के अत म राजम कारावास हा जाने के पश्चात् बाटा मेंटल जेल से यह पत्र अपनी पुत्री सौ चद्रमणि दबी को लिखा था । इस समय ठाकुर साहब के समस्त परिवार का सबस्व लु ठन हो चुका था-सतक जागोर, हवली एव लाखों की सम्पत्ति-सब कुछ छीने जा चुके थे । भाई जीरावर सिंह और कुमर प्रताप भी फरार हो चुके थे ।

2 जामाता श्री ईश्वरदानजी भागिया, मँगटिया (मेवाड)

## जामाता ईश्वरदान आशिया के नाम

1917 क पत्र की प्रतिरूपि-

Schedule XLVI -Form No 165

Jail form No 41 (old 87)

Hazaribagh CI Jail

Prisoners Letter

हजारो बाग सन्तल जल  
बिहार उडोसा  
16-8-17

प्रिय जामाता<sup>1</sup> ! प्रसन्न रहो ।

आपका अब एक पत्र मिला । वास्तव में आपका अनुमान सत्य है कि इन तरह मास में मुझे किसी का कोई पत्र नहीं मिला और न लिखने का प्रसंग ही । अस्तु गृह की दुर्व्यवस्था विदित हुई । यह सब भाग्यचक्र का स्वाभाविक नियम ही है आश्चर्य क्या ? जागीर और हवेली आदि के लिये उद्योग करने में भाई<sup>2</sup> न कोई बात उठा न रखी होगी तथापि अभी फल प्राप्त न हुई इससे क्याकुत्र होने और घँस खोने का कोई कारण नहीं है । विश्वास रखिये 'यदस्मदीय न हि तत्परशा' समय मात्र का प्रश्न शेष है । पुरूषाप जारी रविम सिद्धि दाता भगवान है । कमण्यवाधिकारस्त मा फलेषु कदाचन, का कमफल हतु भू मां ते सगोस्त्व कमणि'। मैंने भी आपके आग्रह से एक प्राथना पत्र ए जी जी साहिब का लिखा है ।

आपने यह नहीं लिखा कि जब हवेली खाली कर दी गई तब घर के सब लोग शाहपुरा में किस स्थान में निवास करते हैं और सब सामान कहा रखा ? एव प्रजराद मातृम्बरूपा भुवामा साहिबा कहा है और कैसे ह ? भाई किशोर सिंह जी कहा ह और क्या व्यवसाय है ? आपन मुझे पत्र मिलन के साभाकार

1 श्री ईश्वरदान आशिया

2 अनुज किशोरसिंह

करने के नियम को जिनामा की। इन माघारण नियम प्रति तीसरे मास पत्र मिल सकता है एव लिखा जा सकता है, एवं मास तार भी प्रति तीसरे मास म हो सकता है। प्रायः नैजातिव्य मा ही। अवरय मरे सम्प्रभ म प्रायः सबको अधिक ध्यानुमता होगी और विशेषतः मर भ नग्रहण न करने की अटल प्रतिभा और साथ ही जेल के कठिन नियमों का साथ साथ स्मरण होने से। तथापि धैर्य रखिए। भगवान् यनका प्रकारेण मर धम की रक्षा कर रहे ह और दिन व्यतीत हो ही रहे ह। "पवन पान करि अट्टि जिये कजर अग्रि पाव, धम निराहनहार हैं वह समरथ इव देव।" आप सबके सविस्तार युक्त से विदित करते रहें। 'म्यधममपि चावभ्य न विवम्पितुमहसि' निश्चय ही भगवान् इस शरीर को इसी विधि से तप कराना चाहते ह और यह सूत्र ही रहा है। नोचेन् निरपराधिया की यह श्ला कभी नहीं होती क्याकि व स्वयं माना करते ह "न हि कल्याणकृता विचिन्तुगतिं तात गच्छति" विमधिकम्विशेषु।  
ह केसरीनिह

Contents admissible under the rules

Sd/Jailer

Passed/may be posted

Sd/-Superintendent

G P (Jails) P O No 158 11, 670-17 7-16

## पुत्र रणजीतसिह के नाम

हजारी बाग  
सेंट्रल जेल  
बिहार उड़ीसा प्रांत  
20 अगस्त, 1918

प्रिय रणजीतसिह,<sup>1</sup>

प्रसन्न रहो । भाई किशोरसिह जी आदि मुझसे यहाँ मिल गये । आशा है वे सब सकुशल घर पहुँचे होंगे । उनके द्वारा ध्यार प्रतापसिह का सवा<sup>2</sup> मिला होगा । अतः लिखा कि वह बड़ा और कैसे है ? देवी चन्द्रमणि एव जमाईजी साहिब<sup>2</sup> की कुशलता से सूचित करो । प्रेमभाव की अतिशयता में वायमनी बाध का स्तब्ध हो जाना प्राकृतिक नियम है । अतः साक्षात् होने पर भी मैं किसी से कुछ नहीं पूछ सका । अतः यह लिखना कि तुम्हारा पढाई का क्या प्रबन्ध है और क्या दिनचर्या है ? भाई किशोरसिह जी का पत्र किस पत्र पर मिलेगा ?

श्रीमान वायसराय की सेवा में मेरी अपील " क  
श्रीमान ग्यानु गुपरिटेडेन्ट माह्व गव जेजर साहिब ने स्वीकार किया है उहाँने कोटा स्टेट स जजमेन्ट की नकल भागी उसके उत्तर में स्टेट न लिखा कि 47 रु (अर्क अम्पल्ट है) फीस जमा करन पर नकल दी जा सकती है । इस पर यहाँ से ग्यामप्रिय जल आफिसरा न फिर से स्टेट का स्पष्ट लिखा है कि जब जागीर आदि सब जम्त हैं एसी हालत में वह फीस नस द सकता है । बल्कि जल कोड के निम्नानुसार जजमेन्ट की नकल बिना किसी फीस में मिलना चाहिये । स्टेट से उत्तर मिलन पर तदनुसार वाय किया जायेगा । यदि इतने पर भी नकल नहीं मिलेगी तो मुझे यहाँ के आफिसरा की ग्यामपरता

1 डा बेसरीसिह क प्रतापसिह से छोटे दूसरे पुत्र

2 पुत्री चन्द्रमणि और जामाना दशबरदान आशिया



## जामाता<sup>३</sup> के नाम

हजारी बाग, सट्टर बेग,  
17 दिसम्बर 1918 ई

मेरी नव प्राणाओं के आधार प्यारे जामाता !

आपका स्नेह-पूर्ण पत्र मिला। विधि विद्वित्त अवस्था में जिस कुटुम्ब का हृदय उच्च, स्नेहपूर्ण वत परायणता और धैर्य आदि सद्गुणों से दनीयमान रह, उस कुटुम्ब का भविष्य कभी मंद नहीं। परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाला को कष्ट भूषण ही नहीं प्रत्युत् ईश्वरीय प्राणोर्वाह है। मृक्षे दूढ विश्वास है मरा कुटुम्ब भवान्ण नर-रत्ना से मंडित है वा इस कसीटा में पूण उत्ताण हाणा। दुख ही में सुख का बीज है, सदगुणों का विकास है, जीवन का माधुम है, तबही जबकि विह्वल न हो, स्वाथपरता न हो।

भगवत प्रेरणानुसार कन्य के अनुरोध से श्रीमान् बायसराय की सेवा में जागीर एवं सजा के सम्बन्ध में दा अपीन मय अग्नेजी भापातर के भेजी गई है। आशा है इस माह के अंत तक पहुँच जायगी। उनकी प्रतिलिपि भेजता हूँ। भाई<sup>1</sup> के साथ मोतीलाल नेहरू, पुरुषोत्तमदास टंडन, मदनमोहन मालवीय आदि हाइकोर्ट के वकीलों का दिखाकर और सम्मति लेकर जमान की कायवाही करें। भगवान् ठीक ही करेंगे। रात्रि का दिन में तम का प्रकाश में, दुख का सुख में परिणित होना प्राकृतिक नियम है, अवश्यभावी है। निमित्त भव।

मेरा स्वास्थ्य इन चार माह से बिगड़ गया था परंतु अब ठीक है, चिन्ता का कोई कारण नहीं। प्रताप<sup>2</sup> का समाचार न मिलने से चिन्ता अवश्य है। रणजीत के पत्र के अक्षर और भावा व अशुद्धियों को देखकर उसकी

३ ईश्वरदान आशिया

1 अनुज ठाकुर किशोरसिंह बाहेंस्पत्य

2 कु प्रतापसिंह जिन्हें बनारस पञ्चमन केस में 5 साल की सजा हो गयी थी।

3 कनिष्ठ पुत्र रणजीतसिंह

शिक्षा पर दुब्र होता है, क्या उसको इतना सा सम्हालने वाला भी कोई नहीं । भाई किशोरसिंह जी के पत्र का पता अवश्य लिखें । पाचेठिया<sup>4</sup> के भ्रातृगण का आधिपत्य मेरी स्मृति पर अटल है ।

देवी चन्द्रमणि<sup>5</sup> । तुम्हारा पत्र सदा ही हृदय को स्पर्श करता है । मर लिये तुम्हारा आशवासन स्वर्गीय आशीर्वाद है । तुम्हारी नरोग्यता सुनकर हृदय से चिंता की छाया हट गई । गीता का अध्ययन अवश्य करो और प्रत्यक्ष ईश्वर<sup>6</sup> को चरण सेवा में सबम्ब भाव से समर्पण करो, जो तुमको मिला है । उसमें अधिप कोई पिता अपनी पुत्री को नहीं दे सकता । मेरी जननीस्वरूपा भुआ मा का अनन्त पुत्र वात्सल्य एव तप और तुम्हारी माता का उस पचाग्नि तप की तपस्विनी देवी का प्रेम ईश्वरीय कृपा के रूप में मरा महायक है । निराक रहा देवी । अपने पिता का स्नह चुम्बन स्वीकार करा । किमधिकम्,

भवतो मगलाकाक्षी पिजरावद्ध  
केसरी 'सिंह'

- 
- 4 पाली जिले में स्थित प्रसिद्ध ग्राम जहाँ के समस्त बधुआ का ठाकुर साहब के कान्तिवारी कार्यों में पूरा सहयोग रहा था ।
  - 5 ज्येष्ठा पुत्री
  - 6 जामाता ईश्वरदान आशिया ।



## जामाता\* के नाम

1919 के पत्र की प्रतिलिपि -

**Schedule XLVI Form No 165**

Jail form No 41 (Old 47)

Hazari Bagh Jail

PRISONER S LETTER

हजारी बाग

सेट्रल जेल

14-7-19

प्रिय जामाता !

कारण समझ में नहीं आता कि आठ मास से आप लोगो का कोई कुशल सवाद नहीं मिला, यद्यपि मैं इस अवकाश में तीन पत्र भेज चुका हूँ तथापि एक का भी उत्तर नहीं।

इस मौन का कारण विशेष अवश्य ही होना ही चाहिये। अनिष्ट विशेष की आशंका का उदय होना भी सहज ही है क्योंकि प्रायः जाती हुई विपत्ति दुःखित हृदय पर अन्तिम लात मार कर ही जाती है और वह हृदयविदारक प्रहार ऐसा विषय होता है कि उसका चिह्न आजीवन नहीं मिटता। भूरिदशन यही साक्षि देता है। कही वही देवी नियम इस ठीक अवसर पर मेरे लिये भी उपस्थित तो न हुआ है ? और उस आघात के क्षण से कुछ काल मुझे बचाने के लक्ष्य से ही तो कही आप लोगो का मान-व्रत न हो ? यदि यह स्या का सत्य ही हो, यदि इस शेषप्राय तपोयज्ञ की शेष आहूति की यही विधि विधि को अभीष्ट हो तो मैं उस नियता के आदेश को सुनने के लिए ब्रज हृदय से तत्पर हूँ, फिर वो आदेश कितना ही दारुण क्यों न हो। अतः पत्रोत्तर में विलंब न करें, क्योंकि प्रकृत आघात उतना दारुण नहीं होता जितनी की करालवदना आशंका की तामसी छाया।

मेरे जीवन-नवजीवन-की यह ऊपा शांति और मंगल से पूण हो यही एक मंगलमय प्रभू से प्रार्थना और यह रक्षावधन मरे समस्त कुटुम्ब की रक्षा, शांति और सुख की नवीन त्रयी से पुनवधन करे, यही आप लोगों का आशीवाद ।

मैं अनेक बार भाई किशोरसिंह व पत्र का पता ज्ञात करने के लिये लिख चुका हूँ परन्तु आपने अभी तक नहीं लिखा । इसी कारण म प्रबल इच्छा होत हुए भी उनको आजतक कोई पत्र न लिख सका और न उही का कोई पत्र मुझे मिला । अत अवश्य लिख भेजें । न्यायकारी मुक्तिदाता भगवान् मंगलमय हैं । किमधिकम्

ह केसरीसिंह

Contents admissible under the rules

Sd/Jailer

Passed may be posted

Sd/Superintendent

G J P (Jail) P O No 776 7, 200-10-4-18

[ श्री ईश्वरदान जी का लिखे दिनांक 31 5-1923 के पत्र का अंश ]

‘ प्राय महापुरुषो का जीवन एस दुखा से छाली नहीं हाता । स्वार्थी और मूढ ससार सन्चे और अलौकिक रत्ना की परीक्षा नहीं करता । परीक्षा न हो सकना ही तो महान आत्माआ की उच्चता का लक्षण ह । अत वे धुद्र प्राणिया पर सदा दया की दृष्टि मे देखत ह शप की तो बात ही नहीं । ससार मे ऐसे आदमियो की सख्या अधिक रहती है जो भाणिक्य-शिला पर मसाला पोसना चाहते हैं-उसकी स्निग्धता से भुँभलाकर उसे टँचवाने से अपनी बुद्धिमत्ता मानते हैं ।’

## मि. आर. बर्न के नाम पत्र

R Burn Esq I C S  
C/o Grindlay & Co  
Parliament Street, London

महोदय ।

यद्यपि आफिसियल तौर से मुझे इत्तला नहीं है कि आप छुट्टी पर हैं और न यही कि एथनोग्राफी का ओफिसियेटिंग काय किसके हाथ में हम गरीब खानगी नीर पर आपकी छुट्टी का हाल मालूम होने पर मैं यह पत्र आपको इंग्लैंड में देता हूँ ।

मैंने एक अरम के तजह्वे से और जाच के बाद प्रत्येक जाति के नाम ही से उसकी उच्च कोटि और गौण कोटि जान लेने की कसौटी स्थिर की है । अपवाद को छोड़कर इस नियम के साधदशिक होने में मुझे विश्वास है परन्तु मैं इस विषय को फिर भी आपके विशेष अनुभव से जाचे जान के बाद ही पक्का समझूँगा । अतः आशा है कि आप अपने विचार परिणाम से अवश्य सूचित करेंगे । वह नियम यह है ।

आप चाहोगे तब मैं इस नियम का विशेष स्पष्टीकरण करने में भी उद्योग करूँगा-

किसी जाति के खास नाम का स्त्रीलिंग पूछिये, यदि उन नाम के आखीर में नी, णी, आवे तो उसे उच्च जाति का समझना चाहिए और जब खास नाम के आग न, ण तो उसे ई लग जात ही इस नियम का निर्वाह होगा । जैसे नाम के आखीर में स्त्रीलिंग में 'न' 'ण' या 'इ' ता उसे निम्न श्रेणी में समझो जैसे तेल, तलिन, दरजी, दरजिन, कुम्हार, कुम्हारिन, कुम्हारी, इत्यादि ।

स्मरण रहे कि उपरोक्त नियम जाति के उस खास नाम के साथ ही जाचना चाहिए कि जिससे वह भ्राम तौर पर पुकारी जाती हैं परन्तु उपरोक्त नियम किसी सब-वास्ट, सेक्सन या सेप्ट (Sept) या जाति के किसी उपाधि सूचक नाम के साथ सम्बन्ध नहीं रखता —

ब्राह्मण ब्राह्मणी, राजपूत राजपूतानी,  
बनियो बनियानी, इत्यादि

भवदीय  
केसरीमिह बारहठ

---

यह पत्र कुंभार केसरीमिह बारहठ ने उसे उस समय लिखा था जब वे 1904-5 में काठा राज्य के सुपरिन्टेन्डेंट एथनाग्राफी का कार्य कर रहे थे और श्री आर. वन आई. सी. एस. भारत सरकार के Ethnography Department के Director थे।

## कुंवर ओकारसिंह के नाम पत्र<sup>1</sup>

काटा

दि 22 5 1906

श्रीमान् मित्र मूढमणि मायवर कवर साहिब,

मित्रो के बलेश से मित्र हृदय का क्लेषित होना स्वाभाविक नियम ही है।  
चाहिये सच्ची मत्री।

यद्यपि यह नाचोज हृदय अपने को वैसा पात्र मानने का दावा नहीं  
करता क्योंकि सच्चे मदभागी व ही सिद्ध हुए कि जितकी अ त तक निभ गई, हम  
तो अभी भविष्यत् की चल गोद में हैं।

तथापि कल की बातचीत से शा त रात्रि म हृदय ज्वार-भाटे की लहर सा  
बना रहा।

जिसका भय प्रीति के प्रारम्भ ही में था वही आ उपस्थित हुआ, मैं उसे  
सम्मान देने को तैयार हूँ।

परन्तु उसके पहले दो अक्षर निवदन कर देता हूँ।

मैं मित्र शब्द में जितना सम्मान देखता हूँ उतना हजार श्री की  
उपाधि में भी नहीं और अपने मित्रो को कभी उपयोगी बनूँ, उसी में जीवन  
साफल्य समझता हूँ।

किन्तु साथ ही चाह मुझे कोई न समझे तथापि मेरा कतव्य-धर्म मुझ  
उस स्थान के निमित्त कि जहा स अन-जल लिया है, अप्रिय चेष्टा से भी  
रोकता है।

माना कि अनुचित का साथी होना भी पाप है तथापि हजार अनुचिता  
पर आखमिचौभी करके किसी खान सम्बन्धी स्थान पर आख उठाना भी पक्षा  
पक्ष की सीढी पर पैर रखना है।

जबकि उभयपक्ष स्नेह और धर्म से दुलभ्य है तो क्या मरा तटस्थ भाव  
न्याययुक्त नहीं होगा ?

यदि आपको इस जन के शुद्ध भाव पर कुछ भी विश्वास हो तो दृढ़ मानें कि यह तटस्थता की चाहना किसी प्रकार के भय या स्वाय या अथ किसी नीच प्रपञ्च के कारण से नहीं—है केवल वक्तव्य चिन्ता ।

यदि आयुष्य रही तो ऐसे प्रसंगा को छोड़कर फिर भी परीक्षा के अनेक स्थल मिलेंगे ही । यदि यही स्थल है तो खैर मैं अपने सिद्धांता का लेकर उपस्थित हूँ ।

हा देश काल ने साथ दिया तो आप कभी अनेक करडो मुठिठयो पर आक्रमण होते भी देखेंगे और होंगे नव किसी खास व्यक्ति या स्थल के हिताहित से नहीं किन्तु यावत् प्रजाकीय हित के सिद्धान्त क्रम में ही अक्रुरित होंगे और वे ही महान यज्ञ के साधन हैं ।

हाँ, मुझे विश्वास है कि आप उदार हृदय मेरे सिद्धान्त को निर्दोष समझ कर क्षमा करेंगे । परन्तु जा ऊपरी अनुमान से प्रबल हृदयो में अविश्वास जमा है, कुछ चमक भी चुका है, उसकी सफाई उह हृदयो की पर्य परीक्षा पर छाड़ दी गई है, वो किस परिणाम पर पहुँचेगा, देखना चाहिये ।

मैं हजार भयो के सामने भी निश्चित हूँ क्योंकि 'सत्येनास्ति भये वचचित्त' । प्रियवर ! यह किसी की शिवायत नहीं है । जिसकी जैसी भावना वह वसा ही फल दगा और आप उस फल ही से सब अनुमान कर लेंगे । हृदय तो यही करता है कि "खाक हो जल के मगर उफ़ दिल्से नाशाद न कर, दम घुट कर निकल जाय तो फरियाद न कर" ।

आप स्वयं मेरे से अधिक वाय-शुद्ध बुद्धिमान और शक्तिशाली हैं । अतः यदि मेरे से तुच्छ सम्मति न भी ली जाव ता आपका सामर्थ्य में कमी नहीं होगी।

आपका हा  
बेसरीसिंह

---

यह पत्र पलायथा (कोटा)के कुंवर आकारसिंह को दि 25-5 1906 को लिखा गया था । कुंवर आकारसिंह उन समय सम्भवतः कोटा राज्य के इन्सपेक्टर जनरल थे। बाद में कोटा राज्य के दीवान हुए श्री ब्रिटिश सरकार द्वारा उनको 'सर'(Knight) और के सी एस आई के खिताब दिये गये थे । कोटा राज्य न पलायथा की खाना में हस्तक्षेप प्रारम्भ किया । उस समय कुंवर आकार सिंह न बेसरीसिंह से अपने पक्ष में सम्मति लेना चाहा, उस सदर्थ में यह पत्र दिया गया था ।

## सर ओंकारसिंह दीवान, कोटा के नाम गोपनीय-पत्र

मायबर ।

यदि मैं राजकीय विषय में आपको अपनी सम्मति दूँ और यदि उसे मेरी गैर जिम्मेवार अनाधिकार चेष्टा माने तो ऐसा मानने वाला बिल्कुल सच्चा है । मेरी अन्तरात्मा साक्षी है कि केवल आपकी और दरबार की हित और यश की कामना से ही मैं अन्तः बर बिना पूछे भी आपके सामने विचार रख हूँ । मैं अपनी स्वायत्त की बात को बिल्कुल अलग स्पष्ट रूप से सामने रखना का साहस रखता हूँ । यह स्विकार जमाकर कि मैं भी सलाहकार हूँ किसी सतिलभर स्वायत्त साधन का लाभ भी लिया हो या ऐसा आशा रखी हो तो स्वीकार की शपथ खाता हूँ । पर तु यह सच है कि मेरी जगह कोई प्रह्वन स्वार्थी या प्रपची हो तो ऐसी सलाह से हानि होना ही सम्भव है । जब यह उभूत कविहृद है तो मुझे भी मालिक या मित्र की हानि और अपयश महसूस करते हुए भी आधिकार चेष्टा में कदम नहीं बढाना चाहिये क्योंकि इससे व्यथ ही आप पर आक्षेप करने का मौका लोगो को मिल सकता है । चाहे अब मैं कुछ न करूँ फिर भी साथ आन जान से इसकी आवश्यकता भी नहीं देखता । लोगो की कल्पना चलती ही रहगी । हा, जब कभी भी आप इस शरीर पर विश्वास करके कुछ भी पूछें तो निस्वार्थ, निष्पक्ष और निभय भाव से अपना हृदय सामने रखना मैं कभी नहीं हिचकूँगा । अपनी ओर से आग बढकर अब अतः मैं एक बार फिर भी हृदय पूरा खोल दता हूँ, यही मित्र धर्म है ।

मैं यह खूब समझ रहा हूँ कि इस समय आपके सिर पर असाधारण बोझ है, कठिन समस्याएँ सामने हैं । आपके हृदय में निबलता का अंश है उसे भी जानता हूँ । राज्य व्यवस्था भीतर ही भीतर बहुत सड चुकी है बीस वर्ष पूर्व की शांत और ठोस व्यवस्था से आज हम बहुत दूर निकल गये हैं । फिर भी अभी तक रोग असाध्य नहीं हुआ, काबू में आ सकता है, बसते कि

आप हिचक हिचक कर बढने को नीति के बजाय साहस से आगे बढ़े और साथ ही दरबार की बतमान दशा का पूरा पान होकर भविष्य की चिन्ता में अपना सब समय लगाने की दृष्टि हो जाय । नीचे मुझे भय है कि यह घडा नाहक आप ही के सिर फूटेगा । मैं देखता हूँ इस समय आपके सामने कोई भी सच्चा मलाहवार नहीं है, जिम्मा स्वाय सना हुमा हो वो निभय सलाह कैसे देगा ? प्रत्येक हैड अपन सीगे स बाहर सलाह दें तो मैं उर्रोक्त डेफिनीशन से उसे भी अनाधिकार चेष्टा कटूगा क्योंकि वह दूसरे सीगे के निग गैर जिम्मेवार है । यहां तो खुद ने सीगे की सलाह म भी प्रपक भरा रहता है और यह अभिमान कि मुझे किसी की सलाह की, मन्द की जरूरत नहीं, बडे सतरे की चीज है । क्योंकि मनुष्य मवण नहीं, पोजीशन की रक्षा में यदि दरबार भी ऐसा ही वह तो आज ही लुटिया डूब जाय । इस पूरी परिस्थिति को सामने रखकर सोचने में मैं आज सारी रात चिन्ता दी, इसी निराश पर आया कि आप बाबू चूनोलाल जी<sup>1</sup> पर मोलह आना विश्वास वायम करें तो आपको कदापि धोवा नहीं होगा । आप उनको सामान्यत मला आदमी समझते हैं परंतु वह असम बहुत अधिक योग्यता रखते हैं । ऐसा सच्चा, अनुभवो विचारशील, नि स्वार्थी और शांत दूसरा आपको कोटा में नहीं मिलेगा । वे मेरे मित्र हैं, इस सशय का छोड दीजिये शकको निजाज कभी सफल नहीं होता । जितना सा आपन अनुमान बाध रखा है उससे प्राग बढिये और स्तह व विश्वास पूर्वक उस व्यक्ति को इतनी घनिष्ठता में ले आइय कि जिसमें वे अपन हृदय को आपने सामने पूरा खोलने में साहस कर सके । बतमान दशा उनसे लेश छिपी नहीं । इसीसे व अथ यहास भागन \* निते तैयार हैं जबकि दूसरे चिपटना चाहते हैं । इसी से आप उनकी नि श्वायता और सतोय को समझ सकेंगे । ऐसी दशा में मुझ गैरजिम्मेवर को कुछ कहन की आवश्यकता भी नहीं होगी । आप प्राय छोटी छोटी बातों को इकट्ठी करने राम वायम करते हैं, यह भी एक नीति है, परंतु उसी पर अटल हो जाना दूसरी बात है । नीचे ने दर्जे पर चाहे वह नीत ठीक हा पर तु प्रधान पद पर उसका उपयोग ठीक नहीं । पूण निर्दोष

[ नोट -यह गोपनीय पत्र सभवतया 1933-34 में लिखा गया था ]

- 1 भूतपूर्व कोटा राज्य के सुयोग्य एकाउंटेंट जनरल, जी ठाकुर साहब के घनिष्ठ मित्र थे ।



कोई नहीं मिलेगा, निभा लेन की नीति रखनी ही पड़ेगी। इसी तथ्य से मैंने घनश्यामदास<sup>1</sup> का नाम लिया। मैं अब भी उससे ज्यादा पान वाला की अपेक्षा उस योग्य व विश्वसनीय मानता हूँ।

संक्षेप में -

- 1) आपका उतमान टाइमटेबल इस पद के अनुकूल नहीं, समय व्यर्थ जाता है। घर का काम देखने के लिए सिर्फ छुट्टी का दिन रहना चाहिए। 7 या 7½ बजे प्रातः से 10 बजे तक घर पर बैठकर घर के व बाहर के लोगों को मिलन का मौका दें। बहुत सा काम जबानी निपटा दें, यथा योग्य ही मिनटा का समय दें, व्यर्थ चिपक कर कोई न बठे।
- 2) अपने लिये (राजकीय) दीवान सेक्रेटरी तीन सौ सयम का नहीं रखें ऐसे को रखें जिस पर आप का विश्वास हो। वह आपकी तमाम पक्षी को बा तरतीब फुन नोते व निणय के साथ तयार रखें बाकी मह इपूण विषय ही आपक लिय रह सक। कुछ परवाह नहीं कि य काम अजीतसिंहजी<sup>2</sup> को दिया जाय इसम उनका अनुभव भी विस्तीण होगा, काम बड विश्वास का और असाधारण है। खच से न घबराकर विश्वम्भरनाथजी<sup>3</sup> को भी एसा ही सेक्रेटरी दिया जाय जिसे व चाह।
- 3) दरवार के सामने उनकी मर्जी के नाम पर गोल गोल शब्दो मे कोई भी बात पेश न करे, अपना निणय स्पष्ट शब्दो मे रखें। जहा मतभेद हो नम्रता से परिणाम अवश्य सुना दें।
- 4) जहा तक हो इस पार्टीबिदी को और उसने भयकर भविष्य को दरवार व महाराज कुमार क सामने स्पष्ट गवा म रख दें। और जहा तक हो वे और आप मिलकर जैसे हो वैसे दलब ती को उठावें। दलब दी की जड पकड लेने पर यह सब सुगम हो सकता है।

1 भूतपूर्व कोटा राज्य के एक उच्च शिक्षा प्राप्न सुयोग्य अधिकारी।

2 दीवान आपजी, सर आकारसिंह के ज्येष्ठ पुत्र।

3 कोटा राज्य काउंसिल के सन्स्य श्री विश्वम्भरनाथ चौध जो भूतपूर्व दीवान सर रघुनाथदास के पुत्र थे।

- 5) वतमान व्यक्तियों में से, वसतें कि वे टिक जाय, या चुनौलालजी को अपने परामश में लें । जितना आप हृदय खोलकर व्यवहार करेंगे उतना ही उस हृदय को खुलता देखेंगे ।
- 6) दो मंत्रियों की हालत बनी रहने पर, कार्य का विभाग एसा स्पष्ट करें कि वही भी दो का मतभेद न टकरावे । साहस करने पर एसा होना असम्भव नहीं ।
- 7) राजपूत के नाम से कौमी पक्षपात की नीति का न छुवे, मारवाड आदि में यह राज्य के हित में हानिकर सिद्ध हुई है ।
- 8) काम को छोड़ भागने की बात किसी से कहना या विचारने का यही मतलब है कि आप दरबार की नाव को मँझघार में छोड़कर बचना चाहते हैं । अब तो आपसे छोड़ना स्वामिभक्ति के विरुद्ध और घोर वपनामी उठाना है और हिचक-हिचक कर चलना खुद को फेलियोर बनाना है ।

मैंने तो यह सब मित्रता के नाते निभय होकर लिखा है । दीवान की दृष्टि से इसे न देखें । मुझे अब कुछ कहना भी नहीं है । व्यय सलाहकार बनकर आपकी ओर अपने आपका कठिनाई में डालने की धृष्टता क्यों करू ?

यदि स्मरण हो तो वह असाधारण घटना सिद्ध कर देगी कि आपके शब्दा पर मुझे कितना विश्वास है जबकि आपका कहते ही मैंने अपने ऊपर सारा अपराध ले लिया और मि अ मस्ट्रोग<sup>1</sup> को तिरु कर भी दे दिया । वही विश्वास आज भी अखण्ड है । आपने मुझे 36 वय तक जाचा है, मैं भी आपके सिवाय किसी राजपूत का पूण मित्र नहीं पाया । आपका निणय क्या है, नहीं कह सकता ।

---

1 मि ए सी आम्मट्रोग, आई पी, इन्सपक्टर जनरल आफ पुलिस, इंदौर, कोटा कस 1914 के प्रोसीक्यूशन इंचार्ज ।

## श्री शालिग्राम व्यास के नाम पत्र

श्री शालिग्रामजी व्यास, मुख्यमंत्री नाथद्वारा

मित्ररत्न,

आज मैं यह पत्र आपको एक भस्म के बाद लिखता हूँ। इसका प्रयोजन यह नहीं कि हमारे प्रेम और विश्वास को ताजा करने के लिये ऐसा किया जाता है। वास्तव में मेरी कल्पना में हमारा वास्तविक हार्दिक स्नेह और विश्वास सदा ही ताजा है। पत्र-व्यवहार में तो केवल प्राकृतिक जनो का प्रेम ही कायम रहता है, अथवा यों कहें कि एक बार जग हूए को दुबारा हिनाने की जरूरत नहीं, वह क्रिया तद्रा में हृषी के लिये ही हो सकती है। आप जैसे विद्वान, गुण-रसिक और नीतिज्ञ मित्र का स्नेह में सिधितता का अविश्वास लाना भी पाप है।

प्रश्न होगा, तब यह लेखनी क्यों उठाई गयी? सुहृद्वयों! यह दाप मालिका का त्यौहार इसी विज्ञान पर चलाया गया है कि वर्षा के कल्याणकारी काय में भी कभी कीचड़ के छीटे उड़कर तटस्थ निमल पदार्थ भी कुछ शाभा लूँय हो जाते हैं। अतः वर्षा के अनंतर जो जिसे अपना ममभूता है जिसका जो प्रिय पदार्थ है, वह उस पूछ पाछ कर पीछी उसी उज्वल स्थिति में लाकर सदा के अपने परिचित पन्थ को नवीन दीप्ति में देखकर आनंद में ली लगाता है। सच है वह स्नेहमयी ली अघेरे ससार को प्रकाशित कर देती है। यदि ससार इस अवसर पर अपने जड़ पन्थों में भी सफाई करता है तो मैं अपने स्नेही के हृदय को भी क्यों न पूछूँ? जड़ ही में ससार का सुख है तो मुझे चतन की सफाई में कितना आनंद होना चाहिए? वस्तु की सफाई वास्तव में उसे पूर्वा-वस्था लाने में कुछ कष्ट भी पहुँच जाता है जैसे ही मरी इस लम्बी व्याख्या से आपको कष्ट हो तो उसकी क्षमा चाहकर प्रवृत्त हूँ।

आपही के भेजे हुए कु सिरहमनजी एम ए, एल एल बी आदि महाशय यहा दो का एक करने के लिये आये है। उनसे मेरा भी पाच बार बार जाकर स्वय मिलना हुआ। स्वदेश का स्वाभाविक प्रेम किसी म्यूजियम मे भी काठ के मस्तकों पर बधो हुई पगडियों मे स्वदेशी बध को डू डता है, तो साक्षात् जमभूमि भेवाड के वासियो को, उनम भी विद्वान को देखकर दिल मिलन को क्यों न ललचाये ? ललचाया और मिला। मुझे वेद है कि उहोने मेरा परिचय उनके घरू केस जा महाराजा साहिब [या उनकी पार्टी] और सेठ साहब के मध्य मे कुछ काल पूव हुआ था और आप उसे भली भांति जानते हैं के स्मरण ने साथ किया। यदि मेरा शकल ही उस केस को-स्वामि घन को -- स्मरण दिलाव तो क्या इलाज ? उसका फल हुआ यह कि हृदय-परीक्षा के पहिले ही प्राणका, मत्त, भय और वैमनस्य उस विद्वान-हृदय म भी जम गये। नही देवा देश काल कि नही जाचा मानव प्रकृति का उत्क्रमण ! हा !! प्रबल मोहमाया प्रकृति शक्ति ! तू ईश्वर को भी मोहती है तो मानव की कहा गति !! अत सशरामक दृष्टि ने विद्या, बुद्धि और तक की शक्ति का रूप दूसरी ही और फेर लिया, उस राज्य भर को प्रत्येक रियासती सहज घटनाओ मे भी मरा ही आभास दीख पडा। खेद है कि वह असर इतने ही म नही रखा प्रत्युत् जहा तक मैंन सुना है यहाँ से नाथद्वारा जान वाले पत्रा मे बद बरके जाडू कला से मेरा वही आभास मूर्ति आप और गोस्वामी जी महाराज के सामने कल्पना राज्य मे भी खडी को गई और इष्टसिद्धि म विघ्न रूप दिखाई गई। इसक लिये आपका स्वय हृदय साक्षी दगा। नाथद्वारे की दृष्टि से कोटे को दिखाया गया। खैर यह तो आप जैसे नीति निपुण, राज्यानुभवी जब चाह तब सतोप कर सकते है कि कोटा इस समय प्रपच से सबथा शून्य है। यहाँ की स्थिति और व्यवस्था स्वय सिद्ध कर सकती है कि कोई कितना ही प्रबल ब्यक्ति याय की डोरी को रूप मे नही हिला सकता। बिना जाहिरा सबध के कोई किसी बात म अपनी चू तक नही मिला सकता। माराश यहा घुसफुम की सलाहो का राज्य नही है। प्रत्येक को दृढ विश्वास है कि राज्य दृष्टि से श्री दरबार और दीवान माहब जो कुछ करेग वह निष्पक्षपात और उचित ही होगा। अलबत्ता अपने ही हित को दखन वाली मनुष्य की कारणी दृष्टि अथवा भाव भी बाध सकती है वह बाधे परतु दो आख वाला चर्म चक्षु और हृदय पक्ष धारी कोई ब्यक्ति यहा ज्यादा हाथ पेर पीटने की आवश्यकता नही दखेगा।

मुझे सखेद आश्चय है कि, एक स्वदेशी, सम्माननीय विद्वान नर रत्न न मुझे अथवा दिखान मे क्या लाभ माना ? क्या यह कि, एसा कहत से

यहा का काय वष्टसाध्य सिद्ध करके उसको सफलता में प्रपना महाभारत की तरह सिद्ध करना ? क्या यह कि सत्र को निगुरा सिद्ध करके अपनी भक्ति को सर्वोपरि बताना ? क्या यह कि, कोई दूसरा भी यश का भागी न हो जाय इसके पहले पाल-वधो करना । इस कला का अर्थ समझने में मेरी बुद्धि अल्पमति-नाम नहीं देती । उस विद्वान से इन क्षुद्र लालसा और निवृष्ट माग ग्रहण की आशा क्यापि नहीं रखी जा सकती । किंतु कारण कुछ होना ही चाहिए । यह तो सोचा जाय कि मुझे किसी के इष्ट हेतु में विरुद्ध होना म क्या लाभ और जहाँ स्वाध हा वहाँ भी मरी प्रवृत्ति किस सिद्धांत को पकड़े हुए है इसका टीका निराय करन के पहिले ही मरी जीवनी पर अपनी कलना का विजातीय राज्य जमाना कितना अनुचित ? आशा तो थी कि श्रीनाथजी की सेवा में हम भी कभी उपयोगी होंगे ।

मित्र हृदय में यदि कभी भेद पडने का प्रसंग आवे तो पूरा रूप से हृदय खोल देना चाहिए । ऐसे समय में पालिसी का अवलम्बन ग्रहण करना मित्रता के ही नहीं बल्कि मानव धर्म के गले पर छुरी चलाना है । अतः जो कुछ था सब शुद्ध हृदय से स्पष्ट शब्दों में कह दिया गया । अब इसके परिणाम को आप ही की दोष दृष्टि पर छोड़कर सदा के लिये निश्चित होता हूँ और अपने हृदय का सातवन्दु श्री भगवद्वाक्य—गीता—ही से करता हूँ कि

कमण्यवाधिकारस्त मा फलेषु कदाचन ।

मा कमफल हतुभू मा ते सगोऽस्त्व कर्माणि ॥

यव मैं इस मधुर आशा की गादि में इस विस्तृत पत्र की समाप्ति करता हूँ । समय आन पर गोस्वामिबन्धु आप और विद्वदवय सिरहमलजी साहब मरी तटस्थ स्थिति और निमल भावना का स्वरूप स्वतः दखन और यथा-चेष्टा रूप या सर्वोच्च के भागी होंगे ।

मैं इस दीपावली पर आपके पुरातन 'स्नेह दीप' को फिर एक बार में मान से स्मरण करता हूँ कि जो पवित्र और नैसर्गिक होकर किसी आशा निराशा की जहरीली हवा से सदा दूर रहे । अब यदि चाहना है तो इतनी ही मात्र कि कभी सावकाश ही ता स्नेहपूर्वक स्मरण कर लिया करे ।

मैं हूँ आपका मंगलावाक्षी  
कधर केसरीसिंह बारहठ

यह पत्र दि 20 अक्टूबर 1906 का कु केसरीसिंह ने नाथद्वारा के दीवान श्री श.लिग्राम जी व्यास के लिखा था ।

# महाराज साहब श्री रत्नसिंह जोधपुर के नाम पत्र

कोटा,

दिनांक

.. 1910

श्रीमान् मित्र शिरोमणि महाराज साहब  
श्री रत्नसिंह जी महोदय, जोधपुर ।

मुबारक ! अभिनन्दन !! शाबास !!! जिस समय की कल्पना से ही चित्त में एक प्रकार का उत्साह बल और आनन्द प्राप्त होता था वही समय पुरुषार्थ बल से आज सामन उपस्थित है । मरे "प्राचीर्वात्" के शब्द" आपको अवश्य स्मरण होंगे । अब दो शब्द फिर से अवश्य स्मरण रखिये । मा यवर ! समय से पहिले आनन्द मनाना किसी भी बुद्धिमान को योग्य नहीं और समय को चौबीसवें घंटे के साठवें मिनट तक जाँचना चाहिये । अधिकार का मिल जाना सहज है परन्तु उसका यथावत पालन करना और सिद्धि पर पहुँचाना महान् दुष्ट है । जो वृत्त हुआ वह प्रथम सीढ़ी है । यदि इसी के आनन्द में मग्न हो गये तो पश्चात्ताप का समय भी दूर नहीं होगा । जो साधक प्राथमिक सिद्धियों ही में मग्न हो जाता है उसका योग भ्रष्ट हुए बिना नहीं रहता स्मरण रहे । अभी तक आप लोगों को महान् बठिन घाटियों को पार करना बाकी है । यदि इस पहिले ही हमले की सफलता में वही कुद भी आगम लन की इच्छा की तो विपश्चिता को मदद देने के बराबर होगा और उसके बन्ने में व आप लोगो को फिर से घर में बैठा कर सदा के लिए आराम (जिसकी भयकरता को आप लोग मूर्ख अनुभव कर चुके हैं । देखें ) जिस वेग से आप लोगो न कष्ट बढ़ाया है उसी वेग से आगे बढ़ जाइये । इस वाक्य को सदा स्मरण रखें—

विधाय धैर्य सामर्थ्यं नराऽसौ य उदासते ।

प्रक्षिप्योर्दक्षिणं कक्षे शेरते सोऽभिमारुतम्॥

अर्थात् जो व्यक्ति जबरन दुश्मन को छाड़कर फिर चुन हो बैठ जाना है यह मानो घास की ढेरी में आग लगाकर सामने हवा की रुख पर लेटता है। अथ तब ता विराची पक्ष को अनव मामरो म उनभा रहना पडता था। इमी मे उसका वग विभवन हो जाने मे उतनी प्रापत्ति नहीं थी। परतु वह अब सब तरह स फुरसत में रहकर अपनी कुटिल नीति का सारा बल आप पर भोक देने के उपायो म ही नगगा और चुष्गी के साथ समय को तावता रहेगा। वह आपकी हर एक छोटी से छोटी कमजोरो का लाभ लेन म भी नहीं चुनेगा। इससे हीन बल हान पर भी वह बलवान हागा और आप लोगो का विविध मार्गो पर ध्यान दन से सावधानी विभक्त हो जाने म सबल अवस्था म भी आप लोग कुदरती तोर से उस अश म निवल होमे। अत अपन कार्यो को ऐसी सावधानी स चलाना चाहिय कि जिसम उसे चारा और निर गा ही निराशा प्रतीत हो। इसके लिय प्रथम कम राज्य के प्रत्येक अंग के मन को जीतना है, उसे मालुम होने दो कि आप न्यायी है दयालु हैं, क्षमाशील हैं, समथ हैं, निष्पक्ष है कुटिलता से रहिन हैं समाधान-प्रिय है व्यक्तिगत-स्वातन्त्र्य के पोषक हैं और निरंतर जाग्रत हैं। दूसरा कत य राज्य के अधिकार और स्वातन्त्र्य की शक्ति को सुरक्षित रख कर उचित माग स गवममट की अनुकूलता, विश्वास और नैतिक मत्री का कायम रखना। तीसरा कतव्य अनुचित नाभ और कृपणता न करते हुए राज कोष की रक्षा और वद्धि करना एव उस अपव्यय स वचाना। चौथा कतव्य प्रपविधा को शर्न गन निकाल बाहर करके विश्वास पात्र, देश हितैषी, योग्य और सच्चे पुढयो पर अधि-कार की विभाग गैली स सीमा तक विश्वास रखकर उनको वद्धि करना। पांचवा कतव्य प्रत्येक अधिकारी को स्वतंत्र विचार प्रगट करने का अधिकार, उसके विचारा की कसौटी करन का साधन और उसे अपनी कयकुशलता व योग्यता का बल्ला पाने का रूढ विश्वास। छठा कतव्य, शकाशीलता एव कुटिल नीति का बल कम करके शुद्धि नीति का ही अवलंबन करना। सातवा कतव्य, कायकर्ताओ का घनिष्ट प्रेम और परस्पर विश्वास परतु अध विश्वास नहीं। आठवा कतव्य, आत्मबल को नाश करन वाले विषयभागा की वक्ति, मिथ्याभिमान, दुराग्रह और क्षुद्रस्वाय प्रादि का पूर्ण नवमा कर्तव्य, सवतोभावेन शांति और समाधा अवलंबन। नवमा से सवथ, बचना चाहिये कि विचार साधारण भी कु प्रकार अप्रोतिभाजन हो गये थे औ वे हृदय म रोप है। अत प्रजा की

घोर साक्षर बनना, स्वयं सरकार' का एक प्राप तिरंगारा का पहिना घोर आवश्यक कार्य होना चाहिये। प्रजा के विचारों की उपेक्षा करना किसी भी कार्यकर्ता को न शोभा देता न यश ही देता है। इतना ही नहीं किन्तु प्रजा का सामान्य अभिप्राय भी बलवान सत्ता की अनिष्ट के गढ़े में धकेल देता है, यह इतिहास-सिद्ध सत्य है।

यदि आप लोग इन मुख्य मुख्य मिट्टांता पर ध्यान रखकर साहस, उत्साह और जागृति के साथ कार्य करेंगे तो निःसंदेह यश और सुख के भागी होंगे। मायबन्धन' यद्यपि सर<sup>2</sup> जैसे अनुभवों, दूरदर्शी साहसी और कार्यकुशल नेता व हृष म रहने से आपका सहसा आपत्तिग्रस्त होने की आशंका नहीं है यह सत्य है, तथापि वह शरीर बितना ही समय क्या न हो भगवान बुद्ध के शान्ति म बहू तो रूपस्य हृषी भयमन बलस्य गोत्रस्ययोनिनिघ्न रतीना । नारा मृतिनां रितुद्विषाणा मेपा जरानाम यथेष्ट मन । उन श्रीमानों की वृद्धावस्था से होने वाली स्वाभाविक कमियों को यदि आप लोग एक दिल एक प्राण, एक मन होकर पूर्ण करने में बच्चाई रखेंगे तो उसका अनिष्ट फल आप ही लोगों को भोगना पड़ेगा। इस प्राप्त शरीर की उपस्थिति को अहोभाग्य समझ कर लाभ ले लेना आपने जिम्मे है। प्रत्येक विषय में भविष्य की कल्पना बाध लेना लोक प्रवाह है उसी प्राकृतिक नियम से जोधपुर का वर्तमान स्वरूप भी टल नहीं सकता। अतः प्राय वर्तमान लोक कल्पना है कि गाढा अधिक स अधिक सरकार के शरीर तक ही गुंने का है और जिस दिन य नहीं रहे (ईश्वर इनको क्षाया करे) उसी दिन फिर सहसा परिवर्तन होकर आप लोगो को उसी अथवा वैस ही किसी पिशाच चक्र में डूबना पड़ेगा। महर्षान' इस भविष्य की मिथ्या और बपोल कल्पित सावित करना ही आपका धर्म है, वर्तमान है और पुरुषार्थ की परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त करना है। कभी न भूलें कि कोरी बातें मारने से राज्य-चक्र नहीं चलता, चलता है काय-शक्ति से, मुख और स्वाय का भोग देने से और मन तरंगों को मारकर वास्तविक कलध्व पालन करने से। संभव है इस लम्बे पत्र को पढ़ने से आपको थम प्रतीत होता होगा। अतः इस बार अधिक पाठ परिश्रम देना नहीं चाहता। मात्र अन्त में इतना ही स्मरण दिलाकर इस परिश्रम की क्षमा चाहूँगा कि, यह पत्र मैंने यद्यपि आपको सम्बोधन

1 महाराज जनरल सर प्रतापसिंह, जोधपुर राज्य के प्रधान मंत्री एवं सर्वोच्च। उह सरकार' सम्बोधन में ही सवत्र माना जाता था।

2 सर प्रतापसिंह।



करके लिखा है तथापि मेरी यह प्रायना है आप उन मगही गिरनारा के लिये कि जो इस शुभ प्रसंग को सद्भाष्य समझत ह। मैं आपस और जा महरवान इस पत्र को स्वीकृत करें उन सबसे अपने विचार स्वातंत्र्य की क्षमा मागता हूँ यथाकि एतलूपत्तू न करत यथाय विषय का आप नोगा क सामने रगना और बिना पूछे भी आपका ध्यान वनध्य की धार आतृष्ट करना मरा जाति धम है, मानने न मानने म आप स्वतंत्र हूँ वैसे ही साफ कह देने म मैं स्वतंत्र हूँ । मरे मच्चे महरवान बँहा<sup>1</sup> ठाकुर साहब स व म सा विगारमिहजी साहब से व म सा तृष्णसिंह जी से एव जो जा इस गरीर का वृषा और विश्वास को रट्टि से देखते हैं उन मग गिरनारा का मरी और से बहुत बहुत जैमातात्री की विन्ति कर । अत म श्री मगनमय ईश्वर से यही प्रायना है कि यह आपको मगल माग दिगावें ।

आशा है, आपका वृषा-पत्र चरापर आता रहगा ।

वृषाभिलषी  
बेसरीसिंह चारहठ

1 ठाकुर सिवनाथ मिह वरी, जो महाराजा मर प्रतापसिंह के जामाता थ । इनकी जातीय मुधार कार्यों म बड़ी रचि और सहयोग था ।

## श्री बी. जे. पटेल के नाम पत्र

सेवा में,

श्री विठ्ठल जे भाई पटेल महाशय,  
मन्त्री घाल इण्डिया कांग्रेस कमटी, बम्बई ।

प्रिय महाशय,

बलकत्ता स्पेशल कांग्रेस से लौटते ही अशा के रोग स में बहुत ही व्यथित हा गया । अग्री तक मेरी हालत ऐसा नही कि मैं अपने सम्पूर्ण विचार विस्तृत रूप स आपने सम्मुख रख सकूँ । तथापि विषय की गम्भीरता व आवश्यकता ने मुझे विवश किया है कि मैं अपने विचारों का अत्यावश्यक भाग, संक्षेप में ही क्यों न हो आपके सामने अवश्य रखूँ, अतएव सबसे प्रथम —

1 आप लोगो कांग्रेस सब कमटी के नेताओं ने देशा राज्या की प्रजा को कांग्रेस में स्थान देना स्थिर कर उसकी अखिल भारतवर्षीयता को सायक किया है तदय राजपूताना व मध्य भारत के लोगो की ओर से, मैं आपको ध यवाद देता हू ।

2 यह काम, जो इसकी महत्ता और आवश्यकता का देखत हुए बहुत पहिले होना चाहिय था, बहुत देर स हुआ है । खैर, गया वक्त फिर हाथ नही आता । परंतु हमे यह विश्वास जरूर था कि देर आयद दुहस्त आयद । किंतु खेद है कि ऐसा नही हुआ ।

3 कांग्रेस सब-कमटी ने देश के जो प्रांत बनाये हैं उनमें अजमेर और दिल्ली का एक ही प्रांत बनाकर गवर्नमंट का अनुसरण क्यों किया गया ? मरी सम्मति में—

(क) राजपूताना व मध्य भारत को मिलाकर अजमेर का एक स्वतंत्र प्रान्त बना देना चाहिये जिमका नाम 'राजस्थान हो ।

(ख) और दिल्ली पंजाब में मिला दिया जाना चाहिय ।

4 कांग्रेस कमटी न जो प्रांत रचना की है उसमें दशो राज्या का शामिल तो कर लिया गया उह भी प्रति लक्ष एक प्रतिनिधि भेजन का अधिकार दे दिया गया है, परंतु उसन जिन जिन प्रांतों से जितन जितन

प्रतिनिधि आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी मे लेना स्थिर किया उस समय मानुम होता है-वह देशी राज्या की जनता को भूल ही गई । अथवा कोई कारण नहीं दीखता कि पहिले के समान ही अब भी अजमेर व दिल्ली को तीन ही प्रति निधि आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी म भेजने का अधिकार दिया जाता, जबकि राजपूताना व मध्यभारत के समस्त देशी राज्यों की प्रजा का प्रचण्ड जनसमूह भी अजमेर मे ही समाविष्ट कर लिया गया ।

[क] इसलिये आवश्यक तो यह है कि प्रत्येक देशी राज्य की ओर से कम से कम एक प्रतिनिधि आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी मे रहे पर तु जब तक ऐसा न हो तब तक कम से कम पचास प्रतिनिधि समस्त देशी राज्या की ओर से आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी म रह ।

[ख] और इस हिसाब से राजपूताना व मध्यभारत के देशी राज्या की ओर से एक एक प्रतिनिधि आने की जब तक सुव्यवस्था न हो तब तक राजपूताना व मध्यभारत की सब रियासता की ओर से "राजपूताना मध्यभारत सभा" और मनोनीत पत्रह प्रतिनिधि आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी मे अवश्य लिय जाय ।

5 संशेप मे का म कमेटी रिपोर्ट म, इस समय परिवर्तन करवाने के लिय देशी राज्यों के सम्बन्ध म, मेरे विचार का अत्यावश्यक भाग यही है । मेरे विचार स यदि इस प्रकार भी कांग्रेस सब-कमेटी की रिपोर्ट म सुधार नहीं किया गया तो देशी राज्यों की प्रजा को कांग्रेस म प्रतिनिधित्व देने का कोई धय ही नहीं होगा ।

ईश्वर ने चाहा और आप लोगो मे अवसर दिया तो कांग्रेस होने तक, कम से कम नागपुर कांग्रेस मे शरीक होने योग्य स्वास्थ्य लाभ करके मैं इस विषय मे अपने जीवन के अनुभव सहित अपनी सम्मति विशद और विस्तृत रूप से आप लोगो के सम्मुख रखूंगा । आशा है देशी राज्या की प्रजा को अपने समकक्ष बनाने के सध्देतु से कांग्रेस सब कमेटी की रिपोर्ट म कम से कम उपरोक्त सुधार करवाने के लिए आप अवश्य सहमत होकर सहायक होंगे ।

'राजस्थान केमरी' कार्यालय,

वर्धा सो पो

ता 16 11 1920

नवनीय

ठाकुर कसरसिंह

## महाराजा सर गंगासिंहजी, बीकानेर के नाम

नृपति चूडामणि स्वनामधेय जगलधर बादशाह  
महाराजा गंगासिंहजी की कृपालु सेवा में,  
राजम् ।

यद्यपि यह शुभचिन्तक श्रीमानों की वीरता, दक्षता नपोचित सुयो  
धादि गुण परम्परा को दोषकाल से सुनता आया है परंतु इस बार को  
श्रीमानों से एक घटे की वार्तालाप में भरे हृदय में श्रीमानों के प्रति श्रद्धा  
सौगुनी बढ़ा दी। श्रीमानों का उदार व्यवहार और हृदय की विद्युत्प्रकाश प्रक  
भलक रही थी परंतु मुझे यह प्रथम बार ज्ञान हुआ कि श्रीमानों का  
कविता के मर्म तक भी पहुँचने वाला है। इतना ही नहीं किंतु जो वीर-भ  
डिगल जो इस निस्तेज विलासिता के जमाने में वीर-धर्म के साथ  
अनादृत और मृत-प्राय सी हो चुकी है उसका आदर अभी आपके हृद  
है। यही श्रीमानों के वीर हृदय की साक्षी है। यदि किनी चारण के हृद  
चारणत्व शेष है तो उसके लिये यही वीर-धर्म हृदय अत्यन्त प्यारी  
आकर्षक वस्तु है। मरुधरापति महाराजा मानसिंहजी ने सब ही कहा है  
चारण भाई क्षत्रिया, जवा घर लाय तियाग ।  
काय तियाग काहिरा कासू लाग न भाग ॥

स्पष्ट निवेदन है कि श्रीमानों के हृदय-सिन्धु में व कौसी और की  
आकर्षक क्षत्रिया हैं कि जिन्होंने इस उदात्त हृदय को भी इतना प्रभावित  
दिया। ईश्वर से प्रार्थना है कि इस ऊँच से विकट और भीतर से प्रमा  
काल में देशी राज्या की मान-मर्यादा की रक्षा करने के लिये श्रीमानों

---

महाराजा बीकानेर सर गंगासिंहजी ने सन् 1931 में जब वे  
आये तो कुछ महत्वपूर्ण मामलों पर मात्रणा हेतु ठा. बेनरीसिंहजी  
बुलाया, उस समय यह पत्र लिखा गया।

शक्ति को चिरायु करे तथाकि सब तरफ से लुटिया डूबी जा रही है। सत्ता, स्वाभिमान और गौरव को समझने और बचाये रखने वाले अब इधर दूसरे नजर नहीं आते। श्रीमान् का शरीर केवल बीकानेर के लिये ही नहीं बल्कि भारत के समस्त देशी राज्यों के लिये गौरव की वल्लभ वस्तु है, अस्तु

उस समय श्रीमान् न महाराणा साहब के वे सोरठे सुनान की आज्ञा दी थी, परन्तु शुभचि तक ने केवल तीन चार ही सुनाये क्योंकि मुग्य प्रायः य विषय का समय इधर लेना उचित नहीं समझा। अतः अब इसके साथ व पूरे तेरह सोरठे ही नजर भेजता ह।

उस समय की मुख्य बातचीत के विषय में फिर भी कुछ अज करना चाहता था और अपनी सम्मति भी सामन रखना चाहता था परन्तु 'आपजी साहब' के बाहर बड़े रहने के ग्याल से अघूरी छोडकर आज्ञा लेकर उठ आया और फिर प्रमग नहीं मिला। यदि श्रीमान् की इच्छा हो और फुसत हो तो आज्ञा होन पर जहा के लिय फरमावें वही एक दो दिन के लिय हाजिर हो सकता ह। नोचेत् मैं जितना भी स्वामिभक्ति में निष्काम कर्तव्य पालन कर सका उसी में मनोप है बाकी "अवश्यभावि भावना प्रतीकारो न विद्यत" अर्थात् जो भविष्य में निश्चय हो होने वाला है उसका कोई इलाज नहीं।

शुभेच्छु  
केसरीसिंह बारहठ

## पुत्र रणजीतसिंह के नाम

मणिक भवन,  
कोटा दि 5 7 1937

मेरे एक मात्र प्यारे पुत्र चि रणजीतसिंहजी,  
मुखी रहो ।

मेरी आत्मा ।

प्रत्येक पिता का धम है कि अपनी सतान के लिये स्विचर मुक्त का उद्योग करे । पर तु तुम लोगो के लिये मैं अपने सिर पर दिग्गुणित उत्तरदायित्व समझा क्योंकि मैं अपनी पराधीना मातृभूमि के उद्धार-यज्ञ में अपना भाग पूरा करने के लिये अपने आपकी आहुति दी कि तु बिपरीत वामु न उस ज्वाला से नाहक तुम लोगो का भी भुलम दिया और घर के ही देशद्रोही स्वार्थियो ने मवस्व लु ठन करके तुम सबको सबधा निराधार बना दिया और मेरे सिर परिवार ऋण चढा । फलत जल से आने के पश्चात् मेरा यही सकल्प हुआ कि कम से कम इतना तो होना ही चाहिये कि मेरी सतान को फिर से अपना कहन योग्य घर बन जाये और व शांति से सामाजिक स्थिति में प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिता सकें । तुम लोगो ने प्रत्यक्ष देख लिया कि मैं किस अंश तक सफल हो सका । तुम भारत के करोडा भूने परिवारो की अपक्षा उत्तम स्थिति में हो । यह जो कुछ हुआ उमी दीनवन्धु विद्वत्पालक प्रभु की दया समझो । मैं तो एक निमित्त मात्र हुआ ।

अब चाहता हू कि अपनी सतान अर्थात् युगलमूर्ति पुत्र पुत्रवधू, दोनों पुत्रिया और उनके फलफूले परिवार को हसते खेचते छोड़कर सेवा कराने की तृष्णा को रोक कर पारमार्थिक साधन में एकांत और निष्काम जीवन बिताऊ ।

बढ़ावगथा का कम हीन जीवन और व्यय प्रभुत्व सतान पर भार रूप न हो इसलिये शास्त्र में कहा कि 'पचाशोध्व वन व्रजेत' । खैर तुम लोगो की

शास्त्रा में स यास लेने से पूव पुत्र से आशा प्राप्त करन का विधान है । यह पत्र ठा कमरीसिंह न अपने पुत्र कु वर रणजीतसिंह को जुलाई 1937 में स यास लेने के पूव लिखा था ।

*अथ पत्र*

भली बुरी जो कुछ भी बनी सेवा करके अब मैं अपनी पैसठ वष की अबस्था में सन्नास ग्रहण करके तुम से विदा लेता हूँ और अपने प्रत्येक क्षण को उस 'योगक्षेम वहाम्यह' कहने वाले के चरणों में समर्पण कर देता हूँ। तुम मरी चिन्ता मत करो मरा वास्तविक गृहत्याग तो उसी दिन हो गया जिस दिन मणि ने प्रयाण किया। किन्तु तुम लोगो की दोष सेवा पूरा कराना ईश्वर को अभीष्ट था अतः दस वर्ष यश निन्दा को सिर पर रख कर विताने ही पडे। अब मेरा सुख दुःखमय अज्ञात भविष्य मुझे जिधर खीचेगा वही मेरा माग होगा। तुम मुझे सह्य विदाई की आज्ञा दो। प्यारे! निर्दोष तो एक वह सबज्ञ ही है, मानव जीवन का दोषपूर्ण होना स्वाभाविक ही है। अतः इस शुद्ध जीवन में मरे दोषो एव गलतियों के कारण तुम लोगो को जो शारीरिक और मानसिक कष्ट पहुंचे हैं उनके लिये मैं पश्चात्तापपूर्ण हृदय से क्षमा चाहता हूँ। ईश्वर तुम सबको पूरा शान्ति सब सुख, अटल धैर्य और उदार हृदय प्रदान करे-यही अंतिम हार्दिक आशीर्वाद है।

प्यारे लालू! अब व्यावहारिक रूप में तुम्हारे लिये और अपने लिये कुछ बसीहत करता हूँ उन पर ध्यान रखना, और यथा-शक्ति निभाना।

- (1) अय चारणो क समान तुम्हारे समान स्थाई जीवन निर्वाह के लिये जमीन जायदाद नहीं है। इस अभाव का खटका हृदय से निकाल दो। सप्ताह में भूमि पर अधिपत्य रखने वाले मुट्ठी भर हैं और सदा मुनी भी नहीं, कममय जीवन ही जीवन है। पराये परिश्रम पर नोद लेने वालो के दिन लद गये, जा रहे हैं, उस कमहीनता की तृष्णा न करो। जीवन का आनन्द और सन्तोषपूर्वक उद्योगशील बनाय रहो और अपनी सतान को भी इसी साँचे में ढालो। भगवान की दया हुई तो भूमिपतिया से भी विशेष सुख देखोगे विश्वास रखो।
- (2) जब तक दोनों बच्चे (राजेन्द्र और नरेन्द्र) स्वयं जमा कर के स्वतंत्र जीवन निभाने योग्य न हो जाय तब तक इनको विवाह के बंधन में मत डालना।
- (3) भाणिक भवन तुम लोगो के हाथ में तभी तक सुरक्षित रहेगा जब तक इसकी पूरी सफाई सब की दृष्टि में आती रहेगी।
- (4) राज सेवा ठीक ठीक करते हुए भी अपने घर की व्यवस्था और प्राव-दयकता का कभी उपेक्षा मत करना, जसा कि करते आ रहे हो।

- (5) माणिक भवन के सामने सड़क और तालाब के बीच की जमीन जैसे तैसे ले लेने का ध्यान रखना ।
- (6) राजदरबार में आन जान पर उपेक्षा मत करना । बीच बीच में भी समय निकाल कर घंटा-घंटा सायकल 'यादघर' सजाम करते रहना । जिनसे मेरा घनिष्ट व्यवहार रहा है उनसे बराबर मिलते रहना और स्पष्ट भाव से बात करन का साहस रखना, चाहे वो कितने ही बड़े हों । अपने आपको पराधीन व तुच्छ न समझो ।
- (7) पुस्तकालय की व्यवस्था और सफाई उपेक्षणीय न हो ।
- (8) भिखारी का पशा करने वालों और सच्चे दीनदुखियों के भेद को समझ कर सच्चे भूखों को विमुक्त मत जानो ।
- (9) तुम और लल्ली स्वयं बुद्धिमान हो । अतः सामाजिक व्यवहार पर मुझे अधिक नहीं कहना । हा हृदय की एक बात है । मेरे पर चिं श्री सौभाग्य मणि का अटल प्रेम रहा है उसके हृत्प में कभी ये न खटके कि आजकल उसके माता पिता नहीं है अतः वह उपेक्षणीया हो गई है । उसमें और राजलक्ष्मी में भेद न हो । वह केवल प्रेम चाहती है, धन नहीं । बड़ी सरला है ।
- (10) सत्यास लेने पर भी मैं नहीं चाहता कि रूढ़िवादी मेरा शव जमीन में दबाया जाये । अवश्य ही अग्नि संस्कार कराना और मेरी प्रधान अस्थियाँ माणिक भवन की समाधि में सुरक्षित मणि अस्थियों के साथ मिलाकर फिर वे वहीं दबा देना, किसी तीर्थ के नाम पर न फेंकी जायें ।

तुम्हारा, दादा

गुनश्च

प्यारे ।

सत्यास के लिये आवश्यक है कि सतान मित्र और गुरुजन प्रसन्तापूर्वक आज्ञा दें । स्वा ज्ञानानन्द जी के पत्रों में भी आज्ञा स्पष्ट नहीं । मित्रों ने



स्पष्ट ही विरुद्ध सम्मति दो और बाबू सा चुन्नीलालजी की जबानी मालूम हुआ कि तुम्हारा हृदय भी तैयार नहीं । अत मैं हठ नहीं रखता और अभी विधिपूर्वक स याम लेने को स्थगित कर देता हूँ । अलवत्ता एकांत सेवन अवश्य चाहता हूँ । अभी इसी चौथ, ता 11 का मौजवाबा की गुफा में आसन लगाऊंगा । एकांत सेवन का काल अनिश्चित है । हाँ, इतनी सी गुजायश है कि तुम लोग की स्नेहपूर्वक प्रबल इच्छा होन पर या शारीरिक दशा असह्य होने पर फिर स तुम लोगो के निबट या बठन की सभावना हो सकती है ।

अभी तो विदा ।

केसरीसिंह



# जामाता फतहसिंह के नाम (1)

माणिक भवन,

काटा

दि 10-7-1937

मेरे परम प्रिय जामाता फतहसिंहजी साहब !

वत्सल !

आपका हार्दिक प्रेमभरा पत्र सबम प्रथम कल ही हाथ में आया, मरी अत-  
रात्मा उसके प्रत्येक सत्य वा साक्षी होती है। आपके उस मूक प्रेम ही की महिमा है  
जिसे मैं विवश सक्त्प-विकल्पो की सहसा त्याग आप ही की ओर ढुलक पडा।  
यदि मेरे इस सहसा निणय का सु दूर सुखद परिणाम मरी सतान के जीवन में  
चिरस्थायी हो, इसका श्रेय इस युगलमूर्ति की पुण्य प्रारब्धानुश्रुत धलित नियति को  
ही होगी या उस विश्वविधता की अतकम त्याग पर। मेरे जैसा धुद्र मानव किसी के  
भविष्य निर्माण पर अभिमान करे तो उपाहास्यास्पद ही होगा। हा उस सुखमय  
भविष्य की आशा से सतुष्ट होना मेरे लिये स्वाभाविक है और हूँ। प्रियवर,  
हम सबको आपसे आपका सत्कृत परिवार पर, आशा रखनी ही चाहिए।

हां, मुझे दुःख है कि मैं आपसे ऐसे क्षण में सवधित हुआ हूँ जबकि मेरी  
जीवन-मध्या मुझे किसी दूरगरी कथा में बैठने का अनुरोध कर रही है और उससे  
हम कुछ दूर हो जाते हैं। साधना क्षेत्र में ऐसा हो सकता है फिर भी मनुष्य  
स्मृति, बुद्धि और ममता से सवथा निमुक्त हो नहीं सकता। अत आप  
लोग फिर भी मेरे हृदय में तो दूर नहीं रहेंगे। मैं प्राणी देवीस्वरूपा मातृ धी  
का अनुरोध के महत्व का समझता हूँ और यह भी समझता हूँ कि आप भ्रातृयुगल  
ने मेरे सामा य व्यक्तिस्व को उनके सामने अतिदयोक्ति-प्रेम के कुछ अधिक् भावा  
में रख दिया है और मातृ हृदय कितना वात्सल्यमय और महान् होता है इसका  
मैंने स्वयं अपने दादी मां, कहन मात्र ता विमाता कितु मर हृदय से उसी मेरी

जननी म और प्रब श्री सौभाग्यमणि<sup>1</sup> की सासु म - जिनका मैं भी माताजी ही कहता था - देखा है और विश्वास ही नहीं किंतु मरी प्यारी राजलक्ष्मी<sup>2</sup> क शब्दों म निश्चयात्म हो गया कि यह चौथा स्थान भी मेरी दृष्टि से वही अनुभवित होगा। यह कि राजलक्ष्मी का दिव्यगुणित सौभाग्य है।

हा, मैंने अपनी पा रेवारिक संस्कृति म प्राचीन बीजा की सुसंस्कृत किया है और कुछ आवश्यक दशकाल का सिंचन किया है इस लिये उनको कुछ जानने की इच्छा हो ता आप जामाता श्री जयवर्ण जी के द्वारा म सौ वि सौभाग्यमणि स उसके देहज स्वरूप मे दिया हुआ "पत्र और शिक्षा" मगानर देख सकत हैं। सत्य है उसे देहेज म सोना, चादी वस्त्र धतन के एवज मे वही एक पत्र मिला है और वह उसी से सतुष्ट हुई और है।

स याम की इच्छा थी किंतु गुरु ने मित्रो न, सतान न और अतिम राजा न आना न दी। बल कोटा दरवार न बुलाकर दो घंटे तक एकांत मे परामर्श किया। मैं हठी या दुराग्रही नहीं अभी स पास का मकल्प छोड दिया गया। हा, यही नदी पर उसी मीजवाबा की गुफा म एकांत सेवन करु गा अवधि नहीं बता सकता। अत मभव है निकट भविष्य म पत्र न द सहु, क्षमा करना।

आपही का  
केसरीसिंह

## (2)

कोटा

ता 11-9-40

परम प्रिय जामाता !

आपका ता 4 का प्रिय पत्र मिला। आपके उदार और सदभाव का दर्शन कर हृदय प्रसन्न हुआ। 'गुणा प्रीती न वस्तुनि' इस सिद्धांत के अनुसार आपको इस शरीर में गुण दिखाई देना स्वाभाविक है क्योंकि तत्त्व दृष्टि से हृदयस्थ आत्मा सत् रूप से केवल अपने आपको ही जानता है और दृष्टा के रूप में वह केवल अनर ही में विविध रूपधारी मन ही को देखता है। बाह्य तो अज्ञेय ही रहा और आत्मानुभूति तक अज्ञेय ही रहेगा। यह मन कभी प्रेम का चोला चढ़ा गुणों की मृष्टि करता है और कभी विगडा तो दोषों की तरंगों पर तैरन लगता है। प्रेम और दोष एकत्र नहीं रहते। अनुभव है इस शरीर का दोषों में गड़ा हुआ देखने वाले भी ता हैं। किंतु कौन क्या करता है इधर ध्यान देन में तो अपने आपको नाहक राग द्वेष में रगना है। अतः निःदास्तुति पर समान उदासीन ही सुखी है। आपका आत्मीय भाव न इस शरीर को अपना मान लिया यह आपही का महत्त्व है जिसे अपने ही अध्याहार से स्वयं देखते हैं, फिर भी घमवाद।

वर्तमान शिक्षा पर मेरा विचार आपसे छिपा नहीं अब आपको उसका स्वयं अनुभव हो रहा है और वह सही है।

चारी आदि कुकर्मों पर कृष्णापण वनता ही नहीं क्योंकि इनमें मानसिक उत्पत्ति के साथ ही कामना [सकामना] धुली रहती है। अतः वे मूल में ही स्वाध्याय होने से अपने आपको [स्वको] अलग हो जाते हैं फिर दुबारा अलग ता आत्म-छलना है या परमात्मा को छलना है। वह छला नहीं जाता।

जीव को पूर्ण स्वरूप (मूलस्वरूप) की ओर ले जाने वाले कम ही सत् कहलाते हैं। उन्हीं का दूसरा नाम पुण्य है। प्रभु सत्य [सत] है उसे असत् भेंट होगा कैसे? सत को सत् ही चाहिए "तत्कुरुष्वमदपणम्"

का मही रहस्य है। "कमण्यमेवाधिकारस्ते" का तो अर्थ है, जैसा करोगे व पाओगे, फल अटल है। स्वामी विवेकानन्द एव गमतीथ के क्व [पुस्तक मगलें और अवकाश म अवश्य देखते रह, हि दी म भी अग्रणी मे भी।

सोह का जाप सोते उठत ही और ठीक निद्रा से पहले ये दो बार नियमित काल के लिये नित्य रहना चाहिये। शेष कायकाल मे जब स्मरण हो जाय त उत्तम। नही बने तभी कोई दोष नही। नित्य और नियम साधना चाहिये अ फिर वह आर्कषण स्वय करेगा। क्व करेगा यह उसी पर छोड देगा उपरोक्त दोनो समय श्वासन से समस्त शरीर बिल्कुल ही ढीला छोडकर म म सब विचार निकालकर जाप करना चाहिये। चाहे वह समय थोडा ही रहे जाय। अच्छा हा उससे पहले तीन प्राणायाम कर लिया जाय। जैसी सुविधा प्राणायाम मे स्वास पर जोर कभी न दें।

मुझे अपने इस विश्वास पर सतोष है कि आप मानव पथ पर हैं। मेरे धारणा मे मानव वही है जो 'क्या' और 'क्यों' को लेकर उत्तरोत्तर जिज्ञासामय प्राणी हो क्याकि वह गुण पशु मे नहीं होता। जो मानव उस ज्ञात छोर पर पहुच जाता है वह फिर मानव नहीं देव है। कम-शून्य जिज्ञासा वास्तविक जिज्ञासा नहीं वह प्रमाद रूप है आत्म प्रवचना है। उस छोर पर जिज्ञासा का विराग होने पर भी क्तव्य भाव अखण्ड ही रहेगा।

जिम काय को हाथ मे ले लिया उसे तो दत्तचित्त हो पूण करना ही चाहिए। बी ए पास करके फिर आगे साचे।

यहा सब प्रसन्न है। इच्छा तो है कातिक मे बाहर जाऊ। कहा, यह अभी निश्चित नही। देश काल की प्रतिष्ठि बदलती हुई परिस्थितिया निश्चय चरन को स्वय रोकती हैं। य भी जा सकू। देखा जायेगा। प्रमोरेच्छा बलीयसी।

मगलाकाशी  
केसरीसिंह

# सीतामऊ (मालवा) महाराजकुमार रघुवीरसिंहजी के नाम (1)

मानिक भवन, कोटा ।

दि 9-5-37

महाभाग !

यद्यपि आप श्रीमान् से मिलने का मुझे बहुत ही कम समय मिला तथापि उनसे ही मुझे जो संतोष और आनंद हुआ, वह असाधारण है क्योंकि । जिम सौजन्यता, मरलता, पाण्डित्यपूर्ण अनुशीलन-वृत्ति एवं अनुप्राणित कर देने वाली स्थित प्र विचारधारा की ज्ञाकी आपकी सौम्यमूर्ति क माध हूइ वह राजभवनों म दुलम ही नहीं प्रत्युत अतभव सी है । ईश्वर आपको दीधामु और उत्तरोत्तर यशस्वी करें ।

आपकी आज्ञानुसार मैंने यहाँ के गुलगुले परिवार के वर्तमान प्रधान धर्मिष्ठ प चन्द्रकांतजी म ऐतिहासिक सामग्री क सम्बन्ध म बातचीत की, यदि किसी व्यक्ति को नवल करन के लिये भेज दिया जाय तो व सब सामग्री दिखा देने को तयार हैं । मि फालके का कांगी केवल देखने मात्र के लिये विशिष्ट अवधि पर लौटा देने के आश्वासन पर द सकते हैं । अब जसी आज्ञा ।

श्रीमानो की कृपा मदा ही अभिलषणीय है । इसी मास म भरी ज्येष्ठ पौत्री का विवाह निश्चित है । इन बच्चो पर आपका प्राप्तीर्वाद चाहिये । इस शरीर को अपना सबक मानकर सेवा-ग्रहण मे अनुग्रहित करते रहें ।

श्रीमता मगलाकांशी  
केसरीसिंह

---

मालवा की भूतपूर्व रियासत सीतामऊ के महाराजकुमार डा रघुवीर सिंहजी देश क मूधय इतिहासकार हैं । उन्होंने सीतामऊ म श्री नटनागर शोध संस्थान और श्री रघुवीर दोषपुस्तकालय स्थापित किय हैं जिनके वे माद निदेशक हैं ।

## (2)

माणिक भवन

काटा

2/2/39

राजकुमार शिरोमण ।

आपका ता 19 जनवरी का कृपापूर्ण पत्र शासन विधान सहित मिला । मैंने विधान को ध्यान पूर्वक पढ़ा । वर्तमान स्थिति में जितना विचारपूर्वक किया जा सकता है उसे दूसरे तबरे पर किया गया है । इस साहस, दूरदर्शिता और राजनीति-पटुता... के लिये श्रीमानों को धन्यवाद । स्वकार न 35 की भाषा सुंदर सुगठित, उदारता को लेते हुए राजनैतिक बुद्धि दक्षता का निदर्शन है उसमें राजगौरव के साथ आक्षेप... उर्मियों का समिश्रण भी साहित्य कला की खूब रक्षता है । ईश्वर इस सत अनुष्ठान ... को सफलता पर पहुँचाकर श्रीमानों के सुयश के चिरस्थायी बनावे ।

विश्वभर इन बड़े कहे जाने वाले मिथ्याभिमानी और परबुद्धि चालित नपों में भी सीतामऊ के अनुकरण की 'सद्बुद्धि' दें, नोचेत यह विकट काल पूर्वोपाजित सवस्व का नाम शेष कर देगा । मैंने अपने हृदय को 'चारण' (त्रैमासिक पत्र) के प्रथम अंक में कुछ दोहों द्वारा प्रगट किया, उनकी "क्षत्रधम" (अजमेर) में भी उधत किये हैं, संभव है श्रीमानों की दृष्टि में भी आयें होंगे ।

परिचित शिक्षा के विद्वत् साधे में ढलकर, अपने विषय सुखों के प्रलोभनों में डूबकर एवं ऊपरी कूटनीति के कुचक्रों में फँसकर वास्तविक राजधर्म को भूल बैठने वाले ये बड़े नरेश साहस और बुद्धिहीन हो जाने से सहज में दबोचे जाकर नाममात्र कर रहे गये हैं क्योंकि सच सफल हाथियों को बठाकर सर्वाधिकार उन्हीं के हाथ में ... रखने की नीति पर गहनमेंट अग्रसर

हो रही है। हमारा राजाश्री को इस नाशक नीति से प्राण पाने का यदि कुछ उपाय शेष है तो यही कि व अपनी प्रजा को विधान द्वारा पूण रूप से पक्ष म लेकर उसी के द्वारा यह यम माग बद करें। परन्तु वहाँ ? चलते हैं विपरीत हों। जयपुर का प्रत्यक्ष उदाहरण सामन है। मैंने इसी गत ता 30 को एक रजिस्टरी पत्र जयपुर नरेश की सेवा में भेजा है और काव्यमय विनात प्रायना की है<sup>1</sup> उसकी प्रति इसक साथ आपके अवलोकनाथ भेज रहा हूँ। राजाश्री को ठीक समय पर निर्भय होकर यहा तक कि अपने लिये अनिष्टों को ग्रामन्नण देकर भी, सावधान करना चारण का कुलधर्म है "स्वधर्मो निघनश्रेय" (गीता) जो ऐसा नहीं करता उस चापलूसी मात्र म दक्षता बताने वाल चारण पर धि कार है, होगा वही जो जगन्नियता को मजूर है, फिर भी 'कमण्येवाधिकारस्ते" (गीता)

उपयुक्त कारणों से विधान में यदि एक धारा प्रजा के हाथ को इसी .. .. समर्थ करन के लिय रह कि दीवान की नियुक्ति पर परिपद की सम्मति को दरबार उपेक्षा की नृष्टि स नहीं दबेगे नियुक्ति से पहले यह विषय परिपद म रखा जाव इत्यादि।

इसमें परोक्ष रूप से राजसत्ता ही की .. है।

सभव है मेरु इम लंबे प्रलाप म आपका अमूल्य समय व्यथ बीते, इसक लिय क्षमा।

आपका हृदय स मालाश्री  
विनीत  
केसरीसिंह

1 देखें 'काव्य खड'



## बाबू अनुग्रहनारायणसिंह के नाम

मानिक भवन काग  
दि 20 9 39

श्रीमान् बाबू अनुग्रहनारायणसिंहजी महोदय  
मिनिस्टर बिहार गवर्नमट की सेवा म पटना ।  
मायबर,

मैं आपसे स्वयं गत अगस्त के प्रारम्भ म पटना म मिला और आपके  
आदेशानुसार बाबू कृष्णसिंहजी प्रधानमंत्री - से स्वयं मिलकर अपने भाई ठा  
जोरावरसिंहजी के सम्बन्ध म फिर से हाथ्य हाथ प्रायता पत्र दिया ।

उ होने अब शीघ्र ही मया शक्ति शुभ निणय से सूचित करन का  
आश्वासन दिया । आशा है उ होने इस डेढ मास के समय म पर्याप्त विचार  
कर लिया होगा किन्तु मुझे कोई सूचना नहीं मिली । उनका दिया हुआ समय  
भी समाप्त होने को आया ।

मुझे मेरे मित्र श्री पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने इस सहायता के लिये आप  
ही व हाथ म सौंपा है । अत मरी दृष्टि सबया आप ही की ओर है । आशा  
है कि मुझे दुबारा पटना तक न भागना पड़ेगा । कृपा करके अब आप प्रधान-  
मंत्री की फिर से स्मरण दिलाकर मेरे भाई के कष्टमय जीवन पर शुभ  
परिणाम शीघ्र निकलवा देन म अपनी स्वाभाविक उदारता का उपयोग करें  
और मुझे शीघ्र सूचित करें ।

विधिकमहानुभावपु ।

विनीत

ठा केसरीसिंह

ठा केसरसिंह के छोटे भाई क्रांतिकारी जोरावरसिंह का अय चारा  
साधिया सहित आरा केस म फामो की सजा दो गई थी । लेकिन वे  
आजीवन फरार रहे और उ होने पहाडी एव जगला मे जीवन बिताया ।  
सन 1937 मे ब्रिटिश भारत के प्रा तो मे जन प्रतिनिधि सरकारें बनने के  
बाद जब बिहार म कांग्रेस सरकार बनी तो बहा के प्रधानमंत्री कृष्णसिंह  
एव गृह मंत्री बाबू अनुग्रहनारायणसिंह को ठा केसरीसिंह ने पत्र लिखे ।  
विधि की विडम्बना थी कि जिम दिन जोरावरसिंह की मुक्ति की घोषणा  
प्रकाशित हुई उसी दिन उस वीर पुरुष न कोटा म प्राण त्याग दिये ।

## बाबू कृष्ण सिंह के नाम

भाणिक भवन, कोटा  
तारीख 20 9 39

श्रीमान् बाबू कृष्णसिंहजी महोदय,  
प्रधान मंत्री, बिहार पब्लिकवर्क,  
पटना ।

मा यवर

मैंने अपने भाई ठाकुर जोरावरसिंहजी के - प्राचीन सन् 1914 के आरार (नीमज) केस सम्बन्धी - विषय में आपकी सेवा में दो प्राथना पत्र दिये उनको बहुत समय बीत चुका । मगर अगस्त के प्रारम्भ में मैं स्वयं आपसे पटना में मिला और आपने आश्वासन दिया था कि आप अब शीघ्र ही मेरी प्राथना पर निणय प्रदान करके मुझे सूचित करेंगे ।

आशा है उस केस सम्बन्धी सब कागजात मय मेरे प्राथना-पत्र के आपके सामने आ चुके होंगे । अतः निवेदन है कि मुझे अपने शुभ निणय की सूचना प्रदान करने की कृपा करें ।

विनीत  
ठा. केसरीसिंह

## श्री शिवसिंह चोयल के नाम (1)

माणिक भवन कोटा

28-9-40

प्रिय श्री शिवसिंहजी चोयल

आपका पत्र सख्या 62 मिला। मेरा परिचय इंदौर से बहुत कम रहा, सिवाम सर सिरहेहमलजी बाफना<sup>1</sup> के मैं वहा किसी के विशेष परिचय म नही आया। यही कारण है कि स्व बक्षी खुमानसिंह जी के सबध मे मैं कुछ भी तो नही जानता। नाम का परिचय भी आपके पत्र से हुआ। उनके परिचिता मे यदि यतकिचित भी इस शरीर का समावेश होता तो मुझे आपके आदेज-पालन मे अत्यंत प्रमत्नता होती।

जिस जाति या देश मे वीर-पूजा न हो वह मृतकवत है। अत आपके इस वीर-पूजा अनुष्ठान मे सफलता मिले यही मेरी हार्दिक कामना है।

मैं सन् 1911 म बिलाडे गया और दीवानजी<sup>2</sup> से मिला। सीरवी जाति की वास्तविक उन्नति के लिये कृषि कॉलेज के मेरे प्रस्ताव को दीवानजी न सह्य स्वीकार किया। यदि वह स्वर्णक्षण बना रहता तो अवश्य ही मैं आपकी जाति के सामने सेवक के नाते सिर उठाकर कुछ कर सकता। किंतु ईश्वरे छा भिन थी। कृपा रखें।

भवदीय

ठा केसरीसिंह

- 1 भूतपूर्व इंदौर राज्य के दीवान और ठाकुर साहब के घनिष्ठ मित्र।
- 2 बिलाडा (जोधपुर राज्य) के दीवान श्री प्रतापसिंह। राजपूताना म स्वयंसेवकयोगी शिक्षा व विराट आयोजन के मधय म जब सन् 1911 में ठाकुर केसरसिंह बिलाडा गय और "गोडार की घपनी सारी स्वीम यतार्ई ता दीवान साहब न कहा कि वे प्राचीन स्थान 'हृष का स्थल' नामक स्थान के पाम एव कृषि कॉलेज बनवा देगे। परंतु ब्रिटिश साम्राज्य शाही की दम शिक्षा सबधो आयोजना म भी राजद्रोह की योजना की गध घार्ई और जातिवारी देगभक्त के स्वप्न घधूर ही रहे।

(2)

मार्माण भवन, कोटा  
9/12/1940

प्रिय शिर्षासिंहजी चायल

मुग्धा रहो ।

प्रिय, तुम्हारा पत्र मिला । तुमने सीरबी शब्द का शुद्ध अर्थ पूछा है । यह शुद्ध संस्कृत शब्द है 'सीरबही' । संस्कृत में 'सीर' हल को कहते हैं जो हल का चलाव वही सीरबी । उदास हान की जरूरत नहीं कि इस अर्थ में तुम राजपूत नहीं बनत । ब्राह्मण और क्षत्रियों का वह स्वाथजय घोंस का जमाना चला गया । अब तो वास्तव में ससार के आधार-स्तम्भ सच्चे अनदाता कृपिकार का ही सर्वोपरित्व है, आ रहा है । वण विभाग तो आप नष्ट हो ही चुका । ऊपर के वण तो परिवर्तनशील हो रह है । कितान सस्या अमर है और रहेगी । व्यथ भेदियाधसान से ऊपर फुलकन में सार नहीं । व्यथ में राजपूती में घुसकर बन जायोग 'नयिग' । हल का वाना सामान्य नहीं । श्री वृष्ण क दादा भाई ने भी इस ही पकड़ा था । ससार के पेट पालन करने वाले का महत्त्वपूर्ण इतिहास उज्ज्वल है और रहेगा ।

मैंने अपने ज्ञान में जो पाया स्पष्ट लिख दिया । चाहे किसी व्यथ धर्म में पड़े हुए का स तोप न हो यह दूसरी बात है ।

भवदीय,  
ठाकुर केसरीसिंह

## (3)

माणिक भवन, कोटा

26/12/40

प्रिय शिवसिंहजी जोधपुर !

ता 24 का पत्र अभी मिला और तुरंत ही उत्तर द रहा हू। तुम्हारी विचार सहमति से सन्तोष हुआ। वास्तव में सदविचार ही वह है जिसमें आप्रहं न हो और रुढ़ि के अधेरे से ऊपर उठकर खुनी आख का प्रयोग करने की शक्ति रखता हो। आईजो<sup>1</sup> का हिंदू होते हुए भी इस्लाम धर्म की शिष्या होना स्वाभाविक है। इस्लाम में कौन से महात्मा नहीं हात और खास कर उस समय जबकि दोनों धर्मों के समन्वय और शांति सिंचन करने की लहर चल रही थी। चेले के लिए गुरु का आदेश होता स्वाभाविक भावुकता है। कि तु अब वह समय नहीं है। दोनों धर्मों को भी न सस्वृति अधिक खुल चुकी है और चूकि सरकार ही जाति का भूल है अतः उसमें पुनः विशुद्धि लाना आवश्यक है। दोगलापन कभी श्रेयकर नहीं। हा यह ठीक है कि तुम्हारी जाति में अज्ञान का पट अधिक है। अज्ञानी रुढ़ि को ही धम मान बैठता है और धम की भावना किसी को भी परिवर्तन में ठेस पहुंचा सकती है। जातीय सुधार धक्का देकर नहीं किंतु शांति से समभाषण करने, बार बार समभाषण करने और शिक्षा से स्वयं विचार करने की शक्ति उत्पन्न करने से ही हो सकता है। अतः तुम अपनी सभा में इस विषय को नम्र शब्दों में प्रस्ताव के रूप में नहीं, किंतु विचार के रूप में रख सकते हो क्योंकि किसी भी सीरवी के हृदय में यह नहीं है कि वह हिंदू नहीं है। यह स्मरण रह कि नेता में प्रधान गुण है कि वह खूब सोच विचार कर दश-कालानुसार सकल्प और साधना

1 सीरवी जाति की आराध्या देवी श्री आईमाता, जिनका प्रादुर्भाव मारवाड़ प्रदेश में पट्टहवी गतावली में हुआ था। श्री आईमाता की प्रतिष्ठा समाधि बिलाड में स्थित है जहां सैकड़ों वर्षों से जल रहे अषण्ड दीपक में काजल न पड़कर केसर जैसे पीले रंग की विदिया ही दीपक पर लटक रहे एक घातुमय ढक्कन के निम्न भाग पर लगती है।

निश्चित करे, फिर एक कदम और बढ़ावें और जब तक अनुयायी उस कदम पर न आ जाय तब तक दूसरा कदम बढ़ाने में ठहरा रहे। अपनी शक्ति के प्रदर्शन में बूढ़ जाना एक बात है और समाज को साथ लेना इससे भिन्न।

भिन्न धर्म के सस्कार का परिणाम यह हुआ कि मीरवी जाति में बद्धि रुक कर यानि गदी हा गयी क्योंकि जिन क्षत्रियों में हिमावति से हटकर समाज पालन की मूलधारा कृषि को स्वीकार की तो उसमें उसका बाद भी ऐसी वृत्ति वाले क्षत्रिय बंधे नहीं मिल जाते ? इस समय भी साक्षात् क्षत्रिय कृषि करने में पेट पालते हैं। सस्कार शुद्ध हिंदू हो जाने पर अब भी वह मांग खुल सकती है। ब्राह्मणों का उपदेश साम्प्रदायिक रहा है और उसी का समुदाय सीरवी है। यह कोई आनुवाशिक जाति नहीं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी जाति को देखते हुए किसी सम्प्रदाय से युक्त हो सकता है। सम्प्रदाय जब जाति का रूप ले लेता है तभी अनर्थकारी या आपत्ति हो जाता है। तुम्हारे दीवानजी<sup>2</sup> क्षमता-शाली पुरुष हैं। यदि उनका हृद्य सुमन्वृत होकर तथ्य को अवधारण करते तो तुम्हारी जाति बहुत जल्दी उठ सकती है क्योंकि उसका बढर<sup>3</sup> के निष्पत्ति पर विश्वास है।

मैं यदि सीरवी जाति के अधिक रीतिरिवाज को जानता होता तो कुछ अधिक प्रकाश डालता। नवयुवक समाज स्थापन करिये। बिकने और शोधे मुख पड़े हुए घड़ों पर असर न होगा। वह जाति उत्थान में अधिक आशवाचित होती है जिसके सफेद बालों में नवीन ज्योति चमकती है। नोचेत् आज के नवयुवक कल के बूढ़ हाकर ही जाति की बागडोर पकड़ने। अतः उन्हीं के हृदय को सम्हालेंगे। आईजी सफलता देंगे। यदि आईजी महाराज आज विद्यमान होते तो पुराने वस्त्र भाडकर हिन्दू धर्म का उज्ज्वल आदेश और प्रकाश समस्त भारत पर डालने में सक्षम होते। किमधिकम् ॥

तुम्हारा वही  
कसरोतिह

2 बिलाडा के दीवान जो सीरवी सम्प्रदाय के प्रमुख पुरुष थे।

3 श्री ब्राह्मणों का बिलाडा स्थित पीठस्थान जो 'बढर' नाम से विख्यात है, जिसका अर्थ है मृत्यु स्थान।

## ( 4 )

माणिक भवन, कोटा  
ता० 28/3/41

चौधरी श्री शिवसिंहजी,

प्रसन रहो ।

ता० 26 का पत्र मिला । दो प्रश्न थे, राम कृष्ण की मू छे (2) 'सिंह' शब्द का नाम के साथ प्रयोग-

(1) आय धम के पुराणों में यह माना जाता है कि देवताओं की अवस्था नित्य सोलह वर्ष की रहती है अर्थात् मनुष्य के समान बाल, किशोर, तृण, युवा, वृद्ध आदि काल परिवर्तन उनमें नहीं होता । राम-कृष्ण तो साक्षात् देवताओं के देव ईश्वर माने गये अतः उनकी सदा किशोरावस्था ही मानी गई और उस अवस्था में मू छे का होना स्वाभाविक नहीं । नन्द, दशरथ वस मू छेवाले ही अर्कित किये गये हैं । धर्मशास्त्र में मृतक शौच में दशाह पर मू छे का मुडन विधान है जिसे भद्र होना कहते हैं । यदि सदा सफाचट ही रहते तो भद्रावस्था में कौन से बाल काटन, चोटी तो कटती ही नहीं । प यास विधि में भी चोटी, मू छे का मुडन लिखा है । नित्य ही घोटते तो विधान कैसा? आदि अनक प्रमाण हैं कि आय जाति सदा से मू छे रखाने वाली थी और मू छे को बाल महध माना जाता था । दण्ड विधान में भी मुडन कराने देश बाहर करना लिखा है । यह कहना कि मुसलमानों के देखादेखी मू छे रहने लगी सवथा वितडा है । मुसलमानों में भी मू छे रखने के आदेश नहीं बल्कि निषेध है । अलबत्ता दाढ़ी मुसलमानों की है । हिन्दुओं के मल-मुच्छे प्रसिद्ध हैं । अक्बर ने वैसे रची इस पर मुल्लाओं ने ऐतराज किया । जो अपने मुह पर बोझा नहीं झेल सकत वे सरलता से कह सकत हैं कि हमारी आँवों को यही भाता है परंतु राम कृष्ण का नाम लेकर आय संस्कृति पर हुरताल फेरना, किसी सम्य को शोभा नहीं देता ।

(2) प्राचीन काल में 'सिंह' का प्रयोग नहीं मिलता । सिंह शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ जैसे भगवान बुद्ध कहे जाते थे 'शाक्य सिंह' अर्थात् शाक्य कुल में श्रेष्ठ ।

बाद में ऐसी रुढ़ि में यह शब्द पड़ गया कि जिस शब्द के साथ श्रेष्ठ का अर्थ ही नहीं बैठता, वही चल निकला । बाद में सिंह जैसा पराक्रमी या साक्षात् सिंह ही बनने के कारण क्षत्रियो ने इसे आखिरी बाद कर अपना लिया । बाद उनकी नकल अन्य जाति में भी चल पड़ी चाहे निरथक ही क्या न हो ।

जो कुछ ध्यान में जचा वह लिख दिया, दावा नहीं कि जो मैंने लिखा वही सब सत्य है ।

मगलाकाशी  
ठाकुर केशरीसिंह





# श्री रामनारायण चौधरी, सेवाग्राम आश्रम के नाम

## (I)

माणिक भवन,  
कोटा

दिनांक 7/12/1940

प्रियवर,

आपने मुझे पहिले एक पत्र म लिखा था कि पूज्यपाद बापू कुछ निश्चित हो जान पर मुझे स्मरण करेंगे। वह हो चुका। मेरी इन सत्तर वष की बूढी हड्डियों मे स्वदेश के लिये शात आहूति देने का अभी बल है, प्रबल इच्छा भी है।

निर्वैरवति से ध्येय पर आत्म बलि चढाने वाली धारणा-पद्धति वश-परम्परा से चारण रक्त म अब तक भी सजीव पाई जाय तो स्वाभाविक ही है। उसी को आध्यात्मिक शान पर चढाकर सत्याग्रह के नाम मे समुज्वल करने वाले विश्व ब धु पूज्यपाद विभूति इस चारण शरीर पर विश्वास करेंगे तो उनको किसी अश म धाला नही हागा। इसी भगवत् साक्षी को अ तर म अनुभव कर रहा हू।

यह सत्य है कि आत्म-प्रतीति होने तक इस अपनी क्लास के एक मात्र छात्र ने आजकल के आन्दोलना का तटस्थ निरोक्षण किया। किन्तु बापू की यह रणभेरी अतिम प्रतीत होती है। जैसे ही इस जीवन-ज्योति की अतिम लौ भी ऊँचा सर कर लेने का यही क्षण चुनती है।

सदा से अखण्ड भारत का उपासक यह शरीर किसी एक विशेष प्रान्त से बढ नहीं। अत किसी एक रजिस्टर मे नाम न पाया जाना एक बात है और उचित वदी पर उचित बलि का चुनाव दूसरी बात है।

यदि बापू इस शरीर को अधिकारी समझ कर शान्त आहूति के लिये चरण करें तो सूचित कीजिय। मैं इस घर व परिवार से सत्ता के लिये

विधिवत् असम्बद्ध होकर तैयार रहूँ ताकि न पिछला के लिये बाधक बनूँ न स्वयं कुण्ठित रहूँ। तैयार होने में कुछ समय न लगेगा। हा, बापू के दर्शन की चिरकालिक अभिलाषा कुछ क्षणों को अवश्य मांगेगी।

आप कोटा के भूतपूर्व प्रसिद्ध डाक्टर गुरुन्तजी को जानते हैं, जो अब स्वामी आत्मानन्दजी के नाम से हैं। उनका दीर्घ जीवन भी समयानुकूल लोक-सेवा में बीता है धीरे धीरे गम्भीर हैं। वे भी श्री बापू की पुण्य सूचि में आना की उत्काण्ठित हैं।

स्वीकृति मिलन पर ही अपनी इच्छा प्रकट कर सकूँगा कि कदम बढ़ाने के लिये मरे लिये यू० पी० ठीक होगा या फिर मध्यप्रान्त। फिर जैसे जनरल की आना। पूज्यपाद बापू की सेवा में सादर प्रणाम निवेदन करें, यही कृपा।

भवदीय,  
ठाकुर केसरीसिंह

श्री रामनारायण जी चौधरी  
सेवाग्राम, आश्रम वर्धा

---

जब महात्मा गांधी ने 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ करने की घोषणा की तो 69 वर्षीय वयावद्ध ठाकुर केसरीसिंह की उसमें भाग लेने की प्रबल इच्छा हुई। यह पत्र उस समय सेवाग्राम आश्रम में बापू ने पास कायरेत राजस्थान के जनसेवक श्री रामनारायण चौधरी को लिखा गया था।

## (2)

मणिक भवन कोटा

22 12 0

भाई श्री रामनारायणजी चौधरी  
सप्रेम वंद ।

प्रियवर,

आपका पत्र मिला, विदित हुआ । मैं अहिंसा को मानव धर्म का सर्वोपरि अंग समझना हूँ क्योंकि हिंसा पाशय वृत्ति है । आततायी पर अचला शक्ति की रक्षा में कदाचित् हाथ उठाने का प्रयोग अपरिहार्य ही भी तो हिंसक का हाथ तोड़कर सुरन्त उसकी सुश्रुषा में उतना ही प्रेमपूर्वक लग सकता है जितना कि अपने प्रिय बापु के लिये । वह नहीं सकता मरी यह अहिंसा श्री बापू की अहिंसा की सीमा में आयेगी या नहीं ।

जहाँ तक देखा, हृदय में द्वयवृत्ति का अभाव—मा ही पाया । इस सम्बन्ध में मैंने अपने आपकी परीक्षा उस समय ली जब श्री बापू की अहिंसा व सत्याग्रह का स्वरूप भारत में प्रयुक्त न हो पाया था अर्थात् आज से पच्चीस छत्तीस वर्ष पूर्व जब हजारीबाग के जेल सुपरिटेण्डेंट व सिविल सज्जन मि जाडन ने मनमाना जुम इस शरीर पर किया । तब भी किसी क्षण मरे हृदय में उसके या अंग्रेज जाति के प्रति द्वेष उदय नहीं हुआ और सत्त्व का रवता भी आज के सत्याग्रह के अनुरूप स्वभावतः like a brook अविद्य न बनी रही और मैं हिंसका का हृदय परिवर्तन करन में सफल हुआ । वही मैं अब भी हूँ । यह मैंने अपनी प्रणसा में नहीं लिखा, कबल इतना—सा दिखाना है कि उस समय के एक कट्टर अतिवादी में भी धर्म धर्म की ज्योति बुझी नहीं थी । अस्तु अब तो उस अतिवाद को मैं अव्यवहार्य हृदयगम करता हूँ और अहिंसा का निमल और खुले हुए माग को ही श्रेय मानता हूँ । इतना—सा खुलासा भी इसलिये कि उस समय के और इस समय के वसरमिह् को समझन में बापू को भ्रम न हो ।

हिन्दू और मुसलमानों की एकता का मैं हृदय से इच्छुक्त रहा हूँ और हूँ । बल्कि उस परमावश्यक समझ, निरंतर क्रिया रूप से सचेष्ट रहा हूँ । इतना ही नहीं प्रत्युत् मेरे लिये प्रत्येक मानव या जाति धार्मिक दृष्टि से परे नहीं और न कोई अछूत है ।

उपरोक्त तीनों बातों में तो मैं अपने आपको अधिकारी समझता हूँ किन्तु हाँ, चौथी बात—(नियमित चर्खा काटना)—इसमें अपने आपको पिछड़ा पाता हूँ । यद्यपि मैं चर्खों की उगादेयता हृदय से स्वीकार करता हूँ और वही कारण है कि मेरे घर में बहू और बेनिया नित्य चर्खा कातती हैं, फिर भी मैं स्वयं नियम-बद्ध होने में असमर्थ हूँ । मेरे हाथ की कानों की रग में चार पाच वर्षों से ऐसा दद है कि डाक्टरों की सुईया व एकसरे भी ठीक न कर सका और वह बुढ़ापे के साथ आया हुआ और रहने वाला ही सिद्ध हुआ । इसी दद के कारण मेरी लिखने की प्रवृत्ति कुण्ठित हो गई । दस बीस मिनट भी सतत लिखना पड़े तो दद का दौरा हा जाता है और तीव्र बदनानुभव करनी पड़ती है । अतः चर्खों में हाथ के घुमाव की या रगों में आकुंचन की चेष्टा नहीं कर सकता, यह विवशता है ।

इस शरीर के सम्बन्ध में यदि बापू को फिर भी कुछ जानना हो तो वे कर्णो के सुप्रसिद्ध बाबू भगवानदास जी एच प्रयाग के माननीय बाबू पुरुषोत्तम-दास जी टण्डन से पूछ सकते हैं । मैं अब अपने लिये कुछ न लिखूंगा । यदि उपरोक्त त्रुटि के कारण ही मैं पूज्य बापू के चुनाव में न आ सकूँ तो मैं उनका दस नियमों में बाधक होते हुए भी अपने आपको पेश करने की घृष्टता नहीं करना चाहता । आप्रह भी नैतिक अपराध है ।

यह उपरोक्त स्पष्टीकरण आप उचित समझो तो निवदन कर देना । यदि मौन ही ठीक प्रतीत हो तो उसमें भी मेरी अनुमति है । स्वामी श्री आत्मानन्दजी भी अपनी स्थिति-विशेष के कारण नियमित चर्खा कातने के नियमों को निभाने में असमर्थ हैं । हाँ शेष बातों में प्रणवद्ध हैं ।

भवदीय,  
ठा. केसरीसिंह



ठाकुर केसरीसिंह  
को  
लिखे गये पत्र







### पुनश्च

आपकी देह-ताप की मुझे सदैव चिन्ता रही है और रहती है । परन्तु मेरी भावना तो सफ़्त होती ही नहीं, यह तो विस्मय म ही लिखा कर आया है । वीर प्रताप की माताजी को प्रणाम । फिर भी आगे मिनकर मेल मेलेंगे । यहाँ नहीं तो वहाँ सही ।

- 
- 1 राजस्थान के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री अजु नलाल सेठी द्वारा ठाकुर केसरीसिंह बरहठ की लिखा गया पत्र ।
  - 2 सेठजी के पुत्र प्रवाश जिनका किशारावस्था में ही स्वगवास हो गया था ।

## ( 2 )

वन्दे मातरम्

अल्ला हो अकबर

राजस्थान, मध्यभारत तथा अजमेर ( भरवाडा )

प्रांतीय कांग्रेस कार्यालय, अजमेर

स०

ता० 28-5 1924

सेवाम,

श्रीधुत ठाकुर केसरीसिंह जी साहब बोटा

सत्राम निवृत्त है कि दास सेठी को जो कुछ भी आज्ञा देंगे वह मनमा वाचा बमणा स्वीकृत होगी, तिरोषाय होगी । यदि आप मुझे दोषी ठहरायेंगे तो देहान्त प्रायश्चित्त तक भी सह्य मजूर करूंगा ।

आपका चिर सेवक

अशु नलाल सेठी

पुनश्च

आप अपने पधारने की तारीख सूचित करने की कृपा करें ।

## गाँधीजी का पत्र

आश्रम साबरमती  
शानिवार, 6 3 1925

भाई बेसरीसिह जी,

आपका शत माघ वृ 5 का मने मेरी पास रख छोडा, ऐसी इच्छा से कि मैं कुछ न कुछ 'यग इण्डिया' म लिखू । अब सोचता हू कि लिखन से कुछ लाभ नही है । किसी ने ऐसा माना ही न था कि सब प्रतिनिधि सेटी जी के वश म हैं और दीपित हैं ।

आपका,  
मोहन दास

## बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का पत्र

'प्रताप' प्रसिद्ध राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र

❀ वन्देमातरम् ❀

जिमको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,  
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।

"प्रताप" कार्यालय  
बानपुर 19-4-1931

मादरास्पत बाघु,

नमोनम ।

आपका मन्तपत्र पत्र मिला। श्रद्धाभाजन गणेशजी<sup>1</sup> तो हम लोगो को  
अनाथ करके चल गए। पर, वे अमर है। जिस ज्ञान से वे जिये, उसी ज्ञान से  
वत रहे। उनका बालदान, साहस और धैर्य की परिसीमा का परिचायक है।

आप उनके बहुत पुराने मित्रो म है व आपका त्याग और आपकी तपस्या  
तो अभिनव भारत के लिये प्रात स्मरणीय वस्तु है। यदि आपके सद्गुण महानु  
भावा की कृपा रही तो "प्रताप" उसी प्रकार, पूववत् सेवा करता रहेगा।

भगवान मुझे बत दें कि मैं पूजनीय गणेशजी के चरण-चि हो का अनुस-  
रण कर सकूँ।

आशा है आप सानन्द हैं।

आपका  
बालकृष्ण शर्मा

1 अमरशहीद गणेशगकर विद्यार्थी

## हजारीबाग सेट्रल जेल के भूतपूर्व वार्डर (प्रहरी) राधासिंह का पत्र

मु० केसार  
पो० भगवानपुर  
जिला शाहबाद (घारा)  
बिहार ता० 2/4/1933

रामजी सहाय नम

सौसती श्री श्रीमान् ठाकुर कसरीसिंहजी के चरणकमल में राधासिंहजी के तरफ से कोटीन सा प्रणाम पहुँचे। आगे बाबु रजीनसिंह को काटोनसा आशीर्वाद पहुँचे। आगे हम आप लोग के दया से अच्छे से हैं। आपका कुशल श्री विश्वनाथ जी वनाय राखस। आगे आपका एक पत्र हमको मिला, उस पत्र को मिले बहुत दिन गुजर गया, तब से फिर एक भी पत्र आपका नहीं मिला। आप उस पत्र में लिखे थे कि मकान बनाते हैं सो मकान बना कि भव हो कुछ बाकी है। हम गरीब की आशा है कि आपका चरण कमल का दर्शन जरूर मिलेगा। हम अपने हृदय से आपको कभी नहीं बीसारीते हैं। आप एक अपने युगल चरणा के दर्शन दे दीजिये जिसमें हम कृताथ हो जायें। आगे हम हजारीबाग से तीन महीना के छुटी में घर गये हैं। हम 10 जून को फिर अपने काम पर हजारीबाग उपस्थित हो जायेंगे। इस पत्र का जवाब आप हमारे मकान ही पर भेजिये जरूर। आपके पत्र आन से हमका अनुभव हाता है कि साक्षात् आप के चरण कमल का दर्शन हो रहा है। मुझ गरीब को यह अभिलाषा है कि आप मुझ गरीब पर कृपा कर इस पत्र का उत्तर दीजें।

---

हजारी बाग सेट्रल जेल में ठाकुर साहब की आजीवन कारावास की अवधि में 1915 से 1919 तक रखा गया था। जहाँ उनकी काल कोठरी [Solitary Cell] का वाडर (प्रहरी) राधासिंह था जिस उन्होंने चन की दाल से अक्षरज्ञान कराया था। एक क्रांतिकारी की प्रति जेल के वाडर की भी कितनी थड़ा थी, यह पत्र उसी का प्रतीक है। यह पत्र भोजपुरी में है।

## पं. माखनलाल चतुर्वेदी का पत्र

“कमनीर”

खडवा

दिनांक 19-3-34

श्रद्धास्पद भाई साहब,

सादर नमन ।

बहुत दिनों बाद पत्र पाकर कृपा सुख का मूल धन पाया ।

मध्य प्रदेश की खंरागढ़ रियासत जमींदारी है, राज्य नहीं । इ हें यहा प्यूडिटरी चीफ स कहते हैं कि तु ये लोग कहलाते राजा ही ह । पत्र की अधिक् जानकारी में कुछ दिना बाद ही लिख सकूंगा । अभी मैं दिल्ली जा रहा हूँ, साहित्य सम्मेलन मे । वहा से लौटकर ही इस ओर ध्यान दे सकूंगा ।

मेरी भी बड़ी इच्छा है कि एक बोर आवर आपके विमल पारिवारिक जीवन म जबरदस्ती प्रवेश करू और कृपा लाभ लू । झालरापाटन जाकर भाई श्री गिरिधरजी और उनके बच्चे की भी दखना चाहता हू । देखू कब अवसर मिलता है परतु जिस दिन आऊंगा, बिना खबर दिये-बोर की तरह पहुच जाऊंगा ।

आपके स्वास्थ्य की शिथिलता का सवाद पाकर दुख हुआ । आपके कष्टों का स्मरण ही किसी की नाडियों मे स्फूर्ति देने के लिए काफी है ।

आपका अपना मानकर धय

माखनलाल चतुर्वेदी

## श्री रमणीक ए. मेहता का पत्र

कागावाडा

गिरगांव, मुंबई

दि - - 1938

प्रिय बंधु

आज रोज जुदा बुक पोस्ट थी म्हारी एक नवल कथानी प्रत आपने मावला छे । म्हारा जीवन नी बँटलेव अश कोटा साथे सजलित छे । जीवन नी केटलीक धय पलो कोटा मे व्यतीत यई छे । तंमापण कूटजोक व्यक्तितो समग पुन पुन चक्षु समीप खडो धाय छे । तैनी याद स्मरण मा सौरभ भरे छ । अँवी एक व्यक्ति ने आ पुस्तक अपण बयु छे । वे व्यक्ति नो अपना ह्य्य मा अचल स्यान छे । स्यान अने म्हारे भाटेपण तेनु स्मरण 'गलापि हृदि तिष्ठति' जेबु छे । ते व्यक्ति कोई अय नही पण आपना कुमार स्व प्रताप ने अपण बयु छ । ते जोई आपसो ।

हूँ कुशल छूँ । सी तारा आपने प्रणाम कहेवराव छ । सब मे म्हारा घटित । कार्यक्रम आपनो चालूहो ।

रमणीक मेहता

1 यह गुजराती भाषा की पुस्तक 'शरतचन्द्र'(सत्तावन ना स्वातंत्र्य युद्ध नु छाया चित्र) है जिसके बगला मे मूल लेखक श्री देवीप्रस न राय चौधरी हैं एव गुजराती मे इसका अनुवाद स्व साधु चरितनारायण हेमचन्द्र ने किया था तथा इसका सशोधन एव सम्पादन उक्त पत्र के लेखक श्री रमणीक ए मेहता ने किया था । यह पुस्तक अमरशहीद कु वर प्रताप सिंह को समर्पित की गई थी । समपण इस भांति है—

"रत्न प्रसू राजस्थान मा जन्म ग्रहण करी, देशो-नति न" मत्र थी  
प्रेराई, जन्म-भूमि ना उद्धार माटे जैणे । आत्मोत्स  
शहीद चि प्रताप ना अमर आत्मा न ।

## महाराज कुमार रघुवीरसिंह का पत्र

रघुवीर निवास,  
सीतामऊ (भालवा)  
दिनांक 30-10-38

श्रेष्ठिय बारहठ जी ! सादर वन्दे !

आपका दिनांक 25- 0 का पत्र यथा समय प्राप्त हुआ। सब हाल जानकर दिल को चोट पहुँची। अपनी एक मात्र आशा के आधार का भी अपनी ही आँखों के सामने घुलते देखना क्या लिखू ? आगे लिखते कलम रुकती है। जो मेरे तूफान-सा उठता है। आपका ऊपर अब तक जो विपत्तियाँ आती रही हैं उनको देखते यह भावी विपदा अतीव महान और कठोर है। जब कोई दूसरा सहारा न रहा तब अपने एक मात्र सहारे को भी इस प्रकार आपद्ग्रस्त देखना कौन सह सकता है ? मैंने अब तक कई व्यक्तियों (महान् पुरुषों) की जीवनियाँ पढ़ी, उनको सुख दुःख वार्ता से परिचित हुआ। परन्तु अब तक इतनी विकट वार्ता का विवरण बहुत ही कम देखने को मिला। आपकी विगत विपत्ति वार्ता से परिचित रहा हूँ अब आपके दिल की यातनाओं का आदाज लगा सकता हूँ और जिस व्यक्ति ने सितम पर सितम सह कर भी अब तक उफान की जरा भी विचलित न हुआ, उसको जरा भी क्षुब्ध होते देखकर जी रो देता है। सच कहता हूँ बारहठ जी ! यह आपकी परीक्षा का समय है और आप पर जिनकी कुछ भी श्रद्धा एवं आदर है वे आपको इस विपत्ति का भी उसी धीरज और साहस के साथ सामना करते देखना चाहते हैं। आपने मुझ पर जो विश्वास एवं भ्रमनापन रख कर अपनी विपत्ति क्या की सूचना दी उसको अनुभव कर मैं द्रवित हो गया। यह आपकी उदारता है कि मुझे इस योग्य समझा कि इस महती आपत्ति के भ्रमसर पर मेरी सहानुभूति चाही और मुझे इस विश्वास के योग्य समझा कि अपनी हार्दिक भावनाओं का स्पष्ट शब्दों में उल्लेख करा सके।



## श्री रमणीक ए. मेहता का पत्र

वांशावाठी

गिरगांव, मु बई

दि - - 1938

प्रिय बांधु,

भाज रोज जुदा बुक पोस्ट थी म्हारी एक नवल कथानी प्रत आपन मावली छै। म्हारा जीवन नो कंटलेक अण नाटा साथे मकलित छ। जीवन नो केटलीक धाय पलो कोटा मे व्यतीत घई छै। तैमापण नटनीक व्यक्तिनो समग पुन पुन चधु समीप खडो थाय छै। तैनी याद स्मरण भा मौरभ भरे छ। श्रीवी एक व्यक्ति ने आ पुस्तक अपण क्यु छ। व व्यक्ति ना अपना हृदय भा अचल स्थान छै। स्थान अनं म्हारे माटेपण तेनु स्मरण 'गलापि हृदि तिष्ठति' जेवु छै। ते व्यक्ति कोई अय नही पण आपना कुमार स्व प्रताप ने अपण क्यु छ। ते जोई आपसो।

हूँ कुशल छूँ। सी तारा आपने प्रणाम कहेवराव छै। सब मे म्हारा घटित। कायत्रम आपनो चालूहणे।

रमणीक महता

- 1 यह गुजराती भाषा की पुस्तक 'शरतचन्द्र' (सस्तावन ना स्वातय युद्ध नु छाया चित्र) है जिसके बगला मे मूल लेखक श्री देवीप्रस न राय चौधरी है एव गुजराती मे इसका अनुवाद स्व साधु चरितनारायण हमचन्द्र ने किया था तथा इसका सशोधन एव सम्पादन उक्त पत्र के लेखक श्री रमणीक ए मेहता ने किया था। यह पुस्तक अमरशहीद कु वर प्रताप सिंह को समर्पित की गई थी। समपण इस भाति है—

“रत्न प्रसू राजस्थान भा जन्म ग्रहण करी, देशो नति ना मोहन मत्र थी प्रेरार्ई, ज म-भूमि ना उठार माटे जैणे हस्तेवद नो आत्मोत्सर्ग कर्यो छै, त अमर शहीद चि प्रताप ना अमर आत्मा ने उत्सर्ग”

## महाराज कुमार रघुवीरसिंह का पत्र

रघुवीर निवास,  
सीतामऊ (मालवा)  
दिनांक 30-10-38

श्रद्धेय बारहठ जी ! सादर व दे !

आपका दिनांक 25- 0 का पत्र यथा समय प्राप्त हुआ। सब हाल जानकर दिल को चोट पहुँची। अपनी एक मात्र आशा के आधार को भी अपनी ही आँखों के सामने धूलते देखना " क्या लिखू ?" अपने लिखते कलम रुकती है। जो म तूफान-सा उठता है। आपका ऊपर अब तक जो विपत्तियाँ आती रही हैं उनका देखते यह भावी विपदा अतीव महान और कठोर है। जब कोई दूसरा सहारा न रहा तब अपने एक मात्र सहारे को भी इस प्रकार आपदग्रस्त देखना बौन सह सकता है ? मैंने अब तक कई व्यक्तियों (महान् पुरुषों) की जीवनियाँ पढी, उनकी सुख दुःख वार्ता से परिचित हुआ। परन्तु अब तक इतनी विकट वार्ता का विवरण बहुत ही कम देखने को मिला। आपकी विगत विपत्ति वार्ता से परिचित रहा हूँ एवं आपने दिल की यातनाओं का अंदाज लगा सकता हूँ और जिस व्यक्ति ने सितम पर सितम सह कर भी अब तक उफन की, जरा भी विचलित न हुआ, उसको जरा भी क्षुब्ध होते देखकर जी रो देता है। सच कहता हूँ बारहठ जी ! यह आपकी परीक्षा का समय है और आप पर जिनकी कुछ भी श्रद्धा एवं आदर है वे आपको इस विपत्ति का भी उसी धीरज और साहस के साथ सामना करते देखना चाहते हैं। आपने मुझ पर जो विश्वास एवं अपनापन रख कर अपनी विपत्ति बधा की सूचना दी उसको अनुभव कर मैं द्रवित हो गया। यह आपकी उदारता है कि मुझे इस योग्य समझा कि इस महती आपत्ति के अवसर पर मेरी सहानुभूति चाही और मुझे इस विश्वास के योग्य समझा कि अपनी हादिर भावनाओं का स्पष्ट शब्दा में उल्लेख करा सके।

अतः मैं आपके साथ इस महान भावी विपत्ति के अवसर पर पूरी-पूरी हादिक सहानुभूति करते समय यही प्रार्थना करता हूँ कि इस अवसर पर आप विचलित न हों। जिस तरह हृदय पर आपात पर आपात अब तक रहे, उसी प्रकार एक और सही। मेरा विश्वास है कि यह अन्तिम परीक्षा होगी। उस परमात्मा का भरोसा एवं विश्वास ही इस समय आपके सहायक दोगे और मेरा यह भी विश्वास है कि आपका शीघ्र ही विपत्ति से छुटकारा होगा।

अधिक क्या लिखूँ ? मेरा विश्वास है कि आपको इस पत्र से कुछ सान्त्वना मिलेगी और यह भी स्पष्ट कह देना चाहता हूँ कि आपका पत्र पढ़कर मेरा भी चित्त दुःखित हुआ। धीरज और धर्म की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है।

सादर,

आपका सम्मुखी  
रघुबीरसिंह

---

ठाकुर साहब के पुत्र रणजीतसिंह को टी बी हो जान पर उन्होंने जो पत्र महाराज कुमार साहब को लिखा था, उसका उत्तर मैं डॉ रघुबीरसिंहजी ने यह पत्र लिखा।

## जीवनी

- राजस्थान की एक विभूति:  
कविराजा श्यामलदासजी



## राजस्थान की एक विभूति महामहोपाध्याय

### कविराजा श्यामलदासजी दधिवाडिया<sup>\*</sup>

महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदासजी के पूषज मारवाड ( जोधपुर राज्य ) के मेडता परगने में दधिवाडा नामक ग्राम के रहने वाले देवल गौत्र के चारण थे और वे रूण के राजा साखला राजपूता के बारहठ थे । जब साखला का राज्य राठौडा ने छीन कर रूण पर अधिकार कर लिया, तब साखला राजा अपने भानजे मेवाड के महाराणा बुभा के पास चित्तौड़ चले आये, जिनको चौरासी ग्राम—सहित ताणा का परगना मिला । उसके बाद देवल चारणों के अधिकार में दधिवाडा ग्राम कुछ अरसे तक बना रहा परन्तु राठौडा के बारहठों ( राहडिया चारणों ) से तकरार होने के कारण वे भी दधिवाडा ग्राम छोड़कर चित्तौड़ चले आये । दधिवाडा ग्राम से आने के कारण जैतजी देवल के पुत्रों को मेवाड के लोग दधिवाडिया कहने लगे । उसके बाद जिनमें देवल गौत्र के चारण आये, दधिवाडिया ही कहलाये ।

---

६३ कविराजा श्यामलदास ऐतिहासिक ग्रंथ 'वीर विनोद' के यशस्वी लेखक हुए हैं, जिसके कारण उनकी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली । काल जेम्स टाड के "एनल्स एण्ड एटिक्विटिज ऑफ राजस्थान" ग्रंथ के बाद 'वीर विनोद' राजस्थान की रियासतों का प्रथम क्रमबद्ध एवं प्रामाणिक इतिहास ग्रंथ है । यद्यपि यह विशाल ग्रंथ मूलतः मेवाड के इतिहास के रूप में लिखा गया है किन्तु वस्तुतः यह भारतीय इतिहास कोश है ।

जैतजी के पुत्र महपाजी [महिपाल] को महाराणा सागा ने विस 1575 वंशाख गुवल 7 का ढोकलिया ग्राम सासण दिया, जो अब तक उनके वंशजा के अधिकार में है। महपाजी से ग्यारहवीं पीढ़ी में उसी ढोकलिया ग्राम में वि० स० 1867 के ज्येष्ठ माह में कमजी का जन्म हुआ। बड़े होने पर वे उदयपुर में महाराणा स्वरूपसिंहजी और फिर महाराणा शंभूसिंहजी के दरबार में रहे और महाराणा इनसे प्रसन्न थे। कमजी का विवाह कृष्णगढ़-राज्य में उदयपुर नामक ग्राम के रोहडिया बारहठों के परिवार में एजनबाई से हुआ। इन एजनबाई की सौभाग्यपूर्ण कुक्षि से कविराजा श्यामलदासजी जैसी विभूति का प्रादुर्भाव हुआ।

कमजी के निम्नलिखित छ सन्तानें हुईं। उनका क्रमशः विवरण यह है—

- (1) ज्येष्ठ पुत्री शृंगारबाई का जन्म विस 1888 के माघ में हुआ। विवाह स० 1899 में शाहपुरा राज्य के देवपुरा ग्राम (उक्त बारहठजी का खेडा) के स्वामी सोदा बारहठ श्रीनाड (अनन्य) सिंहजी के साथ हुआ। इनके गभ से राजपूताना के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ स्वानामधम बारहठ कृष्णासिंहजी जैसे कुलदीपक पुत्ररत्न उत्पन्न हुए और एक पुत्री रसालबाई हुई जो कोटा राज्य में अतरालिया ठाकुर फतहसिंहजी महियारिया को ब्याही गई।
- (2) पुत्र, श्रीनाडसिंहजी का जन्म विस 1890 मगसिर में हुआ। ये कमजी की विद्यमानता में ही ठिकाना खेमपुर के ठाकुर शेरजी के गोद रख दिये गये। इनका देहांत स० 1936 में हुआ। इनके पुत्र ठा० चमनसिंहजी हुए और चमनसिंहजी के तीन पुत्र हुए जिनमें से ज्येष्ठ ठा० करनीपानजी और तृतीय ठा० खेमराजजी विद्यमान हैं।
- (3) पुत्र, हमारे चरित्रनायक कविराजा श्यामलदासजी का जन्म वि० स० 1893 द्वितीय आषाढ कृष्णा 7 मंगलवार के दिन ढोकलिया ग्राम में हुआ। इनका प्रथम विवाह स० 1907 में भेवाड के सावरडा ग्राम के भादा कुलजी की बेटी के साथ हुआ और दूसरा विवाह स० 1916 में

---

ठाकुर साहब ने बचपन से ही अपने पूज्य पितृ श्री के अतिरिक्त कविराजा श्यामलदासजी से शिक्षा और सत्कार प्राप्त किए। कविराजा के प्रति उनका हृदय में असीम श्रद्धा और आदर था। विद्वानों के आग्रह और कविराजा श्यामलदास के प्रति श्रद्धा से प्रेरित होकर ठाकुर साहब ने अपनी जीवन-यात्रा के अंतिम वर्ष (1940 ई.) में ऋण शोधन स्वरूप यह जीवन चरित्र लिखा था।

मेवाड में भडक्या ग्राम में गाडण ईश्वरदानजी की बेटी के साथ हुआ । प्रथम विवाह से पुत्री धूलवाई का ज म हुआ । वह प्रतापगढ राज्य में सचेई ग्राम में महडू स्वरूपसिंहजी को व्याही गई । दूसरे विवाह से कई सन्तान हुई परन्तु दो पुत्रियों के अतिरिक्त शेष न बची । बड़ी पुत्री अनूपवाई उदयपुर राज्य के ग्राम पाणोड के सोदा बारहठ रामसिंहजी की व्याही गई और दूसरी पुत्री बल्याणबाई जोधपुर के महामहोपाध्याय कविराजा मुगारिदानजी आशिया के पुत्र गणेशदानजी को व्याही गई । अब न तो वे तीनों पुत्रिया विद्यमान हैं, न कोई उनकी सन्तान ।

- (4) पुत्र, बजलालजी का ज म स० 1894 के पीप म और देहान्त स० 1927 में हो गया । इनके एक पुत्र जगमालजी हुए जो नि सन्तान गुजर गए ।
- (5) पुत्र, गोपालसिंहजी का ज म स० 1897 मृगशिर में हुआ और देहान्त स० 1937 में हो गया । इनके एक पुत्र जसकरणीजी हुए । वे कविराजा श्यामलदासजी के गोद लिये गये ।
- (6) पुत्री, दत्तबाई का ज म स० 1902 में और देहान्त स० 1927 में हो गया । यह मेवाड के ग्राम करणवास क आढा चतरजी को व्याही गई ।

यह हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं कि राजपूताना के असाधारण तेजस्वी निर्भिक, प्रतिभासम्पन्न, सत्य के कठोर पुत्रारी चारणकुल के सूर्यस्वरूप हमारे चरित्रनायक स्वनामख्यात कविराजा श्यामलदासजी के जन्म से गभीर प्रकृति और स्वाभिमानो पिता कमजी की कुल-लता और ईश्वरभक्तिपरायणा, निमल-हृदया माता एजनबाई की कुक्षि उज्ज्वल हुई ।

प्रायः यह देखा जाता है कि जिसकी स्मरणशक्ति तीव्र होती है उसमें विचारशक्ति की अल्पता रहती है और विचारशील व्यक्ति की स्मृति कुठिल होने का अनुभव होता है । परन्तु परमात्मा न प्रत्युत्पत्ति श्यामलदासजी को विशाल स्मृति और गहन विचारशक्ति दोनों ही समान रूप से जागृत्यमान प्रदान की थी ।

श्यामलदासजी का पठनपाठन कहां और किसक पास हुआ यह मरे ज्ञान के बाहिर है । परन्तु इतना ज्ञात है कि उनका सस्कृत का ज्ञान अच्छा था और



उनकी कविता भी चमत्कार लिये होती थी। श्यामलदासजी का स्वाभिमान ही हृदय चापलूसी में पनपने वाली राजसेवा से दूर रहने में ही आत्मस्वतंत्रता का सुख अनुभव करता था, और चाहे सामान्य ही क्या न हो, समानता और सम्मानपूर्ण व्यवहार रखनेवाले स्थल की ओर ही आकर्षित होता था। यही कारण है कि पिता के आग्रह करने पर भी वे उदयपुर के महाराणा के दरबार से मुँह फेर कर अपने गुणग्राही मित्र ठिकाना घठाणा ( मालवा-भारतपर राज्य ) के रावत दूलहसिंहजी और फिर मेवाड़ के ठिकाना देनवाड़ा के राजराणा पतहसिंहजी के साथ घनिष्ठ प्रेम हो जाने के कारण अधिकतर घठाणा और देलवाड़ा ही म रहा करते थे।

वि० स० 1927 के वैशाख में पिता कमजी का देहांत हो गया। अतः श्यामलदासजी उदयपुर पहुँचे और पिता की जगह उत्तराधिकारी हुए क्योंकि बड़े भाई ठा० श्रीनारसिंहजी नेमपुर ठिकाने पर गोद जा चुके थे। इसी वर्ष के आषाढ में महाराणा शंभूसिंहजी मातमपूर्विके लिये श्यामलदासजी की हवेली पर पधारें। तब से ही श्यामलदासजी महाराणा की सेवा में रहने लगे।

महाराणा शंभूसिंहजी की भक्त-कवि बारहठ नरहरिदास जी रचित अक्षतार चरित्र<sup>1</sup> नामक ग्रंथ बहुत पसंद था। अतः श्यामलदासजी सावकाश में नित्य महाराणा को अक्षतार चरित्र सुनाया करते थे। एक बार महाराणा को तीययात्रा करने की इच्छा हुई और उनके मुसाहिबों में से महता पनालालजी आदि ने सलाह दी कि इस यात्रा का खर्चा राज्य के खजाने पर न डालकर उदयपुर शहर के उन घनाढय व्यक्तियों से लिया जाय जिनके पूर्वजों ने राज्य का वायभार किया है और जो वर्तमान में राज्य कायभार चला रहे हैं। इस सलाह में उनके पारस्परिक द्वेष और बदले की भावना छिपी हुई थी जिसको सरल हृदय महाराणा न जान सके और फहरिस्त बानने का हुक्म दे दिया। श्यामलदासजी की तीक्ष्ण दृष्टि से यह रहस्य छिप न सका। यद्यपि वे सलाहकार न थे फिर भी साहस करके एक पुर्जे पर महाराणा को संबोधन करके लिखा कि 'अब वह जमाना नहीं है कि राजा किसी को दबाकर जा और बेजा किसी का घर छीन लें। इस फहरिस्त

1 श्रीमदभागवत के अनुरूप ही भक्ति काव्य का यह महान ग्रंथ तत्कालीन राजस्थान में बहुत लोकप्रिय था। इसका प्रथम मुद्रण श्री बेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई में हुआ था। अब यह ग्रंथ प्रायः अप्राप्य है। 'अक्षतार चरित्र' के प्रणेता बारहठ नरहरिदास जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंहजी प्रथम के समकालीन थे।

के निर्माण में पड़यत्र छिपा हुआ है। हज़ूर को सावधान रहना चाहिये। व्यथ बावला मचेगा और पालिटिकल अग्रेसर प्रफ़सरो तक आपकी बदनामी पहुँचेगी और इसका बहुत बुरा असर होगा। मैं नहीं समझता कि इस तरह खपया झकट्टा करने अभी यात्रा की ऐसी कौनसी जरूरत या पड़ी। अगर यात्रा जाना ही है तो राज्य के सच से हो जाना चाहिए।”

यह पुर्जा लिखकर “अवतार चरित्र” की पुस्तक में रख दिया, क्योंकि यह पुस्तक महाराणा के पास ही रहा करती थी जिसे वे स्वयं भी पढ़ा करते थे। महाराणा ने पुर्जा पढ़ लिया और श्यामलदासजी को बुलाकर कहा कि तुम्हारी सलाह बहुत नेक है। अभी यात्रा नहीं जायेंगे और न कभी ऐसा तरीका ही स्वीकार करेंगे। अब तुम पर मेरा पूरा विश्वास है हरेक मामले में तुम मुझे इसी तरह की सलाह दिया करो।

थोड़े ही दिन बाद महाराणा ने अपने प्राइवेट कागजात का बक्स श्यामलदासजी के सुपुर्न कर दिया और प्राइवेट सैक्रेटरी बनाकर काम लेने लगे। श्यामलदासजी का सितारा अभी चमकने ही लगा था कि वि० स० 1931 में महाराणा शंभूसिंहजी का भर जवानी में स्वगवास हो गया। श्यामलदासजी के सामने निराशा के बादल छा गये। किन्तु वे कैसे जान सकते थे कि उनका भविष्य सितार की जगह सूय की लाना चाहता है।

महाराणा सज्जनसिंह गद्दी बैठे। महाराणा शंभूसिंहजी की विद्यमानता में ही सज्जनसिंह जी उनके पास रहने लग थे अतः श्यामलदासजी के निकट सपक में आना स्वाभाविक था। सज्जनसिंहजी अल्पवयस्क होते हुए भी विलक्षण बुद्धि रखन वाले थे अतएव श्यामलदासजी के श्यक्तिरूप पर मुग्ध थे। गद्दी बैठते ही उन्होंने श्यामलदासजी को उसी प्रेम से अपनाया।

इन स्वामी सेवक का पारस्परिक प्रेम और विश्वास कितना असाधारण था इस हम आगे बतायेंगे। यह इतना ही लिखना पर्याप्त समझेंगे कि महाराणा सज्जनसिंहजी के राज्यकाल में मवाड की जो उन्नत अवस्था हुई उसमें एक मात्र श्यामलदासजी का प्रधान हाथ था, उन्हीं के मस्तिष्क का मूल रूप था। अतः इन दो महान् आत्माओं के राजकीय जीवन को कोई द्वैत रूपमें अंकित नहीं

1 महाराणा सज्जनसिंह का जन्म 1859 ई की आषाढ वदि 4 का हुआ था। और पंद्रह वष की अल्पायु में सन् 1874 की आश्विन वदि 12 को राज्य-गद्दी पर बैठे।

कर सक्तता, चाहे उसे "महाराणा मज्जनसिंहजी का यदास्थी राज्य-वाल" कह दीजिये या सधेर म "कविराजा शमनरासजी का जीवनवरिस" । वात एव ही होगी । घत हम कविराजा साहिब के प्रधानमन्त्री पन् के घाघार पर मेशाह के शासन म बीन बीनसी प्रधान बरतें हुई उहें हम सधेर म यहाँ उल्लेख कर देते हैं ।

वि० स० 1933 मे 'मपील' घदालत तोडी जाकर 'इजलासखास' के नाम से कई मेम्बरा की एक सबसे ऊपर की घदालत मुकरर हुई ताकि "पाय की निष्ठा घानबीन पूरी तरह म हो । इसमे श्यामलदासजी को 'मुन्धमन्त्री' के नाम से सबसे ऊपर सलाहकार मुकरर बिया गया और महाराणा क प्राइवेट मन्ट्री का काम भी इही को सौंपा गया । तब से ही श्यामलदासजी राज्य को समया-नुकूल भादश बनाने की लगन से नवीन सुघारो का प्रयोग करने लगे ।

(1) पुलिस के नवीन सगठन की व्यवस्था श्यामलदासजी न मवया अपने हाय मे ली और सफन परिणाम पर पहुचाई । एक घटनावृत्त से यह समझा जा सकता है —

पुलिस को यह आदेश था कि उदयपुर शहर म रात्रि के बारह बजे बाद किसी को चाहे वह कितना ही बडा आदमी क्यों न हो बिना रोशनी के न निकलने दिया जाय । महाराणा इस आदेशपालन के परीक्षाप बिना किसी को सकेत किय ही एक दिन बग्घी म बैठकर रात को । बजे बाद बाजार म निकले और बग्घी की रोशनी बुझा दी गई । जगदीश के मन्त्र से आगे बढते ही ड्यूटी के कार्टेबल ने टोका और आबिर बग्घी के घोडो की लगाम पकड कर बग्घी रोक ली । कोचमेन ने कहा, बेवकूफ, देखता नही खुद थीजी हुजूर बिराजे हुए हैं । उसने उत्तर दिया मैं जानता हू ये "शरस्वरूप खु" मालिक हैं परंतु मैं भी तो इही की राजप्राप का पालन कर रहा हू जब तक बग्घी मे रोशनी न की जायेगी म आगे नहीं बढने दूंगा । पूब सकेत के अनुमार कोचमेन ने कहा कि रोशनी का सामान नहीं है । उत्तर मिला- तो चलिये श्यामलदासजी साहिब की हवेली पर । मैं लगाम धामे ही ले चलूंगा । खुद महाराणा ने फरमाया कि कल सजा पावेगा । पुलिसमेन न सिर झुका कर अज की कि कल मालिक सजा देगे पा लूंगा अनी तो श्यामलदासजी के हुक्म की ही तामील होगी । पुलिसमेन का नाम क तम्बर पूछा-जाकर बग्घी म रोगनी हो गई । दूसरे दिन महाराणा ने ही सब हाल श्यामलदास जी को कह सुनाया, वह सिपाही उसी दिन हवलदार बना दिया गया ।

- (2) पहिले कनायदी फौज नहीं थी अत जंगी फौज जुदा करके महाराणा के मामा अमानसिंह जी को उसका कमांडर इन चीफ बनाया और सैनिक शिक्षण के लिये एक अग्रेसर मि लोनागन को रखा ।
- (3) इंजीनियरिंग का महकमा कायम करके उन्वपुर शहर के भीतर और बाहिर सड़कें बनवाई गई और शहर सफाई का प्रबंध किया गया ।
- (4) मेवाड़ में सत्ता में उमराव सरदार जोरदार रहें हैं जा अपन अधिकारी के नाम पर मनमानी करते रहे बल्कि पिछले जमाने में इनकी उच्छ्र खलता से मेवाड़ की बर्बाती भी हुई । अत सन् 1935 में मुक्तिदूषक सब उमराव सरदारों के साथ दीवानी एवम् फौजदारी के मुकद्दमों के अधिकारी बाबत नई कलमबंदी (अहदनामा) की गई ।
- (5) मेवाड़ में 31 तहसीलें थी उनको तोड़ कर 10 जिले कायम किये गये और उन पर योग्य हाकिम नियत किये गये ।
- (6) मेवाड़ में चार सौ पचीस चीजों पर महसूल जफात लिया जाता था और इससे प्रजा को कष्ट था । अत वह मुद्राफ करके सिर्फ 9 चीजों पर महसूल कायम रखा और डाण (कस्टम) में महकम का नवीन प्रबंध किया ।
- (7) महकमा जगलात कायम किया गया ।
- (8) सरहदों फौजों के लिये कनल डिवाइज की मातहत में महकमा बंदोबस्त कायम किया गया और इसी साल में मेवाड़ का दौरा करके आबपाशी आदि तरबकी के काम किये ।
- (9) स० 1936 में मेवाड़ में पमायश करा कर भाल का पुला बंदोबस्त ठेकाबन्दी (सेटलमेंट) का जारी करवाया । इस प्रयत्न को रोकने के लिये मेवाड़ के जाटा ने बड़ा हुल्लड़ मचाया और हजारों की तादाद में हल ब्रैल लेकर राजधानी उदयपुर में आ जमा हुए और महला के चौक में पट्टे बरहलना मचाया । उस समय कविराज जी ने अज की कि हुजूर स्वरूप निवास के भरोसे में किराज कर तसल्ली देने का हाथ हिलाते हुए फरमा दें कि तुम्हारी बात सुनी जावगी और मैं इनको इस हुल्लड़ पर फटकारता हूँ, उनका यह शोध मेरे पर उतर आवगा, बाद में समझा लूंगा । ऐसाही हुआ । कविराजजी ने रुद्र रूप धारण करके खूब पट्टे

कारा और आदेश दिया कि इन्हें निवालो यहाँ से । जब तब बड़ी पोन के बाहिर न निकल जाओगे, तुम्हारी एक बात नहीं सुनी जायगी । विवश होकर व यह कहत हुए निकल गये कि मालिक तो इधालु हैं—मुनना चाहते हैं— पर यह दुष्ट नहीं सुनने देता । फिर स्वयं उनके पटाव पर जा कर तसल्ली से ममभा बुभा कर राज्य का निणय कायम रया ।

- (10) इसी स० 1936 में महाराणा सज्जनसिंहजी की जयपुर यात्रा कविराजाजी के महान् सकल्प का श्रीगणेश था । कविराजाजी को भारत के देशी राज्यों की पारस्परिक फूट और द्वेष परम्परा बहुत प्रखरती थी क्योंकि भारत के पतन का यही कारण है । वे चाहते थे कि भारत के नरेश परस्पर विद्रोह-पूर्वक मित्रता में गुंथे जायें और सब मिलकर एक सिद्धांत व एक नीति पर चलते हुए सगठित रूप में एक दूसरे के सहायक बन जायें, तो इनका अस्तित्व फिर भी बिरस्थिर बन सकता है । पुराने द्वेषों और वैरो की धरोहर को लेकर इनमें परस्पर मिलना तो दूर पत्र अक्वहार व जबानी जुहार कहलाना तक भी पीढियों से बढ़ था । यह पुराना दकियानूसी डर ही तनी टूट सकता था जब कोई सवमाय, असामान्य सहस्रपूर्ण नीति पटु और प्रभावशाली नरेश विनम्र भाव से मंत्री की सिद्धि के लिए आगे बढ़े । कविराजाजी ने सकल्प की साधना का सर्वोत्कृष्ट क्षेत्र मेवाड ही को चुना क्योंकि भारत में जो गौरव और प्राधान्य मेवाड को है वह अन्य को नहीं एव मेवाड पर महाराणा सज्जनसिंहजी जैसा दूरदर्शी साहसी और नीतिवुशल शासक होने से सोना और सुगंध का मल यही चरिताथ होता था । कविराजाजी की यह भावना महाराणा के विशाल हृदय में समा गई उन्ही की बन गई । इसके लिये अथ पात्र भी उन्हाने ढूँढ लिये वे थे—उस समय के नीति-महारथी, लघ्वप्रतिष्ठ परमबुद्धिमान, यक्षस्वी जयपुर नरेश महाराजा रामसिंहजी, जिनके हृदय में भी यही भाव उठ रहे थे । दूसरे थे सरलचेता परम उदाहृत्य महाराजा जसवन्तसिंहजी, जोधपुर—नरेश और उनके सुप्रसिद्ध साहसी वीर भाता महाराजा प्रतापसिंहजी ।

वा तब में राजपूताना में ये तीनों ही राज्य भुगत हैं । परंतु तीनों ही के बीच मिथ्याभिमान और वैमनस्य की घुघली दीवार बनी चली आ रही थी । अतः कविराजाजी ने स्वामिनीय से क्षेत्र तैयार किया । सकल्प का मूर्तपात हुआ था स 1933 में होने वाले लोड लिटन

के दिल्ली दरबार के समय दिल्ली में, और साधना का प्रथम सोपान हुआ स 1936 में उदारचेता महाराणा सज्जनसिंहजी का जयपुर जाकर महाराजा रामसिंहजी का आतिथ्य-ग्रहण और मंत्री का पुनर्गठन करने के साथ महाराणा जयपुर से सीधे जोधपुर पहुँचे । हिंदू-सूर्य को अपने आगम में पाकर मरुधराधीश महाराजा यशवंतसिंहजी ने अपना हृदय-कमल बिछा दिया । पाठक कल्पनानेत्र से उस समय क कविराजाजी के उत्कृष्ट हृदय-कमल की पेंसुडियाँ घाज भी गिन सकती हैं ।

राजाजी की इस मंत्री साधना में कविराजा श्यामलदासजी के साथ जोधपुर के महामहोपाध्याय कविराजा मुरारिदानजी का भी पूरा सहयोग रहा है । बारहठ कृष्णसिंहजी तो इस राजसूय यज्ञ को निभाय रखने में कविराजाजी के दक्षिण हस्त थे ही । सचमुच चारण जाति का यही तो आदर्श कर्तव्य है, धर्म है जीवन पथ है । क्षत्रिय जाति में नवजीवन लवार के लिये इससे बढ़ कर सजीवनी क्या होगी ?

इसी मंत्री के सिलसिले की टूट करने के लिये ही मरुधराधीश यशवंतसिंहजी एवं कृष्णगढाधीश शादू लसिंहजी उदयपुर आय और महाराणा सा के साथ माय कविराजाजी के घर पधार कर आतिथ्य ग्रहण किया । चारणा के क्रद्धा अब उठ चुके । सदेह नहीं यदि महाराणा सज्जनसिंहजी की ईश्वर दीर्घायु देता तो अवश्य ही कविराजाजी का वह सुनहरा स्वप्न मूर्तस्वरूप ले लेता । किंतु इन राज्यों के चक्करदार भविष्यपथ पर पगडंडी डालने में मनुष्य की क्या सामर्थ्य ?

(11) सन् 1937 में इजलास खास के स्थान पर सबसे ऊपर की अदा लत 'महाराज सभा' के नाम से मुकरर करके उसमें 17 मँबर और एक सैक्रेटरी नियत किया गया । इन मँबरो में मेवाड के बड़े बड़े उमराव भी लिये गये । ऐसा करने में 'याय रक्षा के अतिरिक्त राजनतिक उद्देश्य भी था । उदाहरणार्थ उमरावो की 'यायपद्धति' का अम्यास हो कर उनके घर में भी 'यायरक्षा का उत्तरदायित्व आ जाये एवं हरेक सरदार जो अपनी चाकरी के दिन, खाली हाजरी में बिताकर घर भागना चाहते थे, एक दिन रुकन में भी आपत्ति करत थे, किंतु इस प्रतिष्ठापूण कर्तव्य में बँध जाने से उनको रहना ही पडता, आदि ।

(12) इसी सन् 1937 के बैसाख में कुल हिंदुस्तान में मनु मशुमारी हुई । उसी सिलसिले में मेवाड में भील जाति के मनु मशुमारी के प्रसंग पर एक मूख

धानेदार की वाचालता के कारण नाहक एक बड़ा बवण्डर खड़ा हो गया। जब भीलो ने पूछा कि हमें क्यों गिनते हो, तो धानेदार ने कह दिया कि तुम्हारी औरते लबे के साथ लबी और नाटे के साथ नाटी का जोड़ा मिलाकर बदल दी जावेंगी। बस, फिर क्या था ? घास में चिनगारी पड़ गई। भीलो ने तुरंत ही ढाल पीट कर बलवा कर दिया। मालगुजारी की ज्यादाती, लूटखसोट पर रोक गादि बातों को लेकर वे क्षुब्ध-मना तो थे ही, इस मौके पर उन्होंने तत्काज हल्ला बोल दिया और उस धानेदार के साथ ही जो दूसरे अहत्कार थे, सबको कत्ल कर दिया और फिर उनके मगरा जिले में जहां भी रात्र का आदमी मिला, साफ कर दिया। विद्रोह की प्रचण्ड अग्नि तीन लाख भीला में चारों ओर बिखर गई। इस उपद्रव को दबाने के लिये महाराणा ने कविराजा को पूज्य अधिकार दे कर नवीन सुसज्जित सेना के साथ मगरा जिले में भेजा। सेना के कमाण्डर इन चीफ मामा अमानसिंहजी मिस्टर लोनागन (अंग्रेज) और पुलिस के प्रधान अफसर मौलवी अब्दुल रहमान खा आदि कविराजाजी की आधीनता में साथ दिये गये। यह उपद्रव कुछ मास तक चला, फिर भी अपेक्षाकृत बहुत कम भील मार गये और कविराजाजी ने माम दाम, दण्ड, भेद आदि नीतिपटुता से बलवा पूर्णरूप से शांत कर दिया।

मेवाड़ के भीलवाड़ का सिलसिला कबई प्रात तक है। अतः यह अग्नि उधर न फैल जाय इसके लिए भारत सरकार चिंतित हो उठा और उसने इशारे से बलवा क्षेत्र की परिस्थिति और कविराजाजी की गति-विधि, कायपद्धति का निरीक्षण करने के लिए खैरवाड़ा की सरकारी छावनी के दो अंग्रेज फौजी अफसर कविराजाजी के सेना के कैंप में पहुँचे। कविराजाजी ने आतिथ्य करके अपने शिविर के डेरो में ठहरा दिया। उसी दिन भील नेताओं के साथ परामश होने वाला था अतः निर्धारित स्थान पर कविराजा मय मामा अमानसिंहजी आदि के पहुँचे। यह तय पाया कि एक ओर राज्य की सेना एवं तोपखाना और दूसरी ओर भीलो का दल खड़ा रहेगा। परन्तु मध्यभाग में जहां पंच इक्कठे होंगे वहाँ दोनों ही पक्ष कोई शस्त्र लेकर नही आवेगा। करीब पाच सौ भील मुखियाओं के बीच में कविराजा तुर्नी लगाकर बैठ गये और भीला में शांति और सहानुभूतिपूर्वक स्वामिभक्ति और धमबुद्धि जागृत करते हुए राजसत्ता का वचस्व समझाने लगे। दो लाख से अधिक भील टिड्डी दल के समान अति दूर पहाड़िया पर छाये हुए थे। उस समय

किसी बदर स्वभाव भील ने यो ही राज्य की सेना पर तीर चला दिया और वह एक सिपाही के पैर में लगा। असहिष्णु सिपाही ने भी सैनिक मर्यादा का उल्लंघन कर सहसा बंदूक का फायर कर दिया। बंदूक का शब्द सुनते ही लाखों भीलाने एक साथ हो हल्ला मचा दिया। दगा ! दगा !! की तुमुल ध्वनि से आकाश गूँज उठा। परन्तु कविराजा ने पडे होकर भील मुखियाभा को कहा कि "मैं तुम्हारे बीच खड़ा हूँ, कैसा दगा ? यह किसी मूख सिपाही का काम है। ठहरो, मैं उसे तुम्हारे सामन खड़ा करता हूँ, जो चाहे उसका लिये दण्ड तजवीज करो।" सब मुखियाभा न अपनी अपनी पछेड़ी (भोड़ने का वस्त्र) आकाश में हिलाई हल्ला शांत हो गया। सिपाही लाया गया। घटना सुनी जाने पर कविराजा ने कहा कि तुम भी उस मूख भील को हमारे सामन पेश करो। वह भी दूढ़ कर लाया गया। पहिला अपराध उसका था अत मुखियाभा ने कहा-कि पहिले-आप इसे सजा दो। कविराजा ने कहा कि अपन मालिक दयालु हैं। हम और तुम उनकी सतान हैं। कोई पूत कपूत निकल जावे तब भी व माफ करते हैं, उनके हुक्म से हम उसे माफ करते हैं। भील पचो ने कहा कि तो इस सिपाही को भी माफ कर दो। यह बन्ने की शक्ति का प्रथम शुभ दिन था। परन्तु उस दिन और क्षण की यह लाखा भीला की प्रचण्ड किल्लकारी वायु को चीरती हुई करीब एक मील से कुछ कम दूर सेना में केम्प तक पहुँची। अतिथि दोनों सैनिक अग्रज अफसरों ने पूछा-यह हल्ला क्या है ? शिविर के रणको ने कहा कि समय है भीलों ने हमला कर दिया हो। यह सुनते ही दोनों ही वीर इतने घबड़ाये कि कांपत हुए हाथों से जल्दी अपने घोड़ों को खोल, सामान बसना भी छोड़कर नगी पीठ घोड़ों पर चढ़ खैरवाडा की दिशा में चपत हो गये। उनके दोनों घोड़ों की काठियाँ सामान दूसरे दिन कविराजा न खैरवाडे पहुँचा दिया और रसीद मगवा ली।

उन दोनों अग्रजों ने खैरवाडे पहुँच कर एक लबी रिपोर्ट ब्रिटिश गवर्नमेंट में भेजी कि मवाड के आफिसर विलकुल बेसमझ हैं। व हथियार छोड़कर खाली हाथ दुश्मनों के बीच में जा बैठे, उन पर भीला ने हमला कर दिया, आदि।

इस पर गवर्नमेंट की ओर से महाराणा को लिखा गया कि 'इतने असें तक भी मवाड में भीलों का बलवा नहीं दबा। मालूम होता है इस काम



के लिए महाराणा की शक्ति नाबाफी है। गवर्मेण्ट इस देरी को अपने लिये भी घतरे से घाली नहीं देवती, क्योंकि भवाह स मिले हुए सरकार के गुजराती इलाके के भीलो पर भी इस बलके का बुरा असर पड रहा है। इसलिए बलवा तुरन्त दबाया जाय या महाराणा गवर्मेण्ट से सनिक सहायता मागें। महाराणा ने गवर्मेण्ट की उपरोक्त तहरीर को उत्तर के लिये फौजी कैम्प म बावराजा के पास भेज दी और उनके असल उत्तर को ही अपना उत्तर कह कर गवर्मेण्ट के पास भेज दिया जिस पर पोलिटिकल डिपार्टमेंट इस संवय मे सदा के लिये चुप हो गया। यह उत्तर यह है "महाराणा बारहूठी वय से जिस शक्ति के बल द्वारा अपनी इस प्रजा पर राज्य करते आ रहे हैं वह शक्ति बल अब भी वतमान है। ब्रिटिश गवर्मेण्ट तो कल की आई हुई है, हमे उसकी मदद की कोई आवश्यकता नहीं। यह मुकाबला किसी बाहरी शत्रु से नहीं है कि जिसमे सेनाबल का प्रयोग किया जाय। महाराणा अपनी प्रजा को मारकर शांति नहीं करना चाहते। प्रजा तो पुत्र के समान शांति से ही समझाई जा सकती है। यदि इस विलम्ब मे गवर्मेण्ट को अपने इलाकों का डर है तो वह अपने घर का आप प्रबन्ध करे। उसका उत्तरदायित्व इस राज्य का कदापि नहीं।"

अब सकुशल शांति स्थापन करके कविराजा उदयपुर मे पहुँचे उस समय तत्कालीन ए जी जी राजपूताना भी उदयपुर मे थे। महाराणा न मय ए जी जी के शभूनिवास महलो म दरबार करके कविराजा का स्वागत किया और खुद महाराणा ने कविराजाजी की बीरता, धीरता और कायकुशलता को भूरि भूरि प्रशंसा की और उसी समय कविराजाजी के पैरो म सोने के दोहरे लगर पहिनाये जो मेवाड के घर म बहुत बड़ी इज्जत है। उस समय ए जी जी ने भी कविराजाजी की प्रशंसा मे स्पीच दी परंतु उसम यह भी इशारा किया कि 'युद्ध के नियमो को न जानने के कारण सैनिक दृष्टि से कुछ गलतिया भी हुई हैं जैसे बिना शस्त्र के और बिना कैम्प का रक्षा का प्रबन्ध किये भीला जैसे जंगली दुश्मनो के गिरोह मे जा बठना। भीलो ने हमला किया मगर खुदा ने आपको बचा लिया इसकी बड़ी खुशी हुई।' कविराजाजी का तजस्वी हृदय यह आक्षेप चुपचाप कैसे सह लेता? वे तुरन्त उठे और महाराणा और ए जी जी को घ यवाद देकर कहा कि 'मैं गवर्मेण्ट की कीर्ति और भलाई पर प्रसन्न होने वाला हू इसीलिये इस चढाई म एक घटना अग्रेज जाति के लिये लज्जास्पद ऐसी हो गई कि जिससे मैं दुखी हुआ और वह यह कि मेरे शिविर म खैरबाडा छावनी के दो फौजी अग्रेज आफिसर मेरे महमान भाये, मैं उनको

अपने सुरक्षित कैंप में ठहराया और शांति के लिये शपथ लेकर आये हुए भील पक्षी को समझाने के लिये कुछ ही दूर गया था। वापस शिविर में आने पर भालूम हुआ कि भीलों की स्वाभाविक कठोर किलकारी सुनकर वे होश हवास खो बैठे, यहाँ तक कि नगी पीठ घाड़ों पर बैठ कर तुरंत भाग गये। मेरी आधी फौज कैंप में मौजूद थी। इनको इतना भी धय न रहा कि दस मिनट ठहर कर वास्तविकता को सुनते। इनके घोड़ों के जोन मँने ही खँरवाड़े पहुँचाये। उनको इस नामर्दी का असर देखने वालों पर बहुत बुरा पडा क्योंकि हिंदुस्तान पर राज्य करने वाली अंग्रेज कौम और उसमें भी फौजी अफसर यों आपते हुए बेतहाशा भाग खट ही कितनी शम की बात है। ए० जी० जी० चुप हो गये। बाद में सुना कि उन्होंने इस तथ्य की तहकीकात की जिसके परिणाम में वे दोनों अफसर सैनिक सेवा से निकाल दिये गये।

(13) सन् 1938 में सरकार अंग्रेजी की तरफ से महाराणा को जी सी एस आई का खिताब मिला। इसके लिये गवर्नमेंट ने कहा कि महाराणा आगरा या अजमेर सरकारी जिले में आकर यह खिताब लें। परन्तु महाराणा ने बाहिर जाकर खिताब लेने से इन्कार कर दिया। तब वायसराय लाड रिपन ने मेवाड़ की प्राचीन राजधानी चित्तौड़ में आकर महाराणा को खिताब दिया। इस निमित्त से चित्तौड़ में बड़ा भारी जल्सा हुआ जिसका सफल प्रबन्ध भी कविराजाजी के हाथ से हुआ।

(14) सन् 1939 में मेवाड़ के पोलिटिकल रेजिडेंट कनल वाल्टर ने महाराणा से अग्र की कि रियासती कामों में मदद देने वाले तो आपको दूसरे सलाहकार भी मिल सकते हैं मगर मेवाड़ की तवारीख बनाने के लिये कविराजा श्यामलदासजी जसा दूसरा व्यक्ति नहीं मिल सकेगा इसलिये आप कविराजा को रियासती कामों में फुरसत दे कर तवारीख बनवायें। इस पर महाराणा ने कविराजाजी की तवारीख बनाने की आज्ञा देकर फरमाया कि जब कोई महत्वपूर्ण विषय होगा हम तुम से पूछ लिया करेंगे और तुम आवश्यक समझो तब आकर सलाह दे जाया करो। तब से कविराजाजी इतिहास पर दत्तचित्त हुए और महाराणा ने उनके स्थान पर सौदा बारहठ कृष्णसिंह जी (कविराजाजी के भानजे और इस लेखक के पितु श्री) को अपना प्रधान सलाहकार बनाया जो कि कई वर्षों तक महाराणा के पूर्ण कृपा पात्र और विश्वास-भाजन रहे।

कविराजाजी के दस वष के प्रसाधारण परिश्रम मे "वीर विनोद" नामक अनुपम इतिहास तैयार हुमा जिसका विशेष वृत हम आगे लिखेंगे ।

- (15) सवत 1941 के प्रारम्भ म मेवाड के रेजिडेंट कनन वाल्टर सहाय ने कविराजाजी से कहा कि चित्तौड से उदयपुर तक रेल का हाना आवश्यक है अत इस तजवीज को आप महाराणा से स्वीकार करा दें । कविराजाजी ने देशकालानुसार इस प्रस्ताव को राज्य के लिय भी उपयोगी समझा और महाराणा से स्वीकार कराकर इससे लिये 22,00,000/- रुपये की मजूरी दिला दी और इजीनियर मि० टामसन को नौकर रखकर सबे का काम शुध कर दिया ।

महाराणा सज्जनसिंह का स्वर्गवास हो जाने से यह रेल का काम रुक गया और बाद महाराणा फतहसिंहजी रेल बनवाने स विरुद्ध हो गये । इस विषय को लेकर महाराणा और गवर्नमेंट हिंद मे बरसो तक ऐंवातानी रही एव इस हठ के कारण महाराणा फतहसिंहजी को अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़े । परन्तु आखिर रेल बनानी ही पडी । जब कविराजाजी की सलाह ली गई उ होने यही अज की कि जिस काम को मैं पहिले उचित समझ चुका था उसे अब भी उचित समझता हूँ । हुजूर को जिन अनुचित है और वह अत तक टिक न सकेगी वही हुमा ।

- (16) मेवाड मे सावजनिक शिक्षा को वविध क लिये कविराजाजी के हृय्य म प्रसाधारण लगन थी । अत उहोने शिक्षा विभाग को भी प्रान हाथ म लेकर प्रारम्भिक रूप म उदयपुर मे हाईस्कूल और दहात म स्कूल कायम किये । उनका सक्ल्प था कि वे मेवाड को शिक्षा के सबध म जयपुर से भी आगे बढा देंगे । यही कारण है कि स 1937 म राज्य प्रबध से अवकाश लेकर जब व इतिहास निर्माण म दत्तचित्त हुए तब भी शिक्षा विभाग को तो अपने ही अधिकार म रखा । महाराणा सज्जनसिंहजी भी विद्यावृद्धि के पूर्ण पक्षपाती थे । वे सुख स्वप्न देखते थे कि वह समय आवेगा जब मेरे राज्य म एक भी निरक्षर न रहेगा । यही मधुर स्वप्न कविराजाजी का था परन्तु सज्जनसिंहजी का सहारा न रहने से वह स्वप्न टूट चुका । कविराजाजी का हाथ कु ठित हो गया क्योंकि महाराणा फतहसिंहजी के विचार शिक्षा के सबध में प्रतिगामी थे । मैंने उनके मुख से अनेक बार सुना है कि मादमी जितना ज्यादा पढता है उतना ही अधिक से अधिक चालाक और बेईमान बन जाता है, बेवार मुख मध्ये कि

चुपचाप आज्ञा का पालन ठीक ठीक करते हैं और अपनी तरफ से कोई प्रयत्न और निकडमबाजी नहीं लगाते ।

- (17) महाराणा सज्जनसिंहजी के समय में कविराजाजी ने "सज्जन यत्रानय" नामक छापाखाना उदयपुर में खोला और उसमें "सज्जन-कीर्ति मुधाकर" नामक साप्ताहिक पत्र जारी किया । यह उदयोग राजपूताना में पहिला ही था ।
- (18) इसी प्रकार "सज्जन शोधालय" नामक हास्पिटल सवसाधारण के लिये कायम किया गया एवं कविराजाजी के मित्र रेवरेण्ड शेफर्ड को सहायता देकर मिशन हास्पिटल को तरकीब दी गई ।
- (19) सन् 1941 के कार्तिक म महाराणा सज्जनसिंह जी बीमारी की हालत में श्रावहवा तदीय करने के लिय और दूसरे राजाभा से बेतकल्लुफ आत्मीय भाव का आदेश स्थापित करने में लक्ष्य से भी जोधपुर गये और वहा करीब एक महीने ठहरे । वहा महाराणा की बीमारी बढ गई फिर भी वे वही ठहर्ना चाहते थे । साथ वालो ने अज की कि अब उदयपुर लौट चलें, कि तु स्वीकार न हुआ । उदयपुर में यह सूचना पहुँचने पर मेवाड के पोलिटिकल रेजिडेंट कनल वाल्टर ने कविराजाजी को कहा कि आप खुद जोधपुर जायें और महाराणा को ले आवें । वे आपके बिना और किसी की न धरेंगे । तब कविराजाजी जोधपुर गये और पाप मास में प्रथम सप्ताह में महाराणा को उदयपुर ले आये ।

परन्तु महाराणा के नश्वर शरीर के साथ ही कविराजाजी के जीवन का सुख सूय भी अस्त होना विधि-निर्दिष्ट था । आब्रिल म० 1941 पीप शु० 6 मंगलवार, मुताबिक सन् 1884 ई० ता० 23 दिसम्बर को महाराणा सज्जनसिंहजी साठे पञ्चोस वष की उम्र में दस बरस, तीन महीने नौ दिन हुक्मत करके इस असार ससार को त्याग गये । केवल मेवाड का ही नहीं बल्कि समस्त राजस्थान का क्षणिक चमका हुआ भविष्य फिर से उसी पुरानी धुधली चादर के पीछे छिप गया ।

यहा तक हमने महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदासजी के प्रधान मन्त्रित्व के नाते किये हुए राजकीय कार्यों का उल्लेख किया । अब यथा स्मृति उनके वैयक्तिक जीवन पर भी प्रकाश डालने की चेष्टा करेंगे ।

महाराणा सज्जनसिंहजी और कविराजा श्यामलनामजी में जैसा परस्पर प्रेम था प्रेम रहा है वैसे आज तक किसी स्वामी सेवक में न दीव पडा, या या कहें कि पूव ज में के बिलुडे प्रनय प्रेमी फिर से आ मिले थे । महाराणा के व्यवहार में केवल आम दरबार के समय ही यह भान हो सकता था कि एक स्वामी है, दूसरा सेवक, नोचेत यद्यपि कविराजा का हृदय स्वामिभक्ति में सराबोर था किन्तु महाराणा का हृदय सहोदरवत् ही प्रान आपको अनुभव करता रहा-यहा तक कि कविराजा के परिवार को भी महाराणा ने अपना परिवार माना । यथा, कविराजा अपनी माता को 'बहूजी' कहते और अपनी ज्येष्ठा भगिनी (शृगार-बाई) को "बाई जी" कह कर माता से भी अधिक सम्मान करते । महाराणा भी जब जब कविराजाजी की हवेली पधारते तो दानो प्राप्त देवियों को वसे ही "बहूजी" और "बाईजी" कह कर सम्मान करते । बाई बार हसते हुए कहा कि 'बाईजी ! आप इतनी बुद्धिमती हैं कि यदि आप पुष्ट होती तो मवाड का प्रधानमंत्री आप ही होनी सावलजी तो आपके प्रसिस्टेंट ही रहते । महाराणा सज्जनसिंहजी शुरू से ही कविराजा को प्रेमवश 'सावलजी' कह कर ही पुकारते और महाराणा पतहसिंहजी "कविराजजी" कहते थे । महाराणा सज्जनसिंहजी कविराजाजी के सब चाकर छोकरियों को पहिचानते और नाम ले लेकर पुकारते । घर में रहत क्षण काई भी नहीं कह सकता था कि ये हिंदुआ सूर्य मंदपाटेश्वर हैं । कभी कहते, 'बाईजी ! आपन तो कभी पौत्र की त्रिकटि (नकली युद्ध) नहीं देखी होगी । नहीं, का उत्तर मिलन पर दूसरे ही दिन श्यामलबाग के पास चौगान में वही सेना सचालन हो रहा है ।

एक बार हाथियों पर सवार होकर जगदीश के चौक तक महाराणा पधार और वहा फरमाया कि 'सावलजी ! तुम और दूसरे सरदार सीधे बाजार में कोतवाली (घटाघर) की जाओ, हम घाणोरव की घाटी के रास्ते से पहुंचगे देखें कौन पहिले पट्टचता है ? कविराजा की हवेली घाणोरव की घाटी पर ही है । महाराणा सीधे हवेली पहुंचे । हाथी से उतरकर हाथी को हवेली के सामने के घर के पीछे डूढे में छिपा दिया और आप चुपके से एक घघरी नाल में होत हुए गोयाण की हवेली (यह मकान भी उस समय कविराजाजी के उपभोग में था) की छत पर चले गये और दरवाजे के पहिरेवाला को हुकम दे गये कि कविराजाजी आंवे तो कुछ मत कहना । कविराजाजी ने कोतवाली पहुंच कर देखा कि दरबार नहीं पधारे । वे तुरंत समझ गये कि मेरी हवेली पधार गये हैं । अपनी हमनी को दौडाकर हवेली पहुंच सिपाही को पूछा । वह कविराजा के प्रभाव में वापने लगा परंतु मुह से कुछ न बहकर उस तहखाने का जीने वाली अघेरी शोवरी (कोठरी) जो पीछे "भाणोजजी (मरे पितु श्री)

को ओवरी" कहलाने लगी-कौ ओर हाथ कर दिया । कविराजा उधर ही दौड़ते हुए छत पर पहुँचे । देखा, स्वामी बिराजे हुए हस रहे हैं । उस छत पर लौडियो के साडी घाघरे सूख रहे थे । कविराजा उनको बटोरते हुए कह रहे थे । इन्हे मुलाने को यह जगह ही मिली है । महाराणा ने कहा—नाराज न हो, बिचारी घर छोड़कर कहां सुलाती । व थोड़ा ही जानती थी कि मैं यहाँ आ बैठूँगा । फिर दोनों हसते हुए हाथियों पर सवार होकर कोतवाली का चक्कर लगाकर महलो पहुँचे ।

एक बार महला म जो 'कविराजाजी की ओवरी" कहलाती है वही ग्रीष्म के मध्याह्न म कविराजा अपने सैन्टेटरी दशोरा ब्राह्मण दुर्लभराम की जघा पर सिर रखकर निद्रा मे सो रहे थे और दुलभराम पत्नी से हवा कर रहे थे । महाराणा सुख महलो मे बिराजते थे । महाराणा को एक पुस्तक की आव-प्यकना हुई जो महलो के ऊपरी भाग मे "सरस्वती भण्डार" मे थी और सरस्वती भण्डार की चाबी कविराजा के आधीन रहती थी । जहाँ मेधादेव्यर की आजा से हजारों पैर लौडने को खडे रहते हैं वहाँ प्रेम वश स्वयं महाराणा उस घूप मे एक पुस्तक निकलवाने के लिये प्रेमी की ओवरी पर पहुँचते हैं, देखते हैं, कविराजा सोये हुए हैं । हिंदुआसूर्य को देखते ही दुर्लभराम घबराये किन्तु तुरन्त हाथ का इशारा हुआ कि खबरदार ! कविराजा जगने न पावें । फिर चुपके से कहा कि अमुक पुस्तक निकाल लाओ । परन्तु दुर्लभराम की जघा पर कविराजा का सिर था अत आपने धीरे से सिर उठाकर अपनी जघा पर ले लिया और पत्नी लेकर हवा करने लगे । दुर्लभराम ऊँरर वे महलो म गय । इधर कहा दुलभराम की दुबली पतली जघा और कहा महाराणा की हूँट पुँट ऊँची जघा । पत्नी की हवा के फौन म भी बल कुछ दूसरा ही था । कविराजाजी की आल खुल गई, देखा स्वामी सेवा कर रहे हैं । घबड़ा कर उठ बैठे और कहा—कहा गया वह नालायक, मुझ जगाया तब नहीं । महाराणा ने कहा नाराज न हाइय, वह मरी आशा पर गया है ।

एसी छोटी मोटी घनेक घटनाये है जो नवयुवक फिर भी गभीर, असा धारण तजस्वी और स्वाभिमानी नपचूडामणि महाराणा के उछलते हुए प्रेम और प्रीड सबक कविराजा की अगाध स्वामी भक्ति की असाधारणता की प्रवट करती है । ये ही व्यवहार असदिग्ध रूप म सिद्ध करत हैं कि महाराणा सज्जनसिंहजी के यशस्वी राज्यकाल म मेवाड ने जो आधुनिक सुधारों की दुदुभि पर पहिला डका दिया उसम नवान भाव और व्यवस्था का उद्गम था—

कविराजा का हृदय और उदपोषणा भी गुणग्राही स्वामी को भाग्ये । शब्द और अर्थ के समान ये दो नहीं, एक ही थे ।

स्वामी के अनन्य भक्त कविराजा के गभीर हृदयसिंधु को भी प्रेमोद्बेह की दशा में उछलते और बहते नी में देखा है, दो बार—

जब कई पीढ़ियों के बाद स० 1939 में महाराणा सज्जनसिंहजी के महाराज कुमार का जन्म हुआ तो उसकी स्वरित बधाई को पूव्य व्यक्तित्व के अनुसार प्रातः तोषा के पावर (Fire) हुए । उस समय कविराजा अपनी हवेली के दरवाजे में तश्त पर नग सिर बँठे हुए थे । तोष की पहली धावाज पर ही जैसे बँठे थे वैसे ही, "पगड़ी सा, पगड़ी ला" कहते हुए नंगे सिर महला की ओर दौड़ पड़े । पगड़ी की कुछ पगड़ी नीकर के हाथ में है, उसका एक सिरा कविराजा के हाथ में है और अटशट लपटे आते हैं भागे जाते हैं । रास्ते में एक ने बधाई दी— 'महाराजकुमार हुए' । हाथ का सोन का कड़ा निकाल कर उसकी ओर फेंक दिया । महला में घुसते ही उद्यमसालजी पाण्डेरी ने बधाई दी तो गले का सोने का गोष और कानों का माती चौकड़ा उसे खोल दिया और ध्यान-दविभोर दादा में महाराणा के सामन जा खड़े हुए । एक गभीर प्रभावपुत्र प्रधानमंत्री का बालकवत कैसा हर्षातिरेक ! महाराणा को भी परमश्रुत था, बहा-सावल जी ! एर्कालगजी (महाराणावा के इष्टदेव शिव) ने हमको पुत्र दिया, तुम्हारे पुत्र नहीं है हम चाहते हैं तुम भी पुत्र के पिता कहलाओ । अतः जिस लडक को गो" लेना ही उसे अभी बुलाओ । कविराजा ने अपने स्व० छोटे भाई गोपालसिंहजी के बालक के लिए कहा और वह तुरन्त हवेली से लाया गया । महाराणा ने उसके पैरों में सोने का दोहरा लंगर पहिना कर उसे उठाया और कविराजाजी की गोदी में रखकर कहा इसका नाम हम यशकरण रखते हैं ।

दुख है कि वह महाराजकुमार उसी दिन सायंकाल को सत्तार की आँकी भी न करके चल दिया और कविराजा की भरी हुई गोदी भी अतः में कुपुत्रता के नाम से परिगणित हुई ।

उपर हमने जो कुछ बताया वह प्रेमोद्बेह था—हर्षातिरेक में । किन्तु दूसरी बार देखा विवाद की अतिमात्रा में, अर्थात् स० 1941 में महाराणा सज्जनसिंहजी की अतिम बीमारी ज्यो ज्यो बढ़ती गई वह साथ ही साथ कविराजा को भी अधमूत-सा करती गई । महाराणा की दशा असह्यता तक पहुँचने पर कविराजा भी राजमहलों की अपनी ओवरी में अनशन से जीवनी-शक्ति को क्षीण करते हुए पड़े हुए थे । इधर महाराणा अतिम मूर्च्छा में थे उधर कविराजा

विषादजन्य मूर्छा में थे। महाराणा सज्जनसिंहजी के स्वर्गवास<sup>1</sup> से लगा आघात उनके हृदय के लिये कितना असह्य और भयकर था उसे हम क्या स्वयं कविराजाजी भी शब्दों में न बता सके, कविराजाजी ने अपना जीवन—मुख चौपट कर दिया उसी पर से कुछ अनुमान पाठक लगा सकते हैं। महाराणा सज्जनसिंहजी उस मूर्छा से न उठे। किंतु विषाद को मूर्छा जब तक ठहरती? कविराजा आखिर उठे परन्तु उनके आनन्द और भोजपूर्ण जीवन की ज्योति सदा के लिये मूछित हो गई। रग की पगड़ी बाधना और मद्य-मास का सेवन सदा के लिये परित्यक्त हुआ।

इसी स 1941 में कविराजाजी की माता एजनबाई अपनी ज्येष्ठ पुत्री शृंगारबाई आदि के साथ तीर्थयात्रा को गईं। प्रयाग काशी, अयोध्या, गया आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए बीमार हुईं और कात्तिक वृष्णा 5 को 71 वय की आयु पाकर मथुरा में पंचत्व को प्राप्त हुईं।

कविराजा श्यामलदासजी की कीर्ति को अमर करने वाले मेवाड़ के बहुत् इतिहास ग्रंथ "वीरविनोद" की बुनियाद तो महाराणा शंभूसिंहजी के समय में ही लग गयी थी, परन्तु महाराणा सज्जनसिंहजी की शासन प्रतिष्ठा का भार कविराजा पर आ जाने से इस ग्रंथ का कार्य रुका रहा। हम ऊपर उल्लेख कर आये हैं कि स० 1939 में पोलिटिकल रेजिडेंट मेवाड़, कनन वाल्टर ने महाराणा सज्जनसिंहजी से सिफारिश की कि कविराजाजी का 'वीरविनोद' निर्माण के असाधारण कार्य की पूर्ति के लिये अवकाश दिया जाये। कविराजाजी ने थोड़े ही समय में मेवाड़ के शासन को देशकालानुसार नवीन सुसंगठन में ढाल कर और गवर्नमेंट हिन्दू के साथ मंत्री का भी रूढ़ करने में जो अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया इससे गवर्नमेंट का पोलिटिकल विभाग मन ही मन तो मुग्ध था।

कविराजाजी की योग्यता और कथकालता से प्रसन्न होकर गवर्नमेंट हिन्दू ने सन् 1935 में उनको 'केसरी हिन्दू' का तमगा इनाम दे दिया। तब मेवाड़ के रेजिडेंट कनल इम्पी (Impey) ने रेजीडेन्सी में दरबार कर वह तमगा कविराजाजी का अर्पण करते हुए कहा था कि आपने महाराणा साहब को समय समय पर बहुत उत्तम सलाह दी है और राज्य की उन्नति की ओर अग्रसर करने में प्रबल-पटुता पूर्वक परिश्रम उठाया है जिससे प्रसन्न होकर गवर्नमेंट हिन्दू आपको यह तमगा देती है।

---

<sup>1</sup> महाराणा सज्जनसिंहजी का स्वर्गवास दि० 23 दिसम्बर सन् 1884 को हुआ।



परंतु महाराणा शम्भूसिंहजी एवं सज्जनसिंहजी की नाबालगी में सर्वोत्तम रहकर मनमानी परजानी करने का मजा उठाने वाला वो कविराजाजी के समय चतुः प्रवेश करने की सुविधा न रहने से वह मजा न रहा। अतः इस तरह एक ढेले में दो लक्ष्य साधने में चतुर अंग्रेज जाति अपनी नीति की जरूरी का लोटन बना लेने में दक्षहस्त होने से इस खूबी के साथ कविराजाजी का ध्यान दूसरी ओर बटाने में सफल हुई। मित्र वाल्टर साहब ने वही काम किया जो एक अंग्रेज मित्र कर सकता है। परंतु महाराणा सज्जनसिंहजी और कविराजा श्यामलदासजी में अंतरा डालने वाला एक ईश्वर का ही समय हाथ अमोघ हो सकता था, मनुष्य का नहीं। अतः महाराणा सज्जनसिंहजी के स्वगवास हो जाने पर ही राजसयासी कविराजाजी ने अपना पूरा ध्यान और समय “वीर विनोद” के निर्माण में लगाया।

आधुनिक शास्त्रीय पद्धति से इतिहास को प्रमाणीभूत बनाने में जिन जिन साधनों की आवश्यकता होती है वे सब जुटाये गये। देश का कौना-कौना छान कर प्राचीन प्रशास्तियाँ, सिक्के, ताम्रपत्र, पट्टे परवाने, भाट एवं जागामो की बहियाँ, प्रकाशित अंग्रेजी फारसी, अरबी, हिंदी, संस्कृत ग्रंथ और अप्रकाशित हस्तलिखित ग्रंथों का पता लगा कर उन्हें खरीदा गया उनकी प्रतिलिपियाँ, कराई गई, किंवदंतियों को भी संग्रहित किया, लुप्तप्राय विध्वस्त खण्डहरों की खुदाई होकर आदि तथा मध्ययुग पर प्रकाश डालने वाली हिंदू, बौद्ध, जन आदि देवों की खंडित मूर्तियों का संग्रहालय बनाया गया इस सकलन काय के प्रतिफल में आज भी उदयपुर का इतिहास-संग्रहालय समस्त राजपूताने में प्रधान माना जाता है। उररोवन ठोस बुनियाद के ऊपर ही ‘वीरविनोद’ का रम्य भवन रचा गया। इतिहास कार्यालय कविराजा के निजी बाग (श्यामल बाग) में स्थापित हुआ। कविराजाजी स्वयं सपरिवार उस बाग में ही रहते और जब उदयपुर शहर की हवेली में रहना होता तो नित्य भोजन करके दिन के दो बजे बाग में चले जाते और सायंकाल की हवेली लौटते। इतिहास कार्यालय में हिंदी संस्कृत अंग्रेजी उर्दू फारसी, अरबी आदि भिन्न भिन्न भाषाओं के विद्वान् वेतनभोगी थे। वे कविराजाजी को अपनी अपनी भाषा के ग्रंथ सुनाते रहते। उत्कीर्ण लेख पढ़ने के लिए गोविंद गंगाधर दशपाढ ब्रिटिश गवर्मेण्ट की ओर से नियुक्त हुए जो गिलालेख-ताम्रपत्रादि पढ़ने में सहायता करते। कविराजाजी की स्मरण शक्ति इनकी तीव्र थी कि एक बार सुन लेन पर कभी नहीं भूलते भूल जाने वाले पंडितों को बताते कि यह बात इस तरह अमुक ग्रंथ के अमुक प्रकरण में है। सब सुन कर अपना इतिहास ‘वीरविनोद’ स्वयं लिखाते थे।

अग्नेजी विभाग के लिये प्रथम, हाई स्कूल उदयपुर के सैकण्ड मास्टर के पुत्र रामप्रसादजी बी० ए० रहे गये थे। ये बहुत ही सुयोग्य, प्रतिभाशाली विद्वान् थे। वे कविराजाजी ही की सिफारिश से मेघो कालेज के सैकण्ड मास्टर बन कर भ्रमर गये। उसके बाद जबकि "वीरविनोद" लगभग समाप्त होने पर या, स० 1944 मे प० गौरीशंकर हीराचंद ओझा सामान्य वेतन से राम-प्रसादजी के स्थान पर नियत किये गये। यद्यपि यह वैसे विद्वान् न थे फिर भी ऐतिहासिक शिक्षा प्राप्त करने की पूरी लगन वाले थे, अतः कविराजा सा० इनसे प्रसन्न थे। यही कारण है कि "वीरविनोद" ग्रंथ तैयार होकर छपने के लिये उदयपुर के सज्जन यत्रालय मे गया तब कविराजा सा० ने इनको अपने आधीन 'विक्टोरिया हाल' मे जो पब्लिक लाइब्रेरी और ऐतिहासिक म्यूजियम के रूप मे है, उसका लाइब्रेरियन एवं मैनेजर बना लिया और महाराणा पतहसिंहजी से भ्रज करके उत्तरोत्तर तरक्की देते रहे। यद्यपि महाराणा गौरीशंकरजी को "बडया" (पागल) कहा करते थे परन्तु कविराजाजी की गुणग्राहकता को नहीं टाल सकते थे। संक्षेप में, प० गौरीशंकरजी के भाग्य का कविराजाजी ने ही निर्माण किया। कविराजाजी से प्राप्त की हुई कृपा, शिक्षा, सुविधा और सामर्थ्य से इन्होंने पर्याप्त लाभ उठाया और प्रसिद्धि पाई और आखिर कविराजाजी की सिफारिशों के परिणाम मे ही लाड मिटों के जमाने मे स० 1964 मे ये क्यूरेटर होकर भ्रमर पहुँचे।

कविराजा सा० के अधीनस्थ सज्जन यत्रालय प्रेस मे "वीर विनोद" छपता था। प्रूप तैयार होने पर मैं उसे महाराणा पतहसिंहजी के नजर करता, व स्वयं पढत। अतः मे मरे हाथ से स्वीकृति लिखी जाने पर वह छपने के लिए चला जाता। इस प्रकार महाराणा पतहसिंहजी ने इसे आधोपान पहा। किन्तु अपनी ओर से कुछ परिवर्तन न किया। सत्य और प्रमाणसिद्ध ग्रंथ मे अगुली रखते भी तो क्या? 'वीरविनोद' की स्मरणहूसी प्रतिये छपती थी। महकमासास के हुक्म मुताबिक उनमे से एक हजार प्रति राज्य ही थी और एक सौ प्रतिया कविराजा साहब के निज के लिये ताकि वे अपने मित्रादिकों को यथेच्छ दे सकें। इन प्राइवट निजों प्रतिया मे से तीन प्रतिया कविराजा के हाथ से ही बाहर जा चुकी थी अर्थात् ज्योही पर्मा छप कर तैयार हुआ थाही उसकी एक प्रति मरे पितु की को मिल जाती और दूसरी मास्टर रामप्रसादजी बी० ए० को। रामप्रसादजी थोडा ही समय बाद भ्रमर मे गुजर गये और उनके गण पढ़वा हुआ "वीरविनोद" का हिस्सा आखिर बनारस को नागरी प्रचारिणी सभा के हाथ लगा और सुरक्षित हो गया। तीसरी प्रति प० गौरीशंकर जी ओझा की मिल्ने

लगी। कविराजा के बीमार हो जाने के बाद जो जो प्रकरण ओझाजी को न मिले उनका इन्होंने मेरे यहां की प्रति से लिखकर पूरा कर लिया। कविराजा सा का संकल्प था कि "वीरविनोद" छपकर वितरित हो जाने के बाद स्यास ले लेंगे। किंतु ईश्वर की इच्छा दूसरी ही थी। वे स० 1949 आषाढ शु० 11 के दिन सहसा पक्षाघात रोग के प्रबल आक्रमण में आ गये और प्रायः डेढ़ दो वष वही दशा रहे। इस समय का लाम लेकर कविराजा के विरोधी प्रपंचियों ने फिर से वही पद्य प्रचलाना कि 'वीरविनोद' छपकर तय्यार होने ही वाला है, खाली भूमिका और टाइटल पेज आदि सामान्य बातें शेष हैं। प्रथ की प्रसिद्धि विलायत तक ही चुकी, अमेरिका और जर्मनी तक के विद्वान भाग रहे हैं। ऐसे प्रथ की समाप्ति पर भी जोहुजूर को बहुत बड़ी उदारता दिखा कर कविराजाजी को पुरस्कार देना ही पड़ेगा। यह प्रथ राज्य का इतिहास है। भिन्न भिन्न उमरावा के भिन्न भिन्न पुस्तक अधिकार एवं मान-सम्मान आदि की इसमें पुष्टि है। ये प्रमाण ही राज्य की यथेच्छ नीति को कुठित कर देंगे, आदि आदि। ऊघते को बिछौन के समान, लोभी, एवं अपने उमरावों को प्रपग बनाने वाले महाराणा को उपरोक्त प्रथ का पिछला भाग पसंद आया और तुरन्त आज्ञा दी कि सज्जन यशालय में से 'वीरविनोद' की कुल प्रतिया-यहां तक कि उसके प्रूफों की रट्टी तक उठा कर महलो में लाई जाय और ताले में बंद हा, चाबी खुद हमारे पास रहेगी। आज्ञा का पालन हुआ और "वीरविनोद" प्रथ जीवित समाधि में चला गया। यदि ये तीन प्रतिया न निकल गई होती तो अवश्य ही वह पिछला तालाब के जल में अपना क्लेवर मिला सदा के लिये विलीन हो जाता। "वीरविनोद" की इस समाधि का लाभ रूपांतर देकर किसी न उठाया है तो वे प० गौरीशंकर हीराचंद ओझाजी हैं। इसमें हम उनका दोष नहीं पाते क्योंकि वीरविनोद कविराजाजी की कृपा से उन्हें प्राप्त हो गया था फिर भी अब, जबकि वर्तमान उदारचेता महाराणा भूपालसिंहजी ने वीर विनोद को 60/- रुपये की कीमत पर फिर से अनुप्राणित और स्वतंत्र कर दिया है, प गौरीशंकरजी को भी अपने गुण उपकारी एवं परोक्ष रूप से समृद्धिदाता कविराजाजी के चरणों में श्रद्धाजाली चढाये ये हिचक नहीं होनी चाहिये, क्योंकि उनका सरल हृदय और प्रतिष्ठित पांडित्य स्वयं जानता है कि 'कृतघ्ने नास्ति निष्कृति'।

वीरविनोद' न अतिरिक्त कविराजाजी ने ऐतिहासिक गहरी छानबीन करके दो पुस्तिकायें और लिखी थी—“पृथ्वीराज रासो की रचनीता” और 'अक्षर क ज मदिन म सदेह'। ये दानो ही पुस्तिकायें रायल एशियाटिक

सोमायटी बंगाल व बंबई आदि प्रसिद्ध सस्थाओं से समाहृत हुई । “पृथ्वीराज रासो की नवीनता को लेकर ५० मोहनलाल विष्णुलाल पडया ने, जो कविराजा की कृपा से ही उदयपुर में महाराज सभा के सँक्रेट्री के पद पर पहुँचे थे केवल स्वाथ-साधन के लिये प्रपच किया । उन्होंने बेदले रावजी तख्तसिंहजी को समझाया कि आप चहुवाण हैं और चहुवाण जाति का धौरव महाराज पृथ्वीराज के नाम से है । खास कर आप तो महाराज पृथ्वीराज ही के उत्तराधिकारी वंश में हैं । यदि “रासो की कथा झूठ सिद्ध हो जाय तो स्वयं महाराजा पृथ्वीराज का अस्तित्व ही अचकार में चला जायगा । रासो से ही उनकी कीर्ति है और कविराजाजी ने रासो को प्रमाणों से कल्पित ठहरा दिया । यदि आप रुपये खच करें तो मैं कविराजाजी के लेख का खण्डन करके रासो की सत्यता प्रमाणित करदू । बेदले रावजी इस चक्के में आ गये और पाच हजार रुपये ५ मोहनलालजी पड्या को दे दिये । पडयाजी के पास रासो की एक पुरानी पोथी थी जिस पर लिखा था ‘भाखा रासा’ ‘प’ को ‘ख’ उच्चारण की ओर लिखने की पुरानी पद्धति के अनुसार उसे “भीखारासा” नामक स्वतंत्र ग्रन्थ मानकर उसी क यत्र तत्र उदारहणों द्वारा सँ 1944 में ‘पृथ्वीराज रासो की प्रथम सरक्षा’ नामक एक पुस्तक लिखी और उसे बंगाल रायल एशियाटिक सोसाइटी में भेजा । किन्तु उसको यह कह कर सोसाइटी स वापस कर दी गई कि इसमें तथ्य नहीं है । फिर भी उन रूपों को पचाने के लिये अपनी उसी पुस्तक के अंश ट्रेक्ट रूप में छपा छपाकर बाँटत रहे । आखिर सब भेद खुल गया और पडयाजी ने कविराजाजी से क्षमा मागी । कविराजाजी न कहा-यदि कोई मुझे गालिया देकर भी अपनी पेट भरवाई करे तो मुझे बुरा नहीं लगता । मेरी हानि तो न हुई और न तुम कर ही सकत बयोकि मरा वह लेख न किसी स्वाथ से था, न द्रोप से । तुमने बेदले रावजी स रुपये ठगे हैं अत उ ही से माफी मागो । तुम्हारे चेष्टा करने पर भी मेरी और बेदले रावजी की मत्री और स्नेह में कोई अंतर नहीं आया ।

× × × ×

एजेण्ट गवर्नर जनरल राजपूताना, बनल वाल्टर ने अपनी यह राय सब रईसों के सामने रखी कि अजमेर मेयो कॉलेज में राजपूताना के रईस व उमराव सरदार जो पढाये जाते हैं उनको जो हिन्दी (तवारीख) पढाई जाती है वह दूसरे-दूसरे मुल्क व जिलों की है और ये छात्र अपने घर के इतिहास स अनभिज्ञ ही रहते हैं यह ठीक नहीं । इसलिये राजपूताना की एक ऐसी तवारीख बनाई जावे जिसमें राजपूताना की कुल रियासतों का संक्षेप में ऐतिहासिक वृत्त आ जाये । वही इतिहास मेयो कॉलेज और हर एक रियासत के मदरसा में पढाया

जाया करे। इस सम्मति को सब राजाओं ने स्वीकार की और इसके लिये अनुभवी इतिहासवेत्ता तजवीज करने का भार बनल वाल्टर पर ही छोड़ा गया। बनल वाल्टर साहब ने इसके लिए सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति कविराजा श्यामलदासजा को ही चुना और महाराणा फतहसिंहजी को स्वीकृति लेकर खुद वाल्टर सा० ने कविराजा को कहा। परंतु कविराजा ने जवाब दे दिया कि मैं 'धीरविनो' नामक बृहत् इतिहास बना रहा हूँ अतः मुझे इतनी फुरसत नहीं। लेकिन मेरे इतिहास महकमे में एक व्यक्ति मौलवी मुहम्मद उवेदुल्ला फरहती को यह काम दे देता हूँ और मैं मदद देकर उसे दुरस्त करवाता रहूँगा। तब मौलवी मुहम्मद उवेदुल्ला फरहती ने, जो कविराजाजी को अरबी और फारसी की तबारीख सुनाया करते थे, कविराजाजी की मदद से "तबारीख तुहफे राजस्थान" नामक पुस्तक लिखी और वह उदयपुर के मुद्रणालय में छपवा दी गई और बिक्री का हुकम हो गया। कुछ किताबें बिक भी गईं। बाद में कुछ लोगों ने महाराणा से अज्ञ की कि इस किताब में उदयपुर के सबध में बेजा लिखा गया है। इस पर महाराणा ने किताब का बिकना बंद करके मौलवी मुहम्मद उवेदुल्ला फरहती से जवाब तलब किया कि तुमने रियासती के सिलसिले में शाहपुरा को रियासत मानकर उसका हाल क्या लिखा? शाहपुरा मेवाड़ का मातहत है। लिखना ही था तो हमारे दूसरे उमरावा का हाल क्या नहीं लिखा? इसका उत्तर मौलवी मुहम्मद उवेदुल्ला फरहती ने इस प्रकार दिया कि मेवाड़ के दूसरे उमरावों के ठिकाने महाराणा को दिये हुए हैं और शाहपुरा ठिकाना दिल्ली के बादशाह की तरफ से दिया हुआ है और उसका एक परगना फूलिया अंग्रेज सरकार की मातहत में मौजूद है इसलिए उसका हाल लिखना जरूरी हुआ। महाराणा ने कविराजाजी से भी उस किताब के सबध में पूछा तो कविराजाजी ने अज्ञ की कि इतिहास की दृष्टि से उसमें कोई दोष नहीं। बनल वाल्टर ने भी महाराणा को खूब समझाया मगर एक भी बात महाराणा के गले न उतरने और उन्होंने 'तबारीख तुहफे राजस्थान' की जितनी जिल्दें छपी थीं उनको बटारकर एक मकान में बंद करके दाखिल दफ्तर करवा दी। मेर पितु श्री वारहट कृष्णसिंहजी ने भी अज्ञ की कि मैंने भी इस किताब को अच्छी तरह से देखी है। लिखने वाला मुसलमान होने से चंद फिक्रे तमासुब से लिख दिये हैं वे निकाल दिये जा सकते हैं। मगर इस तबारीख को ही नेस्त नाबूद कर देना हज़ूर की नाहक जिद है। वह 'तबारीख तुहफे राजस्थान' आज भी किसी बंद कोठरी में पड़ी सड़ रहा है।

महाराणा स्वरूपसिंहजी एक लोभी और क्रूर शासक थे। किसी का यश एव स्वामिमान उनके लिये अप्रिय था। उनके समय में महियारिया चारण चतुर्गजी अपने अमाधारण शारीरिक बल से प्रसिद्ध हो रहे थे। महाराणा के दरवार में बैठे हुए सिलहट की ढाल को दोनों हाथों की चुटकी में लेकर चीर देना आदि बहुत से शारीरिक शक्ति के अप्रूप प्रदर्शन दिखा चुके थे। इस बल के जोर में वे जबान के भी मुहफट थे दबते किसी से नहीं। इन बातों से महाराणा अग्रस न थे। इत्तिफाक से चतुरजी के हाथ से सदेह में दो तीन खून हो गये। महाराणा स्वरूपसिंहजी ने उन्हें पकड़वाकर आजीवन कारावास की सजा देकर दण्ड भोगने के लिये गवमोंट को सौंप दिया, क्योंकि वह बला उदयपुर की जेल में अधिक टिक सकने वाली नहीं थी। अतः चतुरजी चुनारगढ़ (यूपी) में पहुँचा दिये गये। बाद में जब महाराणा सज्जनसिंहजी का समय आया, कविराजाजी ने अज्ञ की कि महाराणा स्वरूपसिंहजी ने महियारिया चतुरजी का ठिकाना भी जख्त कर लिया और आजीवन कारावास का दण्ड दकर चुनार भेज दिया। व बरसों से कद भोगत हुए बुडडे हो गये हैं, हज़ूर के समय में एक चारण कैद में पड़ा हुआ सडता रहे यह विचारने योग्य है। फौरन ही चतुरजी की कारामुक्ति का आदेश गवमोंट में भेज दिया गया और वे छूटकर उदयपुर आ गये। लेखक ने उनका देखा है तब कद बुढापे में भी लोह के दण्ड सदृश्य कठोर और माटो हडिडया लाल आखा से खिरता हुई वीर रस की अग्नि एक विचित्र भैरवीमूर्ति थी। दरवार में सलाम हुई। चतुरजी ने अज्ञ की कि अब यहाँ चित्त नहीं लगता, व दावन वास कह गा। एक रुपया रोज आजीवन कर लिया गया और व अपने मुक्तिप्राप्त कविराजा के चरण रपण करके व दावन चले गये।

इसी प्रकार उक्त महाराणा स्वरूपसिंहजी ने पादियों से स्वामिभक्त और सम्मानित एक मेहता (वश्य) परिवार को "हरामखोर" कह कर मेवाड से देग िल्कासन दे दिया था। उस परिवार को भी कविराजा श्यामलदासजी न महाराणा सज्जनसिंहजी से अज्ञ करने फिर से उदयपुरवासी बनाया और उसके तीनो भाइयों - महता अक्षयसिंहजी उग्रसिंहजी और केसरीसिंहजी का बडी बडी हुकूमती पर हाकिम बना कर भेजे। आज उ ही की सत्तान महता जीवनसिंहजी जसवंतसिंहजी और उनके सुपुत्र मेवाड के शासन में महत्वपूर्ण भाग ले रहे हैं। कु तेजसिंहजी मिनिस्टर हैं और उनसे छोटे कु डाक्टर मोहनसिंहजी 'वार एट ला', भारतीय विद्वानों से सम्मानित एव नगवती सरस्वती का वरद पुत्र होकर उदयपुर के नाम को अधिक उज्ज्वल करने वाली

“विद्याभवन” जैसी विद्यालय और नवजीवन से अनुप्राणित शिक्षण मन्था की स्थापना एवं व्यवस्था कर अपने अनुपम योग से उमंग प्राण-रूप बन रहे हैं। विभिन्न राज्या के दीवान पद पर हात ठूला भी अपना जीवन ध्येय विद्याभवन ही को बना रखा है। कविराजाजी की गुणग्राहकता और कृपा का डाला हुआ वह अतुर आज सहलहा विद्यालय कक्षा के रूप में लहरा रहा है। यहाँ मुझ कवि राजा बाकीदासजी आशिया का यह -दाहा जो अपने पोषक रायपुर ठाकुर अनुपमिहजी ऊनाथत को गुनागा गया था, याद आता है-

माली श्रीराम माहि-पोष मुजल द्रुम पालियो ।  
जिए रा जस किम जाय प्रति पण वूठां ही अजा ॥

अर्थात् हे ठाकुर अनुपमसिंह ! माली न उस ग्रीष्म की प्रचंड आंध म लुगो से बचाते हुए मुजल से सींच सींच बंधी कठिनता से जिम वन का पालन किया है वह वृक्ष उस माली के उपचार को कस भूल सकता है- चाहे आज वर्षा ऋतु के मध उमड घुमड कर मूसलाधार ही बरस क्यों न रहे हो ।

जाति हितैषी और गुणग्राही कविराजा न महाराणा सज्जनसिंहजी के दरबार को अपनी विद्वता और वागपटुता के विलक्षण गुण से अलङ्कृत और आनन्दपूर्ण करने वाले - हास्य रस की मूर्ति उज्ज्वल क्षाया के चारण पतह-करणजी जैसे सुरभित सुमन का चयन किया। सदेह नहीं कि पतहकरणजी की प्रतिभा राजनीति के शुष्क और कटीले पथ को छाड़ सस्वत भाषा के गम्भीर तल में दशन, साहित्य, ज्योतिष आदि दुर्लभ रत्न के अन्वेषण में ही अनुप्राणित हुई और व चारण जाति में एक उज्ज्वल रत्न सिद्ध हुए ।

× × × ×

भारतवर्ष की जागति के जन्मदाता सुविख्यात स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती शास्त्राचार्य में दिग्विजय करते हुए स 1939 के आश्विन मास में उदयपुर पहुँचे। प्रत्येक विद्वान का प्रथम सम्मान करने वाले कविराजाजी स्वामीजी के नाम से पहिले से परिचित थे और उनकी अनुपम विद्वता और प्रतिभा पर मुग्ध थे। अत उ होने स्वामीजी को सादर सज्जन निवाग बाग में नवलखा प्रासाद में ठहराया और महाराणा सज्जनसिंहजी से भेंट कराई। महाराणा सज्जनसिंहजी ने भी ऋषिमूर्ति स्वामीजी के उपदेशों से प्रभावित हो प मोहनलाल विद्यालान पञ्चया की लिखन पढन का कार्य करने के लिये उनकी सेवाम नियुक्त किया और सात मास उनकी उदयपुर में रखा। लेखन के पितृ श्री चारुचंद कृष्णसिंहजी की अपना सहपाठी रखकर महाराणा स्वामीजी से मनुस्मृति पढत थे ।

उही दिने महाराणा के सभापतित्व मे परोपकारिणी सभा <sup>1</sup> की स्थापना की गइ । यद्यपि कविराजाजी राज्य काय मे व्यस्त थे तो भी समय समय पर स्वामीजी से मिलते रहते थे । कविराजाजी की सत्यप्रियता और नि शक्ता पर स्वामीजी मुग्ध थे । एक दिन स्वामीजी न कहा कविराजाजी । हम तुम्हारी चारण पाठशाला के छात्रों को भोजन करावेंगे । कविराजाजी चारण छात्रों को लेकर नवलखा गये और स्वामीजी के समक्ष सब छात्रों ने भोजन किया जिनमे इन पवित्रता का लेखक भी एक था और उस भव्य मूर्ति के दगन कर कृतकृत्य हुआ था । स्वामीजी की उस घन-गजन सदश गम्भीर ध्वनि के ये शब्द आज भी मेरी स्मृतियों मे एक निधि है कि "बच्चा ! तुम जन्म से तो चारण ही परंतु खूब विद्याध्ययन करके सच्चे चारण बनना ।

एक दिन स्वामीजी जब नवलखा के आने के मरे म बैठे थे महाराणा सज्जनसिंहजी, कविराजा श्यामलदासजी तथा मेरे पूज्य पितु श्री बारहठ वृष्णसिंहजी इनके दगन के लिये गये । बातें करते करते स्वामीजी ने मासाहार क दोष बताया । कविराजाजी ने इस पर आपत्ति उठाई और कहा कि मास खाने से मनुष्य के शरीर में शक्ति आनी है । स्वामीजी ने कहा, मास की अपेक्षा दूध अधिक शक्ति देता है मैंने सारी आयु मास के कभी शाय नहीं लगाया और चाहे शय मेरी आयु कविराजाजी से बड़ी है तो भी यदि आप दो को मैं अकेला कलाई से पकड़ लू तो आपको उसका छुडाना कठिन ही जाये । इस पर कविराजा ने उत्तर दिया कि इसका कारण दुग्धाहार नहीं किन्तु

1. इस सम्बन्ध मे 'बारहठ वृष्णसिंह का जीवन चरित्र और राजपूताना का अपूर्व इतिहास' के प्रथम भाग मे निम्न रूप से उल्लेख किया गया है ।  
 ' " पश्चात् अपने बाद अपने कायम मुकाम एक सभा मुकर करके महाराणा सज्जनसिंह को सभापति बनाकर सभा का नाम "परोपकारिणी सभा जिसमे और भी कई मेम्बर मुकर किये । इसके साथ ही स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपना वसोहृतनामा (नियमपत्र) बनाया जिसमे लिखा कि मेरे देहात के बाद मेरे स्थानापन किसी को नहीं बनाया जावे । यह 'परोपकारिणी सभा' ही मेरे स्थानापन होकर वेद विद्या पढाना व अनाथों का पालन करना अच्छे सत्य वक्ता विद्वानों को उपदेशक रखकर वेद मत का प्रचार करना, आदि परोपकारी काय करावें । इन नियमों के पालन का कुल भार महाराणा सज्जनसिंह पर छोडकर स्वामी दयानन्द सरस्वती फागुण महीना मे शाहपुरा गये ।"



भाजम ब्रह्मचय है। यह होते हुए भी महाराणा सज्जनसिंहजी के परनीक सिंघारने के स 1941 स लेकर घपन देहात पयत्त कविराजाजी झाकाहारी ही रह। प्रत्यक् सोमवार को कविराजाजी अपनी दाढी के बाला पर रग करत थे। उस दिन घर म मासादि बनते और इष्ट मित्रों का भोजन भी वही हाता। यह क्रम महाराणा सज्जनसिंहजी के स्वगवास तक बना रहा, बाद शाकाहारी हुए।

स्वामीजी के उदयपुर निवास काल म उनके पट्ट शिष्य प० श्यामजी कृष्ण वर्मा भी उदयपुर आये और ठहरे। वे तभी से कविराजा श्यामलदासजी के भी प्रीतिपात्र हुए। इसके बाद भी श्यामजी अपनी घमपत्नि भानुमति बाई के साथ कविराजाजी से मिलने के लिये उदयपुर आय थे। भानुमति बाई भी विदुषी थी। दोनो पति परनी का व्यवहार कविराजाजी के घर मे पारिवारिक सा रहा। एक बार कविराजाजी ने कहा-श्यामजी ! तुम्हारे सतान नही है ? श्यामजी ने कहा कि हम दानो, स्त्री-पुरुष का सकल्प है कि सतान उत्पन्न करेगे।

प्रश्न—क्या यह हाथ की बात है ?

उत्तर—हा हा, यह भी एक साइस है। वह हमार सास्त्रा से भी प्रमाणित सत्य है। हम दोनो उसे जानते हैं।

प्रश्न—क्यो नही ?

उत्तर—न होने से तो ससार खाली रहेगा नहीं किंतु यदि कुपुत्र हो जायेतो मेर नाम का कलकित कर सकना है और तब तो हमारी कमाई भी मिटटी मे भिन जाय। ऐसे सद्विध माग पर हम जाबें ही क्या ? हम अपनी कमाई का दश के लिए म्बय सदुपयोग करेग सतान की क्या जहरत ?

इन ही श्यामजी को मैं स० 1951 म मुसाहिब की हंसियत से एक हजार रुपय मासिक वेतन पर तीन वष की शर्त से उदयपुर लाया। उस समय कविराजा रामलक्ष्म्या पर थे। श्यामजी पांच वष उदयपुर म रहे और सब भगडे साफ करके महाराणा फतहसिंहजी को विजयी बनाया। बाद म गवर्मेण्ट आफ इण्डिया से बिगड जाने के कारण अपनी सम्पति लेकर श्यामजी सपरनीक विलायत चले गय और क्रांतिकारी दशभक्त प्रसिद्ध हुए।

×

×

×

×

आशुकवित्त, विलक्षण स्मृति और अनुपम अवधान शक्ति के उपलक्ष्य म भारतमातण्ड की उपाधि स विभूषि प० गट्टूलालजी भारत की विभूतियों में चिरस्मरणीय हैं। स० 1944 में वे उदयपुर आए। महाराणा फतहसिंहजी ने उनको महलो में बुलाकर अवधान कराया। इसके लिये कविराजाजी की प्रमुखता में विद्वथ-मण्डली इकट्ठी हुई। जमन, पारसी अरबी हिंदी डिंगल, संस्कृत, प्राकृत, अग्रेजी, लैटिन, ग्रीक फ्रेंच, बंगला मराठी, गुजराती आदि सोलह भाषाओं के विद्वानों 7 अपनी अपनी भाषा के एक एक छंद को सोलह टुकड़ों में विभक्त कर बिना अनुक्रम सुनाया और कहते गये कि मरे छन्द में यह पद अमुक मन्था पर है। सोलह ही पंडितों ने यह प्रश्न-पद्धति ली और बीच-बीच में घड़ी भी बजती रही। गट्टूलालजी ने प्रथम तो प्रत्येक को जिस क्रम से सुना उसी क्रम से व पद सुना दिये और फिर सब के छन्द रीति से पूरा कर यथा तथ्य सुना दिये एक बीच में क्रमशः घड़ी के कितने टिकोरे हुए वह भी कह दिया। फिर शतघटिकावधान हुआ अर्थात् एक घड़ी में सौ श्लोक नवीन बनाये, समस्यापूर्ति भी की। कविराजाजी ने विलोमगति की समस्या दी थी। फिर तीन पंडितों ने भिन्न-भिन्न विषय और रस के तीन चरण (पद) कहकर गट्टूलालजी को कहा कि श्लोक का चौथा चरण आप ऐसा बनावें जिसमें इन तीन चरणों का विरोध मिट कर पूरे श्लोक का एक आशय हो जाये। यह कठिन समस्या भी एक ही मिनट में पूरा कर दी गई। इस तरह से कई प्रकार से उनकी अवधान शक्ति की विलक्षणता सिद्ध हुई। महाराणा ने प० गट्टूलालजी को एक हजार रुपये पारितोषिक रूप में दिये। मेवाड़ रेजिडेंट जनरल स्मिथ ने कविराजाजी से कहा कि हम भी यह सब देखना चाहते हैं। आप रेजिडेंसी पर भी ऐसा ही प्रबंध करें। प० गट्टूलालजी का शतावधान रेजिडेंट सा० के यहां भी हुआ और गट्टूलालजी की इस धारणा शक्ति पर सब चकित हुए। यह प० गट्टूलालजी जन्माध, दुबल पतला शरीर काला रंग और बन्धूक व्यक्ति थे।

×                      ×                      ×                      ×

राजपूतान में सबसे प्रथम 'राजस्थान-महाचार' नामक साप्ताहिक पत्र चलाने वाले मनीषि समयदानजी अनेक बार उदयपुर में कविराजा साहब के पास आते रहे। प्रथम मुलाकात में कविराजाजी को यह मालूम नहीं था कि समयदानजी पासवानिये हैं। अतः कविराजाजी के सामने भोजन आने पर उन्होंने अपना शामिल भोजन करने के लिये समयदानजी की मनुहार की। समयदानजी ने बिना हिचकते हुए कहा कि मैं आपके धाल पर बैठने का अधिकारी नहीं क्योंकि पासवानिया चरण हूँ। सत्य पर मुग्ध होने वाले कविराजा ने उठ कर समयदानजी को छाती से लगा लिया और कहा, तुम

हजार असला से प्रच्छे हो। उसी जिन से कविराजा ममदगानजी की बहुत प्रतिष्ठा करने लगे और महाराणा माह्व तक भी उनका पट्टा चार 'राजस्थान समाचार' के लिये प्राथिक सहायता देत, दिलात रह।

कविराजा मा के स्नेही और मित्रों के विरतृत समुदाय म जिनक नाम मुझे अब स्मरण हैं, वे ये हैं डॉ रेवेरेण्ड शेफर्ड (उदयपुर), म म कविराजा मुरारिगानजी (जोधपुर), कोठारी बलवतसिंहजी, प्रधानमन्त्री मवाड, बारहठ कण्ठसिंहजी (शाहपुरा), राजराणा फतहसिंहजी (दलनाडा), डा सा मनोहरसिंहजी (सरदारगढ) डा प्रवचर अलीजो (महाराणा की चार पीढिया तक पसनल डाक्टर)।

× × × ×

कविराजाजी पर महाराणा सज्जनसिंहजी की वृथा होते ही एक जिन उहने फरमाया कि सावलजी! तुम जितनी प्राथमिकता समझो अपनी तनखाह बता दो, मैं उतनी ही मासिक तनखाह स्वीकार कर लूंगा। कवि राजाजी ने अज की कल पर हिसाब लगाकर अज करूंगा दुसरे दिन अज की - मुझे पौने चार सौ रुपय मासिक काफी होत है। यद्यपि महाराणा वृण थे, फरमाया-कि यह तो बहुत कम है, बडा परिवार है नाम भी बडा है अत ऊपरी खच भी अधिक होगा, घर के लोग जेवर वगैर भी चाहेंगे। कविराजाजी ने अज की मैं हुजूर के खजाने को पराया नहीं मानता, नहीं चाहता कि इसमें म ले ले कर घर भरू, ज्यादा जरूरत ही आ पड़ेगी तो मालिकों से माग लूंगा, अभी इतना हा काफी है और जेवर की तो सीमा ही ही नहीं सकती। वह भी एक लोभजनित सचय है। मेरा घर तो साधारण गृहस्त्री का सा बना रहे इसी म शान्ति है। जरूरी जेवर तो मेरी जायदाद की बचत से ही बनते रहेंगे जबकि घर का कुल खच मालिक बगस ही देते है। तब से ही पौने चार सौ रुपय मासिक मिलने लगे जो महाराणा फतहसिंहजी ने कविराजाजी के स्वगवास के बाद उनके पुत्र यशकरणजी के नाम पर भी कई वर्षों तक, जब तक कि कविराजाजी की धमपतिन विद्यमान रही, बहाल रहे।

× × × ×

कविराजाजी ने चारण जाति के सुधार के लिये उदयपुर म तीन बार कौमी कायदे बनाये जिन पर मेवाड के प्रधान चारण व्यक्तियों के हस्ताक्षर हुए। पहिली बार स 1936 के वैशाख म दूसरी बार स 1937 चैत्र शुक्ला 6 को और तीसरी बार स 1940 क आश्विन म। कि तु पारम्परिक फूट, ईर्ष्या और सगठन की कमी और जो कुछ हो उसको तोड़न के सहज दोषों और पापों से अभागी जाति उन कल्याणकारी चेष्टाओं से लाभान्वित न हुद।

स 1945 के कार्तिक म कविराजाजी ने कनल वाल्टर सा, ए जी जी के सभापतित्व म "देश हितकारिणा" नामक सभा स्थापित की जिसके मेंबर मवाड के सब बडे उमराव सरदार बने । वह भी कुछ ही दिन चली क्याकि महाराणा फतहसिंह जो प्रतिगामी विचारा के थे ।

× × × ×

कविराजाजी की सत्यता, स्पष्टता और राजभक्ति ने महाराणा सज्जनसिंहजी को इतना प्रभावित किया कि वे राजपूत जाति और राजपूत राज्यो के लिय समस्त चारण जाति को ही ईश्वरीय देन समझन लगे । उनके ऐतिहासिक अनुशीलन ने हृदय पर यह अमिट मुद्रा लगा दी कि यदि राजपूत जाति के पतन को रोकना हो तो पहिले चारणा का सुशिक्षित शरणा चाहिये । अच्छे बुरे व्यक्ति तो प्रत्येक जाति म होते ही ह परन्तु राजपूत जाति के ह्व म चारण जाति से बढकर निर्भय सलाहकार, पूण विश्वस्त और शुभचि तब नही मिल सकता । इसी बात को उहोन महाराजा जाधपुर जसवंतसिंहजी और महाराजा कृष्णगढ शाहू लसिंहजी को भी अनेक बार कहा । इसी विश्वास और स्तकार के कारण चारण बालको को पढाने के लिये महाराणा सज्जनसिंह जी ने कविराजाजी की प्रार्थना पर क्षत्रिया की वार्षिक ग्रामदानी का दशमाश त्याग म दना नियत करके यह नियम बाध दिया कि सौ रुपये की जीविका पर दश रुपये हुए उनम से पाच चारणो के लिय हो और व जिला हाकिमो की मारफत मगवा कर उदयपुर म चारण पाठशाला के नाम से मदरसा बनवा कर उसम चारणो के लडका को पढाई मे खच किये जावें । तदनुसार स 1937 मे पाठशाला और छात्रालय कायम हुआ उसमे छ मास्टर जिनम "गृध्रीराज चरित्र" नामक ग्रथ के कर्ता स्व रामनारायणजी दूगढ भी एक थे, नियत किये गये । मास्टरो एक पाठशाला व छात्रालय के अर्थ नौकरो का वेतन पठन पाठन की समस्त सामग्री छात्रो का भोजन-वस्त्र आदि समस्त खच राज्य एव त्यागकोष से दिया जन लगा और जब तक पाठशाला एव छात्रावास का स्वतंत्र भवन न बन जाय तब तक यथावश्यकता बडे उमराव सरदारो आदि की उदयपुर को हवलिमा म काम लिया जाता रहा । सबसे पहिले सोदा धारहडा के ग्राम राबछा ने बारहठ पहाड जी की हवलो मे इसका श्रीगणेश हुआ । उन छात्रा म यह लेखक भी एक था ।

प्रत्येक सोमवार को जहा महाराणा साहब की इच्छा होनी वहा चारण छात्रो सहित एक सभा होती जिसम उदयपुर के साहित्य रसक ठाकुर मनोहरसिंह जी डाडिया (सरदारगढ) आदि बडे उमराव एव कवि श्रेष्ठ स्वामी

गणेशपुरीजी<sup>1</sup> डिगल के प्रतिनिधि महियारिया मोडसिहजी, विद्वद्भर उज्ज्वल पत्रहकरणजी और शहर के अग्र कविगण भी शामिल होते। सभा पतित्व का आसन स्वयं महाराणा साहब ग्रहण करते और रस भलकारा की छानबीन में भाग लेते हुए निज कविता भी फरमाते। सब छात्रों को भोजनांतर माला आदि प्रदान की जाकर सभा विसर्जन होनी। यह सिलसिला प्रायः तीन चार साल तक चलता रहा।

उस समय एक सौ से अधिक चारण छात्र एकत्रित हो चुके थे क्योंकि बालको को जुटाने का भार कविराजाजी पर था। य दिन चारण जाति के लिये ग्रहाभाग्य के थे। परन्तु ईश्वर की सृष्टि में उलूकस्वभाव आदमी भी उत्पन्न होते ही हैं। इतनी सुविधा होने पर भी पाषाणजीवन अनेक चारण अपने बालको को उदयपुर नहीं भेजते थे। विवश होकर कविराजाजी जिला हाकिमा द्वारा पुलिस व जागीरी सवार भेजकर लडको को पकडवा मगाते। उस समय का दृश्य दुःख और कष्टना से भरा हुआ था। दुःख था चारणों की मूलता पर, कष्टना थी बालको को रुदनध्वनि को शत गुणित करने वाले घर के भीतर माता, भुवा, बहिन आदि और बाहिर पिता भाई, दादा आदि व बूढ़ कदन पर। बालक का एक हाथ होता सवार के हाथ में और दूसरा होता बाप आदि के हाथ में। इस ऐंजातानी में ग्रामीण सहस्त्रा गालिया पडती कविराजाजी के नाम पर। उनके घर और वस पर प्राग रवी जाती और रोम रोम में कीड़े पटके जाते। इस हाथ तोबा का शोर ग्रामवासियों को इकट्ठा कर लेता परन्तु सवार राज का है और लडका भी पकडा जाता है पदान के लिये, अत कोई क्या करता? इनमें कुछ अपनी बुद्धि पर अभिमान वाले भी थे जिन्हान अपने लडका को दूसरे राज्या में अपने सबधियों के यहा भेज देन की चतुराई की थी। हा, उत्तमोत्तम भोजन, वस्त्र और सेवा का मुफ्त का प्रबध सुनकर कुछ मारवादी बधु छात्रालय में भरती हान को बिना ही बुलाय ऐसे आ पहुँचे थे जिनके हाथा में लडकी के का हुक्का था और चेहरे पर थी दाढ़ी मूछों की सपन झाडी में छिपे हुए श्याम होठों के साथ आत हुए बुढाप की पगडडिया बत ने वाली ऋरियाँ।

कविराजा साहब और मने पितु श्री बारहठ कणसिहजी की प्रबल इच्छा थी कि चारण जाति अज्ञानकाल में अपनाई हुई गह्य वृत्ति और त्याग को

1 स्वामी गणेशपुरीजी द्वारा विरचित 'कण पत्र' वीर रस की प्रति उत्कृष्ट रचना है।

त्यागकर अपनी पूर्वं प्रतिष्ठा को प्राप्त करें। परन्तु सोभी, धुइ-हृदया और अविद्या ने फँसी हुई जाति से उस समय यह छाया रखना विडम्बना मात्र थी। अतः विवश होकर यही सोचा कि कम से कम मेवाड में मिलने वाले त्याग की रकम को एकत्र करके चारण पाठशाला एवं छात्रालय में लगाई जावे ताकि भ्रान्ति चलकर यह सत्स्था स्वावलम्बी बन जाय। यही प्रबन्ध किया गया। महाराणा सज्जनसिंहजी ने फरमाया कि इस सत्स्था को प्रादुर्भूत बनाना चाहता हूँ ताकि जयपुर, जोधपुर आदि के रईस भी ऐसा ही करें। इस विचार के अनुसार यह तैयार पाया कि पाठशाला और छात्रालय के स्वतंत्र मकान बनवाये जावें। इनके लिये महाराणा साहब ने अपने प्रिय सज्जननिवास नामक बगम के पार्श्व ही जो अहमदपुर से मिला हुआ है साठे पाँच बीघा के करीब जमीन माफी में प्रदान की जिसमें एक खपुल-जला बावडी भी है। साथ ही फरमाया कि इस मकान के लिये मेवाड के उमराव, सरदारों से पचास दा इकट्ठा करो, जितना चढ़ा इकट्ठा करोगे उतने ही रुपये राज्य से दे दिये जायेंगे किन्तु मकान के लिये एक लाख से कम रुपये न हों। कविराजाजी को किसी से कुछ मागने की चिन्ता ही नहीं परन्तु जाति सेवा के लिये चढ़ा माँगना स्वीकार किया। उनके प्रभाव और समझाने की सूची से सय बड़े उमरावों, सरदारों व सजातियों ने उत्साह और उदारता से अच्छा चढ़ा दिया। थोड़े ही दिनों में करीब चालीस हजार रुपये इकट्ठे हो गये और पाठशाला का निर्माण प्रारंभ हुआ।

जब स 1941 के क्षेत्र में जोधपुर के महाराजा जयवर्तिसिंहजी और वृष्णगढ के महाराजा सादूलसिंहजी उज्जयपुर में महंगा होकर भागे तब महाराणा दोनो प्रतिदिन नरेशों के साथ पाठशाला का प्रारंभिक निर्माण देखते गये। वहाँ उन्होंने जोधपुर महाराजा से कहा कि यह मकान तैयार हो जाने पर मैं आपको फिर उदयपुर मुलाऊगा और इसका उद्घाटन आपने हाथ से होगा। इसी प्रकार आप भी जोधपुर में चारण पाठशाला निर्माण करावें, मैं उसका उद्घाटन करूँगा। महाराजा ने यही प्रसन्नता से स्वीकार किया।

किन्तु चारण जाति ! 'ते हि नो दिवसा गता ।' महाराणा सज्जनसिंहजी का प्रसामयिक स्वर्गवास हो जाने के कारण उन शालीय हजार रुपयों में से ही तीस हजार लगाकर जितना बन सका उतना पाठशाला भवन गढ़ा करवा दिया और दोष रुपये बैंक में रखवा दिये जिन्म से प्रयोग की इति भी कविराजाजी के स्वर्गवास के बाद कविराजा मुरारिसिंहजी घाघिया द्वारा दूधपुर, बागवाड़ा चारणों को मेवाड में चारणों की तरफ से मदद के रूप में की गई।

वह मधुर स्वप्न टूट गया। जमा जमाया मण्डप दिन भिन हो गया। एपर ता चारण जाति क तिये सापमूर्ति मूय पारंग माता पिता मौरा पावर अपो अपन नडको को भगा से गये, उधर घामी टिकान का रावत अजु नसिह, जा अपने समय का महान भूत, दुष्ट प्रकृति घोर राजद्राही होन स बकिगजा श्यामलदामजी म जनता था उस भी मौरा मित्रा। सरदारा को बहवावर उसने त्याग की रकम पाठशाला क तिय दना व न ही करवा दिया। राज्य का हाथ भी गिपिल हो चुका। परिणाम, पक्षी उड़ गये घोर मूया सरोवर रह गया।

परतु विशा के मह्य पर मुग्ध कविराजा अपनी मनान को पठन-पाठन स बचित कैम रखते ? दस रुपय मासिक कविराजजी न, दस रुपय मासिक बारहठ वृष्णसिंहजी न और दस रुपये मासिक मेमपुर ठाकुर चमनसिंहजी न घर से देना तय करके तीस रुपये मासिक तनहाह पर काशी स दक्षिणी ग्राह्याण प गोपीनाथजी शास्त्री का बुलाकर हम छ. बालवा कविराजाजी के दत्तक पुत्र यक्षकरणजी, बारहठ वृष्णसिंहजी क पुत्र कसरीसिंह (लेखक) और विगारसिंहजी, ठाकुर चमनसिंहजी क पुत्र करनीदानजी और भैरवसिंहजी और कविराजाजी के साकू क पुत्र आशिया चालकदानजी का अध्ययन के तिय उनके सुपुद किया। इन छात्रो की दो श्रणिया थी। प्रथम श्रेणी म यह लेखक और चालकदानजी, दूसरी म उपरोक्त शेष चारो। पहिले हम कविराजाजी की बाटिका श्यामलनिवास बाग ही म रहते और पढते। सस्कृत का ही प्रधान पठन पाठन रहता था।

यह स्थिति कविराजा साह्य व बारहठ वृष्णसिंहजा को सतोषप्रद न थी अत आनिर उ हान महाराणा फतहसिंहजी स अज का कि हमारे लडको को तो हम अपन खच म पढा लेवगे परतु मन्तरसा पाठशाला बंद हो जाने से चारणा क दूसरे लडक मूल रह ज वेग। इसम हजूर की भी ब्रदनामी होगी कि महाराणा सज्जनसिंहजा न कृपा करके मदरसा जारी किया था वह महाराणा फतहसिंहजी के जमान म बंद होकर चारणा के लडके सूख रह गये। इसलिय ज्यादा नही तो सिफ गिहको की तनहाह क लायक खच राज्य स कर बरसे, बाकी खुराक पु तक आदि का रच लडका के माता पिता देग। मदरसा जारी हो जान स हजूर के हाथ से चारण जाति का बडा उपकार होगा। महाराणा को यह बात पसद आई और स 1943 पोप गुफ्ना 2,अपन जन्म दिन के उत्सव पर महाराणा फतहसिंहजी पाठशाला के मकान म पधारे और उसका

उदघाटन किया एव मास्टरो की तनखवाह व लिये दा रुपय रोज सदा राज्य से मिलत रहने का आदेश दिया । हम उसी दिन से उक्त पाठशाला भवन म मय प गोपीनाथजी शास्त्री के आ गये । ठा चमनसिंहजी के तृतीय पुत्र तेमराजजी और मेरे कनिष्ठ भ्राता जोरावरसिंहजी भी पीछे से महा भर्ती हो गय और पढ़ते रहे । स 1944 के बाद बीच बीच मे कविराजाजी ने अपने क्लब प गौरीशंकरजी भोपा को भी बालकों को अंग्रेजी पढान के लिये नियत किया था । किन्तु इस व्यवस्था मे मेवाडी चारणा का अपन बालको का पढ़ने के लिये भेज कर खर्चा बर्दाश्त करना उस समय असभव था ।

स 1946 के अंत मे प्रथम धेणी के दोनो छात्र उत्तीण होकर पाठशाला छाड चुके-चालकानजी स्टेट प्रेस (सज्जन मंत्रालय) क मैनेजर हो गय और मरा विवाह हो कर मैं महाराणा फतहसिंहजी की सेवा म चला गया । स 1951 मे मेरे दोनो भ्राता किशोरसिंहजी और जोरावरसिंहजी जोधपुर चल गये और वहा हाईस्कूल मे पढ़ने लगे । कविराजाजी के देहात के बाद यशकरणजी ने पढना छोड दिया और बाद म खेमपुर वाले तीनो भाइयो ने भी पाठशाला से अवकाश ग्रहण किया । शास्त्री गोपीनाथजी हाई स्कूल मे हैंड पडित हो गये और चारण पाठशाला पर फिर से ताला पड गया ।

मेवाड के योग्य चारणो ने समय समय पर इस पाठशाला को जारी करने क प्रयत्न किये परन्तु एक तरफ तो महाराणा फतहसिंहजी की विद्या प्रचार स विमुखता और दूसरी ओर कविराजाजी के अयोग्य उत्तराधिकारी यशकरणजी की स्वाधरता एव उनके निकटस्थ सहयोगियो की अहम्भावता-कि पाठशाला का यह मकान और बाडी कविराजा श्यामलदासजी की संपत्ति है और उस पर हमारा ही एकाधिपत्य है-इस ऐंजातानी मे पाठशाला पर ताले पडे ही रहे । फिर भी वतमान पीढी के उत्साही जाति-हितैषियो की मन्ची लगन के सतत प्रयत्न के परिणाम स्वरूप उस पाठशाला का रूपांतर श्री भूपाल चारण छात्रालय स्थापित हो गया है । वतमान महाराणा भूपालसिंहजी ने उस पाठशाला के मकान और बाडी को तो राजकीय मोटर नैरेज बनवाने के लिये जप्त कर लिया और उनके बदले मे मकान की कीमत के तीस हजार रुपय और उतनी हा जमीन मूरजपोल बाहिर हवाले म प्रदान कर दी जिसमे छात्रालय बन जाने पर स 1994 चैत्र कृष्णा 8 गुरुवार को स्वयं पधारकर उसका उदघाटन किया और डार्ड सी रुपय वार्षिक राजकीय सहायता मिलत रहन की आशा प्रदान की । तब से यह 'श्री भूपाल चारण छात्रालय'



चल रहा है। परंतु चल रहा है उसी स्वार्थी और मिथ्याभिमानो मवारी पितृपितृ और ऐंभानो म ।

× × × ×

बविराजा श्यामलदासजी को अनुभव हुआ कि जातीय मुधार के लिये हुए स्थानीय काय पारस्परिक द्वेष के कारण सृष्ट ही टूट जान है और जब तक चारण जाति की चिरमगिनी राजपूत जाति म मुधार न हो तब तक चारण जाति भी नहीं उठ सकती, और यह काय व्यापक रूप से और स्थायी ठनी हो सकता है जब राजपूताना के एजेंट टू दी गवनर जनरल इस काय को हाथ म ले लें। वनल वाल्टर माह्य बविराजाजी के मित्रो म से ये और व उस समय राजपूताना के एजेंट टू दी गवनर जनरल के पत्र पर पहुच चुक थे। अत बविराजाजी ने यही उपयुक्त समय देख कर वाल्टर साहब को समझाया कि समय पाकर मुधार तो हागा ही किंतु आप ही इसका प्रारंभ करें तो राजपूत और चारण जाति व हितपिणा के साथ अरका नाम चिरस्थायी हो जावेगा आदि। वनल वाल्टर तैयार हा गये और राजपूताने के रईसो को लिखकर हरेक रियासत के बड़े रजों क प्रतिष्ठित और योग्य उमराव क्षत्रियो और चारणा को अजमर म एकत्रित किये एव स 1944 अंत वदी 13 का 'वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा' के नाम स स्थायी सस्था कायम की जिसन राजपूत और चारण इन दो जातियो के लिये शादी गमी आदिक जातीय मुधारा पर कायले बनाय ।

× × × ×

महाराव रामसिंहजी के जमाने म स 1945 म आय समाज के प्रसिद्ध व्यक्ति स्वामी नित्यानंद सरस्वती और स्वामी विश्वेश्वरानंद सरस्वती के बू दी जान पर, महाराव न अपन भूतपूर्व महामात्य एव भागवत की अविताथ प्रकाशिका टीका और 'यायप्रदीप आदि ग्रंथो के रचिता पंडितवर गंगासहाय, पंडित नवनदाचाय, पंडित हरिदाम और पंडित ताताचाय स उरका शास्त्राथ कराया और हारजीत का निणय होने से पहले उन दोना को अपमानित करके बू दी राज्य की सीमा स बाहर निकलवा दिया। यही नहीं उसी वष के माघ मास मे वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा का अजमर म अधिवेशन होने पर, महाराव की आज्ञा स बू दी राज्य के प्रतिनिधियो ने रखा कि हमारे महाराव सा ने कहला भेगा है कि आय ( सव लोगो का धम अष्ट करते है, इसलिए स प्र । प्र । किमो राज्य म घुसने न पावें। यह सुन

नहीं हो सकता, क्योंकि आपके महाराज रामानुज-सम्प्रदायी हैं, हमारे यहाँ एकलिंगजी की पूजा होती है और जयपुर में गोविन्द देवजी की पूजा है। इसी प्रकार औरों के भी एक न एक पूजा है। इस दशा में यदि प्रत्येक राजा, प्रजा को अपने अपने मत की अनुयायी बनाना चाहें तो वह किसकी मतानुयायी होगी। वास्तव में धर्म के मामले में कोई किसी को रोक नहीं सकता। आपके महाराज सा ता बुद्धिमान हैं उन्होंने ऐसा प्रस्ताव कैसे किया ?

×                      ×                      ×                      ×

जिस समय मैं सौल्ह चप की अवस्था में शुक्रनीति पढ़ रहा था, गुरुजी से समाधान न होने पर मैंने एक दिन कविराजा साहब से, जिनको मैं अपने रिश्ते से बाजीसाहब कहता था, पूछा कि एक ही प्रयत्न करने एक ही प्रयत्न में विरुद्ध सिद्धांतों का कैसे प्रतिपादन कर सकता है ? शुक्राचार्य में सरल, शुद्ध और सत्य से प्रतिष्ठित नीति को ही मुख्य माना है परन्तु कूटनीति भी बता रही है और उसका भी प्रतिपादन करते हैं-यह विरोध क्यों ? बाजी साहब ने कहा-मया कि तू प्रथम पाठ्य विषय को ध्यान में पढ़ता है इससे मैं प्रसन्न हुआ। अभी तुम्हारी बुद्धि बच्चों की है इसी से तुम्हें दाना नीतियों में विरोध दीखता है। उदाहरणार्थ एक युद्ध शास्त्रकार तलवार की महिमा और प्रयोग बतलाता है और वही डाल का प्रयोग भी बतलाता है जो दोनों भिन्न प्रतीत होते हैं। परन्तु जहाँ शास्त्रज्ञ में तलवार की मुख्यता है वहाँ आत्मरक्षा में डाल की महिमा है। इसी प्रकार नीति तो शुद्ध, सरल, और सत्यता लिये हुए ही श्रेष्ठ होता है और उसी का आचरण करना चाहिये। परन्तु सत्कार में प्रपञ्च, और दुष्ट पुरुषों की कमी नहीं। उनके आघात से अपने को, समाज और देश को बचाने के लिये कूटनीति ही काम देगी। अतः कूटनीति को केवल डाल के तौर पर काम में लाओ, किसी की हानि पहुँचाने की नीयत से कदापि नहीं। केवल कूटनीति पर चलन जाने समाज की हानि ही पहुँचाते हैं। ऐसे लोग को स्वार्थ साधन में सफलता हो जान पर भी उनकी गिनती श्रेष्ठ पुरुषों में नहीं होती। श्रेष्ठ वही है जो श्रेय को प्रधानता दे कर प्रयत्न को प्राप्त करता है बल्कि प्रयत्न का भी त्याग कर देता है। श्रेय पर चलना ही शुद्ध नीति है।

×                      ×                      ×                      ×

महाराजा सज्जनसिंहजी के स्वर्गवास बाद कविराजाजी की प्रबल इच्छा थी कि वे सन्ध्या से लें। उन्होंने अनेक बार कहा कि प्रबन्ध मेरे जीवन में दो ही काम बाकी हैं। एक तो "वीरविनोद" छप कर वितरित हो जाय और दूसरा

बाई बलजी (कविराजाजी की सयने छोटी पुत्री जिसकी व बहुत ध्यान करने थे। का विवाह हो जाय। वह विवाह म 1947 क फातुन म जाग्रपुर क कविराजा मुरारिजी क पुत्र मणेरदानजी के साथ ग्राम टाकलिया म बरी धूमधाम से किया गया। यह भी एक अप्रूप समाराह था। अप्रूप इमलिय कि कविराजाजी के अनुपम प्रभाव और प्रेम का इग अवसर पर विशाल दशन हान के साथ ही लाघो रुपये रख करने पर भी जो नहीं हो सकता वह इमम था। पैस के जोर से हजारो ध्वनिधो का दृजूम, उमक लिये पटरस ध्वजन और दी मालिका सा चारविषय एवं बढिया से बढिया नृत्यगान कोइ भी करा सकता है। इममे स यहाँ किसी की विशेषता न थी, विशेषता थी इसकी कि मवाड राज्य के प्रधानमंत्री कोठारी बलवत्सिंहजी से लेकर प्रत्येक महकन के बडे मॉक्सिटर, सब जिन्नी के बडे बडे हाकिम और उमराव सरदार प्रेम भर सवा भाव से स्वेच्छानुमार हाय म लिय हुए छोटे से छोटे काय को भी नम्रता की हँसी लिये हुए दीडे दीडे कर रहे थे। जान ही नहीं पडता था कि य भी हजारो पर हकूमत करने वाले सम्माननीय पुरुष हैं कोई तैत्पान ल्वाये डरों डरों जाकर दीपक सुलगवा रह हैं, काई भोजन बनवा रहे हैं, कोई भोजन करवा रहे हैं, कोई झूठी पतले उठवा रहे हैं और काई अपने अधीना को सफाई का सबक अपने हाथ से सिखा रहे हैं। कोई भी विभाग ऐसा नहीं था जिसमे राज्य के स्तभ स्वरूप ध्वषित काय मे तल्लीन न हो रहे हो। और कविराजाजी? कविराजाजी अपने स्थान पर निश्चित बठ हुए बातें कर रहे हैं। समस्त मेवाड के प्रवध करने वाला को महाराणा न विवाह क उपलक्ष म छुट्टी दे दी है और उन्होंने सब भार स्वयं उठा लिया है। कविराजाजी को केवल अपने प्रभाव और प्रेम का निरीक्षण करते हुए सुख अनुभव करने क लिए छोड दिया। कौन कह सकता है कि कविराजा केवल महाराणा सज्जनसिंहजी की कृपा के बल से ही बलीमान थे। हुजूमत के साम्राज्य की अपेक्षा प्रेम का साम्राज्य ही महान् होता है और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण था कल्याणबाई का विवाह। दोकलिया ग्राम का एक एक पत्थर मुस्बुरा रहा था।

इन भागलिक आनंद भरी लहरों मे एक घटना अप्रिय-सी हो गई। वह थी कविराजाजी के तत्रस्थ बाधको की मूखता। ये ग्राम के पुशतनी छुटभाई सदा से ही कविराजाजी के विशद विद्रोह करते आ रहे थे। ये राज्य से हारकर भी अपनी उददण्डता का शमन न कर सके। उनके विपरीताचरण की शिकायत उदयपुर पहुंचने पर महाराणा सा का आदेश हुआ कि उनके बडाये हुए घर फौरन गिरा दिये जायें। राजाजा को कौन रोक सकता था? बीसो बुदा-

लियां एक साथ उठ गईं और देखते ही देखते घर भूमिसात् हो गये। इधर के गायन वादन के साथ उधर का प्रथम नाटक हनुवें म नमक का सा स्वाद बन कर अप्रियता की क्षीण लहर बन रहा था। कविराजा एक दिन इसी से उदास रहे। कोई कविराजा को बाधव विरोधी न बहे इस भ्रम का दूर करने के लिये ही कविराजाजी ने 'वारविनोद' में अपनी जीविका के प्रमाण पत्रों का स्वतंत्र निवेद्य लिखा है और वह पुस्तिकाकार में अलग भी छपा है। इसकी भूमिका को पत्र लेने के बाद कोई भी कह सकता है कि वे बाधव कितने मूख थे जिन्होंने उस उदार हृदय से लाभ न लेकर नाहक ही उस सतप्त करने में अपनी वीरता समझी। परंतु आखिर कर्मों का फल उनही को भागना पड़ा और तब शांत हुए।

× × × ×

मैंने प्रथम उल्लेख किया है कि महाराणा सज्जनसिंहजी के स्वगवाम पश्चात् कविराजाजी ने एक प्रकार से राजनतिक स यास ले लिया था केवल इतिहास कार्यालय, विद्याविभाग और महाराज सभा की मवरी अपने हाथ में रखा। महाराणा फतहसिंहजी की गद्दी पर बैठते ही बनल वाल्टर रजिडेंट मेवाट ने गवर्नेट की तरफ से कविराजाजी का हुकुम सुनाया कि जिस तरह महाराणा सज्जनसिंहजी को मौजूदगी में आप और महता प नालालजी काम करते रहे उसी मुआफिक अथ आगे भी काम करते रहो। लेकिन कविराजाजी ने काम करने से इन्कार कर दिया और कहा कि महाराणा सज्जनसिंहजी के बिना हुकूमत करना मुझे अच्छा नहीं लगता अतः तवारीख बनाने के सिवाय दूसरा काम करना मुझ मजूर नहीं।

परंतु महाराणा फतहसिंहजी भी जानते थे कि कविराजाजी जसा व्यक्ति दूसरा नहीं अतः कठिन कामों पर कविराजाजी का ही आगे करते थे। ऐस प्रमगा में कोटा की सगाई का विषय एक है और वह अति लक्ष्य में यो है -

मवत् 1945 के आषाढ में कोटा के महाराज सत्रुणाजी के स्वगवास और वतमान महाराज उम्मेदसिंहजी की गद्दीनगीनी के बाद ही कोटा में गृहकलह का तूफान उठा जिसे शांत करने के उन्प्राय में काटा के पोलिटिकल रजिडेंट रायट से और झालावाड के पोलिटिकल गजेट मार्टिडल लग हुए थे। फिर भी अशांति घटती ही जाती थी। अतः वे दानी आफिशर तस्लीन ए जी जी बनल वाल्टर को कोटा बुलाना चाहते थे। एम ममय में महाराणा फतहसिंहजी ने बनल वाल्टर से को लिखा कि मैं अपनी बड़ी राजपुत्री की

सगाई कोटा के महाराव उम्मत्सिहजी से करना चाहता हूँ आप इसमें मुझे मदद दें। मैं यहाँ से आपके मित्र श्रीर मेर विश्वस्त मुनाहिब महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदासजी को राजतिलक का दस्तूर लेकर कोटें भेज रहा हूँ और उनका सगाई की बातचीत तै कराने का पूरा अधिकार भी देना हूँ।

॥ जी जी बन-वाल्टर ने कोटा के पोलिटिकल रेजिडेंट को सगाई के काम में कविराजाजी को पूरी मदद देने का आदेश भेजा और उधर महाराणा को लिखा कि टीका (तिलक) का दस्तूर चढ़ रोज बाद भेजा जावे तो भी कोई हज़ नही मगर आप कविराजा श्यामलदासजी को बहुत जल्द रोटा खाना कर दें ताकि वे वहाँ राणियो आदि सबको समझा-बुझा कर शांति स्थापन करने में हमको मदद दें। इस पर महाराणा ने कविराजाजी को बरसते हुए श्रावण मास में कोटा खाना किया। कविराजाजी पंद्रह दिन कोटा में रहे और उनके सहयोग से पोलिटिकल एजेंट को सतोप हुआ। टीका महारावजी सा के नजर हो गया और सगाई की सब बातें तै हो गईं। कविराजाजी की इस सफलता में बाधा देने वाले कोटा के प्रधान कामचारियों ने भी अपने प्रपच में कमी न रखी। और इसका कारण था, विश्वस्तचोरी की चाट पर चढ़े हुए स्वामियों को इतने बड़े काय में जहाँ दो पाँच लाख पर हाथ साफ करने की भाशा थी एक पाई भी विश्वस्त में न मिलना। इसी से भूखे भेडिय के समान क्रुद्ध होकर उन्होंने बूटनीति की चालों से खूब ही ऐंजातानी मचाई यदि दूसरा हाना तो जल्द खबरा जाता, परंतु वहाँ तो मुकाबला था सच्चे स्वामिभक्त, निघडक सत्वरदती, नि स्वार्थी और सिंह समान तजस्वी कविराजा श्यामलदासजी से।

जब कोसिल के प्रपची प्रधान व्यक्तियों ने देखा कि इसी समय इस सगाई के सबंध में ही वृष्णागढ़ और रतलाम के भले आदमी आए हुए हैं और हमने उनसे अपनी लेन देन की बातें त भो कर ली है परंतु पोलिटिकल एजेंट कविराजाजी की मुट्ठी में है अत हमने भी जयानी हा में हा मिला लेनी होगी, फिर भी यदि तहरीर को टाल दी जाय तो बाद में बाजी हमारी होगी क्योंकि बारबार कविराजा धाड़े ही आवेंगे? यही भाविकरी पास फेका गया। जिस दिन रेजिमेंटी का कोठा पर कोटा कोसिल के वे मँवर और रेजिडेंट के साथ कविराजाजी एकत्रित हुए और कविराजाजी ने शर्तों का तहरीर में लाने का प्रस्ताव रखा उस समय एक मनचले स्वार्थी ने कहा कि ठीक है, शर्तें बगर सब बातें हो ही चुकी हैं रही लिखा पढी मो इसके लिये आप उदयपुर जाकर महाराणा सा का खरीना राज बाजावना किसी अहलहार के साथ भेज दें तब

यहाँ से भी वे शर्तें तहरीर में करदी जायेंगी। कविराजा इस चाल को ताड गये और एजेंट सा से कहा कि ये लोग हैं पक्के रिश्वत के चटोरे, जो कु जड़ियों की धाक तब छीन कर रोज रोटी खाते हैं, इतने बड़े काम को आपके हाथ से सूखा बन जाता देख दु खी है और मौका टाल रहे ह। ये लोग नहीं जानते कि मेरे मालिक ने अपनी वह छाप जो खास रूबको पर महाराणा के हस्ताक्षरों के रूप में लगाई जाती है, मेरे हाथ में दे दी है। इसीलिये मुझे खास रूबका लिखने का पूर्ण अधिकार है वह लिख देता हू। फौरन पोलिटिकल एजेंट ने मेबरों को धमका कर कहा कि आप लोग नाहक धाधनी करत हैं, कविराजा साहब का कहना बिलकुल ठीक है। अभी यही सब तहरीर हांगो, भाइदा क लिये कुछ नहीं छोडा जावेगा। फिर विसफी मजाल थी कि चू करते। कोटा कौंसिल के योग्य, निर्भय और रिश्वत से दूर रहने वाले मेबर प शिवशंकरजी ने कविराजा साहब के प्रस्ताव का स्वागत किया और उसी समय तहरीर पर सब मेबरा के दस्तखत हो गये।

इस सगाई काय की सफलता में जो जो बठिनाइया उपस्थित हुई उनको स्वयं कविराजाजी ने स 1946 भाद्रपद शु 3 के दिन लिखे हुए अपने पत्र में सविस्तार प्रगट की है। यह ऐतिहासिक पत्र मेरे पितु श्री बारहठ वृष्णमहजी के नाम और महाराणा फतहसिंहजी को सुनाने के लिये लिखा गया था और उसी का संक्षिप्त उपरोक्त है।

। × × × ×

महाराणा फतहसिंहजी के समय बाणी (बनारस) के "राणा महल" की जमीन पडोसियों ने दबा ली थी अत महाराणा ने कविराजाजी को बनारस भेजा। उन्होंने जितनी जमीन "राणा महलो की थी उसे फिर से बच्चे में ले हदबनी करादी और मामले को मुकदमे में नहीं पडने दिया वरना बहुत खचा होता। उस समय महाराजा बनारस कविराजाजी से मिले और बडा आतिथ्य किया एव एक् बहुत बडी खिल्लत देने का आग्रह किया। परंतु कविराजा साहब ने यह कहकर सादर अस्वीकार कर दिया कि मैं महाराणा के सिवाय किसी से कुछ नहीं लेता।

× × × ×

कविराजाजी की स्वाभाविक तेजस्विता ईदवरीय देन थी और उसका दूसरा पर पडने वाला प्रभाव अनिवाय परिणाम था। सत्य के बट्टर उपासक होने से उनकी निर्भय बाणी ने उस तेजस्विता और प्रभाव को अमोघ बना दिया इसीलिये नये ब्यक्ति के लिये उनका हृदय टेंटोल लेना भी समस्या थी।

कविराजाजी का हृदय बहुत ही कौमल, क्षमाशील, दयालु, और गंगा प्रवाह के समान शांत गभीर और सरस था। मैंने उनकी क्रोध करत कभी नहीं दखा। हा उनको डांट-फटकार दूसरे को कौपा दती थी। फिर भी उनके चहरे पर क्रोध के चिह्न कभी नहीं आये। डांट-फटकार के बान ही उनकी क्षमा अपन आप ऊपर उभर आती थी। यही कारण है कि उनका हाथ स किसी न हानि नहीं उठाई।

दो बाता स उनको महान् विड थी। प्रथम किमी रूप मे भी स्वामी का विद्रोह द्वितीय स्वाथका सत्य का गला घोट कर प्रपञ्च से अमत्य की जय चाहना। कविराजाजी के स्वभाव सकरप को उही का एक दोह स्पष्ट कर सकता है—

सू क लेन<sup>1</sup> अरु स्वामि धन, हरन, करन छल ईस,<sup>2</sup>  
तीन दाग कविराज ने, तज सु बिमवा बीस ॥

रिश्त लेना, स्वामी के धन को दबा लेना और मालिक स छत्र करना इन तीन बाता को दाग मान कर कविराजा ने बीस ही बिस्वा त्याग ले थी। य दाग जहा भी हाते वहा कविराजाजी की कभी नहीं पटता था। इसीलिय विस लोग कविराजा को अपना शत्रु समझन थे। वास्तव म ही कविराजा ने उनके साथ कभी मेल नहीं किया। उदाहरणाय, एक घटना का उल्लेख करेगे।

महाराणा सज्जनसिंहजी क समय म मवाड म दो ही प्रधान व्यक्ति<sup>2</sup> थ। महता पन्नालालजी, जो महाराणा सभूसिंहजी के जमाने से राज्य के प्रधान कर्मचारी बने हुए थ और मवाड के रेजिडेंट आदि प्रत्येक अग्रेज को सब प्रकार से प्रसन्न रख कर अपन अनुकूल बनाया रखते थे। सवह नहीं अपड हान पर भी वे बहुत ही होशियार मधुरभाषी दूरदर्शी और पबध काम मे दक्ष थ। किन्तु माय ही थे परल सिरे क रिश्तखोर। घर म लावा रुपय सचित विग और इसी धन के जोर स महाराणा सज्जनसिंहजी क पनर्त्सिंहजी क विराध म भी अपने आप को बनाय रखा। दूसरे थे कविराजा श्यामलदासजी जा सत्य क

1 रिश्त लेना।

2 उस समय राज्य प्रपञ्च के डा भाग थे। माल-महवमा महता पन्नालालजी के, और नेप प्रब ध याय, गिदा आदि का प्रधान मंत्री कविराजाजी के हाथ म था।

प्राधार पर नगी हमशीर ये, वेनाग ये श्रीर ये लल्लू-घण्णू से नफरत करन वाले, स्पष्ट बक्ता, प्रबन्ध को निभाने में ही नहीं बल्कि नवीन रूप देकर चलान में चतुर, परम स्वामिमक्त श्रीर रिश्वत के दुश्मन ।

इन पारस्परिक गुणावगुणों के कारण उपरोक्त दोनों प्रधान व्यक्तियों में न पटना स्वाभाविक था । महाराणा इसको जानते थे । अतः एक दिन उ हाने अपने इन दोनों प्रधान व्यक्तियों को एकांत में बुलाकर फरमाया कि मेरे घर में तुम दोनों ही असाधारण व्यक्ति हो परंतु दोनों में अन्वयन है । यदि तुम दोनों ही एक दिल होकर, मित्र बन कर काम करो तो मेरे राज्य का कितना उत्तम हित है । अन्वयन होने से जो हानि होती है वह भी मिट जाय । इसलिए मेरी इच्छा है कि तुम दोनों ही आज से मित्रता का पालन करो और मेरी गद्दी को स्पर्ण करके प्रतिज्ञा करो कि एक दूसरे के विरुद्ध न जाओगे । प्रतिज्ञा कर लेने पर हमारी तरफ से गाबी (छानी) हुई अमल (अफीम) एक दूसरे के हाथ पीघो और दू मित्र बन जाओ ।

तुरंत ही पन्नालालजी ने आज्ञापालन में तत्परता बताई परंतु कवि राजाजी चुप रह । जब महाराणा ने इस मौन का कारण पूछा तो कविराजाजी ने अज्ञ की कि प्रतिज्ञा से पहले यह तो निश्चय करे कि हमारी अन्वयन का कारण क्या है ? मैंने पन्नालालजी के बाप को मारा न इनका घर छोड़ा, न पन्नालालजी ने ही मेरे बाप को मारा, न मेरा घर छोड़ा तो फिर यह अन्वयन क्या ? पहले इसकी जड़ पर ही कुठार रखना चाहिये फिर इस विरोध का नाश स्वतः हो जायगा । डूजूर उस जड़ (कारण) को पकड़ें और उसी के लिये प्रतिज्ञा लिवायें । महाराणा ने कारण पूछा तो पन्नालालजी ने कहा—मरी तरफ से तो कुछ नहीं है कविराजा साहब ही इसे स्पष्ट करें । पूछने पर कविराजाजी ने अज्ञ की—यह ह पक्के रिश्वतखोर और अपना स्वायत्त साधन में सहज ही स्वामी के विरुद्ध हरामखोरी पर उतर आने वाले । इन दोनों बातों को डूजूर भी जानते हैं, मवाद, भर जानती है और राज्य के कागज त जानते हैं । यदि य आज गद्दी के हाथ लगा कर इन दो बातों को तिलाजलि द द तो मैं गई—गुजरी बाता को सबथा भून कर इसी क्षण से इनको अपने सहोदर के समान मानकर प्रेम करूंगा, सम्मान करूंगा और सदा इही को भाग रख कर काम करूंगा । यदि मैं अभी लिहाज में आकर मंत्री की प्रतिज्ञा कर लू तो नतीजा यह होगा कि ये तो अपने स्वायत्तता पर चलेगे ही मैं बाधा दूंगा और डूजूर से भी सब कहूंगा । तब सबव है डूजूर के ध्यान में भी मैं ही दोषी ठहरूँ



कि पनालालजी तो अभी कुछ नहीं कहते, दयामन्म ही प्रतिज्ञा तोडकर चुगली करता है। हुजूर का यह ख्याल भी ठीक नहीं कि हमारे विराध से राज्य को हानि पहुचती है या पहुचगे। अभी तो य मरै डर से एक एक के कन्म उठात है, अगर चुप हो जाऊगा तो ये सारी मेवाड को चाट खायेंग और हुजूर के अधिकारी पर भी जोफ पहुचगा। यदि ये उपरोक्त दोनों बातों की प्रतिज्ञा लेना चाह तो हुजूर लिवाले। मैं जाता हूँ, क्योंकि सम्भव है मर दोषा का प्रकट करन मे ये बनिया वृद्धि के कारण हिचकन हा। अत हुजूर खानगा म पूछ लें और मुझे फरमा दें। मैं अपनी जो कोई वास्तविक कमजोरिया या दोष होंगे तो उन पर माफी मागन और कथित प्रतिज्ञा करन पर तैयार रूँगा और इनके ही सामने गद्दी स्पश करन मित्र बन जाऊँगा।

यह किस्सा स्वयं कविराजाजी का फरमाया हुआ है। यहा इसका उत्तम किसी व्यक्ति को निंदा करने की निमत से नहीं, बवल कविराजाजी का स्पष्ट वादिता दिलान के लिये किया है।

×                    ×                    ×                    ×

मेवाड में यह तो लोकविदित है कि महता पनालालजी ने कविराजाजी के साथ द्वेष अत तक निभाया। किंतु महाराणा पतहसिंहजी ने उस द्वेष का बुरा असर कविराजा पर उतना नहीं आने दिया क्योंकि व भी कविराजाजी का अपना पूरा विश्वस्त स्वामिभक्त समझते रह और यह भी जानत थे कि पनालाल अभी मुझे धक्का दगा। परंतु दो लोभिया का एक मत अभी हा ही जाता है। और इसमे पनालालजी कुछ सफल हो हो गये, अर्थात्-

महाराणा सज्जनसिंहजी प्राय प्रतिवप ही कविराजाजी के ग्राम, बाग या हवली पर पधारते थे और इन पधरावणियों मे होने वाला खचा राज्य से दिये जाने का हुक्म भी हो जाता था क्योंकि महाराणा खूब जानते थे कि कविराजा के न तो ऐसी बड़ी जीविका है और न इतनी बड़ी तनक्वाह कि जिस पर यह खच का बोझ उठ सकता है। परंतु चतुर महाजन पनालालजी उस खच को कविराजाजी के नाम उधार खाने में लगात रह क्योंकि हिसाब का महकमा उही के हाथ में था। इस खच के कामजो को उहाने दयाय रखा और जब स 1944 में महाराणा पतहसिंहजी के गद्दी बैठे। उसके बाद दूसरे राजकुमार पैदा हुए उस खुशी में महाराणा ने खूब उत्तारता लिवाई जिसमें लेखक के पितु श्री को भी पाच हजार रुपये नकद और एक हाथी एव मोतिया की बहुमूल्य कठी व सिरोपाव बन्से गय थे। इस प्रसंग पर महाराणा ने पनालालजी से

पूछा कि कविराजजी को क्या दिया जाय ? पन्नालालजी ने व पुराने भागनात पेश कर कहा कि कविराजजी म करीब बावन हजार रुपये बाकी निकलते हैं इनमें से कुछ माफ कर दिये जावें और दूसरी हवेलिया वाला के सरिस्ते एक हाथी, मोतियों की कठी व सिरोपाव दे दिया जाय। महाराणा न चाहा कि कुल रकम माफ कर दी जाय क्योंकि वे इनकी असलियत को जानते थे। परंतु पन्नालालजी न अज की कि ठीक है, कविराजजी "वीर विनाद" बना रहे हैं उसक बन चुवन पर इनाम म बड़ी बर क्षीसा करनी पड़ेगी। यदि इस समय कुल बजा माफ हो गया तो उस समय गाव देन पड़ेगे। मरी राय से इस रकम म से कुछ "वीर विनाद" क इनाम के लिय रखली जाय, फिर तो जो मालिको की मर्जी। महाराणा को यह राय पसंद आ गई कि व इस पुत्र ज मोत्मक क अनाद की क्षणिक श्रौदाय लहर म आ गय थे। तो भी थे पक्के बजूस। मुझे इस समय ठीक स्मरण नहीं कि कितनी रकम माफ की और कितनी गैर रक्की। जब कविराजजी को यह सुनाया गया कि अमुक रकम उ हें माफ की गई है तो उहोन एक अक्षर भी नहीं कहा कि यह रकम ही उनके नाम पर बजा बाको रखी गई थी, मरी कौनमी प्रायना थी जिस पर मुझे यह बज दिया गया था ?

सच है हल्के हृदय का विरोधी मौका पाकर आर्थिक मार मार सकता है किंतु सत्पुण्या क उच्च गौरव और यश तक उसका हाथ नहीं पहुँचता।

×                      ×                      ×                      ×

स 1941 म जब महाराणा फतहसिंहजी गद्दी बैठे उससे प्राय एक वष पूव उनके पुत्र भोपालसिंहजी (जो इस समय मेदपाटश्वर ह) का जन्म हो चुका था। अत वे महाराजकुमार की हैसियत स गद्दी पर आय। कम उम्र मे प्रत्येक बालक की गोदी म उठाये रहना स्वाभाविक है। परंतु राजगद्दी की चारों दिशायें चापलूसा से भरी रहती ह जो हुजूरिया से छाड़ रहती हैं। वे श्रीचिंत्य-अनीचिंत्य पर दृष्टि न देकर प्रत्येक चेष्टा एसी करते हैं, जिससे स्वामी की कृपा प्राप्त हो जाय। सतान मभी को प्यारा होता है और जो कोई सन्तान का प्यार करता है वह भी माता पिता का प्यारा बन जाता है। इसी लक्ष्य से जब से महाराजकुमार भोपालसिंह जी महलोम आये तब से ही लाग उनको एक की गोदी से दूसरे की गोदा मे बदलत रहते। भूमि-स्पर्श से उनको दूर ही रहना पडा। भीतर से लौंडिया गोदी म उठाये आती और बाहिर पुरुषो की गोद भर जाती। बाहिर का समय पुरुषो की गोद म समाप्त करने फिर से लौंडियो की गोद म जनाना आबाद हो जाता। गरीब घरा म छ मास क बच्चे जमीन को नापने लगते हैं। बडे घरा म भी गोदी की अवधि डेड दो

यय से अधिय नही रहती । परतु भोपालगिह्जी तो बचपन की बड़ी उम्र म भी गादी मे घूमते रह । यह दृश्य देन कर एक दिन कविराजाजी ने महाराणा मा स भ्रज की कि बच्चा तो राजा और रय दोना ही को समान रूप मे प्यारा लगता है । परतु प्यारा लगने का यह अर्थ थोडा ही है कि वह जमीन ही पर न उतारा जाय । परमात्मा ने दा पैर जमीन पर चलन के लिय लिय है, परतु मालूम हाता है कि हुजूर के ये सुनामदिया टट्ट्द महाराजकुमार का पगु बनावर उनका भविष्य बिगाड दग । महाराजकुमार पत् से भी क्या गोद म ज्याना इज्जत और बडप्पन घुमा हुआ है कि महाराजकुमार को जमीन पर भी नही उतारते जबकि इनकी उम्र इस समय थोडे पर चढन की है । इस समय इनका अधिक समय जनान म घुसे रहना और वहा भी लौडियो की गोद म लज्जा की बात है । हुजूर का स्मरण रहे कि महाराणा स्वरूपसिंहजी भी पगु थे परतु व गद्दी बठन क बाद बीमारी से पगु हुए थे । ये भ्रभी स पगु बना दिय जायेंगे और हुजूर को बुढाप मे दु ख पहुँगेगा । राजकाय जितना ही महत् महाराजकुमार पर ध्यान रखन का है । ये मूख लोग नही जानत कि इस गोद म क्या क्या मनय छिप ह किन्तु हुजूर को तो ध्यान दना चाहिये ।

महाराणा ने फरमाया-कविराजजी ! तुम्हारा कहना बिस्तुल ठीक है परतु औरतें (अर्थात् महाराणी साहिबा) नही मानती, उनकी इच्छा स ऐसा हाता है, क्या करें ?

कविराजा ने कहा, औरत का दूसरा नाम वेगम भी है अर्थात् अनानी और खास कर बडे घरों म तो वेगमे ही होती ह । क्या राणी होने स ही अक्ल बढ जाती है ? औरत की इच्छाओं की भी सीमा है । वे समझाई जा सकती है । फिर भी न समझें तो महाराजकुमार के बिस्तर सज्जननिवास बाग मे लगा दिये जा सकते है । जहा उन्हें कोई गोद मे न उठावे, और न अगुली पकडे ।

महाराणा ने कहा कि ठीक है, अथ गोद म नही लेन दिया जायगा । परतु लोगो ने अपनी आदत को नही छोडा, अलबतह कविराजाजी को आता दखकर महाराजकुमार को नीचे उतार देते थे । लोगो की चापलूसी और महाराणा सा की वेपरवाही का परिणाम वही हुआ जिसकी भविष्यवाणी कविराजाजी न की थी ।

× × × ^

महाराणा पतहसिंहजी का शिकार का शोक जगप्रसिद्ध है । शेर की खबर भ्रान पर तो जीमण भी छूट जाता था । यह लेखक नित्य अठारह घटा की

हाजिरी देता हुआ नौ बण महाराणा की सेवा में रहा है और शिकारा में तो अनिवाय नहीं था। एक दिन खबर पहुँची - रात के दस बजे कि गैर उदयपुर से अनतिदूर के पहाड़ में आ गया है। बस फिर क्या था ? रात के तीन बजे मेरे यहाँ हरकारा पहुँचा और भ्रान्त सुनाई कि चार बजे शिकारी कपड़े पहनकर हाजिर आओ। आज्ञानुसार पहुँचा। धीरे धीरे पुत्रोत्सव की मी गुसी से बड़े बड़े महकमों के अपसर भी जो उस समय कभी नहीं आते थे, जमा हो गए। शिकारी दश में सरदार उभरावों का दरिखाना (दरवार) लग गया। घाठ सौ नौकरियाँ (शिकार में हाका देन वाले भील) हाथों में बल्लम लिये शिकार के स्थान पर पहुँच गये और मगरा (पहाड़) घेर लिया। हाथी, घोड़े जट की तय्यारियों से हलचल मच गईं। सब तय्यार हैं। महाराणा भी नित्य तृत्य में निपट रहे हैं। उस समय कविराजाजी अपने समय पर नित्य के अनुसार आ पहुँचे। उनके बैठते ही महाराणा ने उत्साह भरे स्वर में बघाई के तौर से कहा- 'कविराजाजी ! आज शेर उदयपुर के पास ही आ गया।' कविराजाजी ने गंभीर स्वर में कहा- "वह हुजूर को सुशंका की नियत से तो आया है नहीं। जंगल का जानवर है भटकता हुआ आ निकला होगा। इसमें क्या आश्चर्य ? आज इस समय न आने वालों का भी भ्रान्त दियाता है कि य हुजूर को गुसी में खुशी मनाने को आये हैं। अगर इन सुशामदखोरा को मालूम नहीं कि मालिक को एक दृष्टिसन से मना करने के बजाय उसमें घकेतने से वे राज्य का कितना अहित करते हैं। इधर इसाफ के लिये भिसलों का डेर लगा हुआ सड़ रहा है, गरीब प्रजा शीत घूग और भूख-प्यास का कष्ट उठाकर चाय के लिये कोसा से आकर निराश लौट रही है और हुजूर को शिकार में फुरसत नहीं। मैं तो ऐसी शिकार में कोई बहादुरी भी नहीं देखता जिसमें दरवत पर घीस हाथ ऊँचे छिपकर बैठकर सिर्फ अगुली हिला कर शेर मार लें। इससे तो ब भील अच्छे जो जमीन पर से तीर मार कर सँकड़ो शेर बघेर मार चुकें हैं। बेचारे उस जंगली जानवर से तो ये बैठे हुक्काम ज्यादा खूँ टवारा है जो मालिक की आँखों में घूल भोक कर आपकी गरीब प्रजा का सून दिन दहाड़े चूस रहे हैं। राजा का घम पणु मारने में नहीं प्रजा का पालन में है। राज्य प्रथम अव्यवस्थित हो रहा है उसी शिकायतें वायसराय तक पहुँच रही हैं और पहुँचाने वाले भी ये ही बडो हुक्म" कह कर जगता में आपको धक्कन वाले प्रपची हैं। व्यसन उसी का नाम है जो बुद्धि पर पर्दा डाल दे। मुझे तो इस दश में खुशी नहीं, बल्कि दुःख हुआ। हुजूर तो जानते हैं कि जो भ्रान्त शिकार में आरवों आता होगा। वही इन शिकारी सरदारों को भ्रान्त होगा। परन्तु बात उलटी है। य भय के मारे कह कुछ नहीं सकता, बड़े मरणात्क स लकर एक नौकरियाँ तक के

दिल को पूछो, वे इस शिवार को प्राप्त समझ रहे हैं। सब दुःखी हैं। यह जेठ महौन की शिर फाड़ने वाली गर्मी है। हजूर के साथ तो सुख के सब साधन हैं, परन्तु श्याम तो फरमाया जाय-उन गरीबों की क्या हालत होगी जो भूख, प्यास, घाम सहते हुए पत्तीना बहाते हुए पककर लीच हो बिना किसी लाभ के रात को वापस घपन घर का मुँह देखेंगे। यह कष्ट भी एक दिन का नहीं, नित्य का है। इस गर्मी में कोई गरीब मर भी जाय तो उसका पुरमा हाल नहीं। श्यसन वाले को श्यसन की निन्दा बुरी लगती है अतः मेरी यह धर्ज भी बुरी ही लगेगी परन्तु सत्य को स्पष्ट अज करना मेरा धर्म है।

धारों धीरे सनाटा छा गया। पाच मिनट बाद महाराणा न भ्राजा दो-ठीक है, शिवार नहीं जावेंगे। हुकुम पहुँचा दो कि हाथी, घोडा के सामान उतार लिये जायें और नौकरिये वापस बुला लिये जायें। इस पर कविराजाजी न कहा-हजूर जैसे गुणग्राही और सहन करने वाले मालिक हूँ यह हमारा महोभाग्य है और श्यामलदास निभ रहा है। कोई असहिष्णु मालिक हाता तो श्यामलदास को मेवाड़ के बाहिर ही जीवन बिताना पडता क्याकि मैं अपने स्वभाव को बदलता ही कैसे ?

× × × ×

महाराणा पतहसिंहजी के जमाने में मिस्टर टामसन स्टेट इंजीनियर थे और दरबार में प्राइवेट तामीरात के मुखिया थे, अबावजो मुरडया। मुरडयाजी का विश्वस्त व्यक्ति मेरा गजधर पत्थर का सामान इकट्ठा करन पर तैनात था। एक दिन पत्थर की गाडिया आईं उनको भेरजी ने शहर की तरफ रवाना की। वही स्टेट इंजीनियर का चपरासी भी था। उसने गाडियों को इंजीनियरों में ले जाना चाहें और कड़ा-प्राइवेट का काम धरा रहेगा, गाडियां, हमारे बडे साहब के हुकम मुद्राफिक जावेंगी। भेरजी ने गुस्से में आकर कहा देखा रे तेरा बडा साहब, है तो बलायत का भगी। यहा आकर बडा साहब बन गया। पीछा बलायत जाने पर वे ही सडकें और व ही झाडू हठ, यहा से। अनदाता का काम नहीं रुक सकता। चपरासी ने पैट पकडे साहब के पास जाकर कहा, हजूर ! वह मेरा गजधर हजूर को बडा साहब कहता है और गाडियां जबरन ले गया। व साहब आगबबूला हो कर रेजीडेन्सी पहुँचा एजेन्ट ने दीवान पनालालजी को लिखा कि काठी रेजीडेन्सी पर भेज दो भेरजी गिरफ्तार कर लि

का रास्ता फँटता है वहा भेरजी ने कासटेबलो को कहा कि कृपा कर बाजार को छोड़ इस रास्ते से ले चलो, पानी भी पी लूंगा। उस रास्ते में ज्योही कविराजाजी की हवेली थाई, सलाम कर लेन के नाम से दरवाजे में घुस गया। कविराजा साहिब वहा तख्ते पर बैठे हो थे, पाव जा पकटे और सब हाल सब सच कह दिया। वह उनकी भ्रातृ को जानता था कि सच कह देने पर क्षमा कर देते हैं। कविराजा ने कहा-मूख ! ऐसे नहीं कहना चाहिये, ये लोग इस समय राज्य करने वाली जाति के हैं। भेरजी ने भ्रज की-अपराध हो चुका परन्तु बचाइये चपरासी ने श्री दरबार के काम को तुच्छ समझा, इससे मुझे क्रोध आ गया था।

कविराजा साहब ने कासटेबलो को कहा कि तुम लोग जाओ और अपने अफसर से कह दो कि भेरजी को यहा रोक लिया गया है। यद्यपि कविराजा उस समय महलो से आये ही थे तो भी तुरन्त म्याना से सवार हो वापस दरबार में गये। भेरजी म्याना पकड़े हुए साथ भागा गया। सिवाही देखते रह गये।

कविराजाजी को इतना जल्दी लौटते देख महाराणा का भी आश्चर्य हुआ, पूछा, कविराजाजी ! वापस कैसे आये ? कविराजा ने एकान्त में भ्रज की, क्या हुजूर न भेरा गजधर को गिरफ्तार करके रेजिडेंसी भेजने का हुक्म दिया है ? महाराणा को आश्चर्य हुआ क्योंकि वे कुछ नहीं जानते थे। उन्होंने कहा, नहीं। कविराजाजी ने भ्रज की रेजीडेन्सी का बाला बाला हुक्क चलाना और उसे सुशामदखोर दीवान का बिना हुजूर को भ्रज किये मान लेना सरासर बजा है। रेजिडेन्ट को यदि कुछ शिकायत है तो वह श्रीजीहुजूर को लिखे। इस तरह बाला बाला ताम्बोना का रिवाज आगे भयकर होगा। मेवाड पर हुक्मत प्रापनी है, रेजिडेन्ट की नहीं। यदि इस समय भेरा गुस्से में भरे अगरेज के हाथ में पकड़कर बेइज्जत होता तो वह बेइज्जती राज्य की होती उसकी नहीं। माना, वह उसकी मूमता है। उसे नहीं कहना चाहिये था। परन्तु जो कुछ कहा वह सत्य था और चपरासी की राजविरोधी गुस्ताखी पर क्रोध में आकर कह दिया है। इससे लिये वह धर में धमकाया जा सकता है, दण्ड पाने योग्य कोई अपराध नहीं।

उसी समय महता पनालामजी (दीवान) और पुलिस अफसर बुलाये गये और फटकारे गये। उन्हें लज्जित हाकर क्षमा मांगनी पड़ी। रेजिडेन्ट के नाम पनालामजी से चिट्ठी का उत्तर लिखवा दिया गया कि मालूम हुआ है श्री जी



मवाड के ग्राम बरवाडा के सीदा बारहूठ शाहू लसिहजी की जमीन उदयपुर के एक धामाईजी के यहां गिरवी थी। रहन की रकम हजारों रुपया की थी। उसकी अदायगी शाहू लसिहजी के लिये असम्भव हो रही थी। एक दिन उक्त धामाईजी के यहां किसी विशेष समारोह में उदयपुर के अग्र्य प्रतिष्ठित लोग के साथ सब चारण सरदार भी निमंत्रित थे। बाता व सिल-सिले में इस रहन का जिक्र आ गया। उपस्थित चारण सरदारों ने इस विषय में उदारता प्रदर्शित करने के लिये धामाईजी से आग्रह किया। श्री मोडसिहजी महियारिया श्रीनाडसिहजी आगिया आदि के उत्साहप्रद शब्दों से प्रभावित हो धामाईजी ने वह दिया कि यदि बल परती तब शाहू लसिहजी सिर्फ पांच हजार रुपये ला दें तो बाबा सब रकम में छाड़ता हूँ। आग्रहकर्त्ताओं ने इसे मनीमत समझ धामाईजी को घबराव दे दिया और इस रकम को जुटाने के प्रयत्न का विचार करने के लिये धामाईजी ने यहां से विदा हो सीधे कविराजाजी की हवेली पहुंचे क्योंकि कविराजा साहब कारणवश धामाईजी के यहां नहीं आ सके थे। आगतुका द्वारा सब हाल सुनकर कविराजाजी ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और इस काम में अग्रसर हो गये। घर में होते तो इतने से रुपये वे तुरन्त निवाल फौजदार परतु घन के पुजारिया से घृणा करने वाले के पास घन कहा ? न्याय और सत्य के सूखे माग पर लक्ष्मी कभी कभी ही आती है। अस्तु। कविराजा ने मुख्य मुख्य चारणों का डेप्युटेगन बना कर उमरावा से चंदा प्रारम्भ किया। इस प्रकार ढाई हजार रुपये तो इकट्ठे हो गये और शेष ढाई हजार बाकी रहे। तब तक धामाईजी की वह कथित अवधि समाप्त होने आ गई। अतः कविराजाजी ने कुशल वक्ता आशिया आनाडसिहजी (मेगटिया) द्वारा अपने परम मित्र देलवाड़े राजराणा फतहसिहजी को यह सब हाल सूचित करवाया। श्रीनाडसिहजी द्वारा प्रभावपूर्ण शब्दों में सब हाल जानकर उदार सिरोमणि राजराणा ने कहा-कविराजा साहिब का फर्माना और वह भी एक चारण की गिरवी जमीन छुड़ाने का सिर्फ ढाई हजार रुपये के लिये। आप लोग ने पहले चंदा करने की तबलीफ क्यों की। खैर यह भी बड़ी कृपा हुई कि आप लोग ने अब भी मुझे सेवा का अवसर दिया। शाम को सब चारण सरदारों को मैं अपनी हवेली पर निमंत्रित करता हूँ। इस राजपूत के घर को अपना ही समझ देलवाड़े की ही हवेली सब सरदार भोजन करें। कविराजा साहब भी अवश्य कृपा करें, नाचेत् शाहू लसिहजी का तो अवश्य ही भेज दें।

सामकाल को राजराणा ने अपनी हवेली पर सब चारणों का मोठ जिम्हा कर बाल में ढाई हजार रुपये शाहू लसिहजी के सामन रख दिये और कहा यह



दुजूर ये हुयम की तामील करते हुए दरवार में मुलाजिम भेरा गजवर को इजीनियरी व मूय चपरासी व राजा मन्ना स पग आ कर राका और इस पर वेवतूफ भेरा न साहब इजीनियर की शान व खिनाफ कुछ गद्व बह न्यि । भेरा की टम बवतूफी क लिय धीजी दुजूर न उस उचित दण्ड द दिया है । यन्ि इमक अतिरिक्त दूसरा बार्द अपराध उमने किया है । ता आप बाजाप्ता धीजी दुजूर की सेवा म निग्रे अवश्य ध्यान निया जायेगा । यस, मामला वही गात ।

× × × ×

कविराजाजी क हृदय की विगानता का एर उदाहरण दू गा । चारण जाति म उस समय कविराजा श्यामलदासजी क समान जाधपुर के महामहापाध्याय कविराजा मुरारिदानजी भी असाधारण प्रतिभाशाली और आदरणीय महापुरुष विद्यमान थे और दोनों कविराजाप्रा म प्रेम भी असाधारण था । चारण जाति दोनों ही महापुरुषों का पावर भाग्यशाली और गौरवाचित था । चारण जाति म इन दोनों मे से एक था मूय और दूसरा था चद्र, अर्थात् मन्वकी भावना मे कविराजा श्यामलदासजी मूय थे और कविराजा मुरारिदानजी चद्र । वास्तव मे यह तुलना यथातथ्य थी । दोनों मे भेद भी इतना हा था । प्रस्तुत उदाहरण इसको स्पष्ट करेगा ।

एक वार अथ कि जोधपुर स कविराजा मुरारिदानजी राजकाय क मिल-सिल मे उदयपुर आय हुए थे, कविराजा श्यामनदामजी की हवली के दरवाजे म उस तरते पर जा आज भी वही पडा हुआ अपन वृत्ताप क क्षणा म उस यौवन और सम्मान के क्षणों का मौन चितवन करता हुआ आकाश को ताक रहा है और जीण पायो की क्षिपिल सधिया से कभी कभी अपनी भाग्य परिवर्तन की मम-वदना चरड-चू की कर्णध्वनि रूप म अनात भाव से निकल पडती है जिसे वह स्वय मुन कर वाप उठता है हा, उस तरत पर, य नानो मूय चद्र बैठ हुए थे । अपनी जाति क वात्की को पहाने की बातचीत चल रही थी । चद्र ने गभीर मुद्रा से कहा, 'कविराजा साहब ' आग गलती कर रह ह्यो, यह जाति भलाइ को मानने वाला नहीं, य लत्के पढ लिख कर किसी दिन यशकरणजी (कविराजाजी के दत्तक पुत्र) को धक्का देंगे मूय न उत्तर दिया । वेचारा यशकरण क्या चीज है मैं तो चाहता हू कि ये बालक पढकर अपनी योग्यता क बल से खुद मुझ पाछे रख दें । मैं ता उस दिन को अपन सदभाग्य का दिन समनू गा । मुझे दुःख है कि आप जैसा व्यक्ति ऐस विचार रखता है । ' चद्र न कथा हिला कर दूसरी ही बात का प्रमग छेड दिया । मरे वाना म आज भी व गद्व गूज रहे है ।

मेवाड के ग्राम बरवाडा के सौदा बारहठ शादू लसिहजी की जमीन उदयपुर के एक धाभाईजी के यहां निरवी थी। रहन की रकम हजारो रुपयो की थी। उसकी अदायगी शादू लसिहजी के लिये असम्भव हो रही थी। एक दिन उक्त धाभाईजी के यहां किसी विशेष समारोह मे उदयपुर के अग्र्य प्रतिष्ठित लोगो के साथ सब चारण सरदार भी निमंत्रित थे। बातों के सिलसिले मे इस रहन का जिक्र आ गया। उपस्थित चारण सरदारो ने इस विषय मे उदारता प्रदर्शित करने के लिये धाभाईजी से अग्रह किया। श्री मोडमिहजी महियारिया अनाडसिहजी आशिया आदि के उत्साहप्रद शब्दो से प्रभावित हा धाभाईजी ने कह दिया कि यदि कल परसो तक शादू लसिहजी सिफ पाच हजार रुपये ला दें तो बाक सब रकम मैं छाडता हू। अग्रहकर्त्ताओ ने इसे गनीमत समझ धाभाईजी को घ यवाद लिया और इस रकम को जुटाने के प्रयत्न का विचार करने के लिये धाभाईजी के यहां स विदा हो सीधे कविराजाजी की हवेली पहुचे क्योंकि कविराजा साहब चारणवश धाभाईजी के यहां नही आ सके थे। आगतुका द्वारा सब हाल सुनकर कविराजाजी ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और इस काम मे अग्रसर हो गये। घर मे होते तो इतने से रुपये के तुरन्त निकाल फौजत परतु धन के पुजारिया से घृणा करने वाले के पास धन कहा ? न्याय और सत्य के सूखे माग पर लक्ष्मी कभी कभी ही आती है। अस्तु। कविराजा ने मुख्य मुख्य चारणो का डेप्युटेगन बना कर उमरावो से चंदा प्रारम्भ किया। इस प्रकार ढाई हजार रुपये तो इकट्ठे हो गये और शेष ढाई हजार बाकी रहे। तब तक धाभाईजी की वह कथित अवधि समाप्त होने आ गई। अत कविराजाजी ने कुशल वक्ता आशिया अनाडसिहजी (मेगटिया) द्वारा अपने परम मित्र देलवाडे राजराणा फतहसिहजी को यह सब हाल सूचित करवाया। अनाडसिहजी द्वारा प्रभावपुण शब्दो मे सब हाल जानकर उदार शिरोमणि राजराणा ने कहा-कविराजा साहब का फरमाना और वह भी एक चारण की गिरवी जमीन छुडान का सिफ ढाई हजार रुपयो के लिय। आप लोगो ने पहिले चंदा करन की तकलीफ क्यों की। खैर यह भी बड़ी कृपा हुई कि आप लोगो ने अब भी मुझे सेवा का अवसर दिया। शाम का सब चारण सरदारो को मैं अपनी हवेली पर निमंत्रित करता हू। इस राजपूत के घर को अपना ही समझ देलवाडे की ही हवेली सब सरदार भोजन करें। कविराजा साहब भी अवश्य कृपा करें, नोचेत् शादू लसिहजी को तो अवश्य ही भज दें।

सायकाल को राजराणा ने अपनी हवेली पर सब चारणो को गोठ जम्हा कर पाल मे ढाई हजार रुपये शादू लसिहजी के सामन रख दिया और कहा यह

इस राजपूत की तुच्छ भेंट है देवीपुत्री न वाह-वाह, धाय-घन्य शब्दा में उदार क्षत्रिय का वधा लिया और अनेक कवितायें भेंट कीं ।

×                      ×                      ×                      ×

एक वार महाराणा फतहसिंहजी के जमाने में गोधूदे के राजराणा मान-सिंहजी की राजपूती अक्ड की तरफ उठी कि मैं पगडी पर 'होकार की बल्गी' लगाऊंगा । यह एक ऐसा जेवर है जो उज्यपुर में मिथाय महाराणा क कोई नहीं लगा सकता । राजराणा ने अपनी हवेली पर उदयपुर में 'हाकार की बल्गी' बनवाना शुरू कर दिया । मालूम हान पर महाराणा ने बात न बढे इस अभिप्राय से कहलाया कि आप इसे नहीं लगा सकेंगे अतः न वनावें । राज-राणा से जवाब मिला कि जिसे जो जेवर पसंद हो पहिन सकता है । मुझे यह जेवर पसंद है । मालिक होने पर भी महाराणा को हमारी स्वतंत्रता का एमी जरा जरा-सी बाता पर नहीं रौंदना चाहिये । पहिले उमराव-बहगो पुरोहितजी को और फिर दीवान महता पनालालजी को भेजकर महाराणा ने कहलाया कि राज इम जिद को छोड़ दें । परंतु राज अपनी आन पर धटे रह और उत्तर दे निया कि मैं तो बल्गी लगाकर ही दरीखान में आऊंगा महाराणा अपने हाथ से मेरे सिर से पगडी उतार सकते हैं । आखिर महाराणा ने कविराजाजी को बुलाकर कहा कि किसी तरह राज को ममथा दो वे 'होकार की बल्गी' लगा कर हमारे दरीखाने में न आवें । कविराजाजी ने अज की कि गाधूद राज एक समझदार सरदार हूँ वे कभी जिद नहीं करते । परंतु मालूम हाता है हुजूर न धमका कर आदेश दिया होगा और उस पर राजपूत का अक्ड जाना स्वाभाविक है । एमी छोटी बातों पर हुजूर की जिद भी ठीक नहीं । खैर ! मैं उन्हें समझाने जाऊंगा । परंतु इस समय व मेरी बात भी नहीं माने ता उस हालत में जो कुछ फैसला कर आऊँ उसे हुजूर स्वीकार करने में तयार हो तो मैं गोधूदे की हवेली जाऊँ । क्या निणय होगा यह अभी अज नहीं कर सकता । महाराणा ने स्वीकार कर लिया कि तुम जो कुछ निणय करोगे वह हम मजूर होगा । कविराजाजी राज साहब के पास उनकी हवेली पहुँच । राज साहब कविराजाजी से बहुत ही आदर के साथ प्रेम रखते थे । व हवला क बाहर तक दौड़ कर आ मिले और कहने लग कि आपके आने का रहस्य मैं समझ गया खैर इसी वहाने मेरा स्थान पवित्र हुआ । शांति से बैठ कर बात होन से पहिने ही राज ने कहा कि मैं आपका भक्त और अनुग्रहीत हूँ परंतु यह स्पष्ट कह देता हूँ कि आप कृपा कर मुझे 'होकार की बल्गी' के लिये कुछ न कहें । कविराजाजी ने उनकी अनेक प्रकार से उनके पूज्यों की स्वाभिभक्ति का वर्णन करने मालिक से ऐसी तुच्छ बात के लिये जिद न करने क लिये कहा । परंतु यही

सत्तर मिला कि आपकी आज्ञा न मानने से मुझे बहुत ही दुःख है। लज्जित-सा हूँ किंतु इस बार तो अपनी यह जिज्ञा रखूँगा ही। महाराणा ने ममज्ञ लिया कि राजपूत मर गये और मोम के पुतले ही रह गये। उनका यह भ्रम आज मिट जावया। कविराजाजी न कुछ सोचकर कहा, खैर आपकी मर्जी। मने भी निश्चय कर लिया है कि आप इस बड़े दरोगाने के प्रमग पर जहर ही कलगी लया कर आवें। आपकी पगडी आप ही के गिर पर रहेगी। महाराणा उस नहो उतारेंगे। परंतु इन जिद से पछताना आपका अवश्य पड़ेगा।

प्रेमपूर्वक साग्रह रहस्य पूछन पर कविराजाजी ने कहा कि 'स कलगी म इज्जत घोड़ी ही घुमी हुई है। यह इज्जत तो महाराणा की मानी हुई बीज है। महाराणा के घर में बीसो ऐसी कलगिया ह। यह कलगी इज्जत क दामर से निकालो जाकर चोबदार, छडीदार घोट वाला को पोशाक का जेवर माननी जायगी और आप इन सब के गिर पर 'होकार की कलगी' देखेंगे। तब मुझे भी इतिहास म लिखना पड़ेगा कि गोधूद राज की मूखतापूण जि' से यह कलगी चडी इज्जती मे से निकाली जाकर राज्य के तुच्छ नौकरा क सिर पर पहुँची। यह सुनकर राज स्तब्ध रह गये। बहुत देर सोच विचार के बाद कहा कि आप अपने मित्र की इस ढंग से बेइज्जत करना चाहत हैं और क्या महाराणा इस बात को मान लेंगे? कविराजाजी न कहा कि मित्र अपनी जिद स खुद हो बेइज्जती का सम्ता लेना पसंद करता है। महाराणा से यह सब तँ कर आपा हूँ। जा कह रहा हूँ वही हागा, इसम लेश मात्र सदेह नहीं। राज सा ने कहा, आपस हार गया। यह कलगी नहीं लयाऊँगा, आप मुझे पीढियो तक बदनाम न करें। कविराजाजी ने कहा, पहिले राजपूती क वाक्य अटल होत थे परंतु सब बदलते देर नहीं लगती। अगर आप सच्ची प्रतिना करो तो महाराणा अपने उस निषय को पनट देंगे। राज ने शपथ लेकर कहा कि क्या मैं आप से झूठ चाटूँ और महाराणा क सामने आपको भी झूठा बनाऊँ। इतना अधम नहीं हूँ आप निश्च हो अज कर द कि मानसिंह न जलगा लगाने का सकल्प सोड दिया। यही नहीं दो दिन बाद पूरी तैयार हो जाने पर यह कलगी मैं महाराणा साहिब का सेवा म नजर (भेंट) कर दगा, आप विश्वास रखें।

× × × ×

महाराणा सज्जनसिंहजी के देहांत के बाद कविराजाजी को नगरो की पीडा हुई और जब देखा कि उदयपुर में इलाज होना कठिन है तो ददौर गये जहा महाराजा तुक्कोजी राव ने बडा आतिथ्य किया। इदौर क इलाज स नेत्रा की पीडा तो मिट गई परंतु नन ज्याति सदा क लिय मद हा गई। मोट-मोट

अधारा में हस्ताक्षर करते थे और कोई व्यक्ति आता तो न पहिचान करने के कारण पूछना पड़ता "कौन है ?"

× × × ×

कविराजाजी मदा से हाथी की सवारी के शौमीन थे । घर से महना जाते या मेवाड का दौरा करते या कहीं भी जाते, हाथी की सवारा स । राज्य से उनकी पसल की तज चलने वाली एव हथनी तैनात रहा करती था । दूर से हथनी के घटा की आवाज ही सूचना दे देती कि कविराजा आ रहे हैं ।

× × × ×

कविराजा साहब कहा करते कि मैं म्याने में सवार हान वाले अफीम खान वाले और दूसरे के हाथ पर हाथ रखकर चलन वाले (मेवाड में प्रायः बड़े आदमी अपने महत्व ज्ञापन के लिये किसी कृपापात्र के हाथ पर हाथ रखकर चलते हैं) का उपहास किया करता था । परन्तु ईश्वर ने य तीनो ही बातें मुझ से करवा दी । नत्र ज्योति कम होने पर हाथी छाड़ म्याने की सवारी पकड़ी पैदल चलने पर किसी के हाथ का सहारा लेना पड़ा और असह्य पीडा बाल में अफीम से कुछ चन मिलने से वह भी लेनी पड़ी । किसी का उपवास न करना ही अच्छा है ।

कविराजाजी आखा के इलाज के लिये इ दौर गय उसस पूव एक बार इ दौर के बुद्धिमान और तेजस्वी महाराज तुक्काजी राव ने महाराणा से इच्छा प्रकट की कि वे चित्तौड़ का सुप्रसिद्ध किला देखना चाहते हैं । वास्तव में इस इच्छा के पारस्परिक प्रेम के मूत्रपात की पुष्टि मात्र थी । परन्तु सरकार हिंदुत्व चाह सकती थी कि या राजपूत और मरहठो का मिलन हो जाय । अतः नीतिविचक्षण तुक्काजी राव ने चित्तौड़ जैसे ऐतिहासिक क्षेत्र को देखने मात्र की इच्छा की । महाराणा उल्यपुर में भी उचिन समझ कर स्वीकृति दे दी और तुक्काजी राव जैसे राजा के चित्तौड़ में स्वागत का भार बँस ही प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति कविराजाजी पर रखा । कविराजाजी ने अर्ज की कि यद्यपि तुक्काजी राव बुद्धिमान हैं परन्तु वे टरें मिजाज के भी हैं । और मेरा मिजाज टरेंपन को सहन करन वाला नहीं है अतः सम्भव है व किसी बात को लेकर अग्रसन्न हो जाय । इसलिये स्वागत के लिये किसी दूसरे को भेजा जाय तो अच्छा है । महाराणा ने कहा कुछ पर्वह नही तुम ही को जाना होगा । कविराजाजी चित्तौड़ पहुँचे और स्वागत की सब व्यवस्था कर दी । परन्तु रेल्वे स्टेशन पर स्वयं न जा कर अग्र राग कमचारिया सहित अपने प्राइवेट

संकेटरी दसोरा ब्राह्मण दुलभरामजी को इस आदेश के साथ भेज दिया कि वह महाराजा इंदौर से अग्र कर दें कि कविराजा को हिंदूसूय मदपाटेश्वर के घर में पूरी ताजीम (देखते ही खड़े हो जाना), बाँह पसाव (बगल में हाथ डाल कर मिलना) आदि की इज्जत है अतः आप भी वैसी ही इज्जत का बर्ताव करें तो कविराजाजी डेरे पर हाज़िर हाकर मिलेंगे। महाराजा तुक्काजी ने रत्न से उत्तरन ही यथा प्रधान व्यक्ति वीर है ? दसोरा दुलभरामजी ने आगे बढ कर सब अग्र कर दी। पूछा तुम वीर हो ? उत्तर मिला कविराजा साहब श्यामल-दामजी का प्राईवट संकेटरी। पूछा, क्या श्यामलदामजी महाराजा साहब के खास खानदान में है ? उत्तर मिला नहीं, वे चारण है। तुक्काजीराव ने कहा आहो, तब यह इज्जत हम कैसे दे सकते हैं। तुक्काजी राव डेरा में दाखिल हुए और दुलभरामजी ने सब हाल कविराजा साहब में जा कहा कविराजा साहब ने दुलभरामजी को आज्ञा दी कि तुम अभी महाराजा इंदौर के पास जाओ और जो कुछ कहलाता है स्पष्ट कह दो- श्यामलदास आपको महत्ता और सुकीर्ति से खूब परिचित हैं, परंतु आपने जाति का प्रश्न उठाया है अतः मुझे स्पष्ट कर देना चाहिए कि चारण जाति का महत्त्व का विश्वव्यापक राजपूत जाति ही जानती है गडरिया की जाति क्या जानेगी ? जिनको अथकुकमल दिवाकर के घर में सम्मान प्राप्त है वह एक गडरिये से सम्मान पाने की इच्छा ही क्या करने लगा, फिर वह कहीं का राजा ही क्या बन गया हो ! आप चारण जाति को नहीं जानते परंतु मैं आपकी जाति को खूब जानता हूँ क्योंकि मरी खुद की जागीर में भी बहुत से गडरिये आबाद हैं। मैंने महाराजा साहब की आज्ञानुसार आपको लिय सब प्रबंध कर लिया है। मेरा संकेटरी चित्ती के एतिहासिक वृत्त का जानकार है वह आपको साथ रहकर सब बता देगा।

दसोरा दुलभरामजी भी उतना ही निधडक बालने वाला व्यक्ति था। इसलिये वह कविराजाजी की रूपा और विश्वास का भाजन हो रहा था। उन्होंने महाराजा तुक्काजीराव के सम्मुख उपस्थित होकर निश्चिन्ता में सब कह सुनाया। सुनन ही महाराजा ने कहा मालुम होता है कविराजाजी स्वाभिमानी व्यक्ति हैं। अच्छा, जाओ, वह दो हम जहर मिलेंगे और सब इज्जत देंगे।

तुक्काजीराव ने उसी दिन कविराजाजी को बुलाया और दरीजना कर के मिले। हा, ताजीम के लिये बुझाप के बहाने धीरे धीरे उठने लग तब कविराजाजी ने अपने हाथ का सहारा देकर खड़े कर लिये और बाह पसाव किया।

फिर तो दोनों की दो घटा तब बातचीत होती रही और गुणग्राही महाराजा इतने प्रभावित और मुग्ध हुए की कविराजाजी का हाथ पकड़े हुए बग़ीतब पहुँचाने चाये । दोनों और खूब आनन्द और प्रेम रहा । महाराजा तुक्काजी ने महाराणा को पत्र लिखा उसमें कविराजाजी की भूरि भूरि प्रशंसा की और चित्तौड़ से खाना होते समय कविराजाजी का इंदौर आने का आग्रह पूर्वक निमन्त्रण दिया । जब स १६३६ में अनायास कविराजाजी की आँखें बमजोर होकर दुखने लगी, असह्य वेदना बढ़ी और उदयपुर में आया का ठीक इलाज होने की आशा न रही तब कविराजाजी इलाज के लिये इंदौर गये जहाँ महाराजा तुक्काजी ने बहुत आदर सम्मान से रखा और नया का इलाज करवाया जिसका उल्लेख पहिले हो चुका है ।

X                      X                      X                      X

कविराजाजी का समय समय पर जो राजसम्मान प्राप्त हुए वे संक्षेप में इस प्रकार हैं -

सन् १६२८ में महाराणा शंभूसिंहजी ने उदयपुर में हवेली बखशी और पहले इनकी बैठक दरीखान में चारणा की पंक्ति में छठ नम्बर पर थी उससे बजाय तीसरे नम्बर की बैठक दी ।

स १६३२ आषाढ कृष्ण ८ के दिन महाराणा सज्जनसिंह जी इनकी हवेली पधारें और इन्हें ताजीम चादी की छड़ी बखशी ।

स १६३३ में इनको खांस पसाव (हाथ बढा कर अर्थात् बग़लगीर होकर मिलने) की रूजत बखशी और "चारण शरण" की बडी छाप (मुद्रा) प्रदान की।

स १६३३ में महाराणा सज्जनसिंहजी इनकी हवेली पर महमान हुए ।

स १६३४ में इनका पैरो में सोने के लगर दिये गये ।

स १६३५ के चैत्र में महाराणा सज्जनसिंहजी इनकी हवेली पर फिर महमान हुए ।

स १६३५ के चैत्र सुक्ला २ के दिन उक्त महाराणा कविराजाजी के ग्राम डोबलिया पधारें और इनको कविराज पदवी, जुहार का , पगडी में आभा और पैरो में सोने के तोड़े (पग साकला) बख्ते

स 1937 क चैत्र म महाराणा सज्जनसिंहजी इनकी हवेली पर फिर महमान हुए ।

स 1937 के वैशाख म मेवाड़ के मगरा जिले के भीलों ने बलवा किया उसका कविराजाजी ने बड़ी होशियारी बुद्धिमता और बहादुरी से पूरा घात कर लिया । इस उपलक्ष्य म महाराणा सज्जनसिंहजी ने इनके पैरो में सोने के दोहरा लगर प्रदान किये ।

स 1938 चैत्र सुदी 2 को महाराणा इनकी हवेली पर महमान हुए ।

स 1939 के ज्येष्ठ म महाराणा सज्जनसिंहजी ने उज्जपुर के हाथीपोल दरवाजे के बाहिर बाग क लिये जमीन बरशी ।

इसी सवत् के भाद्रपद में उपरोक्त बाग म महाराणा की पथरावणी हुई ।

इभी सवत् के आश्विन शुक्ल 1 को उपरोक्त बाग में श्री करनीमाता की स्थापना की गई ।

इसी आश्विन शुक्ल 5 के दिन उपरोक्त बाग में फिर पथरावणी हुई । तब महाराणा ने कविराजाजी क नाम पर इस बाग का नाम श्यामलबाग छेकरवा ।

इसी सवत् के माघ मास में महाराणा के महाराजकुमार उत्पन्न हुए उस खुशी में महाराणा ने कविराजाजी क छोटे भाई स्व गोपालसिंहजी के पुत्र को कविराजाजी के गोद रखकर उस बालक का 'यशकरण' नाम बरशा और यशकरणजी के पैरो में सोने के लगर पहिनाये ।

सवत् 1940 में करनी माता का मन्दिर बनवाया जिसके लिये धोरण (धरण्य) की जमीन और कविराजाजी को हुवाला की जमीन महाराणा ने बरशी ।

स 1941 चैत्र शुक्ला 14 के दिन महाराणा सज्जनसिंहजी, जोधपुर नरेश महाराजा मशवन्तसिंहजी और कृष्णगढ क महाराजा सादूलसिंहजी तीना ही रईम कविराजाजी के बाग (श्यामलबाग) में महमान पथारे और कविराजाजी ने बहुत बड़ी दावत दी ।

---

❦ वास्तव में थोड़े ही काल म श्यामलबाग उदयपुर म प्रति बनारम दक्षिणी स्थान बन गया था और प्रागे जाकर इसमें 1200/-रु की सालाना धामदनी हो जाती थी ।



स 1941 आवण शु 5 के दिन महाराणा सज्जनसिहूजी श्यामलबाग म फिर महमान हुए ।

इसी सबत् के आश्विन कृ 12 के दिन उक्त महाराणा फिर कविराजाजी के बाग मे महमान हुए ।

महाराणा सज्जनसिहूजी ने कविराजाजी को प्रधानमन्त्री का पत्र प्रदान किया और मेवाड की सर्वोपरि कौंसिल महद्राजसभा-का मुख्य मेम्बर बनाया इसका उल्लेख यथा-स्थान हम कर चुके हैं ।

कविराजाजी की चतुसुखी प्रतिभा पर मुग्ध होकर और मेवाड तथा गवर्मेण्ट हिंद की मंत्री को दूढ करते हुए राज्य को उनत्त गति म ले जाने के कौशल पर प्रसन होकर गवर्मेण्ट हिंद ने भी इनको

स 1935 मे कैसर हिंद का स्टार और

स 1944 माघ कृष्णा 2 को महामहोपाध्याय ' का खिताब दिया ।

कविराजा अपनी उत्तम विद्वता के कारण निम्नलिखित संस्थाओं के फेलो (मबर) थे -

- (1) रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैंड ।
- (2) रायल हिस्टोरिकल एशियाटिक सोसाइटी-बंगाल ।
- (3) रायल एशियाटिक सोसाइटी बर्म्हई ।
- (4) एन्थ्रोपोलोजिकल सोसाइटी, बर्म्हई ।
- (5) एशियाटिक सोसाइटी आफ इटली ।

×                      ×                      ×                      ×

राज्य काय से अवकाश ग्रहण कर लेने पर कविराजाजी की दिनचर्या प्राय यह थी-

पिछली रात को चार बजे शय्या से उठ जाना नित्यकम से निवत हो पहिले हाथी और बाद में म्याना म सवार होकर कुछ कुछ भ्रमरा रहते महलो मे जाना । कविराजाजी को लकड़ी का खटका सुनते ही महाराणा फतहसिहूजी समझ जाते कि कविराजा आ रहे हैं । उस समय महाराणा दतुधन करते हुए मिलते । उनको दूर से देखत हां स्वयं महाराणा कहत "आओ कविराजाजी ताकि

कविराजाजी को मालूम हो जाय कि दरबार कहा बिराजते हैं। कविराजा सलाम करके दरबार के पाम ही बैठ जाते। कभी नसीहत की बातें होती और कभी एकान्त सलाह होती रहती। करीब एक घंटा ठहरते और फिर रखसत हो हवेली पर चले आते वहा खपरल के दरवाजे में लकड़ी के तख्ते पर, जो अब तक मौजूद है—बैठ जाते। मिलने जुलने वाले या सलाम करन वाले आते जाते रहते। घाठ या साढे घाठ बजे नियमपूर्वक अपनी ज्येष्ठ सहोदरा के पास भीतर जा बैठने और बातें करते हुए वही भोजन करते। भोजनोत्तर म्याना में सवार हो अपने 'श्यामलनिवास बाग' में चले जाते। बगीचे का बहुत शौक होने से बाग का चक्कर लगाते और बागवान को उपवन-विज्ञान समझाते हुए दिखायते देते। इसी बाग में इतिहास कार्यालय था, अतः मध्याह्न में प्रायः पौन घंटा सोकर उठन पर पड़ितों से अंग्रेजी फारसी, अरबी, संस्कृत आदि के इतिहास ग्रंथ सुनते रहते। सूर्यास्त होते होते शहर में हवेली आते। कुछ देर बाहिर बैठकर भीतर अपने शयनागार में जो तीसरी मंजिल पर था—चले जाते। परन्तु भाई बहिन में अनन्य प्रेम होने के कारण जनाने में घुसते ही यह पूछना कभी नहीं भूलत कि 'बाईजी! आपकी तबीयत कैसे है?' और यह उत्तर मिलने तक ठहरे रहते कि 'भाई सावलजी! जगदम्बा की दया से सब ठीक है! फिर भोजन करके सो जाते।

× × × ×

स 1949 आषाढ शुक्ल 11 के दिन कविराजाजी को फालिज की बीमारी शुरू हुई थी परन्तु डाक्टरों के इलाज से उस समय यह बीमारी मिट गई थी। फिर इसी सत्र की माघ शुक्ल प्रतिपदा को उसी पक्षाघात रोग ने दूसरा आक्रमण किया जिससे दाहिना हाथ और पैर नून्य हो गये और स्मृति भी जाती रही। जब तक शरीर में शक्ति रही तब तक तो अट अट कुछ बोलते रहे, परन्तु चार चार छ मास का अन्तर देकर इस बीमारी के दोरे बराबर होते रहे जिससे ताकत कम पडती गई। और दिमाग गीला (नरम) होता गया। फलतः आदमी की पहिचान और बोलन की शक्ति बंद हो गई। अग्निर दस्त और कं के साथ प्रबल ज्वर होकर सत्र 1951 ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या, रविवार मुताबिक सन् 1894 ता 3 जून के सूर्योदय समय चारण जाति के परम हितगी, मेवाड ही नहीं राजस्थान की एक विभूति कविराजा श्यामलदासजी इस सप्ताह की छोड़कर 56 वय 11 मास 13 दिन की आयु पा परलोकवासी हो गये।

\* कविराजाजी की इस दृग्भावस्था में ही उनके दत्त पुत्र यशकरणजी का विवाह मारवाड़ के सोडावास ग्राम के ठाकुर करनीदानजी महडू की पुत्री के साथ सत्र 1951 वैशाख शुक्ल 2 को कर दिया गया था।



सत्य की जांच के लिये सुग्व पूछने के नाम से स्वयं दो बार कविराजाजी को देखने के लिए वे प्रायः विपक्ष के किसी व्यक्ति के आने पर हम लोग सम्मूल जाते, बात यह थी कि कविराजाजी का दिमाग तो अवश्य ही विचलित हो चुका था परंतु दो विषय उनके मस्तिष्क के मज्जातंतुओं में ऐसे अद्भुत रूप से समा चुके थे कि उनमें से किसी एक का छेड़ दन पर एक एक पटे तक उनकी वाग्धारा नहीं रुकती और सुने हुए शब्दों की शृंखला किसी को भी यह भान नहीं होने देती कि दिमाग विचलित है। वे विषय थे इतिहास और स्वामिभक्ति। जब कभी कोई सन्निध व्यक्ति आता हम दो चार मिनट पहिले किसी ऐतिहासिक विषय पर प्रश्न छेड़ देते कि यह बात किन किन प्रमाणों से "वीर विनो" में सिद्ध की गई है। बस, फिर क्या था वही प्रमाण-जाल परिपूर्ण अस्खलित मडक झोत। भान वाला चकित हो दूसरा ही अनुभव लेकर घर लौटता।

× × × ×

कविराजाजी की म्णावस्था में आराम पूछने के लिये महाराणा फतहसिंहजी कई बार हवली पधारे। जब प्रथम बार पधारे, पलग के पास ही कुर्सी पर बिराज गये। उस समय मैं ही कविराजा साहब को कहा-बाजी साहब! अपने मालिक श्रीजी हुजूर खुद आगका आराम पूछने पधारे हैं। कविराजाजी न पलग पर बैठे हुए दोनों हाथों से मुजरा किया और कहा 'मैंने शभूतिसिंहजी की सेवा की मज्जतसिंहजी की सेवा की परंतु आपकी वैसे न कर सका इसका सेवक है। यदि मैं भी धन कमाने में लगता तो आज मेरे घर में दस बीस लाख रुपये से कम की सम्पत्ति नहीं होती। परंतु हुजूर खुद देख लें मेरे घर में चारह हाथ का बास फिरता है (अर्थात् सब घर खाली है)। मैंने तो सिर्फ इसी को धन समझा कि मेरा मालिक मुझे ठीक स्वामिभक्त और सच्चा सेवक समझे। बस यही मरी कमाई है और इसी से सुखी हूँ। बाल बच्चों का पेट तो मालिक खुद ही भरते रहेंगे, इसकी चिंता मैंने पहिले की और न आज है। महाराणा की आखा में पानी भर आया कुछ फरमाना चाहते थे किंतु गला भर जाने से न करमा सके। महलों में पधारने पर मुझे फरमाया कि तुम तो कहते थे दिमाग ठीक नहीं किंतु हमने तो वंसा नहीं देखा। तब मैंने असली रहस्य बहू दिया। वह सुनकर फरमाने लग ऐमे पुरुष होना दुर्लभ है, अब जब कभी हम आवें, उन्हें कुछ मत छेड़ो।

इसी प्रकार मेवाड़ के पोलिटिकल रेजिडेंट कनल माइल्स भी कई बार आराम पूछने आये।

× × × ×

जब से कविराजा साहब बीमार हुए, सेमपुर ठा चमनसिंहजी उनकी सेवासुश्रुपा मे दिलोजान से लग रहे ।

× × × ×

कविराजाजी के स्वास्थ्यकाल म ही महाराणा फतहसिंहजी और उनक प्रधान महता पनालालजी म द्वेष चल चुका था । कविराजाजी क रामकाल म यह द्वेष चरम सीमा तक पहुँच कर दोना और से राजनैतिक घात प्रतिघात चल रहे थे । महाराणा की स्वामिभक्त पार्टी ने महान स्तम्भ कविराजा रोग शय्या पर विकृत दशा मे थ अत इस पार्टी का कुल भार मेर पितु श्री बारहठ कृष्णसिंह जी पर आ चुका था । जब स महाराणा सज्जनसिंहजी ने कवि राजाजी को प्रधान मन्त्रित्व के भार स हलका कर इतिहास निर्माण पर प्रवृत्त किया और उनके स्थान पर मेरे पितु श्री को मुसाहिब बनाया तब से ही पनालाल जी मेरे पितु श्री को भी अपनी मनोकामना सिद्धि के घोर बाधक समझते थे । महाराणा की स्वामिभक्त पार्टी म मुख्यतया सिर्फ तीन व्यक्ति रह गये थे जिनसे महाराणा विश्वास क साथ गुप्त मन्त्रणा कर सन्त थे । प्रथम मेरे पितु श्री, द्वितीय कोठारी बलव तसिंहजी, जिनका उनकी नाबालगी स लेकर जवानी तक राजनैतिक शिक्षा दर प्रधानमन्त्री का भार उठा लेने योग्य बनाया और उनक घर को भी सम्हाला । इस प्रेम सम्बन्ध के नाते कोठारीजी भी हमार परिवार- सदस्य से थे और कविराजाजी को पिता ही मानत थे । महाराणा फतहसिंहजी पनालालजी को हटाकर इन कोठारीजी को ही प्रधान मन्त्री बनाना चाहत थे और हमारा सकल्प भी यही था । तीसरे व्यक्ति जो महाराणा के विश्वासपात्र थे, वे थे उनक सहोदर ज्येष्ठ भ्राता शिवरती ठिकान के महाराज गजसिंहजी । इनके अलावा प्राय सभी अपने लीगा से महाराणा का विश्वास उठ चुका था क्यकि वे जानते थे कि पनालालजी की कूटनीति के कारण घर के लाग और पोलिटिकल एजेंट बनल माइल्स सहित जितने भी अंग्रेज उदयपुर म थे, वे आबू के ए जी जी और वायसराय का पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट सब मिलकर उनके विपक्ष को प्रबलतम बना चुके हैं । ऐसी परिस्थिति म स 1948 के प्रारम्भ मे म भी महाराणा की सेवा मे दाखिल हुमा और इसी चक्र मे फँस गया । अत पितु श्री के साथ साथ मुझे भी इतना अवकाश कहा था कि कविराजाजी की रोगशय्या के पलंग का पाचवा पाया बनकर बठ सकता । पनालालजी के दिल पर कविराजाजी का बहुत बडा घातक था । जब वे सुनत कि कविराजाजी न दिमाग खो दिया तो शांति का श्वास लेते परन्तु जब हमारे पक्ष की दूसरी खबर सुनते कि दिमाग ठीक है, तो सहम जात ।

सत्य की जाच के लिये सुख पृच्छने के नाम से स्वयं दो बार कविराजाजी को देखने के लिए वे आयें। विपक्ष के किसी व्यक्ति के आन पर हम लोग सम्हल जाते, बात यह थी कि कविराजाजी का दिमाग तो अवश्य ही विचलित हो चुका था परंतु दो विषय उनके मस्तिष्क के मज्जातत्त्वों में ऐसे अद्भुत रूप से समा चुके थे कि उनमें से किसी एक को छेड़ देने पर एक एक पटे तक उनकी वाग्धारा नहीं रुकती और चुने हुए शब्दों की शृंखला किसी को भी यह भाव नहीं होने देती कि दिमाग विचलित है। वे विषय थे इतिहास और स्वामिभक्ति। जब कभी कोई सदिग्ध व्यक्ति आता हम दा चार मिनिट पहिले किसा एतिहासिक विषय पर प्रश्न छेड़ देते कि यह बात किन किन प्रमाणों से "वीर विना" में सिद्ध की गई है। बस, फिर क्या था वही प्रमाण-जाल परिपूर्ण प्रस्तुत मडल धोत। आन वाला चकित हो दूसरा ही अनुभव लेकर घर लौटता।

× × × ×

कविराजाजी की रूग्णावस्था में आराम पृच्छने के लिये महाराणा फतहसिंहजी कई बार हवली पधारे। जब प्रथम बार पधारे, पलग के पास ही कुर्सी पर बिराज गय। उस समय मैं हा कविराजा साहब का कहा-बाजी साहब। अपने मालिक श्रीजी हुजूर खुद आपका आराम पृच्छने पधारे हैं। कविराजाजी न पलग पर बठे हुए दोनों हाथों से मुजरा किया और कहा 'मैंने शर्भतिसिंहजी की सेवा की सज्जनसिंहजी की सेवा की परंतु आपकी बैसी न कर सका इसका खेद है। यदि मैं भी धन कमान म लगता तो आज मेरे घर में दस बीस लाख रुपया स कम की सम्पत्ति नही होती। परंतु हुजूर खुद देख लें मर घर में बारह हाथ का बास फिरता है (अर्थात् सब घर खाली है)। मैंने तो सिफ इसी को धन समझा कि मेरा मालिक मुझे ठोस स्वामिभक्त और सच्चा सेवक समझे। बस, यही भरी कमाई है और इसी स सुखी हू। बाल बच्चों का पट तो मालिक खुद ही भरते रहेंगे, इसकी चिन्ता न मैंने पहिले की और न आज है। महाराणा की आला में पानी भर आया कुछ फरमाना चाहत थे किंतु गला भर जाने से न फरमा सके। महलो में पधारने पर मुझे फरमाया कि तुम तो कहते थे दिमाग ठीक नहीं किंतु हमने तो बैसा नहीं देखा। तब मैंने असली रहस्य कह दिया। वह सुनकर फरमाने लगे ऐमे पुरुष होना दुलम है, अथ जब कभी हम आवें, उहे कुछ मत छेड़ो।

इसी प्रकार मेवाड के पोलिटिकल रेजिडेन्ट जनल माइल्स भी कई बार आराम पृच्छने आये।

× × × ×

कविराजाजी की वाकशक्ति सयया जाने वाली थी उससे कुछ दिन पहिले मैं अपने पितु श्री की आज्ञा से महाराणा का दरवाजा हई पार्टी को फिर से बसवान बनाने के लिय भारत के गुप्तसिद्ध व्यक्ति श्यामजी कृष्ण वर्मा बैरिस्टर-एट-लॉ को महाराणा का मुसाहिव करने उदयपुर से भाया । श्यामजी उदयपुर पहुँचते ही कविराजाजी के पास पहुँचे । उस समय मैंने कहा श्यामजी भाये है । श्यामजी न भी कहा महाराणा ने मुझे बुलाकर रग लिया है । परन्तु सन्नु प्रबल हैं, आप चाशीर्वाद दीजिये । यह सुनते ही कविराजा ने घट्टहास किया और कहा "श्यामजी ! तुम भा गये, अच्छा किया । ये सन्नु तो पहिले भी मच्छर ही थे और अब भी मच्छर हो हैं । मैं चाहता तो कभी मसल देता । परन्तु मच्छर को मसल देने में कौनसी बहादुरी ? पाप ही लगता । ये बेचारे आप मर जावेंगे । तुम तो इनस प्रबल हो । स्वामिद्राही छोड़े ही दिन पनपता है तुम खँरल्वाह रहना । कविराजाजी की यही स्मृति-तरंग और वाली प्रतिम थी ।

×                      ×                      ×                      ×

कविराजा साहब ने अपनी तदुरुस्ती की हालत में मेरे पितु श्री, ठा चमन-सिंहजी और कोठारी बलव तसिंहजी आदि आत्मीयों को कह दिया था कि मुझे जब कोई खतरनाक बीमारी हो तो मुझे स्यास लिवा देना और मरे बाग में बीच के चक्कर की जगह मेरा भूमिदाह करना । अत उनकी इच्छानुसार देहात के दो दिन पूर्व उनको आतुर स्यास दे दिया गया । जिस दिन स्यास दिया उस दिन महाराणा सा पतहसिंहजी ने मुझे फरमाया कि इच्छा तो है कि इस समय कविराजाजी के दशन हम भी करें परन्तु हम से वह दृश्य देखा नहीं जावगा अत तुम ही हमारी तरफ से प्रणाम कर लेना ।

×                      ×                      ×                      ×

जब से स्यास हुआ तब से कठोर हृदय करके मैं ही सेवा में रहा क्योंकि मेरे पितु श्री और ठा चमनसिंहजी दीवार पर कान लगाये दरवाजे के तख्ते पर बैठे रहते । उसके पास की कोठरी में सच्चिदानन्द शवासन से लेटे हुए थे । कविराजा साहब सदा छोटी रुद्राक्ष की माला पर "सो ह का जाप जपा करते । उमी मानसिक अजपा जाप के साथ अगुनिया माला के मणियों को घुमा रही थी । ज्योही यह माला छूट पड़ी, समझ लिया हसा उड़ गया । ईश्वर की विभूति ईश्वर ने उठा ली । चारण जाति का भानु अस्ताचल की ओट में चला गया ।

×                      ×                      ×                      ×

## कविराजा श्यामलदास की जी

देहात के बाद 'डोल' में बिठा कर गाजे बाजे के साथ पुष्प, गुलाल उछालते हुए सरे बाजार सवारी निकली। करीब दस हजार आदमी 'डोल' के साथ थे। शहर में दुकानों, मकानों और मकानों की छता पर खड़े हुए नर नारी निश्वास छोड़कर अश्रु-अजलि चढा रहे थे। सवारी श्यामलदास में पहुँची और उसी आदेश स्थान पर भूमिदाह हुआ। मिट्टी की मुट्ठिया डालते समय एक साथ हाहाकार से आकाश भी काप उठा।

बाद में वही प श्यामजीकृष्ण वर्मा ने एक ममस्पर्शी स्पीच दी जिससे हजारों नरों में अश्रुसागर का ज्वार उमड़ पड़ा। उस समय समस्त शत्रु भी मित्र रूप में आ चुके थे। प्रत्येक के मुख से यही बँधे हुए शब्द निकले थे कि कविराजा बड़े सत्यवक्ता, यायकारी, धमशील, निर्लोभी, देशहितपी, पूरे ईमानदार और सच्चे स्वामिभक्त थे। मेवाड़ में यही एक पुष्प थे जो इतना राज्याधिकार पाकर न कभी अभिमान से फूले, न किसी का बुरा किया और न कभी किसी से रिश्तत ली न धन जोड़ा। इतने ऊँचे पद पर पहुँच कर भी आप निधन रहे—यहा तक कि आपन घर को बज्जार ही छोड़ा।

×                      ×                      ×                      ×

कविराजा श्यामलदासजी ने जिस आत्मोपनिषत् के साथ कोठारी बलवत-सिंहजी की निरंतर उन्नति की उसका आभार प्रदर्शन कोठारीजी ने भी कविराजाजी के देहावसान पर स्वयं मुण्डन होकर विशेष रूप किया। मेवाड़ राज्य के प्रधानमंत्री का इतरजातीय व्यक्ति के देहात पर मुण्डन होना एक अभूतपूर्व घटना थी। कोठारीजी की जाति वालों ने इस पर ऐतराज भी किया परंतु कोठारीजी ने स्पष्ट उत्तर दे कर अपनी अनुपम कुलीनता का परिचय दिया कि कविराजा साहब ने मुझ पर पिता से भी अधिक वात्सल्य रच कर मुझे इस पद तक पहुँचाया। अतः मैं यदि मुण्डन होना में भी सकोच करता तो मुझसा कृतघ्न और कौन गिना जाता ?

×                      ×                      ×                      ×

कविराजाजी के देहात के पंद्रह दिन बाद आषाढ कृ 1 स 1951 को महाराणा पतहसिंहजी कविराजाजी की हवेली पर मातमपुर्ती केलिये पधारें और जो जो कारखाने\* कविराजाजी के नाम पर थे वे उनके दत्तक पुत्र यशकरराजजी के नाम पर बहाल रहे। इज्जत तो चारणा की मिला हुई मौलसी होती ही है।

\* विभाग ( डिपाटमेंटस )





